

रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 6 अंक 6, जून 2022

<http://www.kilol.co.in>



म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा - 80/-
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्रिय बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

उम्मीद है कि ग्रीष्मावकाश में आप सभी ने बच्चों का सीखना जारी रखने हेतु समर कैम्प, गणित मेला, पठनोत्सव आदि का आयोजन करते हुए उसका आनन्द लिया होगा. ग्रीष्मावकाश को समाप्त होने में सिर्फ एक पखवाड़ा शेष रह गया है. NAS के परिणामों को ध्यान में रखते हुए आप सभी आगामी सत्र में सुधार के लिए कमर कस रहे होंगे. इस दिशा में पठन कौशल विकसित करने हेतु किलोल का उपयोग करना न भूलें. आप अपने संकुलों के स्कूलों में निरीक्षण हेतु जाते समय पत्रिका की प्रति साथ लेकर जाएँ. बच्चों से अपरिचित पाठों को पढ़वाकर देखें कि वास्तव में बच्चों को पढ़ना आ रहा है अथवा नहीं. उनमें पढ़ने हेतु रूचि विकसित करें.

मैं आपसे पुनः संपादक की नई भूमिका के साथ जुड़ रही हूँ. किलोल के संस्थापक डॉ. आलोक शुक्ला जी ने मुझे हम सब की प्रिय किलोल पत्रिका के संपादक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है, जिसका निर्वहन मैं पूर्ण जिम्मेदारी से करूँगी व बेहतर कार्य करके उनके मापदंडों पर खरी उतरने की पूर्ण कोशिश करूँगी. मुझे विश्वास है कि आप अपना प्रेम पूर्व की भाँति किलोल के साथ भी बनाए रखेंगे.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

दान	10
सूरज दादा	11
लड़की	12
पंचतंत्र की कथाएँ	13
मेरा प्रिय खेल	16
हैं हमारे	17
इंसानियत	18
अधूरी कहानी पूरी करो	20
मनोज कुमार पाटनवार द्वारा पूरी की गई कहानी	21
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी	22
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी	23
रमन की चतुराई	23
अपनी करनी	24
ज़िन्दगी	26
शिक्षक और सड़क	27
मेहनत	30
श्रमजीवी नारी	32
पुतला-पुतली	34
ओ रे पुतले! कहाँ जाने की तैयारी है?	34
आगे कदम	36
धरती माँ	38
विश्व विरासत दिवस	40
प्याऊ घर	43
नींबू	45

प्लास्टिक का त्याग करें	47
मानें कहना	51
पिता	53
सब्जी वाली	54
नतीजा	56
हरे भरे यदि पेड़ ना होते	58
दोपहरी	60
दुनिया में निदेशकों का राज है	62
धन के पीछे भाग रही दुनिया	63
कुछ रिश्ते कितने खास होते हैं	65
अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस	67
सुबह-सुबह	69
बरखा दीदी	71
लाल रंग की मेरी साइकिल	73
कान देके सुन	75
पुस्तकें: ज्ञान का अथाह सागर	76
मैं मजदूर कहलाता हूँ	78
मेरी प्यारी साइकिल	80
पत्रकारिता एक मिशन	82
बादल भैया	85
मेढ़क मामा गाओ न	87
पहेली	88
गरीबी	90
नींद सुहानी	92
नया शहरी भारत	94

भावनात्मक और नैतिक शिक्षा	95
पापी पेट	98
आजादी	100
मिठाई.....	102
छत्तीसगढ़ राज्य के जिलों के नाम	104
नटखट चूहे	106
बहुरुपिया हैं चंदामामा	107
होंगे सभी निहाल	109
छुट्टी वाला रविवार कब आएगा	110
जंगल में कारोबार.....	113
रक्तदान महादान.....	114
पर्यावरण बचाएं.....	116
हीरा	118
आजादी	120
बड़ी बुआ	122
भारतीय संस्कारों की सरिता, महान परंपरा	124
माता पिता की महिमा	127
फिर से वो बचपन लौटा दो	128
मेरा भारत सोने की चिड़िया.....	130
धरती का स्वर्ग	132
नई टेक्नोलॉजी की पढ़ाई.....	135
माँ की दुआएं.....	137
सज्जनपुरी गाँव	138
हम अपने अंदर को झाँके	139
कुछ लोग खास होते हैं	141

मैं भोली-भाली चिड़िया हूँ.....	143
बंद मुट्ठी लाख की खुल गई तो खाक की.....	145
माटी के तिहार मनाबो.....	147
माँ तो आखिर में माँ होती है.....	149
जिंदगी के सफर में.....	151
तेरे चरणों में माँ तीरथ द्वार है.....	152
बासी हमर परान हे.....	154
माँ तेरे इस प्यार को.....	156
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं.....	158
दादा जी की छड़ी.....	160
शहीद भगत सिंह.....	162
माँ तुम बहुत याद आती हो.....	165
भारत माता एवं भारत के नायक.....	167
खानपान.....	169
गाँव हमारा.....	170
माँ की ममता.....	172
तोता.....	174
किसका कार्य.....	175
चिड़िया.....	177
तितली.....	178
फूल.....	179
धैर्य रखिए.....	180
सूरज.....	183
चंदा.....	184
शिष्टाचार, संस्कार और अच्छा व्यवहार.....	185

आदर्श पिता.....	191
माँ तो बस माँ होती है	193
हर एक किसी एक को सिखाए	195
सशक्त माँ, सशक्त विश्व	200
डिजिटल भारत मेक इन इंडिया.....	205
बूंदें	207
नदियाँ.....	209
छात्रों को एक साथ दो डिग्रियों के अवसर.....	211
बादल.....	214
आता पानी	215
ज्ञान को साझा करना	217
वो भी क्या दिन थे	220
जन औषधि बाल मित्र	222
रवींद्रनाथ टैगोर.....	223
गजल	226
अंधविश्वास.....	228
पीछे छूटा	230
हेलमेट और पत्नी दोनों सुरक्षा कवच	233
पर्यावरण की सुरक्षा करो	236
दरसू दूधवाला.....	237
भारत जल प्रभाव शिखर सम्मेलन	239
बढ़ती गरमी	240
इम्यूनिटी बूस्टर	242
रुख राई.....	246
बेटी	247

सावधान	248
मेरा प्यारा स्कूल	250
जो पास है वही खास है	252
आओ पेड़ लगाएं.....	255
आभार आपका	257
बिन पेड़ों के गाँव	259
नया उजाला	263
चरित्र.....	265
खुशी.....	267
तबादला	269
चंदा और सूरज	272
टप - टप बहे पसीना	274
वीर जवान	276
विज्ञान पहेलियाँ.....	278
ग्लोबल कोविड-19 सम्मिट 2022.....	280
तितली रानी	283
गुरु निष्ठा	284
टूट रहे परिवार.....	286
बुद्धत्व	288
सपनों को सच कर जीना सीखें	290
विश्व परिवार दिवस	292
नशा में नाश	295
मेरे कान्हा.....	297
विवाह	299
अगर जीतना स्वयं को, बन सौरभ तू बुद्ध	300

काली चिड़िया करे सुभोर	303
परिवर्तन	305
नौतपा.....	306
कथा कहानी कह	308
चित्र देख कर कहानी लिखो	310
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी	310
राहुल का प्रायश्चित	310
मनोज कुमार पाटनवार द्वारा भेजी गई कहानी	311
कैद पक्षी का दर्द	311
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र	311
भाखा जनऊला	313

दान

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

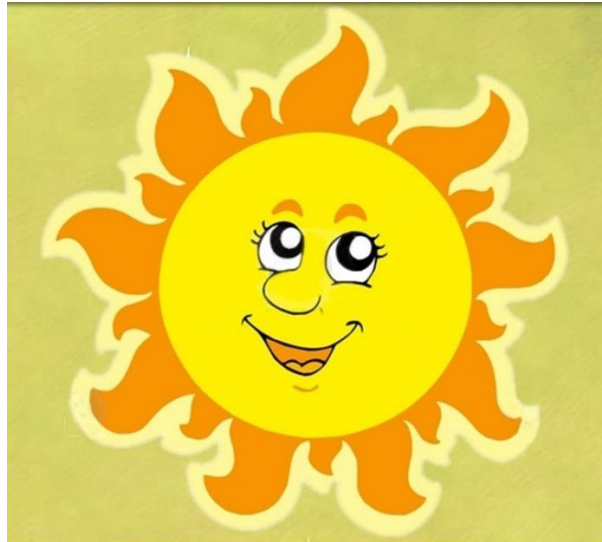


आओ सभी हम साथ में, आगे बढ़ायें हाथ जी.
कर ले जरा सा दान जी, दे दे सभी का साथ जी.
भूखे खड़े बच्चें यहाँ, रोटी नसीब न होत है.
वो रात भर है जागते, आँसू बहाकर रोट है.

आये यहाँ संसार में, थोड़ा कमा लो पुण्य जी.
जाना सभी को एक दिन, होना सभी को शून्य जी.
संस्कार है यह प्यार है, खोना नहीं ये धर्म को.
जागो उठो आगे बढ़ो, छोड़ो नहीं ये कर्म को.

सूरज दादा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा



सूरज दादा सबको भाते,
धूप धरा पे खूब लुटाते.

उठते सोते सदा नियम से,
कभी नहीं छुट्टी पे जाते.

पानी लेकर सागर जी से,
बरखा वाले मेघ बनाते.

फिर मेघों की बरसातों से,
सागर जी को जल लौटाते.

इसी जल चक्र से चलती है,
धरती के जीवन की धारा.

लड़की

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा



दिखती भोली गैया है,
लड़की बड़ी लड़ैया है.

भूख लगे रोती गाती,
वरना देवी मइया है.

गोल गोल सूरत प्यारी,
लड़की सोन चिरैया है.

पीती दूध मजे से वो,
पर वो नहीं बिलैया है.

तितली उसको भाती है,
उसकी सखी चिरैया है.

पंचतंत्र की कथाएँ

बगुला भगत और केकड़ा



प्राचीन समय में एक वन प्रदेश में बहुत बड़ा तालाब था. वहां प्रत्येक प्रकार की सामग्री होने के कारण अत्यधिक जीव रहते थे, जिसमें मछलियां, केकरा बुगला पक्षी आदि रहते थे. उसी तालाब के किनारे एक आलसी बुगला रहता था.

उसकी आंखें कमजोर हो गई थी. उसे शिकार करने के लिए खूब मेहनत करनी पड़ती थी जो उससे होती नहीं थी. वह सदैव ऐसा उपाय सोचता कि मुझे बिना मेहनत के भोजन मिलता रहे. एक दिन उसे ऐसा उपाय सूझा और उसे वह आजमाने के लिए तालाब के किनारे खड़ा होकर आंसू बहाने लगा.

तालाब में से एक केकड़ा निकला और बोला “मामा आज आप शिकार करने के बजाए, यहां खड़े होकर आंसू क्यों बहा रहे हो? क्या बात हो गई.

बुगले ने उत्तर दिया “पुत्र मैंने पाप का मार्ग छोड़ दिया है. अब मुझे आत्मज्ञान हो चुका है. अतः मैंने शिकार करना छोड़ दिया है. मैं पास आई मछलियों को भी नहीं पकड़ रहा हूं.”

केकड़ा बोला मामा “इस प्रकार तो आप भूखे मर जाओगे.”

बुगला भरे हुए गले के साथ बोला “ऐसा जीवन जी के भी क्या करना है. वैसे भी हम सबको जल्दी ही मरना है. मैंने अपनी दूरदृष्टि लगाकर पता लगाया है कि यहां बारह वर्ष का लंबा सूखा पड़ने वाला है.”

केकड़े ने बगुले की बात तालाब के सारे जीवों को बता दी. सारे जीव इस बात से चिंतित होकर बगुले के पास दौड़े चले आए और बोले ‘भगत मामा, अब हम सब को कोई बचा सकते हैं वह आप हैं. आप अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करके इस समस्या से हम सबको छुटकारा दिलाइए.’

बगुले ने कुछ देर सोचने के पश्चात सभी को बताया कि यहां से कोसों दूर एक तालाब है, जिसमें हर समय झरने का पानी गिरता रहता है, वह कभी नहीं सूखता. यदि सारे जीव उस तालाब में पहुंच जाए तो सभी का जीवन बच सकता है.

किंतु अब उन सबके सामने यह समस्या आ गई कि उस तालाब पर पहुंचा कैसे जाए? इस समस्या का निदान भी बगुले ने कर दिया. वह बोला मैंने जीवन में कई पाप किए हैं. अब मैं उनका प्रायश्चित्त करने के लिए जीवों की सेवा में लग गया हूं. अतः मैं एक-एक करके सभी जीवों को अपनी पीठ पर बिठाकर उस तालाब तक पहुंचाऊंगा.

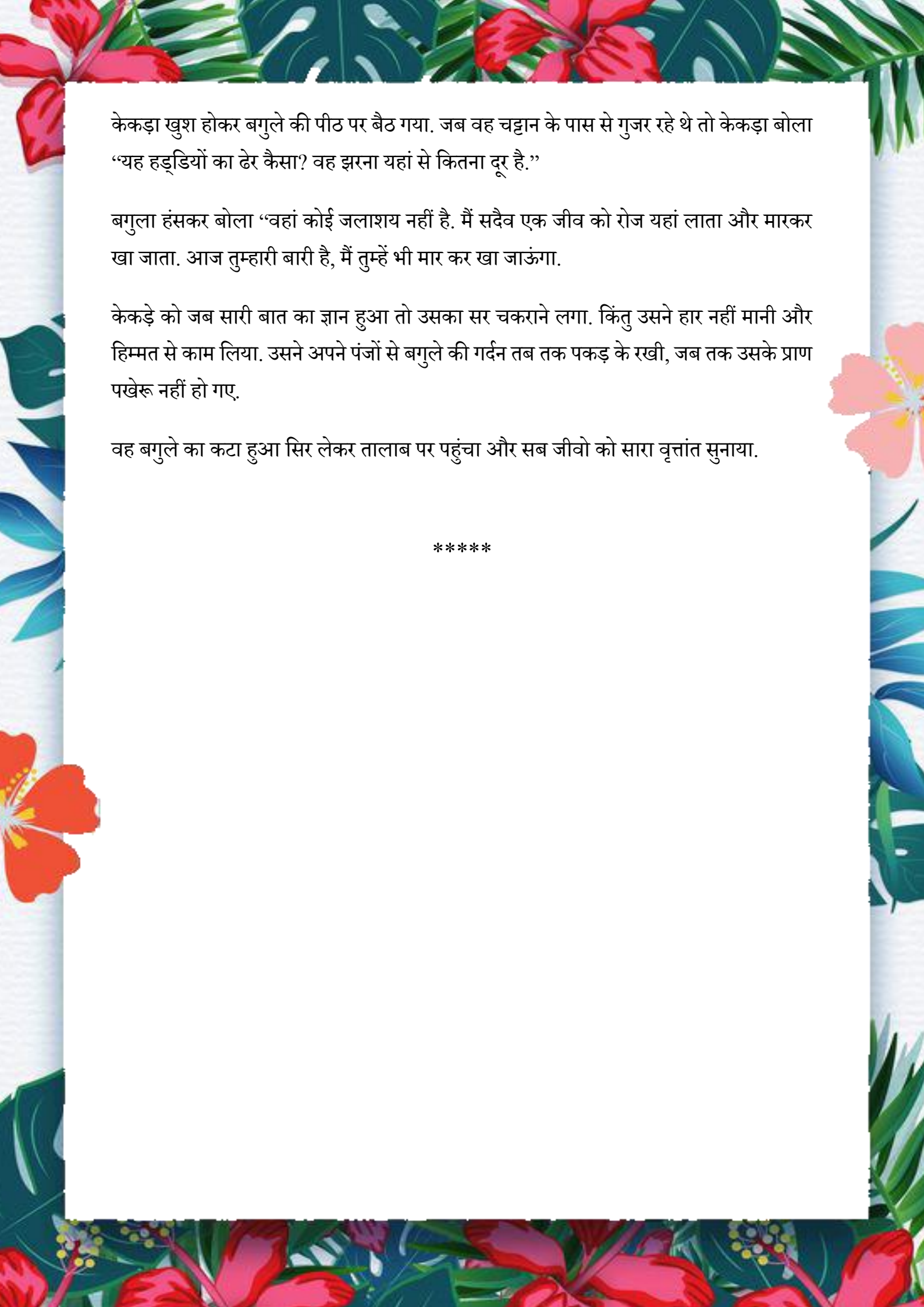
बगुले की बात सुनकर सभी जीव बगुले की जय-जयकार करने लगे.

अब तो बगुले की मौज हो गई. बगुला रोज एक जीव को अपनी पीठ पर बैठा कर उड़ कर कुछ दूर ले जाता और एक चट्टान पर पटक कर मारकर खा लेता. कभी-कभी तो भगत जी दो-दो फेरे भी कर लेते. रोज बिना मेहनत किए हुए शिकार मिलने के कारण बगुले की आंखें तेज हो गईं शरीर में चमक आ गई और पंख भारी हो गए. दूसरे जीव बगुले को देख कर बोले देखो दूसरों की सेवा करने का असर बगुले के शरीर पर हुआ है.

बगुला बहुत ही प्रसन्न रहने लगा और सोचता रहता. इस दुनिया में कितने मूर्ख भरे पड़े हैं. जो सब पर विश्वास कर लेते हैं. ऐसी दुनिया में अगर थोड़ी चालाकी से काम लिया जाए तो मजे ही मजे हैं. बिना किसी मेहनत के अपना कार्य निकाला जा सकता है और बैठे-बैठे पेट भरने का भोजन मिल जाए तो सोचने का बहुत अधिक समय मिल जाता है.

कई दिन यह क्रम चलता रहा. केकड़े ने कहा “मामा सभी की बारी आ चुकी है, लेकिन मेरी बारी अब तक नहीं आई है मेरी बारी कब आएगी.”

बगुला बोला “आज तेरा ही नंबर लगाते हैं, आ मेरी पीठ पर बैठ जा.”



केकड़ा खुश होकर बगुले की पीठ पर बैठ गया. जब वह चट्टान के पास से गुजर रहे थे तो केकड़ा बोला “यह हड्डियों का ढेर कैसा? वह झरना यहां से कितना दूर है.”

बगुला हंसकर बोला “वहां कोई जलाशय नहीं है. मैं सदैव एक जीव को रोज यहां लाता और मारकर खा जाता. आज तुम्हारी बारी है, मैं तुम्हें भी मार कर खा जाऊंगा.

केकड़े को जब सारी बात का ज्ञान हुआ तो उसका सर चकराने लगा. किंतु उसने हार नहीं मानी और हिम्मत से काम लिया. उसने अपने पंजों से बगुले की गर्दन तब तक पकड़ के रखी, जब तक उसके प्राण पखेरू नहीं हो गए.

वह बगुले का कटा हुआ सिर लेकर तालाब पर पहुंचा और सब जीवों को सारा वृत्तांत सुनाया.

मेरा प्रिय खेल

रचनाकार- निहारिका झा



पकड़म पकड़ा खेल निराला,
हमको लगता बड़ा ही प्यारा.
इसके कितने रूप हैं दिखते,
छुपा छुपी सँग खेल कबड्डी.
और कहीं पर खेल रहे हैं,
नदी पहाड़, या परी पत्थर.

हर खेलों का एक नियम है,
जो पकड़ाए दाम वो देता.
जब होती गर्मी की छुट्टी,
मिलते सब नानी के घर में.
आस- पड़ोस सभी के बच्चें,
सभी को भाता पकड़म पकड़ा.
पकड़म पकड़ा.

हैं हमारे

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



ये धरती नीलगगन
रवि की पहली किरण
चमकते चाँद-सितारे
हैं हमारे हैं हमारे.

हवा, पानी और जंगल
बिजली और बादल
नदी के दोनों किनारे
हैं हमारे हैं हमारे.

पेड़ की हरी डालियाँ
नरम-नरम पत्तियाँ
बगिया के फूल सारे
हैं हमारे हैं हमारे.

इंसानियत

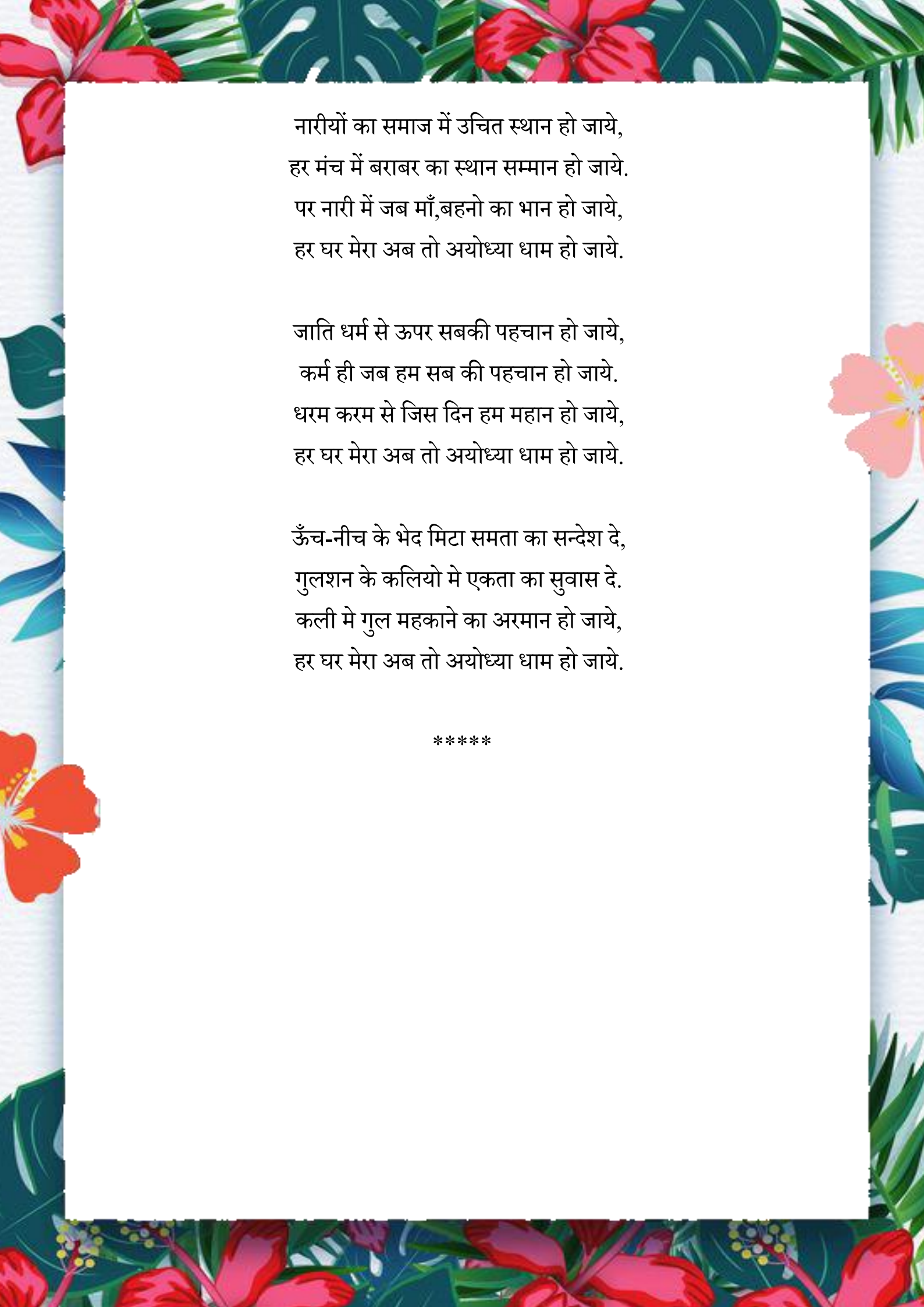
रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



अगर इंसान को इंसानियत का भान हो जाये,
मानव को गर मानवता की पहचान हो जाये.
निश्चित है घर-घर सीता और राम हो जाये,
हर घर मेरा अब तो अयोध्या धाम हो जाये.

मानव में मर्यादा का जिस दिन ज्ञान हो जाये,
जनहित का स्वतः जिस दिन ध्यान हो जाये.
देश हित मर मिटने की जब अरमान हो जाये,
हर घर मेरा अब तो अयोध्या धाम हो जाये.

सज्जनता का जब चहुँ ओर बसेरा हो,
दीपक तो जलेगा चाहे घना अंधेरा हो.
स्वर्णिम लौ से जगमग संसार हो जाये,
हर घर मेरा अब तो अयोध्या धाम हो जाये.



नारीयों का समाज में उचित स्थान हो जाये,
हर मंच में बराबर का स्थान सम्मान हो जाये.
पर नारी में जब माँ,बहनो का भान हो जाये,
हर घर मेरा अब तो अयोध्या धाम हो जाये.

जाति धर्म से ऊपर सबकी पहचान हो जाये,
कर्म ही जब हम सब की पहचान हो जाये.
धरम करम से जिस दिन हम महान हो जाये,
हर घर मेरा अब तो अयोध्या धाम हो जाये.

ऊँच-नीच के भेद मिटा समता का सन्देश दे,
गुलशन के कलियो मे एकता का सुवास दे.
कली मे गुल महकाने का अरमान हो जाये,
हर घर मेरा अब तो अयोध्या धाम हो जाये.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी—

मूर्ख राजा और चतुर मंत्री



एक समय की बात है दियत्स नाम की नगरी एक नदी किनारे बसी हुई थी. वहां का राजा बहुत ही मूर्ख और सनकी था. एक दिन राजा अपने मंत्री के साथ संध्या के समय नदी के किनारे टहल रहा था. तभी उसने मंत्री से पूछा, “मंत्री बताओ यह नदी किस दिशा की ओर और कहाँ बहकर जाती है?”

“महाराज, यह पूर्व दिशा की ओर बहती है और पूर्व की ओर स्थित देशों में बहकर समुन्द्र में मिल जाती है.”, मंत्री ने उत्तर दिया. यह सुनकर राजा बोला, “यह नदी हमारी है, और इसका पानी भी हमारा है, क्या पूर्व में स्थित देश इस नदी के पानी का उपयोग करते हैं.”

“जी, महाराज, जब नदी उधर बहती है तो करते ही होंगे.”, मंत्री ने उत्तर दिया. इस पर राजा बोला, “जाओ नदी पर दीवार बनवा दो, और सारा का सारा पानी रोक दो, हम नहीं चाहते है की पूर्व दिशा में स्थित देशों को पानी दिया जाये.”

“लेकिन, महाराज इससे हमे ही नुकसान होगा.”, मंत्री ने उत्तर दिया. “नुकसान! कैसा नुकसान? नुकसान तो हमारा हो रहा है, हमारा पानी पूरब के देश मुफ्त में ले रहे हैं. और तुम कहते हो की नुकसान हमारा ही होगा? मेरी आज्ञा का शीघ्र से शीघ्र पालन करो.”, राजा गुस्से में बोला.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

मनोज कुमार पाटनवार द्वारा पूरी की गई कहानी

मंत्री तुरंत कारीगरों को बुला लाया और नदी पर दीवार बनाने के काम शुरू करवा दिया. कुछ ही दिनों में दीवार बन कर तैयार हो गयी. राजा बहुत खुश हुआ. पर उसकी मूर्खता की वजह से कुछ समय बाद नदी का पानी शहर के घरों में घुसने लगा. लोग अपनी परेशानी लेकर मंत्री के पास आये. मंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया की वह सब कुछ ठीक कर देगा.

मंत्री ने एक योजना बनाई . महल में एक घंटा बजाने वाला आदमी रहता था. वह हर घंटे पर समय के अनुसार घंटा बजा देता था, जिससे सभी को समय का पता चल जाता था. मंत्री ने उस आदमी को आदेश दिया की वह आज रात को जितना समय हो उसका दोगुना घंटा बजाये. आदमी ने ऐसा ही किया; जब रात के तीन बजे तो उसने 6 बार घंटा बजाया, जिसका अर्थ था कि सुबह के 6 बज गए हैं.

घंटा बजते ही सभी लोग उठ गए. राजा भी उठ गया और बाहर आ गया. वहा पर मंत्री मौजूद था, राजा ने मंत्री से पूछा, “मंत्री अभी तक सुबह नहीं हुई है क्या? और सूरज अभी तक निकला क्यों नहीं है?” मंत्री ने उत्तर दिया, “महाराज सुबह तो हो चुकी है, परन्तु सूरज नहीं निकला है, क्योंकि सूरज पूरब की ओर से निकलता है, शायद पूरब के देशों ने सूरज को रोक दिया है क्योंकि हमने उनका पानी रोक दिया था, इसीलिए अब हमारे राज्य में कभी सूरज नहीं निकलेगा.”

राजा बहुत चिंतित हुआ और बोला, “क्या अब कभी भी हमारे देश में सूरज नहीं निकलेगा ? हम सब अन्धकार में कैसे रहेंगे? इसका उपाय बताओ मंत्री?”

“महाराज, यदि आप नदी का पानी छोड़ दें, तो शायद वे भी सूरज छोड़ देंगे.”, मंत्री ने उत्तर दिया.

राजा ने तुरंत मंत्री को हुक्म दिया की वह नदी पर बनाई गयी दीवार को तुड़वाए. मंत्री ने राजा की आज्ञा का पालन किया और कारीगरों को आदेश दिया कि दीवार को तोड़ दिया जाये. कारीगरों ने दीवार तोड़ दी. और जैसे ही दिवार टूटी सचमुच सूर्योदय का समय हो चुका था और दिव्यमान सूरज चारों तरफ अपनी लालिमा बिखेर रहा था.

सूरज को उगता देख राजा बहुत खुश हुआ और मंत्री को इनाम दिया और कहा, “तुम्हारी वजह से आज हम फिर सूरज को देख पाये है. अब हमारे राज्य में कभी अँधेरा नहीं रहेगा.”

मंत्री ने मासूम सा मुँह बनाकर जवाब दिया, “महाराज, यह तो मेरा फ़र्ज था.”

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

राजा की आज्ञा का पालन करते हुए मंत्री, तुरंत कारीगरों को बुला लाया और नदी पर दीवार बनाने के काम शुरू करवा दिया. कुछ ही दिनों में दीवार बनकर तैयार हो गई. उसे देखकर राजा बहुत खुश हुआ. परंतु उसकी मूर्खता की वजह से कुछ समय बाद नदी का पानी शहर के घरों में घुसने लगा. सड़कों पर पानी भर गया. जिसकी वजह से एक स्थान से दूसरे स्थान लोगों का आना-जाना अवरुद्ध हो गया. पानी भरने से चारों तरफ हाहाकार मच गया.

लोग अपनी परेशानी लेकर मंत्री के पास आए. मंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह सब कुछ ठीक कर देगा. मंत्री ने गुप्तचरो एवं बुद्धजीवी लोगों से मिलकर एक योजना बनाई. राजा के महल के चारों ओर मोटे कपड़ों से घेरा (बाढ़) बनवाया, साथ ही महल के रोशनदान खिड़कियों को भी पूरी तरह से ढकवा दिया गया ताकि महल के अंदर रोशनी ना पहुँच सके.

योजना अनुसार मंत्री कुछ लोगों के साथ प्रातः राज दरबार में पहुँच कर राजा से कहा-" महाराज की जय हो, महाराज, नदी में दीवार बनाने के कारण पूरे राज्य में पानी घुस गया है. चारों तरफ लोगों का जीवन मुश्किल में पड़ गया है, हमें कुछ करना चाहिए.", राजा ने कहा -"हाँ मैं उन्हीं के बारे में मैं सोच रहा हूँ". तभी राजा घड़ी को देखकर मंत्री से कहता है-अभी सुबह के आठ बज चुके हैं लेकिन अंधेरा ही अंधेरा दिखाई दे रहा है. सूरज की रोशनी अभी तक महल में क्यों नहीं आई है? मंत्री ने कहा-महाराज, सुबह तो हो चुकी है परंतु सूरज नहीं निकला है क्योंकि सूरज पूरब की ओर से निकलता है. गुप्त सूत्रों से पता चला है कि पूरब के देशों ने सूरज को रोक दिया है क्योंकि हमने उनका पानी रोक दिया है इसलिए अब हमारे राज्य में कभी भी सूरज नहीं निकलेगा.

राजा बहुत चिंतित हुआ और बोला-"अब कभी भी हमारे देश में सूरज नहीं निकलेगा? हम सब अंधकार में कैसे रहेंगे? इसका उपाय बताओ मंत्री?" मंत्री ने राजा से कहा- "महाराज, यदि आप नदी के पानी छोड़ दें तो शायद वे भी सूरज को छोड़ देंगे." राजा ने तुरंत मंत्री को हुक्म दिया कि वह नदी पर बनाई गई दीवार को तुड़वाएं." मंत्री ने राजा की आज्ञा का पालन किया और कारीगरों को आदेश दिया कि दीवार को तोड़ दिया जाए. कारीगरों ने दीवार तोड़ दी और जैसे ही दीवार टूटी, मंत्री गुप्तचरों से इशारा कर महल के चारों ओर ढके हुए कपड़े को खोलवा दिया. कपड़ा खोलते ही चारों तरफ सूरज की रोशनी से पूरा राजमहल प्रकाशमय हो गया. सूरज को उगता देख राजा बहुत खुश हुआ और मंत्री को इनाम देते हुए कहा- "तुम्हारी वजह से आज हम फिर सूरज को देख पाए हैं. अब हम ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्राकृतिक चीजों को छेड़खानी नहीं करेंगे. हम ऐसा कार्य नहीं करेंगे जिसकी वजह से हमें शर्मिंदा होना पड़े."

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

रमन की चतुराई

एक बार की बात है हंसपुर गाँव में एक बलदेव नाम का एक मुखिया रहता था. वह बहुत ही कंजूस किस्म का था और लोगों की भलाई के लिए पैसे खर्च करने से बचता था. एक बार उस गाँव में बहुत सूखा पड़ गया जिससे लोगों को पाने के पानी के लिए बहुत दिक्कत हो रही थी.

गाँव के लोग दूसरे गाँव से पानी लाकर कुछ दिनों तक अपना काम चलाते रहे लेकिन उसके बाद उन्हे भी पानी देने से मना कर दिया. इसके बाद गाँव के लोग मुखिया के पास गए और उसको बोला आप गाँव में एक कुआँ खुदवा दो जिससे गाँव के लोग सूखे की स्थिति में उससे पानी पी सके.

मुखिया ने कहा कुआँ खुदवाने के लिए बहुत पैसे लगेंगे इतने पैसे मेरे पास नहीं है. यह कहकर वह चला गया. गाँव में रमन नाम का एक चतुर लड़का रहता था. उसने गाँव वालों से कहा हम गाँव वालों को ही मिलकर कुआँ खोदना चाहिए.

उसकी इस बात को सब गाँव वाले मान गए। सभी गाँव वालों ने पैसे इकट्ठे किये और कुआँ खुदाई का काम शुरू किया. कुछ दिन कुआँ खोदने के बाद नीचे कुँए में एक बहुत बड़ा पत्थर आ गया. जिसके कारण कुआँ खोदने का काम रुक गया.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

अपनी करनी


रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



खुद ही खुद का स्थान जँहा में बनाना पड़ता है,
अपनी लड़ाई खुद ही ज़माने से लड़ना पड़ता है.
कोई किसी के लिए कुछ भी करता नहीं,
अपनी करनी अपने को ही भरना पड़ता है.
खुद ही खुद का स्थान जँहा में बनाना पड़ता है,

लाख भर ले दम्भ कोई मुश्किल में साथ देने का,
कर ले वादा हजार सेहरा में साथ-साथ चलने का.
विपदा में तो अपना साया भी साथ देने से डरता है,
खुद ही खुद का स्थान जँहा में बनाना पड़ता है.

ज़िन्दगी सफर है रास्ते भर पहचान बनाना है,
जीवन का नाम ही जग से आना और जाना है.
संघर्ष कर जीवन में पहचान बनाना पड़ता है,
खुद ही खुद का स्थान जँहा में बनाना पड़ता है.



दृढ़ निश्चय के साथ जो मंजिल की ओर बढ़ता है,
जमाने की दुश्चारियों से हरगिज जो ना डरता है.
उसके कदमों के निशां मिल के पत्थर बनता है,
खुद ही खुद का स्थान जँहा में बनाना पड़ता है.

मुक्कमल जँहा की तलाश ना कर मुसाफिर,
ये हसीन ज़िन्दगी कहाँ मिलेगी दुबारा फिर.
आँधी हो या तूफां सफर खुद ही करना पड़ता है,
खुद ही खुद का स्थान जँहा में बनाना पड़ता है.

ज़िन्दगी

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



ना पाने की खुशी है ना खोने का गम है,
ये ज़िन्दगी, जितना जीओ उतना कम है.

कुछ उलझन जीवन के सुलझते नहीं,
कुछ इतने सुलझे की कभी उलझते नहीं.

जीवन सफर पल-पल एक पहेली सी है,
सुख और दुख मानो इनके सहेली सी है.

जीवन को कैसे जीये, जीना भी कला है,
आना-जाना जग का क्रमिक सिलसिला है.

जब तक साँसो की जीवन पर एहसान है,
तब तक धरा पर तेरी नाम ही पहचान है.

शायद यही जीवन है जो समझ में आता नहीं,
समझ आ जाये वो मौत जो किसी को भाता नहीं.

शिक्षक और सड़क

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



आदिकाल से संस्कृति, मानवीय सभ्यता, मान-सम्मान की संप्रभुता का अभूतपूर्व खजाना भारत माता की मिट्टी में समाहित रहा है. ऊपर से सोने पर सुहागा कि हमारे बड़े बुजुर्गों, बुद्धिजीवियों सहित आध्यात्मिकता के माध्यम से कहावतों, वचनों, शब्दों की ऐसी अनमोल पंक्तियाँ हमारे पास स्वर्ण रूपी संयोजित हैं, जिनके एक एक शब्द में मोती भरे हैं. अगर भारत का हर नागरिक इन पंक्तियों का ज्ञान अपने जीवन में अपनाकर उसके अनुसार अपने जीवन को ढाले तो यह विचार, कहावतें उन पर आ रहे विपरीत समय में एक मजबूत ढाल का काम कर सकते हैं. ऐसे अनेक पंक्तियाँ, शब्द, वाक्यांश हैं. हम आज,, शिक्षक और सड़क दोनों एक एक जैसे हैं जो खुद जहाँ हैं वहीं रहते हैं मगर दूसरों को उनकी मंजिल तक पहुँचा ही देते हैं,, इसपर कुछ बातों को साझा कर शिक्षा ग्रहण करने की कोशिश करेंगे

साथियों बात अगर हम शिक्षक और सड़क की करें तो दोनों हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आज के परिपेक्ष्य और डिजिटल भारत में, जैसे हमारा साँस लेना आवश्यक है. इसके बगैर हम जी नहीं सकते है. वैसे ही शिक्षक और सड़क के बिना विद्यार्थी और लोग अधूरे है. शिक्षक और सड़क नहीं होंगे तो वह विकास प्राप्त करने में असमर्थ हो जाएँगे.

शिक्षक एक व्यक्ति को कुशल नागरिक बनाता है. शिक्षक वह प्रकाश है जो सभी की जिन्दगी में रोशनी भर देता है. शिक्षक मोमबत्ती रूपी ज्ञान का उजाला है जो लोगों को अँधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाती है. शिक्षक की भूमिका किसी से छिपी नहीं है. शिक्षक अपनी शिक्षा के ज़रिये व्यक्ति

समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है. उनकी दी गई शिक्षा की वजह से व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार होता है जिसकी वजह से वह अपनी जिन्दगी में कुछ कर गुजरने की चाहत रखता है.

शिक्षक एक खूबसूरत आईने की तरह है जिससे व्यक्ति अपने वजूद की पहचान कर पाता है. शिक्षा वह मज़बूत ताकत है जिससे हम समाज को सकारात्मक बदलाव की ओर ले जा सकते हैं. शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शक है. जिन्दगी के कठिन मोड़ पर जब हम रास्ता भटक जाते हैं तो कोई न कोई इंसान शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाता है. कम उम्र में बच्चे का जीवन गीली मिट्टी की तरह होता है. तब शिक्षक एक कुम्हार की तरह उसे शिक्षा से एक मज़बूत आकार प्रदान करता है.

शिक्षक विद्यार्थियों को बेहतर भविष्य के लिए तैयार करते हैं. विद्यार्थी के मन में विषय संबंधित और जीवन संबंधित कोई भी दुविधा आये तो शिक्षक उस दुविधा को हल करने में हर मुमकिन कोशिश करता है.

शिक्षक की मेहनत की वजह से कोई डॉक्टर ,कोई इंजीनियर कोई वकील , सीए, पायलट ,सैनिक इत्यादि बन कर अपनी मंजिल पर पहुँच जाते हैं. अगर शिक्षक नहीं होंगे तो इन पदों पर कोई कार्यरत नहीं हो पाएगा. शिक्षक इंसान को अच्छे और बुरे का फर्क करना सिखाते हैं. वह अधर्म घृणा,ईर्ष्या ,हिंसा से विद्यार्थियों को दूर रहना सिखाते हैं. शिक्षक शिष्टता सहनशीलता ,धैर्य से जीवन के संघर्षों को पार करना सिखाते हैं. इसलिए हम कह सकते हैं कि शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी मंजिल तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण रोल अदा करता है.

किसी भी देश के आर्थिक विकास में यातायात एवं संचार के साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. देश का कृषि, व्यापार व औद्योगिक विकास परिवहन के साधनों पर ही निर्भर करता है. परिवहन एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है. आज के परिप्रेक्ष्य में बिना सड़क के मानवीय जीवन अधूरा है. इसके बिना जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ाने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता. हालाँकि हजारों या सैकड़ों वर्ष पहले हमारे पूर्वज उन परिस्थितियों से दो चार हुए होंगे पर अभी आधुनिक डिजिटल युग में यह संभव नहीं.

साथियों बात अगर हम सड़क निर्माण के विशाल चरणों और सड़क के महत्व की करें तो, सड़क निर्माण में कार्य के कई चरण हैं, जैसे क्षेत्र सर्वेक्षण, मिट्टी सर्वेक्षण, यातायात सर्वेक्षण, ज्यामितिक डिज़ाइन, संरचनीय डिज़ाइन,और वास्तविक निर्माण क्षेत्र. भारत में सड़कें हाथों के श्रम से, या यंत्रों से, बनाई जाती है. पहले देश में मजदूर बहुतायत से मिलते थे जिसके कारण शारीरिक श्रम का ही अधिकतर प्रयोग किया जाता है, परंतु अब सब मशीनीकरण हो गया है.

भारतीय सड़कों का जाल विश्व का सबसे बड़ा सड़क जाल है। सड़क परिवहन छोटी एवं मध्यम दूरी तय करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह विश्वसनीय, तेज, लचीला तथा मांगपूरित तरीका है, जो घर-घर जाकर सेवाएँ उपलब्ध करा सकता है। यह गाँवों को बाजारों, कस्बों, प्रशासनिक व सांस्कृतिक केन्द्रों से जोड़ता है और इस प्रकार उन्हें देश की मुख्य धारा में शामिल करता है। सड़क परिवहन सुदूरवर्ती पहाड़ी, मरुस्थलीय, जनजातीय तथा पिछड़े क्षेत्रों को जोड़ता है। सड़कें भी विभिन्न प्रकार के लोगों को अपनी मंजिल तक पहुँचाती है जैसे, राष्ट्रीय राजमार्ग-ये राजमार्ग देश की चौड़ाई एवं लंबाई के अनुसार बिछाये गये हैं। ये राज्यों की राजधानियों, बंदरगाहों, औद्योगिक व खनन क्षेत्रों तथा राष्ट्रीय महत्व के शहरों एवं कस्बों को जोड़ते हैं। प्रांतीय राजमार्ग- ये एक राज्यके भीतर व्यापारिक एवं सवारी यातायात के मुख्य आधार होते हैं। ये राज्य के प्रत्येक कस्बे को राज्य की राजधानी, सभी जिला मुख्यालयों, राज्य के महत्वपूर्ण स्थलों तथा राष्ट्रीय राजमार्ग से संलग्न क्षेत्रों के साथ जोड़ते हैं। जिला सड़कें: ये सड़कें बड़े गाँवों एवं कस्बों को एक दूसरे से तथा जिला मुख्यालय से जोड़ती हैं। ये अधिकांशतया कच्ची होती हैं। इनका निर्माण एवं रख-रखाव जिला परिषदों या सम्बंधित सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा किया जाता है। ग्रामीण सड़कें: ये सड़कें गाँवों को जिला सड़कों से जोड़ती हैं। ये सड़कें प्रायः कच्ची, संकरी तथा भारी वाहन यातायात के अनुपयुक्त होती हैं। इनका निर्माण एवं रख-रखाव ग्राम पंचायतों द्वारा किया जाता है। इन चारों के अतिरिक्त, सड़कों के तीन और अन्य प्रकार हैं- सीमा सड़कें, अंतरराष्ट्रीय राजमार्ग और द्रुत राजमार्ग।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि शिक्षक और सड़क मंजिल तक पहुँचाने के सेतु हैं। शिक्षक और सड़क दोनों एक जैसे होते हैं जो खुद जहाँ है वहीं रहते हैं मगर दूसरों को उनकी मंजिल तक पहुँचा देते हैं। किसी भी देश के आर्थिक, बौद्धिक विकास में शिक्षक और सड़क की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करना वर्तमान समय की मांग है।

मेहनत

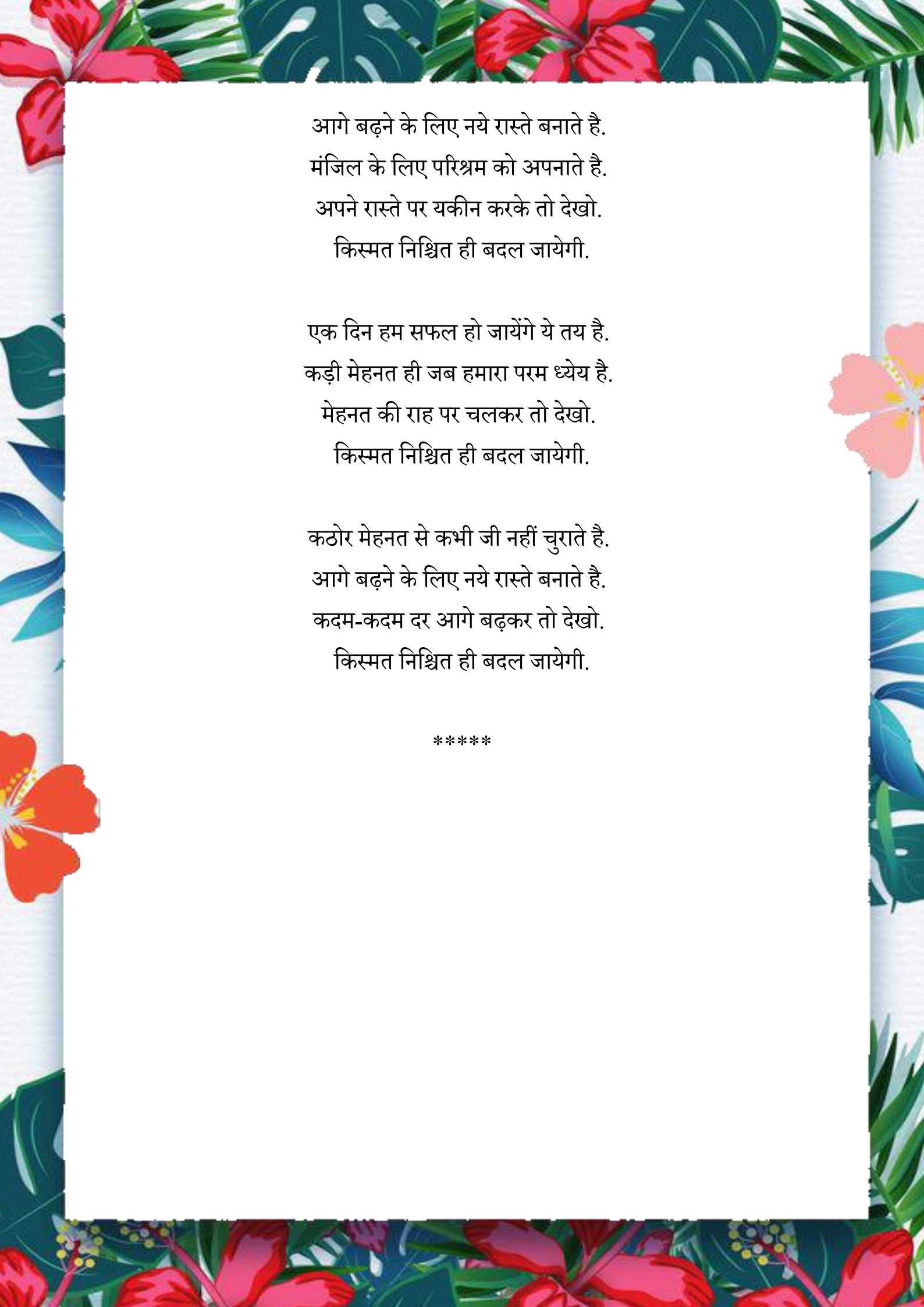
रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



मेहनत पर यकीन करके देखो.
किस्मत निश्चित ही बदल जायेगी.

भाग्य पर रोने वाले मिलेंगे सभी
इरादे हो नेक किस्मत बदलेगा अभी.
विश्वास खुद पर करके तो देखो.
किस्मत निश्चित ही बदल जायेगी.

भाग्य के भरोसे ही बैठे रहने से.
कुछ होता नहीं किसी के कहने से.
सफलता मिलता नहीं, बिना परिश्रम के.
परिश्रम पर यकीन करके देखो.
किस्मत निश्चित ही बदल जायेगी.



आगे बढ़ने के लिए नये रास्ते बनाते है.
मंजिल के लिए परिश्रम को अपनाते है.
अपने रास्ते पर यकीन करके तो देखो.
किस्मत निश्चित ही बदल जायेगी.

एक दिन हम सफल हो जायेंगे ये तय है.
कड़ी मेहनत ही जब हमारा परम ध्येय है.
मेहनत की राह पर चलकर तो देखो.
किस्मत निश्चित ही बदल जायेगी.

कठोर मेहनत से कभी जी नहीं चुराते है.
आगे बढ़ने के लिए नये रास्ते बनाते है.
कदम-कदम दर आगे बढ़कर तो देखो.
किस्मत निश्चित ही बदल जायेगी.

श्रमजीवी नारी

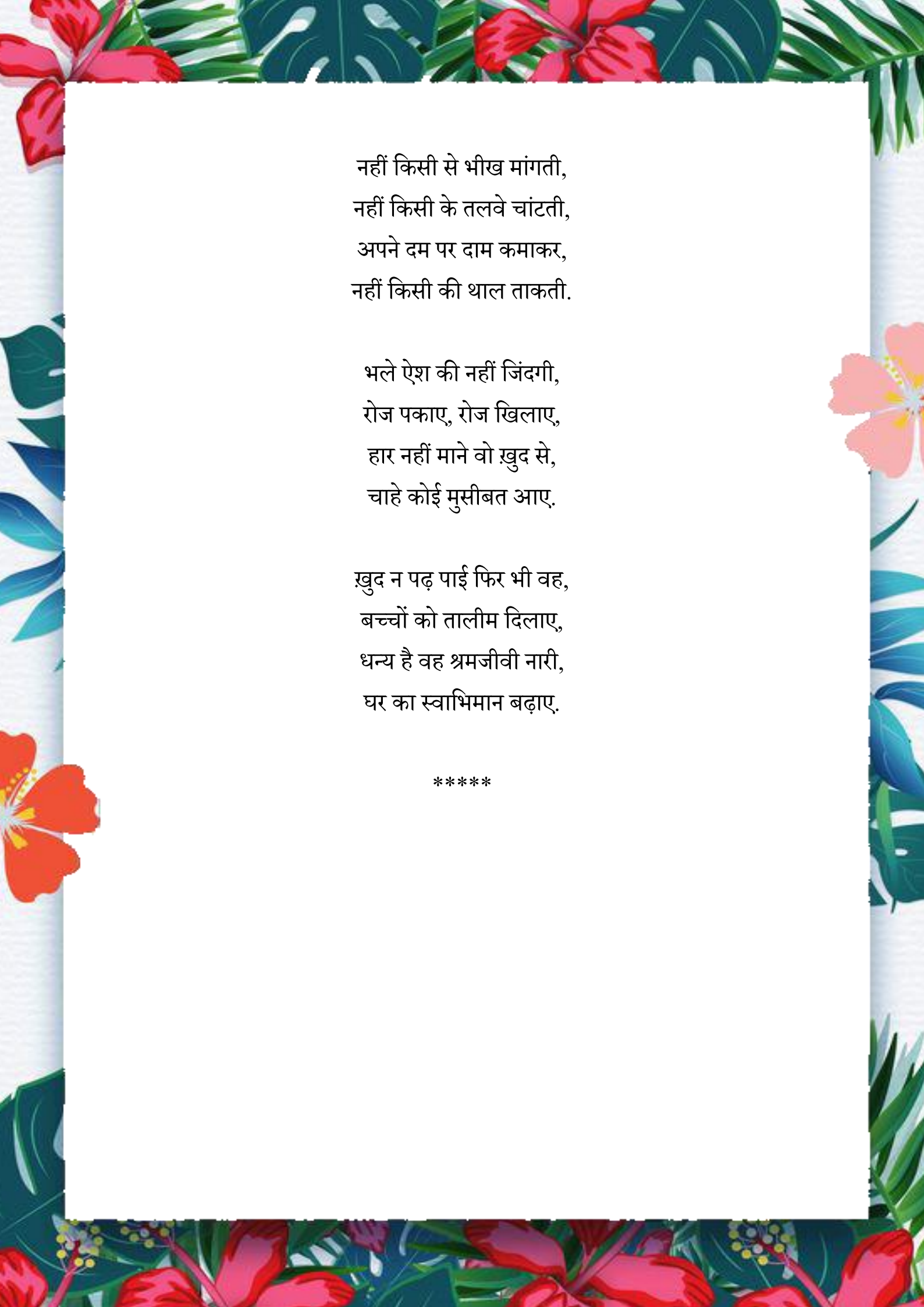
रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"



मिट्टी से सनी, मिट्टी की बनी,
मिट्टी अपने सिर पे उठाए,
सैकड़ों गम, लाखों तकलीफें,
अपने नाज़ुक दिल में दबाए.

मेहनत से बच्चों को पालती,
चेहरे पर मुस्कान सजाए,
धन्य है वह श्रमजीवी नारी,
घर का स्वाभिमान बढ़ाए.

तन जर्जर पर, मन से चुस्त है,
सुकून है कि बच्चे तंदुरुस्त हैं,
शौहर पर वह बोझ नहीं है,
साहस दिल में भी एकमुश्त है.



नहीं किसी से भीख मांगती,
नहीं किसी के तलवे चांटती,
अपने दम पर दाम कमाकर,
नहीं किसी की थाल ताकती.

भले ऐश की नहीं जिंदगी,
रोज पकाए, रोज खिलाए,
हार नहीं माने वो खुद से,
चाहे कोई मुसीबत आए.

खुद न पढ़ पाई फिर भी वह,
बच्चों को तालीम दिलाए,
धन्य है वह श्रमजीवी नारी,
घर का स्वाभिमान बढ़ाए.

पुतला-पुतली

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव, विदिशा



ओ रे पुतले! कहाँ जाने की तैयारी है?

सूने कमरे के एक कोने में पगड़ी बाँधे अचकन पहने 'काठ के पुतले' से 'काठ की ही पुतली' ने कहा. तू तो जानती है! हम अपनी मनमर्जी से कहीं नहीं जा सकते. हमें नचाने वाला ही हमें कहीं ले जा सकता है.

पुतले ने लहंगा-ओढ़नी पहनी सजी-धजी पुतली की ओर देखते हुए बुझे स्वर में कहा. कैसा समय आ गया! अब तो हमारी कोई रीझ-बूझ ही नहीं रही. कई-कई दिनों तक ऐसे ही एक कोने में पड़े रहते हैं. कहती पुतली भी उदास हो गयी.

वो भी क्या दिन थे! जब हम एक दिन में ही दस-दस जगह अपना नाच दिखाते थे. बच्चे-बूढ़े, औरत-मर्द सब बच्चे बनकर हमारे नाच और कलाबाजी पर ताली बजाते थे. पुतले ने कहा. उसकी पगड़ी कुछ खिसक गई थी, लेकिन ठीक कौन करे? वह अपने हाथ-पैर तो हिला नहीं सकता था.

तुम्हे याद है? मैं जब नाचती थी तो कई बच्चे भी ठुमके लगाने लगते थे. पुतली ने उत्साह से कहा.

हाँ! और जब मैं घोड़े पर चढ़ कर तलवार चलाता था तो देखने वाले भी डर जाते थे. पुतले ने कहा. वह अपनी मूँछों पर ताव देना चाहता था, लेकिन नहीं दे सका. वह अपनी मर्जी से पलक भी नहीं झपका सकता था तो फिर मूँछों पर ताव भला कैसे दे पाता.

झूठ मत बोलो काला कौवा काट खाएगा. तुमसे कोई नहीं डरता था, बल्कि तुम्हारी ऊलजलूल हरकतें देखकर सब हँसते-हँसते लोटपोट हो जाते थे. पुतली ने उसे चिढ़ाते हुए कहा.

देखो तुम मेरा मुँह मत खुलवाओ. तुम्हारी सारी पोल खोल दूँगा. पुतले ने चिढ़कर कहा.

जाओ जाओ बड़े आए पोल खोलने वाले! मैं भी तो सुनूँ ऐसा क्या जानते हो मेरे बारे में! पुतली भी तैश में आकर बोली.

याद है जब मैं तेरे मायके से तुझे लिवाने आया था! तब अपना लहंगा समेट कर यहाँ-वहाँ गिरती-पड़ती दौड़ती-भागती छिपती फिरती थी. कभी-कभी चुनरी गिर जाती थी. पैर घसीटते देखकर बच्चे पेट दबाकर हँसते थे. पुतले ने उसे चिढ़ाया.

मेरी चुनरी नहीं, तेरी पगड़ी गिरती थी. पुतली ने जोर देकर कहा.

नहीं! मेरी पगड़ी नहीं, तेरी चुनरी गिरती थी. पुतले ने भी जोर देकर कहा.

नहीं! पगड़ी.

नहीं नहीं! चुनरी

चुनरी

पगड़ी

चुनरी

पगड़ी

चुनरी

पगड़ी

दोनों अपनी बात पर अड़े हुए,

चुनरी पगड़ी, चुनरी पगड़ी ही करते रहते अगर वहाँ उनके मालिक का छोटा बेटा, उन दोनों का प्यारा दोस्त और उनका बहुत ख्याल रखने वाला गौतम न आ जाता.

उसके आते ही दोनों की तू तू-मैं मैं बंद हो गई.

कमरे में फिर पहले जैसी शांति छा गई.

आगे कदम

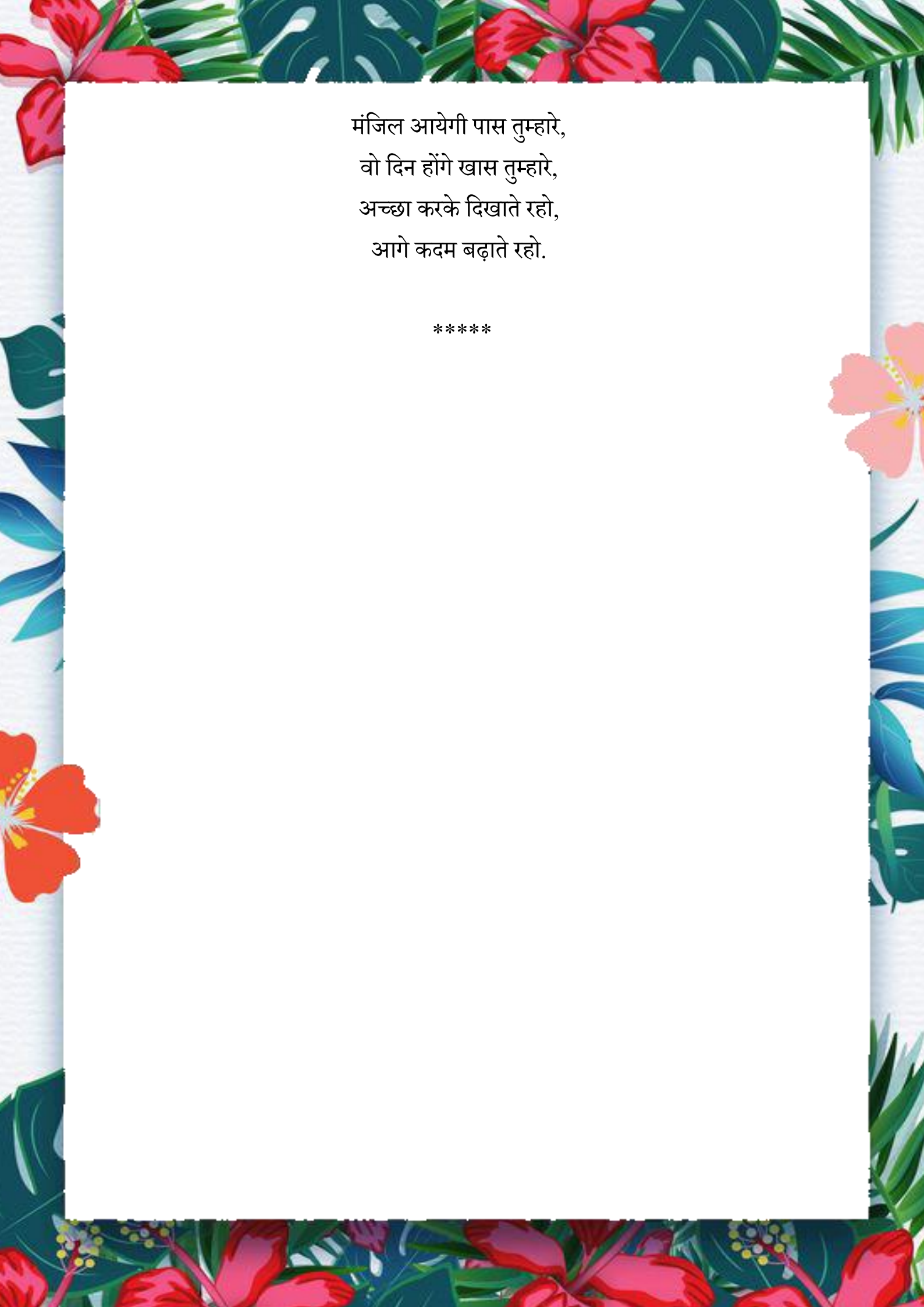
रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



आगे कदम बढ़ाते रहो,
गीत खुशी के गाते रहो.

स्फूर्ति हो तन में,
दृढ़ इरादा हो मन में,
लक्ष्य बड़ा बनाते रहो,
आगे कदम बढ़ाते रहो.

राह सदा सुगम समझो,
खुद को न कम समझो,
हर हाल में मुस्कुराते रहो,
आगे कदम बढ़ाते रहो.



मंजिल आयेगी पास तुम्हारे,
वो दिन होंगे खास तुम्हारे,
अच्छा करके दिखाते रहो,
आगे कदम बढ़ाते रहो.

धरती माँ

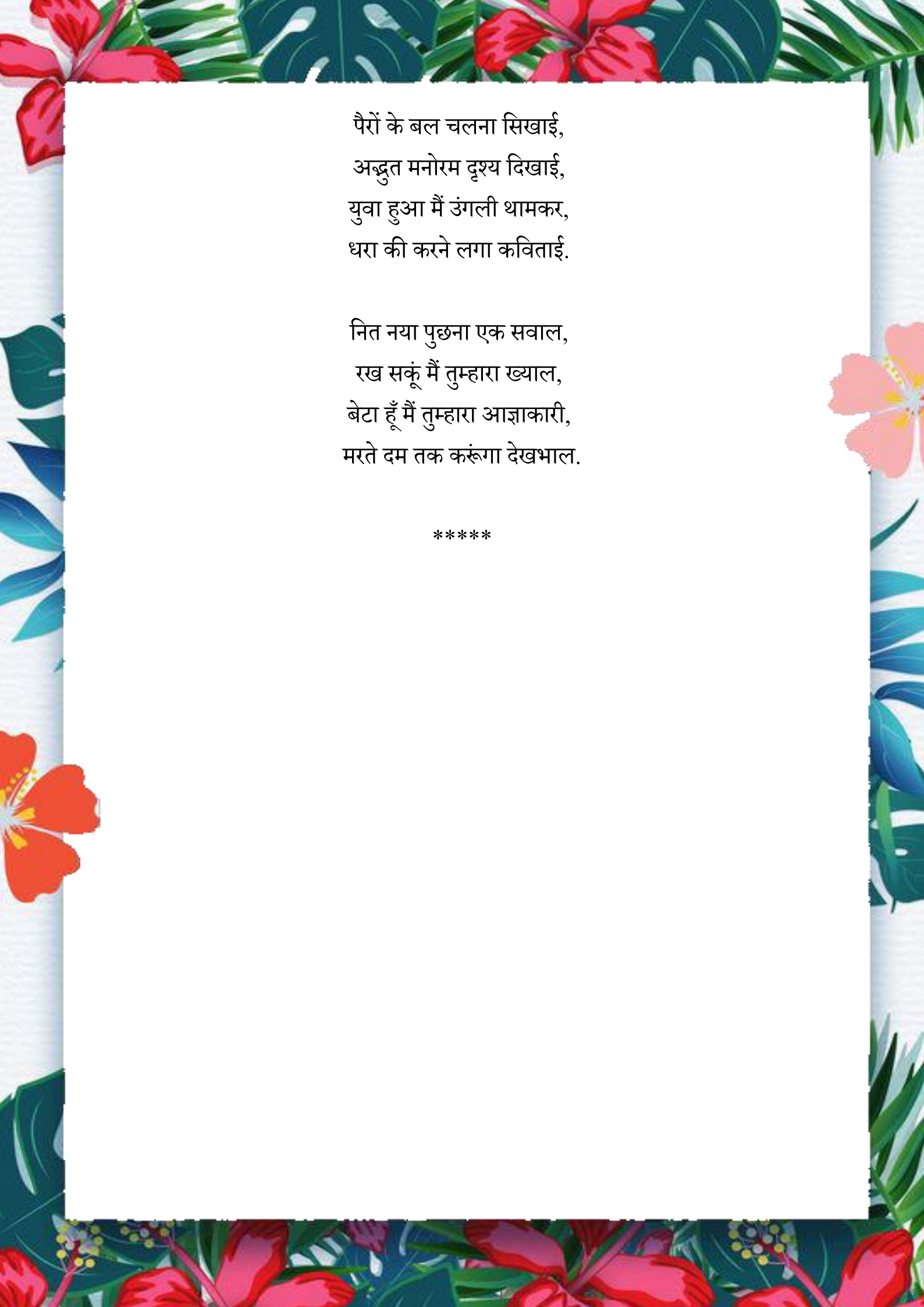
रचनाकार- अशोक कुमार यादव



तू ममता की मूरत है,
मेरी माता की सूरत है,
जननी जन्मभूमि माँ,
मुझे तेरी जरूरत है.

माँ की पेट से निकल,
मैं हो गया था विकल,
अपनी आंचल में लेकर,
किया ये जीवन सफल.

नींद भर सोता हूँ गोद,
लेकर चेहरे में आमोद,
चलता था घुटनों के बल,
खा जाता था मिट्टी खोद.



पैरों के बल चलना सिखाई,
अद्भुत मनोरम दृश्य दिखाई,
युवा हुआ मैं उंगली थामकर,
धरा की करने लगा कविताई.

नित नया पुछना एक सवाल,
रख सकूँ मैं तुम्हारा ख्याल,
बेटा हूँ मैं तुम्हारा आज्ञाकारी,
मरते दम तक करूँगा देखभाल.

विश्व विरासत दिवस

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



विरासत हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. यह हमारी परिवर्तन की यात्रा का प्रमाण है. अपनी समृद्ध विरासत से जुड़कर हम अपने भविष्य पर अधिक प्रभाव प्राप्त करने के लिए अपने अतीत से सीखते हैं. विरासत का संरक्षण एक महत्वपूर्ण कड़ी है.

सांस्कृतिक विरासत, कलाकृतियों और एक समूह या समाज की अमूर्त विशेषताओं की विरासत है जो पिछली पीढ़ियों से विरासत में मिली है, वर्तमान में बनाए रखी गई है और भविष्य की पीढ़ियों के लाभ के लिए प्रदान की गई है. सांस्कृतिक विरासत, एक समुदाय द्वारा विकसित जीवनशैली की अभिव्यक्ति है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चली जाती है जिसमें रीति-रिवाजों, प्रथाओं, वस्तुओं, कलात्मक अभिव्यक्तियों, मूल्यों आदि को शामिल किया जाता है.


भारत में विरासत की विविधता विभिन्न समुदायों के बीच मौजूद संबंधों की प्रकृति को दर्शाती है. उन्होंने एक दूसरे से उधार लिया, जैसे उत्तरी और दक्षिणी भारत की मंदिर वास्तुकला. समुदायों की पहचान भी बहुत गतिशील रही है और विचारों का आदान-प्रदान सुचारु था. यह हमारी विरासत से पता चलता है. यह, यह भी दर्शाता है कि मानव सभ्यता पर मनुष्य के बीच संघर्षों का कितना कठोर प्रभाव पड़ता है. हमारे समाज की कमियों को समय-समय पर चुनौती दी गई, चाहे वह छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध

धर्म के उदय के दौरान हो या मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के दौरान हड़प्पा सभ्यता के दौरान वैवाहिक समाज के अस्तित्व, वैदिक युग से वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा, अशोक के धम्म के तहत बड़ों के लिए सम्मान आदि के साथ एक समृद्ध साँस्कृतिक विरासत पर प्रकाश डाला गया है। यह नैतिकता की संस्कृति विकसित करने में मदद करता है। इस विरासत को संरक्षित करने के प्रयासों से हमें अपनी साँस्कृतिक परंपरा को मजबूत करने में मदद मिलती है जिससे अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत के लिए सॉफ्ट पावर का निर्माण होता है।

नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित करने के प्रयास और अन्य देशों, विशेष रूप से दक्षिण एशियाई देशों से प्राप्त समर्थन हमारी समृद्ध शैक्षिक विरासत को दर्शाता है। यह एक प्रेरणा है कि कैसे भारत दुनिया भर के विद्वानों का केंद्र बन सकता है। यदि गुरु-शिष्य परंपरा को मजबूत किया जाता है तो हमें स्कूलों में, विशेष रूप से सार्वजनिक स्कूलों में शिक्षा की खराब गुणवत्ता के मुद्दों को हल करने में मदद मिल सकती है। आध्यात्मिकता, एक भावना जो शास्त्रीय नृत्य प्रदर्शन को देखने और शास्त्रीय गीतों को सुनने के दौरान हमारे अंदर उभरती है; अजंता, एलोरा की गुफाओं में चित्र हमारी समृद्ध विरासत के सौंदर्य पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं।

रामायण और गीता की शिक्षाएँ जो ईमानदारी, अखंडता जैसे मूल्यों पर जोर देती हैं; युवाओं को कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करने वाले स्वामी विवेकानंद के पाठ, गांधी के अहिंसा के सुसमाचार आदि हमें मूल्य-आधारित जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं। स्कूलों, कॉलेजों में पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से इस परंपरा को संरक्षित करने से प्रेरित रहने की भावना पैदा होती है। खिलजी काल के दौरान बाजार में सुधार, अर्थशास्त्र में उजागर आर्थिक प्रशासनिक प्रणाली, भारत और अन्य देशों के बीच विशाल व्यापार, विशेष रूप से पश्चिम एशिया और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों आदि के साथ-साथ हम्पी जैसे ऐतिहासिक स्थानों से जुड़े पर्यटन क्षेत्र यह दर्शाते हैं कि स्मारकों की विरासत को कैसे संरक्षित किया जाता है और परंपराओं से हमारी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता है।

इस प्रकार, हमारी विरासत के महत्व को देखते हुए इसे समन्वित तरीके से संरक्षित करने की आवश्यकता है। सरकार और नागरिकों को समान रूप से इस जिम्मेदारी का वहन करना चाहिए। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्गत ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण के संस्थान इस संबंध में बहुत कुछ नहीं कर रहे हैं। इसके अलावा विरासत की सुरक्षा आँख बंद करके नहीं की जानी चाहिए क्योंकि अस्पृश्यता प्रणाली, देवदासी प्रणाली जैसी कई भ्रांतियां रही हैं जिनका आधुनिक समाज में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।



इसे नरम कूटनीति के एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है. दक्षिण पूर्व एशियाई देशों और यहां तक कि चीन के साथ भारत के संबंध बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म की साझा सांस्कृतिक विरासत के इर्द-गिर्द निर्मित हो सकते हैं. यह लोगों से लोगों के संपर्क को बढ़ाने में मदद करता है जो पूर्वाग्रहों को कम करता है. सांस्कृतिक विरासत क्षितिज पर कई लोगों के लिए आजीविका के स्रोत के रूप में काम कर सकती है.

प्याऊ घर

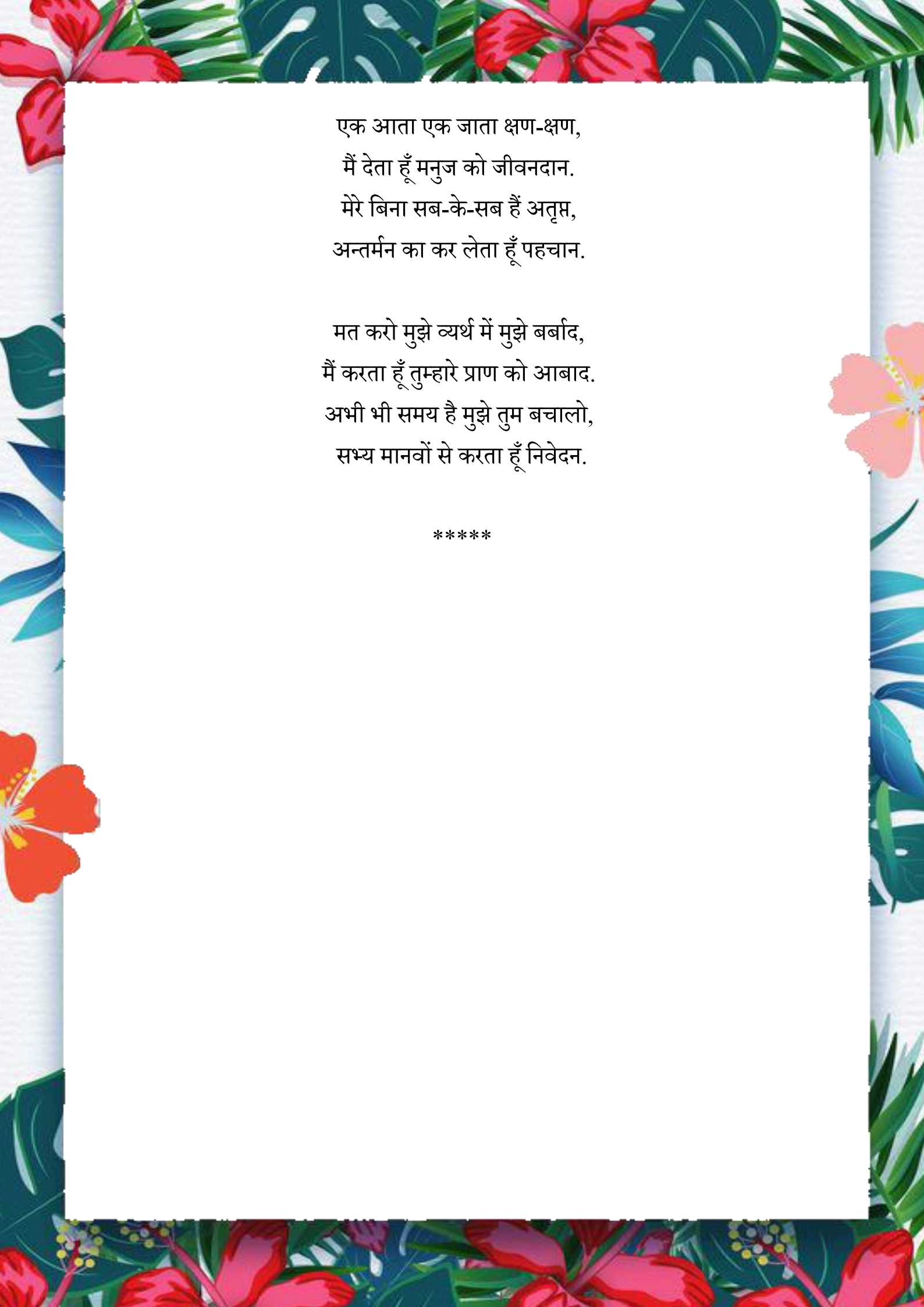
रचनाकार- अशोक कुमार यादव



दोपहरी भीषण तपती गर्मी,
जब आग बरसाता है सूरज.
सूख जाता गला राहगीरों का,
प्यासे हैं अनुज और अग्रज.

पानी लेकर खड़ा है प्याऊ घर,
आओ अपनी प्यास बुझा लो.
मटकी में है, भरा शीतल अमृत,
पियो और हो जाओ संतुष्ट.

दूर करो अपनी हृदय की तृष्णा,
मन भर तुम जितना चाहे पीलो.
व्याकुल मन अब तृप्त हो जायेगा,
प्रसन्न होकर चैन की सांस ले लो.



एक आता एक जाता क्षण-क्षण,
मैं देता हूँ मनुज को जीवनदान.
मेरे बिना सब-के-सब हैं अतृप्त,
अन्तर्मन का कर लेता हूँ पहचान.

मत करो मुझे व्यर्थ मैं मुझे बर्बाद,
मैं करता हूँ तुम्हारे प्राण को आबाद.
अभी भी समय है मुझे तुम बचालो,
सभ्य मानवों से करता हूँ निवेदन.

नींबू

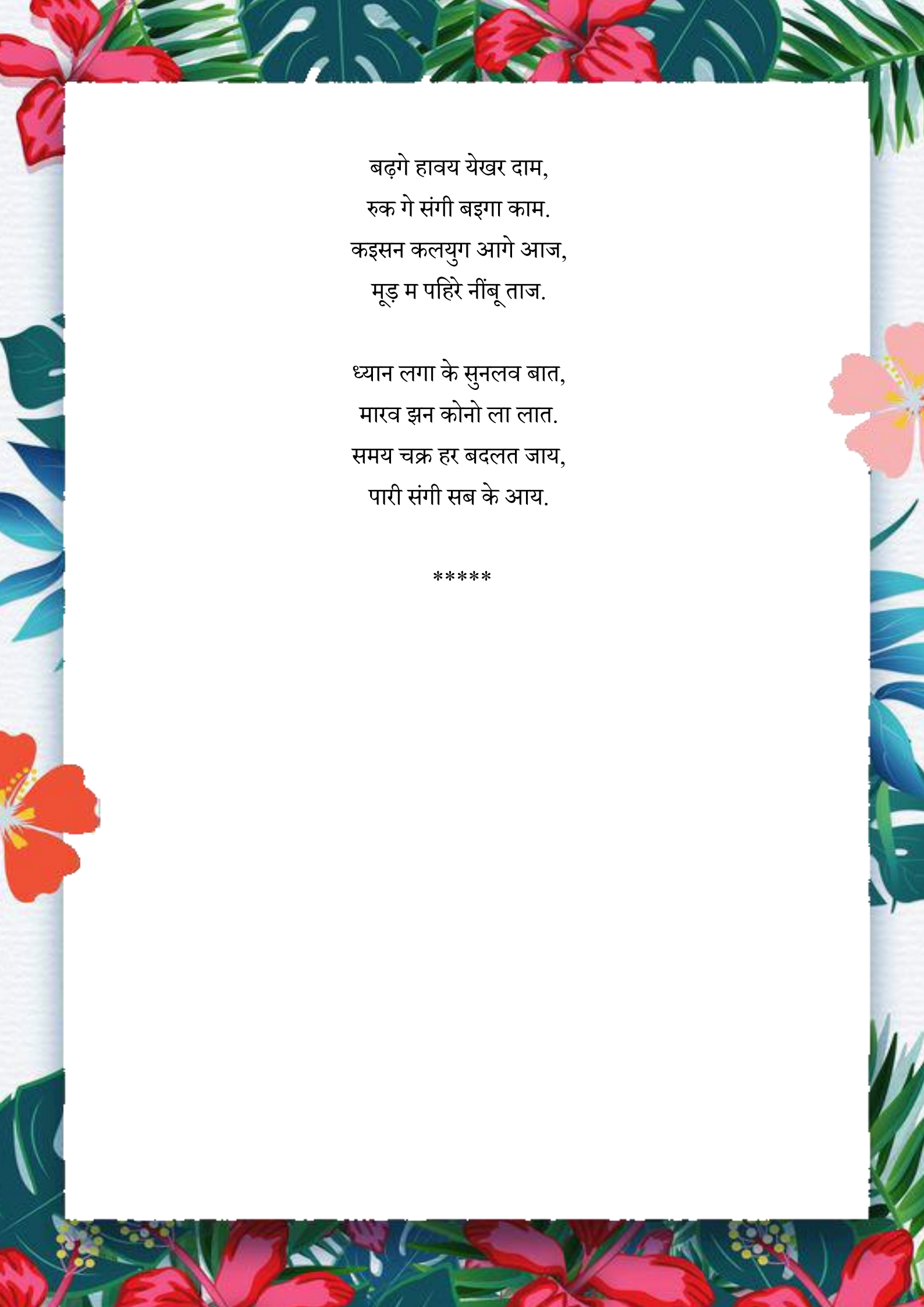
रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



सुनलव संगी सुनव सियान,
नींबू लेवत सब के जान.
एक जगह नींबू सकलाय,
हाँस - हाँस के बड़ बतियाय.

मचगे हावय हाहाकार,
नींबू होगे दस के पार.
हाट कहूँ मनखे हर जाय,
पाँच रुपय मा हाथ न आय.

कल तक मनखे करे निचोड़,
काटे भोंगे माथा फोड़.
मसल - मसल के लेवय जान,
करय नहीं कोनो सम्मान.



बढ़गे हावय येखर दाम,
रुकुं गे संगी बड़गा काम.
कइसन कलियुग आगे आज,
मूड़ म पहिरे नींबू ताज.

ध्यान लगा के सुनलव बात,
मारव झन कोनो ला लात.
समय चक्र हर बदलत जाय,
पारी संगी सब के आय.

प्लास्टिक का त्याग करें

रचनाकार- पिकी सिंघल



जन जन को यह समझाना है
प्लास्टिक पर बैन लगाना है
डाल रहा स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर
इसके प्रयोग को जड़ से मिटाना है

आजकल की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में हम में से किसी को यह सोचने की फुर्सत नहीं है कि हम खाने पीने के लिए जिन चीजों का इस्तेमाल कर रहे हैं क्या वे वास्तव में हमारे लिए लाभदायक हैं, क्या उनका कोई हानिकारक प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर नहीं पड़ता या यूँ कहें कि हम सोचना ही नहीं चाहते कि हमारे स्वास्थ्य के लिए कौन सी चीज फायदेमंद है और कौन सी नुकसानदेह. दिन-भर भाग-दौड़ के बाद हमारे पास यह सोचने का समय ही नहीं होता कि हमने जो भी खाया वह हमारे स्वास्थ्य पर क्या असर करेगा प्रत्येक व्यक्ति कम समय में अधिक कमाने की चाह रखता है और आगे बढ़ने की होड़ में वह यह तक

भूल जाता है कि इस आपाधापी भरी दौड़ में वह कुछ ऐसी चीजों का सेवन कर रहा है जिसका दूरगामी दुष्परिणाम उसे भुगतना पड़ सकता है.

हम बात कर रहे हैं प्लास्टिक और प्लास्टिक से बनी चीजों की. प्लास्टिक हमारे लिए खतरनाक दुश्मन से कम नहीं है. प्लास्टिक पर हमारी निर्भरता इस कदर बढ़ चुकी है कि हम बिना प्लास्टिक के जीवन यापन की कल्पना तक नहीं कर सकते. खाने में प्लास्टिक, पीने में प्लास्टिक, सामान स्टोर करने में प्लास्टिक, सब ओर प्लास्टिक ही प्लास्टिक. आवश्यकता की छोटी सी चीज से लेकर बड़ी से बड़ी चीज के लिए हम प्लास्टिक पर निर्भर हो चुके हैं.

भौतिकवाद के इस युग में जहाँ एक ओर प्लास्टिक का जहर मनुष्य जाति के स्वास्थ्य को निगल रहा है, वहीं दूसरी ओर इस पर हमारी निर्भरता दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है. कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम सब कुछ जानते हुए भी प्लास्टिक के मकड़जाल में फँसते जा रहे हैं. सोशल मीडिया के जरिए समय-समय पर हमें यह जानकारी मिलती रहती है कि प्लास्टिक और पॉलीथिन के क्या क्या दुष्परिणाम हमें भुगतने पड़ सकते हैं. यह किसी विष से कम नहीं है यह हमारे शरीर के भीतर धीमे जहर का काम कर रही है. परंतु हम प्लास्टिक का उपयोग करना बंद नहीं कर पाते.

धीमे धीमे ले रहा प्राण है प्लास्टिक फिर भी क्यों सबकी शान है प्लास्टिक

हम जानते हैं कि प्लास्टिक का कचरा हमारी पृथ्वी को दूषित कर रहा है जिससे भविष्य में कृषि पर बहुत बुरा असर पड़ने वाला है. पशुओं के लिए तो प्लास्टिक जानलेवा साबित हो रहा है. कचरे में फेंका गया प्लास्टिक जानवरों के लिए कैंसर का कारण भी बन रहा है, फिर भी हम बिना किसी की परवाह किए प्लास्टिक और पॉलिथीन का अंधाधुंध प्रयोग किए जा रहे हैं.

मूक निरीह पर दया कीजै प्लास्टिक उत्पादों पर बैन लगा दीजै

हम प्रकृति के प्रति पूर्ण रूप से असंवेदनशील हो चुके हैं. अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए प्लास्टिक का प्रयोग हम बेझिझक कर रहे हैं. आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए हम क्या संजोकर रख रहे हैं इसपर कोई भी जागरूक नहीं है. सोचिए, यदि हमारे पूर्वजों ने भी हमारी तरह ही सोचा होता तो हमारा अस्तित्व कब का खत्म हो चुका होता.

**नई पीढ़ी को अब सब हम देंगे यह उपहार
पर्यावरण की रक्षा मिलकर हम करेंगे बार बार**

प्लास्टिक के जलने से खतरनाक रसायन उत्सर्जित होते हैं जिनका हानिकारक प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है. प्लास्टिक के जलने से प्रत्येक आयु वर्ग के लोगों को साँस लेने में दिक्कत होती है. दमा जैसी खतरनाक बीमारियाँ भी इसी कारण होती हैं. लोगों की आदत हो गयी है कि हम प्लास्टिक की थैलियों को खाली करते वक्त उसका एक छोटा सा टुकड़ा काटकर यूँ ही फेंक देते हैं बिना यह जाने कि उस छोटे से टुकड़े को रिसाइकल करना संभव नहीं होगा, परंतु हमारी बला से कुछ भी हो, हम ने तो अपना स्वार्थ साध लिया न.

यह सत्य है कि पूरे संसार में प्लास्टिक अपनी पैठ बना चुका है और प्रकृति के प्रतिकूल होने के बावजूद भी हम इसके प्रयोग पर बैन नहीं लगा पा रहे हैं या यूँ कहें कि हम प्लास्टिक के प्रयोग को बंद करना ही नहीं चाहते. यह तो हम सब जानते हैं कि खाने पीने की चीजों को प्लास्टिक पैकिंग में स्टोर नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से केमिकल रिएक्शन होते हैं और पैकड फूड हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है, जो धीरे-धीरे कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों में बदल जाता है.

**पैकड फूड को बिसराइए, ताजा पका हुआ ही खाइए
अपने प्राणों के साथ साथ अपनों के प्राण बचाइए**

वैज्ञानिक शोध से अभी नई बात निकल कर सामने आई है जिसके अनुसार मनुष्य के रक्त प्रवाह में भी प्लास्टिक पाया गया है.

हाल ही में प्रकाशित हुई साइंटिफिक रिसर्च में यह बात सामने आई है कि हमारे द्वारा प्रयोग किए गए प्लास्टिक और वातावरण में पाए जाने वाले प्लास्टिक और पॉलिथीन के पार्टिकल्स हमारे रक्त में अवशोषित हो रहे हैं जो धीरे-धीरे कैंसर का कारण बन सकते हैं. यह अत्यधिक चिंता का विषय है. मनुष्य के रक्त प्रभाव में प्लास्टिक का होना इस बात का सबूत है कि हम किस कदर भारी मात्रा में प्लास्टिक व पॉलिथीन पर निर्भर हो चुके हैं, और यह जानते हुए भी हम प्लास्टिक का प्रयोग बंद नहीं कर रहे, चाहे इसके लिए हमें अपनी जान से ही हाथ क्यों ना धोना पड़े.

**नस नस में प्लास्टिक दौड़ रहा, जान पर कर रहा यह प्रहार
दमा, अस्थमा और त्वचा कैंसर के, हैं ये सारे आसार**

सिंगल यूज वाली वाली प्लास्टिक वस्तु जिसका अर्थ है एक प्लास्टिक की वस्तु जिसको डिस्पोज या रिसाइकिल से पहले एक काम के लिए एक ही बार यूज किया जाता है, पर भी सरकार आगामी जुलाई से प्रतिबंध लगाने की दिशा में काम कर रही है. फिलहाल देश में 50 माइक्रॉन से कम के पॉलीथीन बैग पर बैन है. पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार 1 जुलाई, 2022 से पॉलीस्टाइनिन और एक्सपेंडेड पॉलीस्टाइनिन सहित सिंगल यूज वाले प्लास्टिक के उत्पादन, आयात, स्टॉकिंग, वितरण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध रहेगा.

माना कि प्लास्टिक हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है, परंतु फिर भी हमें यह ध्यान रखना होगा कि हमें वही प्लास्टिक यूज करना है जिसे रीसायकल करने में आसानी हो. हम सबको यह शपथ लेनी होगी कि हम भी पर्यावरण मंत्रालय की इस पहल में भागीदार बनेंगे और प्लास्टिक की वस्तुओं के प्रयोग पर अधिक से अधिक बैन लगा प्रकृति को एक सुंदर और अनमोल उपहार देंगे क्योंकि प्लास्टिक मुक्त होगा भारत, तभी तो स्वस्थ होगा भारत.

**हम पर्यावरण को बचाएंगे
प्लास्टिक मुक्त भारत बनाएंगे**

मानें कहना

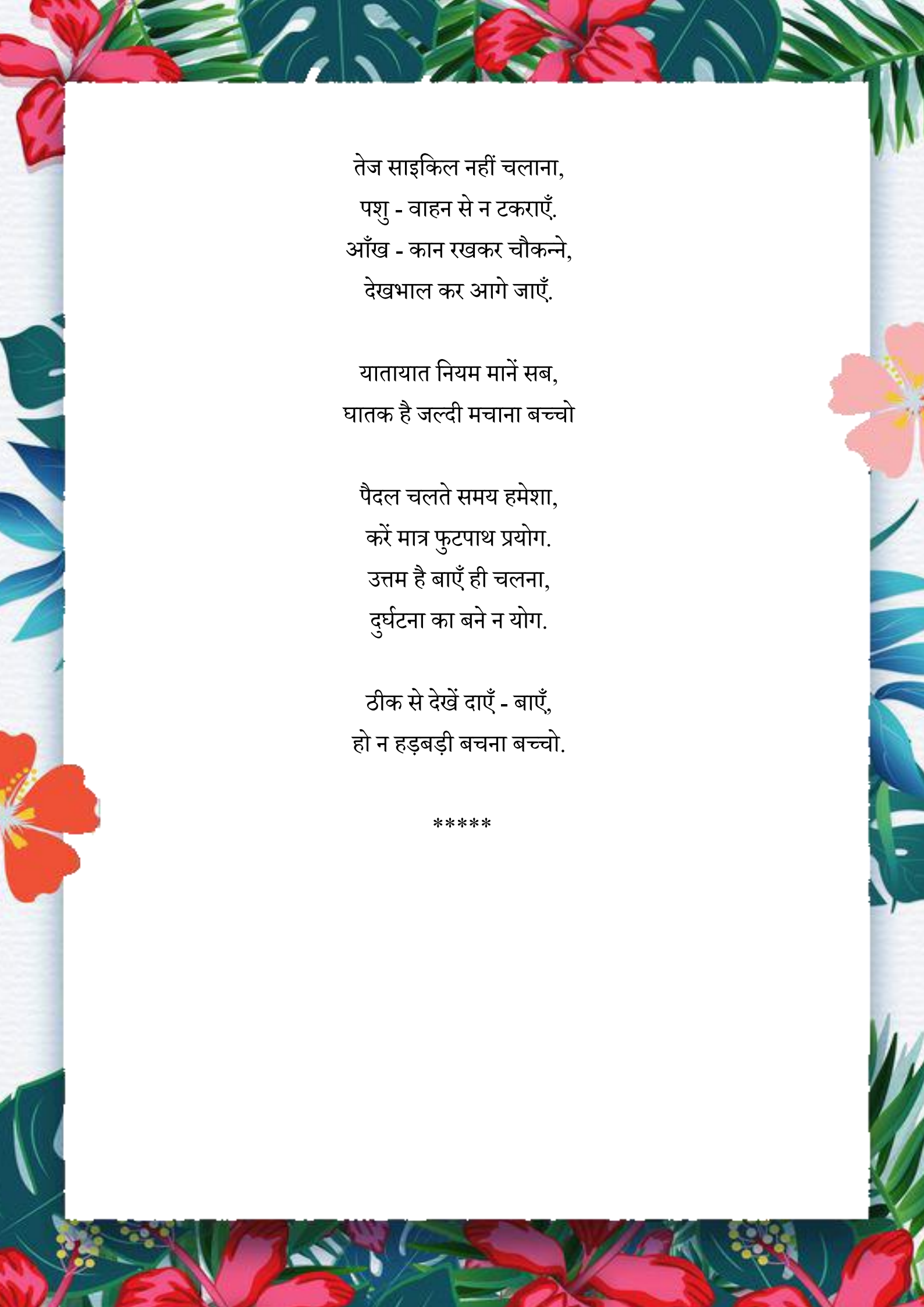
रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



मानें मेरा कहना बच्चों,
सदा सुरक्षित रहना बच्चों.

सायकिल से जाना हो यदि,
विद्यालय अथवा बाजार.
चलें सावधानी से राह में,
रखनी है धीमी रफ्तार.

ज्यों ही मोड़ कोई आ जाए,
टन - टन' घंटी करना बच्चो.



तेज साइकिल नहीं चलाना,
पशु - वाहन से न टकराएँ.
आँख - कान रखकर चौकन्ने,
देखभाल कर आगे जाएँ.

यातायात नियम मानें सब,
घातक है जल्दी मचाना बच्चो

पैदल चलते समय हमेशा,
करें मात्र फुटपाथ प्रयोग.
उत्तम है बाएँ ही चलना,
दुर्घटना का बने न योग.

ठीक से देखें दाएँ - बाएँ,
हो न हड़बड़ी बचना बच्चो.

पिता

रचनाकार- लवली यादव, कक्षा- 12वीं , शा.उ.मा.वि.पहंडोर

चाहे धूप हो या छाया,
हमारे लिए हर एक दिन कमाया.
मेहनत के पसीने से खुद नहाया,
पर हर दिवाली हमें नए कपड़े पहनाया.
कभी कड़क से तो कभी प्यार से,
जीवन जीने का तरीका सिखाया.
एक-एक पैसे जोड़ हमें पढ़ाया.
कभी भी अपने लिए कुछ ना किया,
पर परिवार को जन्नत बनाया.
जब कभी देखूं कपड़े फटे होते थे उनके,
फिर भी मुस्कुरा कर कहते थे, फैशन है अब के.
जब जेब में हाथ डाला तो एक रुपए मिला,
अपने लिए छोड़, हमारे लिए सब कुछ लिया.
पर कभी भी गरीबी का अहसास ना कराया,
ऐसे होते हैं पिता जिन्होंने हर बार अपना दुख छुपाया,
पर परिवार की खुशी लौटाया.



सब्जी वाली

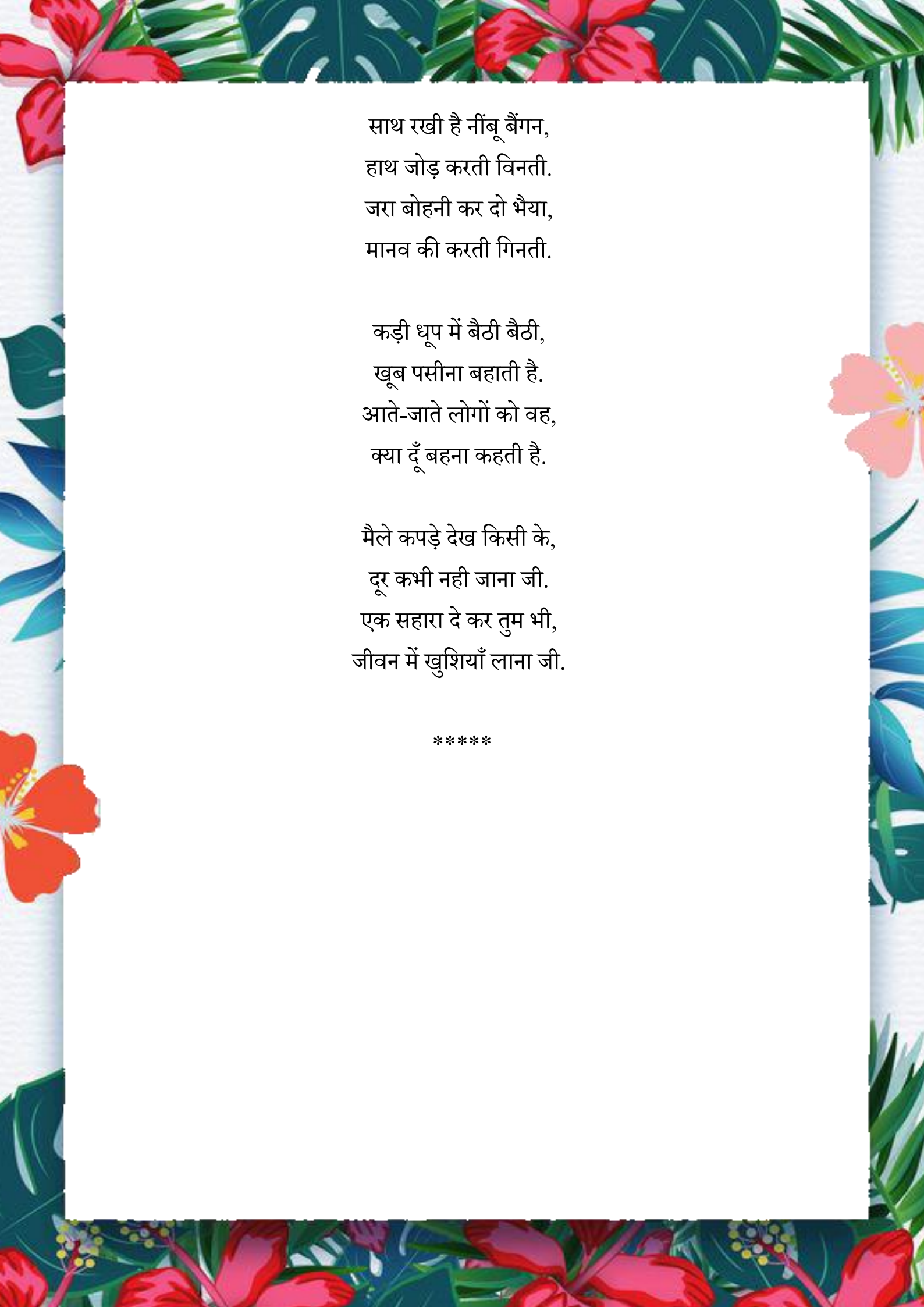
रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



सड़क किनारे बैठी माँ जी,
सब्जी बेचा करती है.
मिल जाता है कुछ पैसे तो,
उदर उसी से भरती है.

बोझ नहीं मैं अपने घर में,
ये सब को बतलाती है.
ताजी ताजी सब्जी ला के,
माँ जी खुश हो जाती है.

देख गरीबी हालत इनकी,
नहीं कभी ठुकराना जी.
सही भाव में देती सब को,
पीछे नहीं तुम जाना जी.



साथ रखी है नींबू बैंगन,
हाथ जोड़ करती विनती.
जरा बोहनी कर दो भैया,
मानव की करती गिनती.

कड़ी धूप में बैठी बैठी,
खूब पसीना बहाती है.
आते-जाते लोगों को वह,
क्या दूँ बहना कहती है.

मैले कपड़े देख किसी के,
दूर कभी नहीं जाना जी.
एक सहारा दे कर तुम भी,
जीवन में खुशियाँ लाना जी.

नतीजा

रचनाकार- पिकी सिंघल



घर की इकलौती बहू सलोनी को घर के सभी सदस्य बहुत चाहते थे और उसकी हर फरमाइश पूरी करते थे. हर छोटी-बड़ी जरूरत को उसके कहने से पहले ही पूरा कर दिया जाता था. घर के हर फैसले में उसकी सलाह ली जाती थी. पढ़ी लिखी होने के साथ-साथ सलोनी रूपवती भी थी, इस बात का सलोनी को घमंड था. सलोनी इस बात का नाजायज फायदा उठाने से नहीं चूकती थी. परंतु, घर वालों को यह एहसास नहीं हुआ कि सलोनी के मन में इस प्रकार के भाव भी हैं. वे सभी सलोनी के बारे में अच्छा ही सोचते थे.

पुत्र शाश्वत के जन्म के पश्चात सलोनी के भाव और ऊँचे हो गए, अब वह किसी को कुछ नहीं समझती थी, फिर भी ससुराल वाले उसे सिर माथे पर बिठाते और उसकी हर इच्छा पूरी करते थे.

धीरे-धीरे शाश्वत बड़ा होने लगा और उसके भीतर भी अपनी माँ के गुण दिखाई देने लगे. घर का इकलौता बच्चा होने के कारण शाश्वत बहुत जिद्दी हो गया था. दादा-दादी उसे अच्छा इंसान बनाने की कोशिश करते थे और कभी-कभी जानबूझकर उसकी जिद पूरी नहीं करते थे, क्योंकि वे चाहते थे कि शाश्वत जीवन की हकीकत का सामना करना सीखें और चुनौतियों से घबराए नहीं. सलोनी को यह बात बहुत अखरती थी और वह सब से छुपकर शाश्वत की सभी गलत-सही मांगें पूरी करती थी, परिणाम यह हुआ कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ शाश्वत कई गलत आदतों का शिकार हो गया.

ममता में अंधी सलोनी उसकी उन आदतों से अनभिज्ञ थी. शाश्वत की संगत कुछ गलत लोगों के साथ हो गई और वह असामाजिक कार्यों में भी संलिप्त हो गया. उसके इन कामों की जानकारी घरवालों को तब मिली जब घर में पुलिस आई और शाश्वत के बारे में पूछताछ करने लगी. घर के सभी सदस्य अवाक रह गए. सलोनी के पैरों तले जमीन ही खिसक गई. पुलिस ने बताया कि शाश्वत दूसरे शहर में चोरी कर कर भागा है, यह सुनकर सलोनी को चक्कर आ गया और वह गिर पड़ी. घर वालों ने उसे जैसे तैसे संभाला. होश आने पर सलोनी ने शाश्वत से पूछा कि घर में सब कुछ होने के बावजूद आखिर उसे चोरी करने की आवश्यकता पड़ी ही क्यों. उसका जवाब सुनकर सलोनी स्तब्ध रह गई.

शाश्वत ने जवाब दिया कि घर में सबसे पैसे मांग मांग कर वह थक चुका था और वह अब जिंदगी को अपने दम पर जीना चाहता था. उसने घर वालों के सामने खुलासा किया कि वह रोज-रोज घर में किसी के सामने हाथ फैलाना सही नहीं समझता था इसलिए उसने कम समय में अधिक पाने की लालसा से अपने कुछ दोस्तों के साथ चोरी करना शुरू किया.

अब सलोनी को समझ आ चुका था कि बच्चे की हर सही गलत ज़िद को पूरा करने का नतीजा इस हद तक खतरनाक भी हो सकता है.

हरे भरे यदि पेड़ ना होते

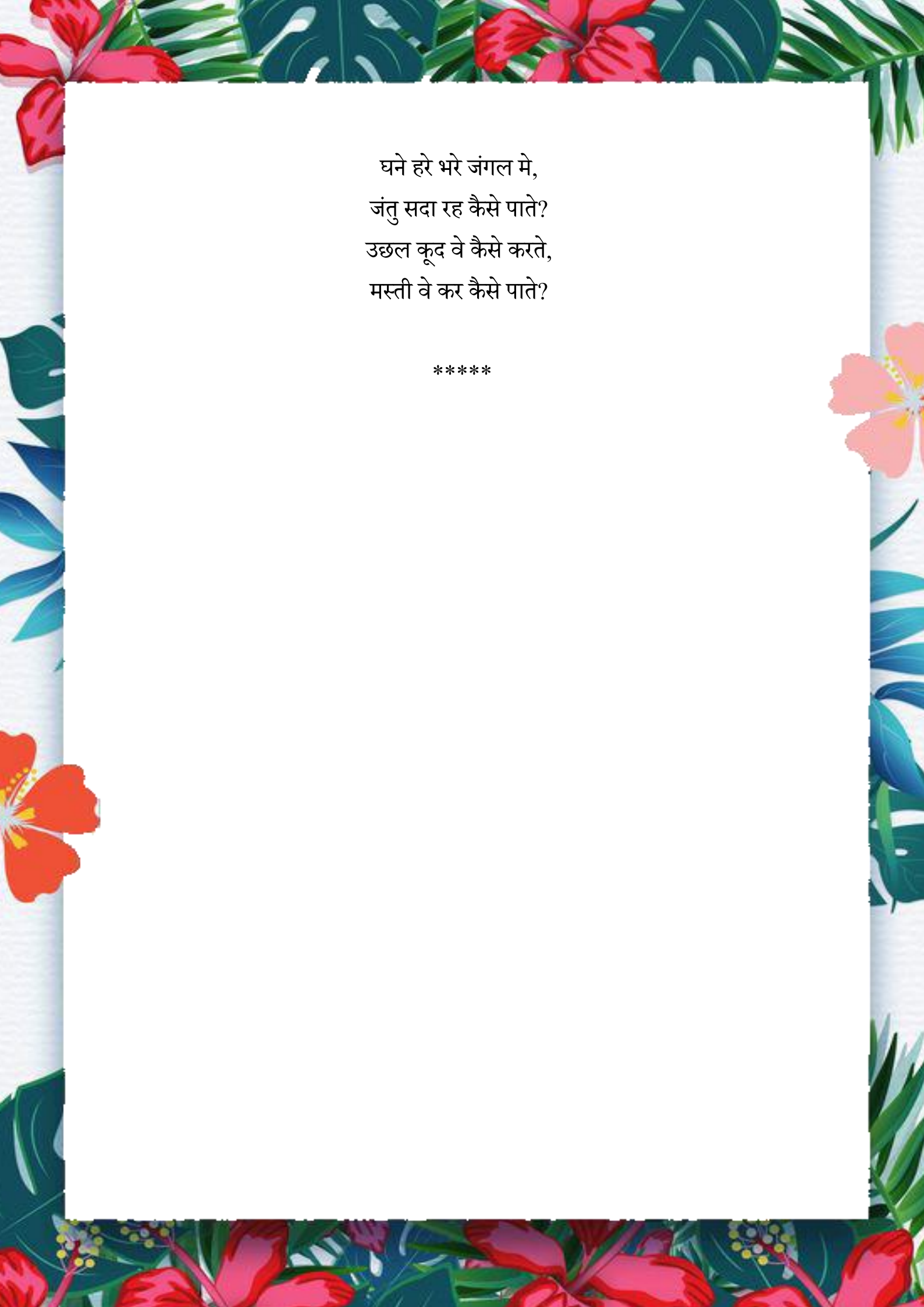
रचनाकार- डॉ० कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव



हरे भरे यदि पेड़ न होते,
प्राणवायु कैसे तुम पाते,
बड़ी विकट की गर्मी में,
छाँव सदा तुम कैसे पाते.

कार्बनडाई ऑक्साइड ये हर लेते,
फूल, फल तुम कैसे पाते?
खूब देते है ईंधन तुमको,
वर्षा का जल तुम कैसे पाते?

औषधि पाते वन उपवन से,
अपना भोजन कैसे पाते?
रंग बिरंगे सुंदर पक्षी,
नीड घना वे कैसे पाते?



घने हरे भरे जंगल मे,
जंतु सदा रह कैसे पाते?
उछल कूद वे कैसे करते,
मस्ती वे कर कैसे पाते?

दोपहरी

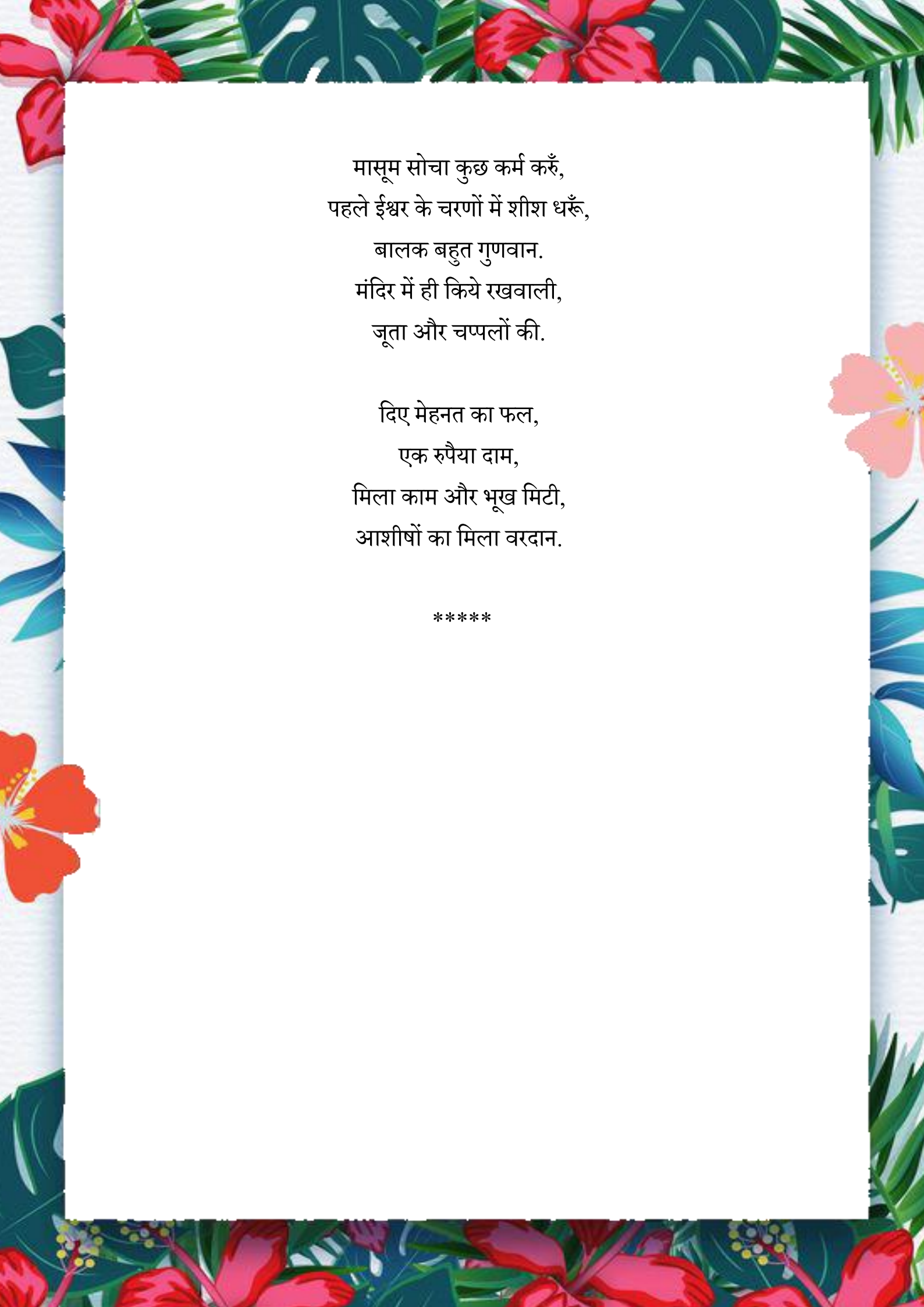
रचनाकार- श्रीमती परवीनबेबी दिवाकर "रवि "



कोमल से नन्हे कदमों में,
दोपहरी की धूप पड़ी,
पेट की भूख कुछ कम ना थी,
जो जलते अंगारों- सा ताप मिला.

मुझाया -सा मासूम का चेहरा,
आँखों में पीड़ा लिए अश्रुधार,
जीवन की ये कैसी विडंबना,
ना मात -पिता का प्यार मिला.

जीवन के सुनसान डगर में,
चला मासूम चुपचाप,
ठोकर खाते, छाले पड़े पग में,
काँटों भरी थी राह.



मासूम सोचा कुछ कर्म करूँ,
पहले ईश्वर के चरणों में शीश धरूँ,
बालक बहुत गुणवान.
मंदिर में ही किये रखवाली,
जूता और चप्पलों की.

दिए मेहनत का फल,
एक रुपैया दाम,
मिला काम और भूख मिटी,
आशीषों का मिला वरदान.

दुनिया में निदेशकों का राज है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



हर राष्ट्र की यह आवाज़ है
निवेश करो हमारे देश में तुम्हारा ही राज है
देशवासियों को तुम पर नाज़ है
आर्थिक संपन्नता होगी हमारी इसमें भी राज है
सत्ता कायम रहेगी हमारी इसलिए भी बुलंद आवाज़ है
नागरिकों की भी हालत सुधरेगी उनको हम पर नाज़ है
हर राष्ट्र की बार-बार यही आवाज़ है
निवेश करो हमारे राष्ट्र में तुम्हारा ही राज है
हर राष्ट्र की यह आवाज़ है

धन के पीछे भाग रही दुनिया

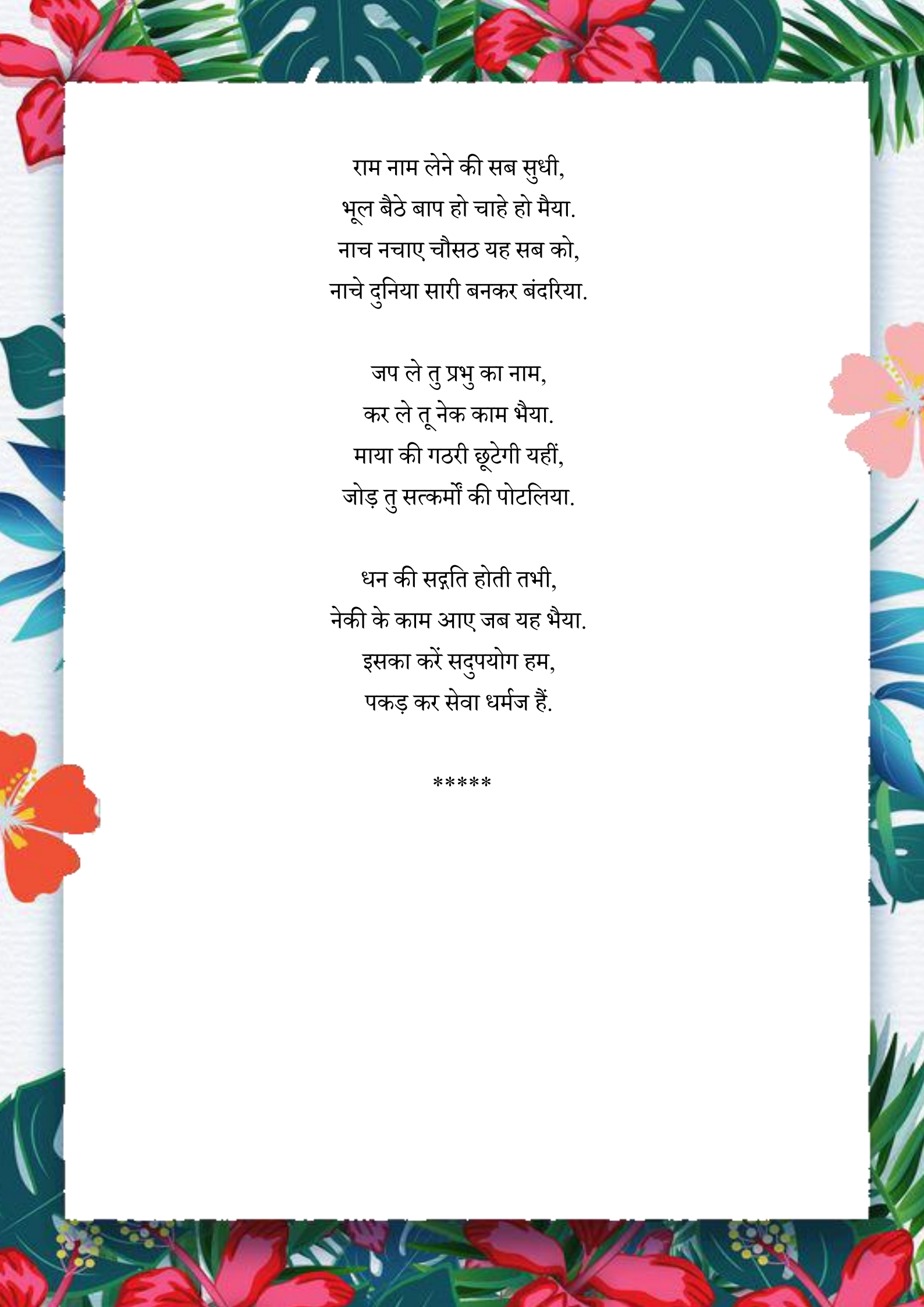
रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



जन्म देती है सारे मोह को,
यह माया बड़ी मायावी है भैया.
मुन्ना हो चाहे वो हो मुनिया,
धन के पीछे भाग रही दुनिया.

भूल कर के सारे सत्कर्म मानव,
जकड़ा हुआ है लालच के फेर में भैया.
धन के चकाचौंध में गुम हो रहा,
गांव का भोला मानस और सहरिया.

यही कि माया यह यहीं रह जाएगी,
साथ किसी के यह ना जाएगा भैया.
कमाते -कमाते धन और दौलत,
निकली जा रही है सबकी उमरिया.



राम नाम लेने की सब सुधी,
भूल बैठे बाप हो चाहे हो मैया.
नाच नचाए चौसठ यह सब को,
नाचे दुनिया सारी बनकर बंदरिया.

जप ले तु प्रभु का नाम,
कर ले तू नेक काम भैया.
माया की गठरी छूटेगी यहीं,
जोड़ तु सत्कर्मों की पोटलिया.

धन की सद्गति होती तभी,
नेकी के काम आए जब यह भैया.
इसका करें सदुपयोग हम,
पकड़ कर सेवा धर्मज हैं.

कुछ रिश्ते कितने खास होते हैं


रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम



कुछ रिश्ते बड़े ही खास होते हैं,
जो अपने आप ही जुड़ जाते हैं.
खून के न होकर भी साथ निभाते हैं,
सुख दुःख में भी साथ रहते हैं.

ये रिश्ते बड़े ही अनोखे होते हैं,
जिसे सब प्यार से दोस्ती कहते हैं.
दो मीठे बोल बोलकर दिल से जुड़ते हैं,
ज़िन्दगी भर हमेशा साथ रहते हैं.

इसे समझ पाना बड़ा मुश्किल है,
दोस्त हर मुसीबत को हल करते हैं.
बन सारथी सही राह दिखाते हैं,
जीवन को गुलजार बनाते हैं.



सच्चा दोस्ती का हर फर्ज निभाते है,
आपके परिवार को अपना समझते है.
एक दोस्त दूसरे दोस्त को बखूबी समझते है,
गम में भी जो साथ नहीं छोड़ते है.

ज़िन्दगी के हर मोड़ पर आप के साथ होते हैं,
सात जन्मों का साथ हमेशा देते हैं,
अनजान होकर भी कितने गहरे होते हैं.
ऐसे दोस्त सिर्फ किस्मत वालों को मिलते हैं.

अंतरराष्ट्रीय मज़दूर दिवस

रचनाकार- पिकी सिंघल



हर्ष की बात है कि हमारा राष्ट्र निरंतर विकास की राह पर अग्रसर है. कुछ दशक पहले की बात की जाए तो तब देश के विकास की रफ्तार इतनी तीव्र नहीं थी जितनी पिछले 10 सालों में देखने को मिली है. विकास की दर तेजी से बढ़ रही है जो सुखद है.

आज का भारत विश्व के बड़े-बड़े देशों के साथ अपने राजनयिक संबंध मजबूत कर रहा है और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर विश्व में अपनी एक अलग पहचान बना रहा है. किसी देश के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास में उस देश के नागरिकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. यह भी सत्य है कि विकास के लिए देश की बागडोर संभालने वाले राजनेताओं का योगदान भी कम नहीं होता; क्योंकि उन्हीं के मार्गदर्शन और नेतृत्व में राष्ट्र प्रगति करता है परंतु , अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता यह भी सत्य है ,इसलिए देश की सरकार और राजनेताओं को देश के नागरिकों को साथ लेकर चलना होता है क्योंकि सामाजिक सहयोग और सौहार्दपूर्ण रिश्तों के बिना देश के विकास और उत्थान की कल्पना नहीं की जा सकती.

1 मई, 2022 को अवसर है- देश के सभी परिश्रमी मजदूरों को धन्यवाद ज्ञापित करने का. मजदूर दिवस 1 मई को प्रतिवर्ष उत्साह और जोश के साथ मनाया जाता है. मजदूर दिवस को मई दिवस अथवा श्रमिक दिवस की संज्ञा भी दी जाती है. मजदूर दिवस के दिन देश में सभी मजदूरों का राष्ट्रीय अवकाश होता है इस दिन कोई मजदूर अपने औजार नहीं उठाता.

श्रमिक दिवस मनाए जाने का मंतव्य मजदूरों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना है. मजदूर वर्ग देश की रीढ़ माना जाता है. देश के विकास और उत्थान में जो योगदान मजदूरों का होता है, उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. मजदूरों को उनके योगदान हेतु प्रेरित करने हेतु भी मजदूर दिवस मनाया जाता है. मजदूरों के प्रति आदर और सम्मान व्यक्त करने का यह एक प्रतीक है.

अन्तरराष्ट्रीय मजदूर दिवस पहली बार 1 मई को 1886 में अमेरिका में मनाया गया था. भारत में श्रमिक दिवस पहली बार 1 मई 1923 को मनाया गया था. मजदूर दिवस को मनाए जाने की शुरुआत वहीं से हुई थी. उस समय मजदूर यूनियन के नेताओं ने मजदूरों के काम के घंटे निश्चित करने की मांग उठाई थी और अपील की थी कि दिन भर में 10 घंटे के स्थान पर 8 घंटे ही मजदूर अपना कार्य करेंगे. मजदूर दिवस मजदूरों के प्रति आभार व्यक्त करने और उनके परिश्रम का सम्मान करने का दिन है.

इस दिन दुनिया भर के लोगों को मजदूरों के राष्ट्र विकास में योगदान से परिचित कराया जाता है. यह दिवस सभी मजदूरों और श्रमिकों को समर्पित है जिन्होंने पूरी मेहनत कर देश और समाज के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

वैसे तो पूरे वर्ष ही मजदूरों के प्रति हमें अपना आभार व्यक्त करना चाहिए क्योंकि बिना मजदूरों के किसी भी देश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती. हम अपने हर छोटे बड़े काम के लिए उन्हीं पर निर्भर करते हैं. मजदूर वर्ग का देश की अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान होता है, इसलिए उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए और जरूरत पड़ने पर उनके समर्थन में आगे आना चाहिए. देश के विकास में मजदूरों का जो योगदान होता है उसे सराहने और प्रोत्साहित करने हेतु भी मजदूर दिवस मनाया जाता है ताकि मजदूरों को भविष्य में और भी अधिक मेहनत करने का प्रोत्साहन मिले, उनकी दशा में सुधार हो जिससे देश नित नई सफलताएँ अर्जित करे.

सुबह-सुबह

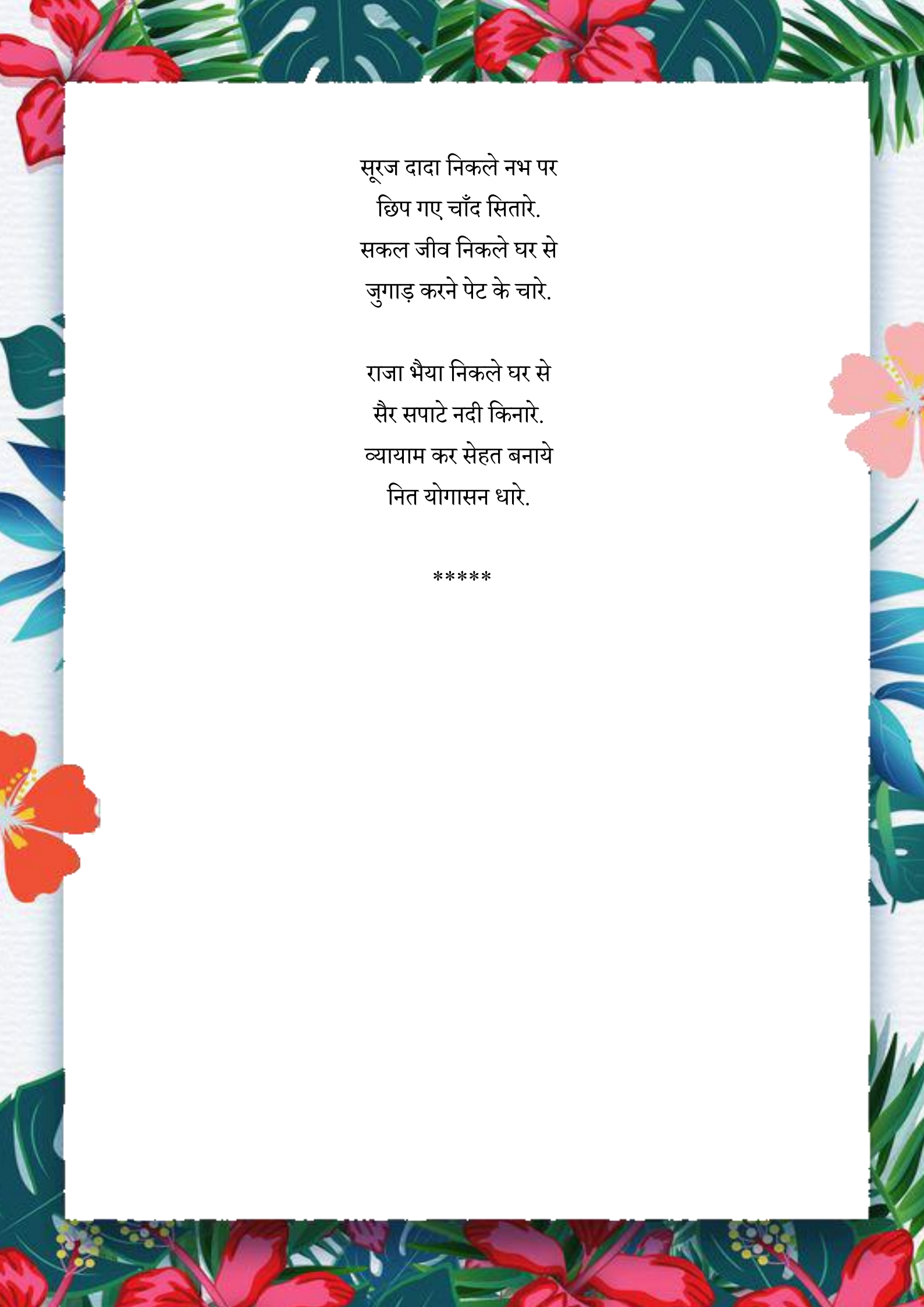
रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



मुर्गा छत पर बड़े सवेरे,
कुकडूँ कूँ पुकारे.
मुन्ना बिस्तर से बोले,
उठ रहा हूँ प्यारे.

चिड़ियाँ चूँ-चूँ करती
भोर भई छिपे तारे.
सुबह की गुनगुनी धूप
लगती न्यारे-न्यारे.

रम्भाकर कहती कामधेनु
दूध मैंने तुझ पर वारे.
थोड़ा मेरे बछड़े को देना
पी जाओ फिर सारे.



सूरज दादा निकले नभ पर
छिप गए चाँद सितारे.
सकल जीव निकले घर से
जुगाड़ करने पेट के चारे.

राजा भैया निकले घर से
सैर सपाटे नदी किनारे.
व्यायाम कर सेहत बनाये
नित योगासन धारे.

बरखा दीदी

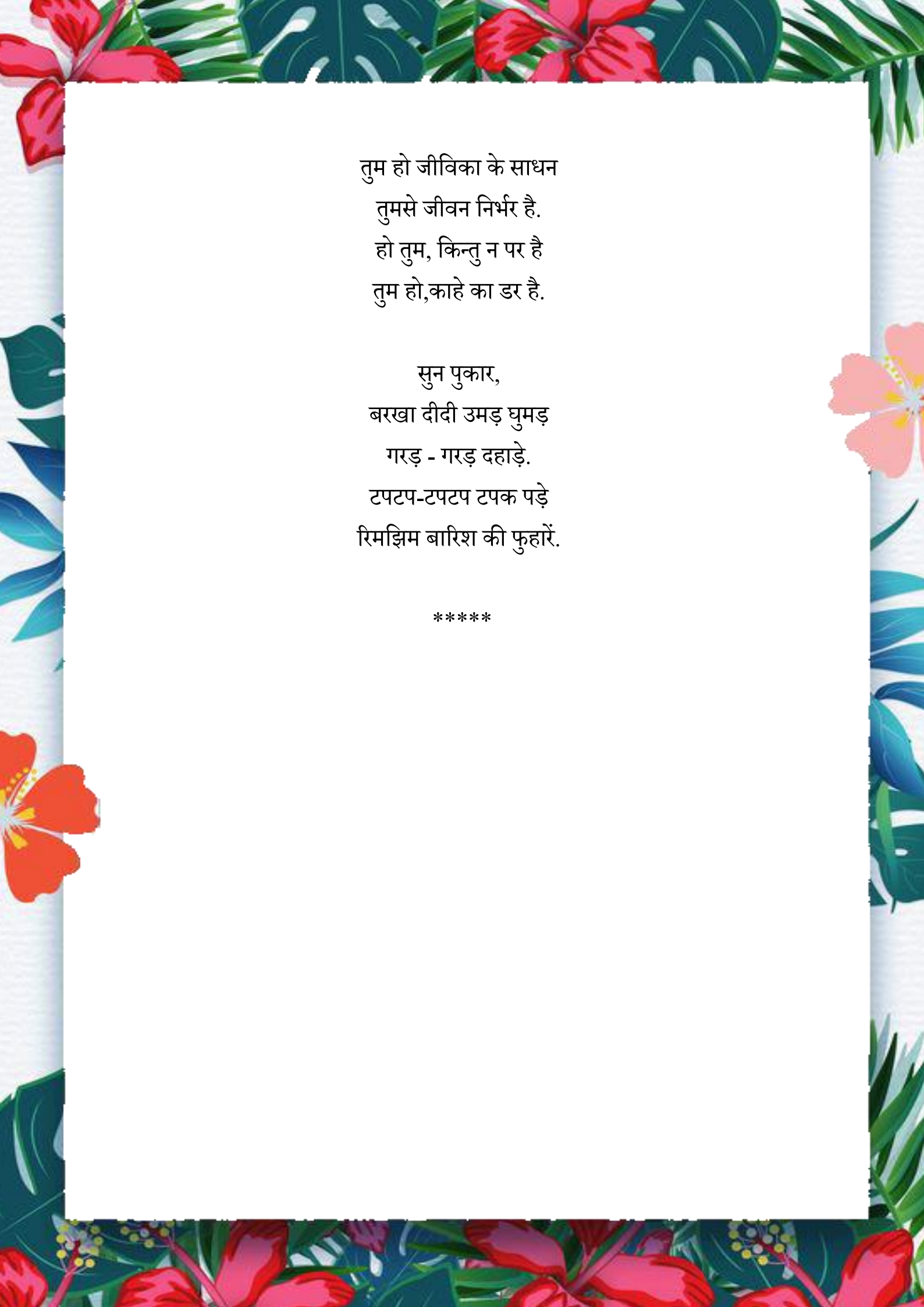
रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



बरखा दीदी आओ ना
पानी तुम बरसाओ ना.
गर्मी से बेहाल हो रहें
गर्मी दूर भगाओ ना.

तुम आती हो, तो धरती
सुंदर श्रृंगार सजाती है.
तेरे ही आने से धरा पर
हरियाली छा जाती है.

तेरे आने की खुशी में
मोर नाचता गाता है.
काले बादल छा जाता है
जब मोर पंख फैलाता है.



तुम हो जीविका के साधन
तुमसे जीवन निर्भर है.
हो तुम, किन्तु न पर है
तुम हो, काहे का डर है.

सुन पुकार,
बरखा दीदी उमड़ घुमड़
गरड़ - गरड़ दहाड़े.
टपटप-टपटप टपक पड़े
रिमझिम बारिश की फुहारें.

लाल रंग की मेरी साइकिल

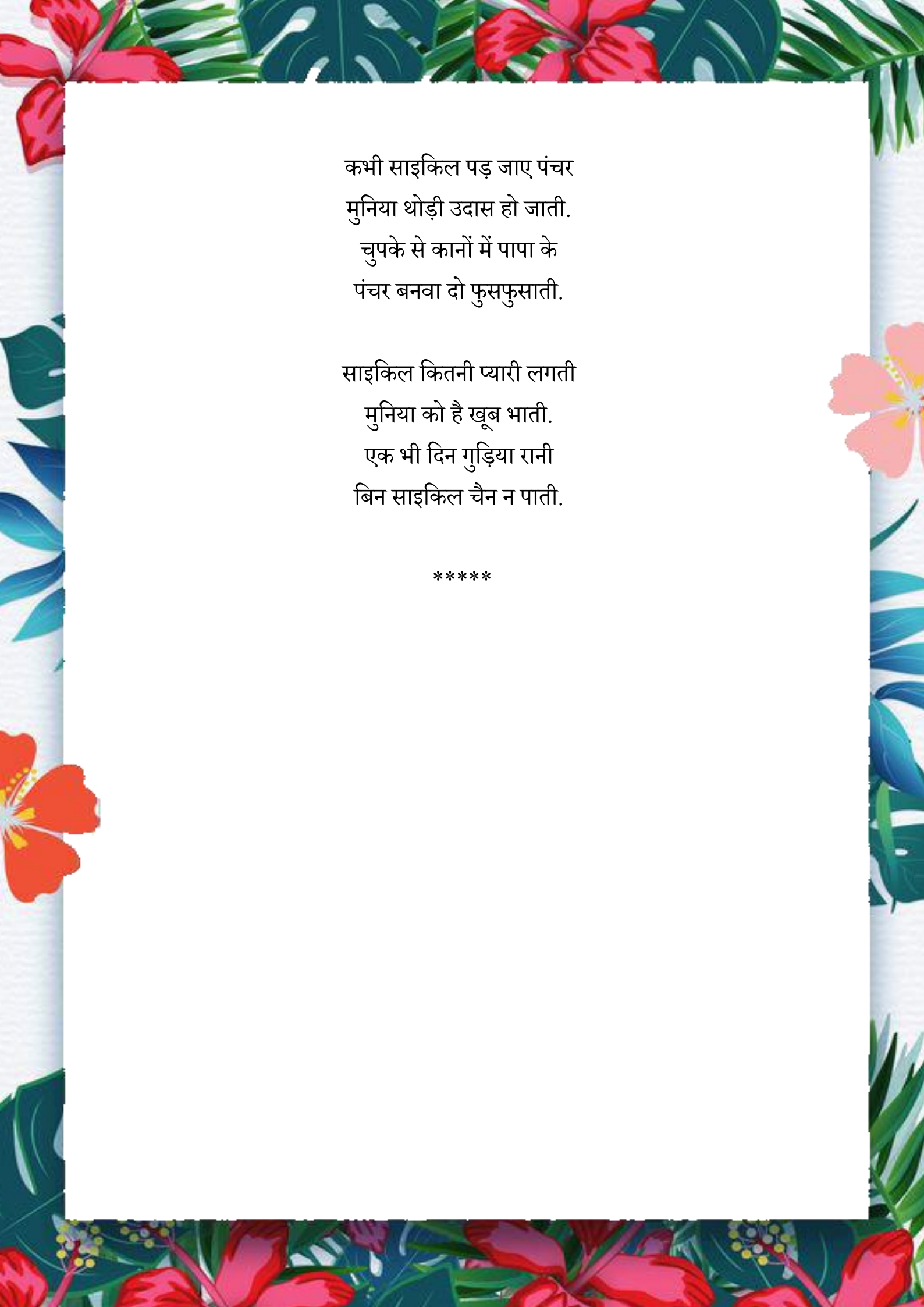
रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



लाल रंग की मेरी साइकिल
करती खूब कमाल.
बैठ उस पर मुनिया मेरी
करती हरदम धमाल.

गली-गली पूरे गाँव में
सरपट साइकिल दौड़ाती.
कोई जो उसकी साइकिल छूले
झट से वह रूठ जाती.

कभी चहकती कभी इठलाती
दोस्तों संग साइकिल चलाती.
भैया को साइकिल में बैठाती
माँ की सेवा में लग जाती.



कभी साइकिल पड़ जाए पंचर
मुनिया थोड़ी उदास हो जाती.
चुपके से कानों में पापा के
पंचर बनवा दो फुसफुसाती.

साइकिल कितनी प्यारी लगती
मुनिया को है खूब भाती.
एक भी दिन गुड़िया रानी
बिन साइकिल चैन न पाती.

कान देके सुन

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



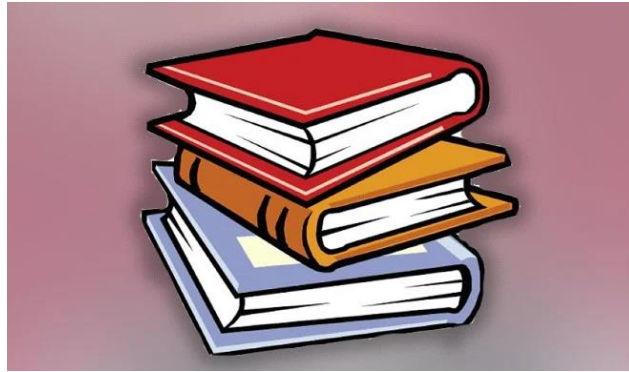
बोरे बासी संग धरले चुटकी म नून,
नून मीरी संग गोंदली फाँकी फाँकी चुन.
बासी खावत ठंडा दिमाग बने गुन,
बोरे बासी बने सुहाथे अप्रैल मई जून.

बासी ल खाके निरमल बिचार बुन,
बीमारी के रोका छेका बोरे बासी के में गुन.
सग सोदार घर बाहिर हो या कम्यूनिटी,
बोरे बासी बढ़ाथे इम्यूनिटी .

बासी के खाये ले गरम नई होवे खून,
बोरे बासी ले हो जाथे बल दूगुन.
बासी खावत खावत संगी हो जा बिधुन,
ते कान देके सुन संगी कान देके सुन.

पुस्तकें: ज्ञान का अथाह सागर

रचनाकार- पिकी सिंघल



ज्ञान, विज्ञान, भक्ति से पुस्तकें, परिचय सबका करवाती हैं
करती मनोरंजन पढ़ने वालों का, चुनौतियों से लड़ना सिखाती हैं

बचपन में हम पढ़ा करते थे कि पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र होती हैं। तब इस बात का अर्थ हमारी समझ के बाहर हुआ करता था, परंतु जैसे-जैसे परिपक्वता आती गई इस वाक्य का सच्चा अर्थ भी हमें समझ आने लगा। यह अक्षरशः सत्य है कि यदि हमारा कोई सच्चा मित्र है तो वह हैं पुस्तकें। बोरियत महसूस होने लगे तो आप एक पुस्तक पढ़ना शुरू कीजिए और फिर देखिए कि कैसे आपका दिन बिना किसी अन्य विचार को मस्तिष्क में लाए कट जाएगा। पुस्तकों की संगत में आपको अन्य किसी व्यक्ति की कमी कभी नहीं खलेगी ऐसा मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। पुस्तकें अथाह ज्ञान का भंडार हैं। यदि जीवन भर हम पुस्तकें पढ़ते रहें तो भी यह ज्ञान कभी खत्म नहीं होने वाला। हर पुस्तक अपने आप में ज्ञान और मनोरंजन का संगम होती है।

पुस्तकों की महत्ता को महसूस करने के पश्चात 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक दिवस मनाया जाता है। यह बहुत सुखद पहल है, परंतु मेरे लिए तो वर्ष का प्रत्येक दिन ही पुस्तक दिवस है क्योंकि शायद ही ऐसा कोई दिवस होता होगा जिस दिन आप कोई पुस्तक या पुस्तक का कोई अंश नहीं पढ़ते होंगे। अपने ज्ञान में वृद्धि के लिए हम पुस्तकें पढ़ते हैं और पुस्तकों के माध्यम से ही हमें अपने गौरवशाली इतिहास और महापुरुषों के जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त होती है जिन से प्रेरित होकर हम अपने जीवन में कुछ अच्छा करने के लिए प्रेरित होते हैं।

आज के समय में प्रत्येक व्यक्ति के पास समय का अभाव होता है और सभी चाहते हैं कि उन्हें कम समय में अधिक ज्ञान प्राप्त हो जिसके लिए वे कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल आदि का प्रयोग कर जानकारीयाँ प्राप्त करते हैं परंतु इससे पुस्तकों का महत्व कम नहीं हो जाता. पुस्तकों का स्थान कभी कोई ले ही नहीं सकता. इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज भी लगभग सभी शिक्षण संस्थानों में पठन-पाठन के लिए पुस्तकें ही प्रयोग में लायी जाती हैं. तकनीक कितनी भी विकसित क्यों न हो जाए परंतु पुस्तकों का स्थान कभी नहीं ले सकती, यह निर्विवाद सत्य है. यह जानकर मन अति हर्षित होता है कि आधुनिक युग में भी हमारे देश के कर्णधार, हमारे बच्चे रुचिपूर्वक पुस्तकें पढ़ते हैं और ज्ञानार्जन करते हैं.

विश्व पुस्तक दिवस मनाये जाने के पीछे एक मंशा यह भी रही है कि युवा वर्ग की पुस्तकों के प्रति अभिरुचि को विकसित किया जाए जिससे वह अपने स्वर्णिम इतिहास से परिचित हो सकें और अपने राष्ट्र को आगे बढ़ने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें.

**स्वर्णिम इतिहास बताती हैं, नव पीढ़ी का ज्ञान बढ़ाती हैं
पुस्तकें होती अनमोल बहुत, ये जड़ों से जुड़ना सिखाती हैं**

पुस्तकें ज्ञान की अनमोल पूंजी हैं, अनुपम धरोहर हैं, विरासत है और अपनी विरासत को किसी अन्य विकल्प के रूप में देखने का तात्पर्य होगा कि हम अपनी जड़ों से विमुख हो रहे हैं. स्मरण रहे, अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत को धरोहर के रूप में अगली पीढ़ियों को सौंपने का दायित्व हमारी पीढ़ी का है जिसे हमें ईमानदारी से निभाना होगा, पुस्तकों के प्रति सच्चा प्रेम दिखाना होगा और आने वाली नई पीढ़ी को भी सस्नेह यह धरोहर भेंट करनी होगी.

मैं मजदूर कहलाता हूँ


रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



मेहनत से अपनी मैं, पसीना खूब बहाता हूँ.
औरों की खुशियों खातिर, तपती धूप नहाता हूँ.
जी हाँ मैं मजदूर कहलाता हूँ.

मजदूर हूँ, मजबूर नहीं, सूखी रोटी खाता हूँ.
साधन विपन्नता में भी चैन की नींद पाता हूँ.
जी हाँ, मैं मजदूर कहलाता हूँ.

मैं अभावों के थपेड़ों में हूँ पलता
फिर भी मुझमें है सहजता और सरलता
अपनी दुःख पीड़ा नहीं किसी को बतलाता हूँ.
जी हाँ, मैं मजदूर कहलाता हूँ.



चट्टानों को चीरकर, बंजर धरती सींचकर.
लहलहाते सोने सा फसल उगाता हूँ.
जी हाँ, मैं मजदूर कहलाता हूँ.

अपने हाथों से सबका भाग्य चमकाता हूँ.
रब के बाद, मैं ही तो भाग्य विधाता हूँ.
जी हाँ, फिर भी मैं मजदूर कहलाता हूँ.

मेरी प्यारी साइकिल

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू"

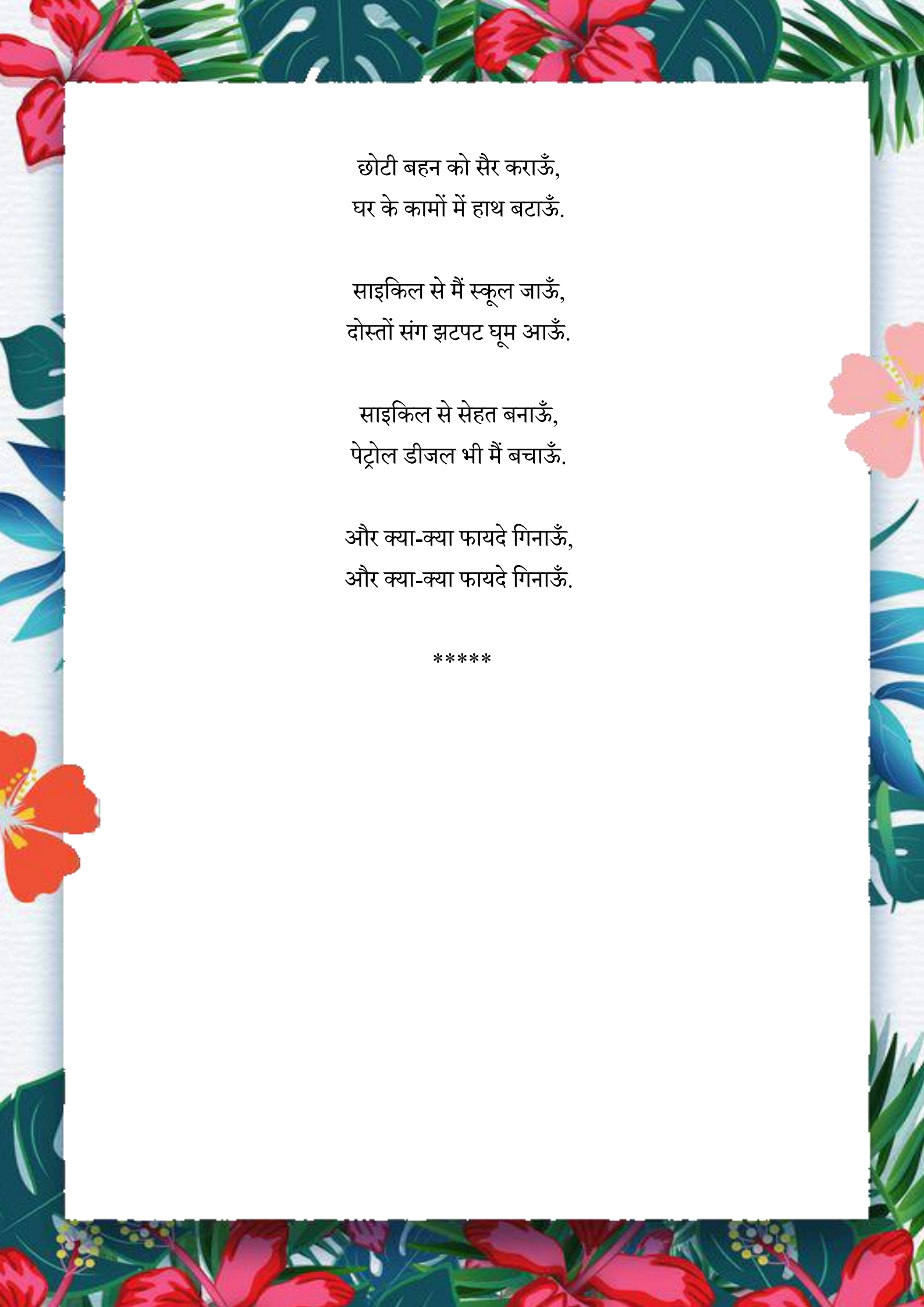


मुझे पसंद है मेरी साइकिल,
नीले रंग की न्यारी साइकिल.

जन्मदिन का उपहार है,
देती मुझे रफ़्तार है.

दोस्तों के संग मैं रेस लगाऊँ,
मम्मी के सारे काम निपटाऊँ.

साइकिल है मेरी सहेली,
संग इसके करूँ अठखेली.



छोटी बहन को सैर कराऊँ,
घर के कामों में हाथ बटाऊँ.

साइकिल से मैं स्कूल जाऊँ,
दोस्तों संग झटपट घूम आऊँ.

साइकिल से सेहत बनाऊँ,
पेट्रोल डीजल भी मैं बचाऊँ.

और क्या-क्या फायदे गिनाऊँ,
और क्या-क्या फायदे गिनाऊँ.

पत्रकारिता एक मिशन

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को दुनिया प्रशंसा के साथ देखती है कि कैसे लोकतांत्रिक मूल्यों, नियमों पर सदाचार से लोकतंत्र अपने भविष्य का रास्ता तय करता है. दुनिया में भारत की प्रतिष्ठा का डंका बजता है. 135 करोड़ लोगों द्वारा दिया गया फैसला हर दल, व्यक्ति और प्रत्याशी को स्वीकार होता है. ऐसे लोकतंत्र के मंदिर, संसद भवन की सीढ़ियों पर माथा टेकते हुए प्रधानमंत्री को सारे विश्व ने देखा था. इस लोकतंत्र के चार स्तंभ हैं. न्यायपालिका, कार्यपालिका विधायिका और मीडिया.

साथियों अगर हम लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया की बात करें तो इसकी भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि यह अन्य तीन स्तंभों पर निगाह रखने वाला स्तंभ हैं. जनहित में सूचनाएँ देना और लोक व्यवस्था का निर्माण कर समाज को एक सूत्र में बांधने की जिम्मेदारी मीडिया की है, जिसमें प्रिंट मीडिया की स्वतंत्रता संग्राम काल से ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है.

बदलते परिप्रेक्ष्य में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया की एंट्री हुई, फिर इन्हें निजी क्षेत्रों को दिया गया, विभिन्न एप, यूट्यूब, चैनलों सहित मीडिया का भरपूर विकास हुआ जिससे प्रिंट मीडिया को फ़र्क पड़ा. जिससे कुछ बंद तो कुछ की हालत खस्ता तो कुछ ने बदलते समय में डिजिटल मीडिया की तरफ उन्मुख हुए. इस बदलते क्रम में मीडिया की जिम्मेदारी भी बढ़ती गई और सरकारों ने इनपर नियंत्रण के लिए जरूरतों के अनुसार कानून कायदे बनाए, जिसके आधार पर सैकड़ों चीनी एप्स पर बैन लगा. दो दिन पहले ही दस भारतीय और छह पड़ोसी मुल्क के यूट्यूब चैनल पर बैन लगा है.

साथियों बात अगर हम मीडिया की जवाबदारी की करें तो यह लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने, एक स्वतंत्र बंधन मुक्त मजबूत और जीवंत मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है जिसकी प्रमाणिकता और विश्वसनीयता पत्रकारिता की नींव है. समाचारों और विचारों के बीच लक्ष्मण रेखा का सम्मान करना जरूरी है. पत्रकारिता एक मिशन की तरह है इसमें जनहित सर्वोपरि है. समाज को उनका हक दिलाने, कुनीतियों, भ्रष्टाचार, अव्यवस्थाओं पर नज़र रख सुव्यवस्थित लोक व्यवस्था के निर्माण में सकारात्मक योगदान देकर समाज को एक सूत्र में बाँधकर रखने की जिम्मेदारी मीडिया पर है.

साथियों बात अगर हम दिनांक 25 अप्रैल 2022 को यूरॉपियन आयोग की अध्यक्ष के रायसीना डायलॉग 2022 दिल्ली के मौके पर विचार व्यक्त करने की करें तो मीडिया के अनुसार उन्होंने कहा कि हर पांच साल में जब भारतीय संसदीय चुनावों में अपना वोट डालते हैं, तो दुनिया प्रशंसा के साथ देखती है क्योंकि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र अपने भविष्य का रास्ता निश्चित करता है. 1.3 अरब लोगों द्वारा किए गए फैसले का परिणाम दुनिया भर में गूँजता है. जीवंत लोकतंत्र के रूप में भारत-यूरोपीय संघ मौलिक मूल्यों और सामान्य हितों को साझा करते हैं. साथ में हम प्रत्येक देश के अपने भाग्य का निर्धारण करने के अधिकार में विश्वास करते हैं. हम कानून और मौलिक अधिकारों के शासन में विश्वास करते हैं. हम मानते हैं कि यह लोकतंत्र है जो नागरिकों के लिए सबसे अच्छा है.

साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा दिनांक 24 अप्रैल 2022 को एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जब कानून के संवैधानिक शासन को मजबूत करने की बात आती है तो स्वतंत्र व निष्पक्ष प्रेस, स्वतंत्र न्यायपालिका का पूरक होता है. उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक स्वतंत्र, बंधनमुक्त व निडर प्रेस के बिना कोई मजबूत और जीवंत लोकतंत्र बचा हुआ नहीं रह सकता है. उन्होंने सुझाव दिया कि भारत के लिए अपने लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने को लेकर एक मजबूत, स्वतंत्र और जीवंत मीडिया की जरूरत है.

साथियों इसके अलावा उन्होंने मीडिया में मूल्यों के पतन को लेकर सावधान भी किया. उन्होंने निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ रिपोर्टिंग का आह्वान किया. उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया कि समाचारों को विचारों के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए. उन्होंने ने इस बातपर जोर दिया कि सदस्यों को विधायिकाओं में सार्थक तरीके से बहस व चर्चा करनी चाहिए और निर्णय लेना चाहिए.

उन्होंने आगे कहा कि मीडिया को संसद और विधायिकाओं में व्यवधान की जगह रचनात्मक भाषणों को लोगों के सामने लाना चाहिए. उन्होंने सनसनीखेज खबरों और संसद व विधानसभाओं में व्यवधान डालने वालों पर अधिक ध्यान देने को लेकर सावधान किया. उन्होंने आगे सार्वजनिक बहसों के गिरते मानकों पर चिंता व्यक्त की. उन्होंने कहा कि उनकी इच्छा है कि राजनीतिक दल विधायिकाओं और सार्वजनिक जीवन में अपने सदस्यों के लिए आचार संहिता अपनाकर खुद को विनियमित करें.

उन्होंने जनप्रतिनिधियों को सलाह दी कि वे अपने राजनीतिक विरोधियों पर व्यक्तिगत हमले करने से बचें. उन्होंने दल-बदल विरोधी कानून की किसी तरह की कमियों को दूर करने के लिए इस पर फिर से विचार करने का भी आह्वान किया. उन्होंने आगे इसका उल्लेख किया कि अतीत में पत्रकारिता को एक मिशन माना जाता था, जिसमें समाचार पवित्र होते थे. उन्होंने आगे इस तथ्य को रेखांकित किया कि घटनाओं की निष्पक्ष और सच्ची कवरेज व लोगों तक उनके विश्वसनीय प्रसारण पर अच्छी पत्रकारिता आधारित होती है.

अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि पत्रकारिता एक मिशन है. लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने एक स्वतंत्र, बंधनमुक्त, मजबूत और जीवंत मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है. प्रमाणिकता और विश्वसनीयता पत्रकारिता की नींव है. समाचारों और विचारों के बीच एक लक्ष्मण रेखा का सम्मान करना आधुनिक समय की मांग है.

बादल भैया

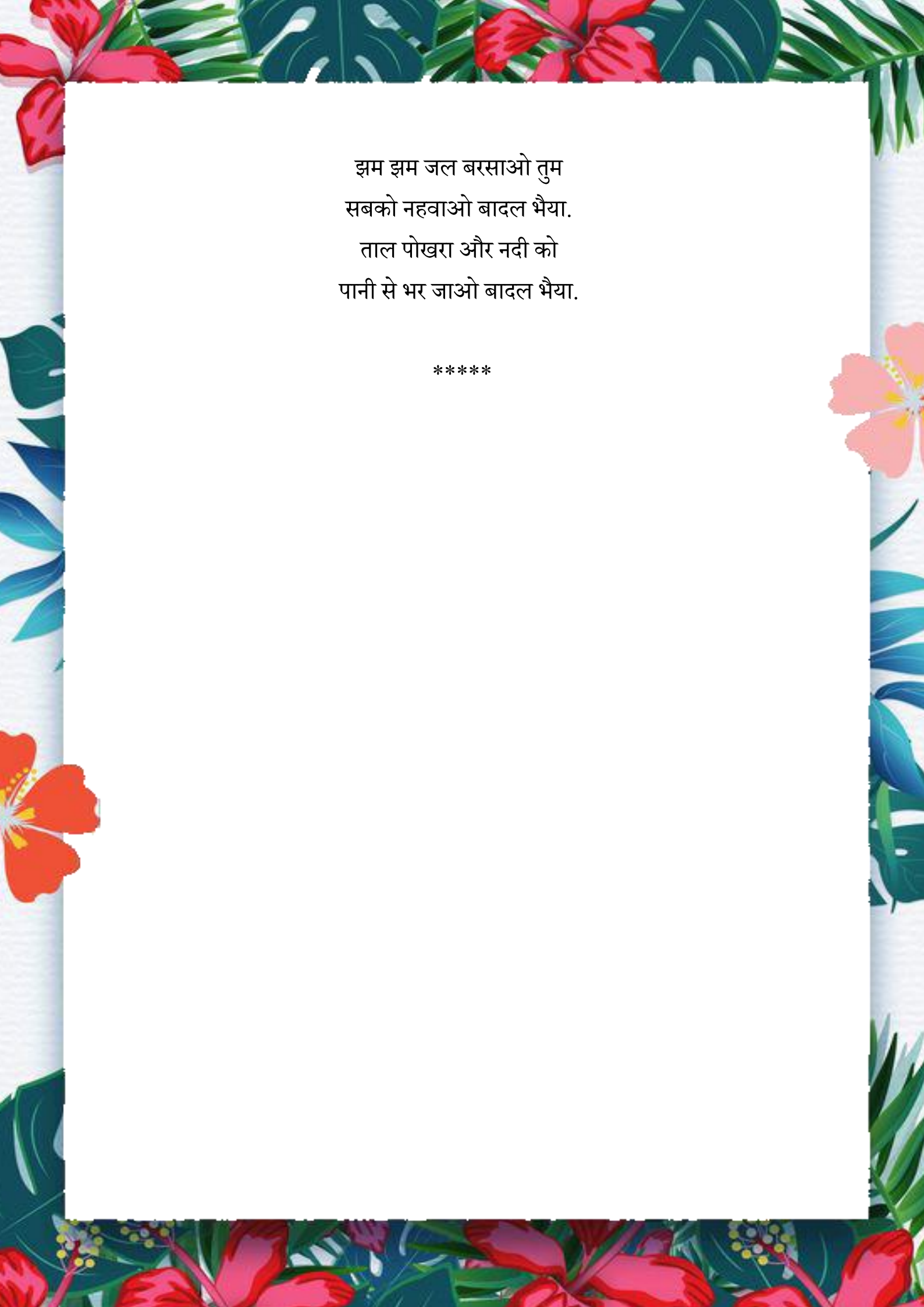
रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



गर्मी से हम परेशान है
कब आओगे बादल भैया.
लू ने जीना मुश्किल कर दिया
कब छाओगे बादल भैया.

तुम आ जाओ जल्दी से
पानी बरसाओ बादल भैया
गर्मी को यहां से
दूर भगाओ बादल भैया.

खेत हैं प्यासे बाग हैं प्यासे
सबकी प्यास बुझाओ बादल भैया.
जाओ जल्दी से पानी ले कर
तुम आ जाओ बादल भैया.



झम झम जल बरसाओ तुम
सबको नहवाओ बादल भैया.
ताल पोखरा और नदी को
पानी से भर जाओ बादल भैया.

मेढ़क मामा गाओ न

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



बादल राजा आए हैं
मेढ़क मामा गाओ न.
स्वागत में बादल राजा का
ढम ढम ढोल बजाओ न.

अब तो घर से बाहर निकलो
अपनी तान सुनाओ न.
टर्र टर्र का अपना मधुर गीत
गा कर खूब सुनाओ न.

पानी में उछल कूद का खेल
सबको तुम दिखलाओ न.
ताल पोखरा नदी शोभा
आ कर तुम बढ़ाओ न.

पहेली

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी



1. पूर्व दिशा से आता जो
पश्चिम में घूम जाता है
बताओ क्या है उसका नाम?
2. उत्तर दिशा से निकलता है
अजब चमक दिखलाता है
बताओ उस तारे का नाम.
3. आंखें उनकी छोटी-छोटी
सुपर जैसे उनके कान
बताओ क्या है उसका नाम?
4. हरी-हरी पूंछ
सफेद है घोड़ा
बताने में समय लेना बहुत थोड़ा.

5. अमराई में रहती हूँ
मीठा तान सुनाती हूँ.

6. गर्म हुआ तो काम आऊँ,
ठंडा हुआ तो वापस जाऊँ.

7. रोज सुबह नई खबरें लाता,
बिन पैरों के उड़ता जाता.

8. पक्षी देखा अलबेला,
पंख बिना उड़ रहा अकेला,
बांध गले में लंबी डोर,
नाप रहा अंबर के छोर.

9. एक जानवर ऐसा
जो पूँछ से पानी पीता.

10. बचपन हरा बुढ़ापा लाल,
जो खाए हो हाल बेहाल.

उत्तर- 1. सूरज, 2. ध्रुवतारा, 3. हाथी, 4. मूली, 5. कोयल, 6. चाय, 7. समाचार पत्र, 8. पतंग,
9. दीपक, 10. मिर्च

गरीबी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



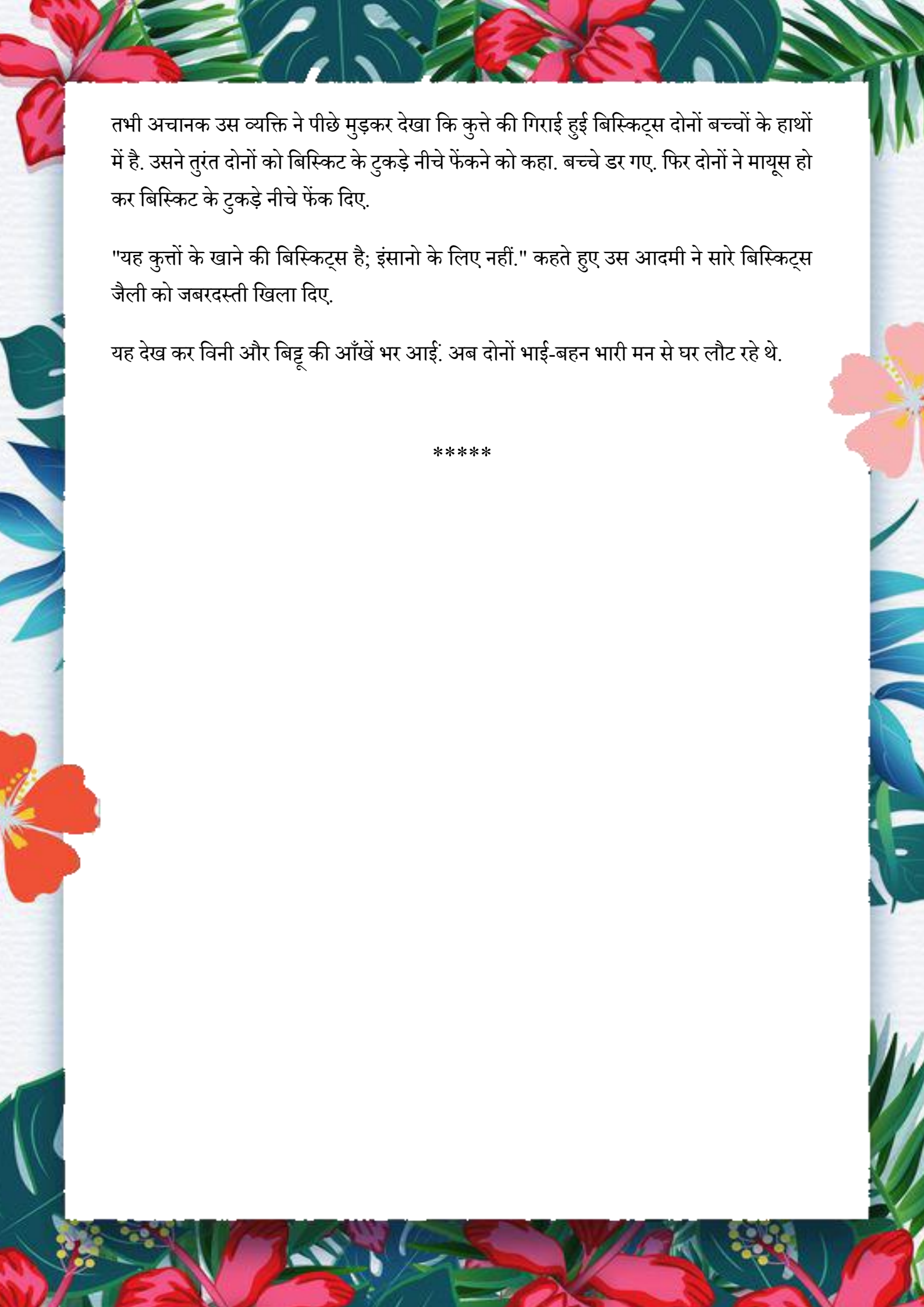
विनी और बिट्टू दोनों भाई-बहन मैले-कुचैले कपड़े पहने, हाथों में छोटी-छोटी बोरियाँ लिए कचरा बीन रहे थे. कचरे के ढेर से झिल्ली, प्लास्टिक, लोहा आदि बीनते और उन्हें बेचकर अपने खाने की व्यवस्था करते थे. कभी-कभार कचरे के ढेर से रोटी के टुकड़े या खाने की कोई और वस्तु मिल जाती तो उसी से पेट भर लेते थे.

आज बिट्टू बोला- "विनी उठो! सबेरे जल्दी जाने पर हो सकता है कुछ खाने को मिल जाये. कल रात से हम भूखे हैं."

"हाँ भैया, मुझे तो रात को भूख के कारण बिल्कुल नींद नहीं आयी." विनी बोली.

दोनों अपनी बोरियाँ लेकर निकल पड़े, रास्ते में एक व्यक्ति अपने कुत्ते को लेकर मॉर्निंग वॉक कर रहा था. वह कुत्ते को बिस्किट खिला रहा था. उनके पीछे ही दोनों भाई-बहन बिट्टू और विनी चल रहे थे. दोनों ने देखा कि कुत्ता बिस्किट्स नहीं खा रहा था. वह बिस्किट रास्ते में गिरा देता था. गिरी हुई बिस्किट को कभी विनी उठा लेती थी; तो कभी बिट्टू उठा लेता. "आज भूख थोड़ी शांत हुई भैया." विनी बोली.

"हाँ विनी, अब हम रोज सुबह जल्दी आया करेंगे. ऐसे ही हमें रोज खाने को कुछ मिल सकता है."



तभी अचानक उस व्यक्ति ने पीछे मुड़कर देखा कि कुत्ते की गिराई हुई बिस्किट्स दोनों बच्चों के हाथों में है. उसने तुरंत दोनों को बिस्किट के टुकड़े नीचे फेंकने को कहा. बच्चे डर गए. फिर दोनों ने मायूस हो कर बिस्किट के टुकड़े नीचे फेंक दिए.

"यह कुत्तों के खाने की बिस्किट्स है; इंसानों के लिए नहीं." कहते हुए उस आदमी ने सारे बिस्किट्स जैली को जबरदस्ती खिला दिए.

यह देख कर विनी और बिट्टू की आँखें भर आईं. अब दोनों भाई-बहन भारी मन से घर लौट रहे थे.

नींद सुहानी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



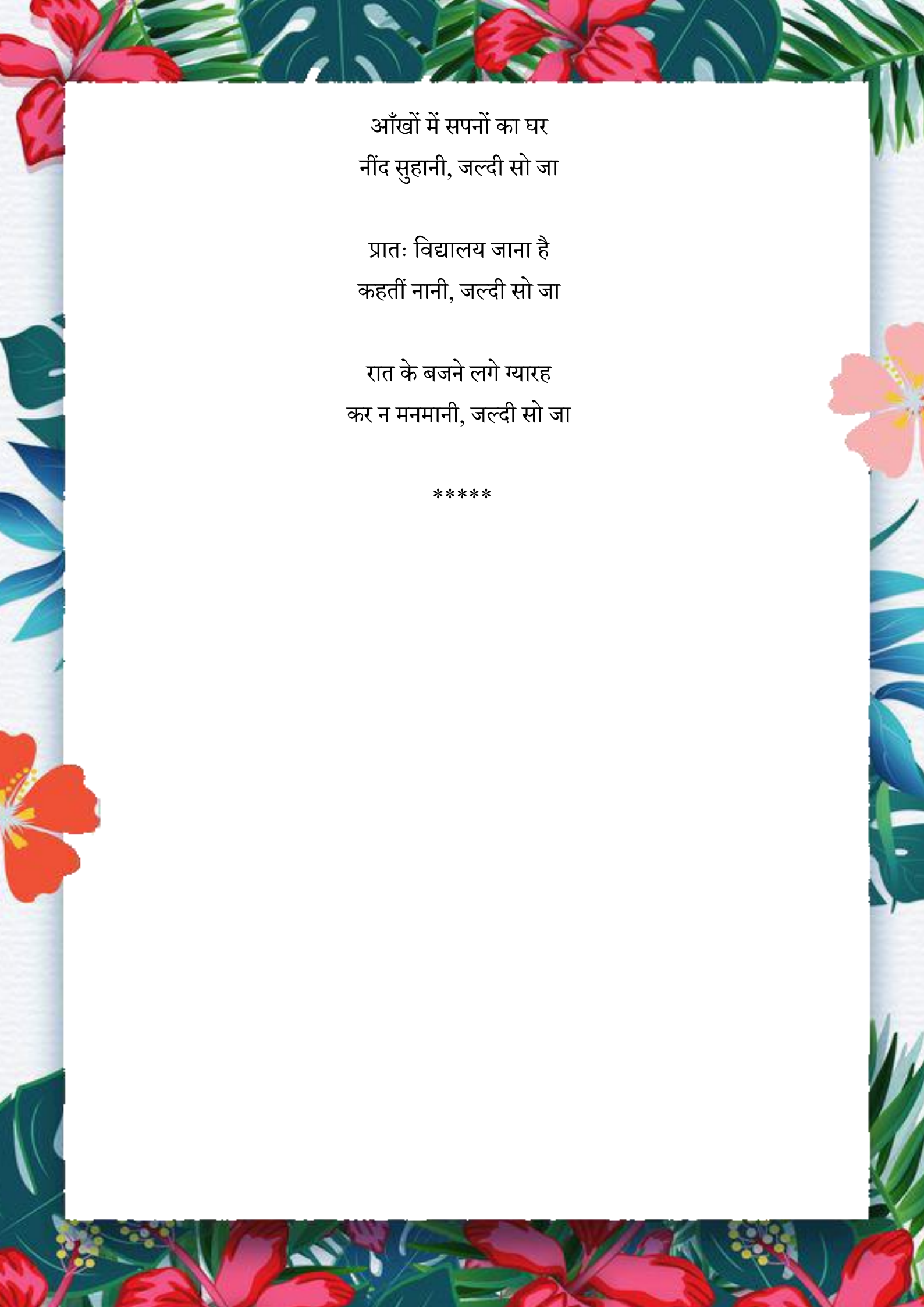
बिटिया रानी, जल्दी सो जा
डांट न खानी, जल्दी सो जा

ले प्रसाद के लड्डू खा ले
पी ले पानी, जल्दी सो जा

तुमसे छीना था मोबाइल
बात पुरानी, जल्दी सो जा

मैं भी सोऊँ, तू भी सोए
चादर तानी, जल्दी सो जा

लोरी कबसे सुना रही हूँ
खतम कहानी, जल्दी सो जा



आँखों में सपनों का घर
नींद सुहानी, जल्दी सो जा

प्रातः विद्यालय जाना है
कहतीं नानी, जल्दी सो जा

रात के बजने लगे ग्यारह
कर न मनमानी, जल्दी सो जा

नया शहरी भारत

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



नया शहरी भारत विषय पर मंथन करने
देश के मेयरों का सम्मेलन हुआ है
अखिल भारतीय मेयर सम्मेलन करके
शहरों की कायापलट पर विचार हुआ है.

पुराने व कमजोर शहरी ढांचे और सुविधाओं
की कमी के मुद्दों पर विचार हुआ है
हल निकालने विभिन्न पहलुओं योजनाओं
की कमी पर विशेष ध्यान हुआ.

शहरी विकास के क्षेत्र में भारत सरकार और
राज्य उपलब्धियों को प्रस्तुत करने का
अदभुत अनोखा सटीक एक विशाल
परिपक्व प्रदर्शनी का आयोजन हुआ है

भावनात्मक और नैतिक शिक्षा

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



बचपन, बच्चे के विकास में एक महत्वपूर्ण समय होता है। यह अवधि बच्चे के जीवन और कल्याण की नींव रखती है। इसलिए बचपन को जीवन में विकास का सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जाता है, जो वयस्कों और फलस्वरूप कल के समाज को आकार देता है। इस अवधि में बच्चों के विकास की रक्षा करना माता-पिता, राज्यों और उन सभी व्यक्तियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो एक बेहतर दुनिया के निर्माण में योगदान देना चाहते हैं।

बच्चों के शुरुआती अनुभव उनके पूरे जीवन को आकार देते हैं। ये शुरुआती अनुभव बच्चे के मस्तिष्क की नींव रखते हैं, और बच्चे की सीखने की क्षमता, उनके स्वास्थ्य और जीवन भर उनके व्यवहार को दृढ़ता से प्रभावित करते हैं। प्रत्येक बच्चा अपने पर्यावरण से प्रभावित होता है और बच्चे का सबसे पहला वातावरण घर होता है। माता-पिता बच्चे के जीवन में सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व होते हैं। जिस तरह से यह चलना, बात करना और दुनिया को समझना सीखता है, वह माता-पिता के माध्यम से होता है।

बच्चा अपने आस-पास जो देखता है उससे अपना व्यवहार सीखता है। इसमें परिवार प्रमुख भूमिका निभाता है। संयुक्त परिवार में बड़ों की उपस्थिति बच्चों के सामाजिक और नैतिक विकास में प्रभावी भूमिका निभाती है। यह परिवार की युवा पीढ़ी को मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने में भी मदद करता


है. परिवार बच्चे को भावनात्मक और शारीरिक आधार प्रदान करता है. परिवार द्वारा विकसित मूल्य इस बात की नींव हैं कि बच्चे कैसे सीखते हैं, बढ़ते हैं. ये विश्वास, बच्चे के जीवन जीने के तरीके को विकसित करते हैं. ये मूल्य और नैतिकता व्यक्ति के कार्यों में उसका मार्गदर्शन करते हैं. बच्चे परिवार के सदस्यों द्वारा सिखाए गए और दिए गए मूल्यों के आधार पर एक अच्छा इंसान बनने के लिए पारिवारिक मूल्यों का निर्माण करते हैं.

बच्चे को अन्य मनुष्यों का सम्मान करना सीखना चाहिए, दयालु होना चाहिए. गलत कार्य पर बच्चे को अनुशासित करने की आवश्यकता होती है. घर में एक स्थिर वातावरण होना चाहिए. एक बच्चे के पर्यावरण में न केवल उसका करीबी परिवार शामिल होता है बल्कि समुदाय और देश तक सब शामिल होते हैं.

यह समझना महत्वपूर्ण है कि स्वस्थ बचपन के विकास में सभी शामिल हैं माता-पिता, परिवार, नागरिक समाज और सरकार. जीवन में एक स्वस्थ शुरुआत प्रत्येक बच्चे को फलने-फूलने और एक वयस्क बनने का समान मौका देती है, जो आर्थिक और सामाजिक रूप से समुदाय के लिए सकारात्मक योगदान देता है. हालाँकि यह शुरुआत गृह जीवन, समुदाय और बच्चे के वातावरण से संबंधित कई कारकों से प्रभावित होती है. जैसे, जीवन के प्रारंभिक वर्षों में एक बच्चे को प्रोत्साहित करने और घर और अपने समुदाय में देखभाल और सुरक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता होती है.

अपने बच्चों को आत्म-संयम, जुनून और पूर्वाग्रह और बुराई रखने की आदत के लिए शिक्षित करें. यदि परिवार में नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाए तो परिवार, युवा सदस्यों के लिए, व्यवस्थित रूप से संचालित हो जाता है. परिवार, लोगों और समाज के प्रति बच्चे के दृष्टिकोण को आकार देता है और इसमें मदद करता है. बच्चे में मानसिक विकास और उसकी महत्वाकांक्षाओं और मूल्यों का समर्थन करता है. हर्षित माहौल परिवार में प्रेम, स्नेह, सहनशीलता और उदारता का विकास करेगा. सभी माता-पिता को कोशिश करनी चाहिए कि वे अपने बच्चों में - लोगों और समाज के प्रति बच्चों का दृष्टिकोण, सम्मान, दयालुता, ईमानदारी, साहस, दृढ़ता, आत्म-अनुशासन, करुणा, उदारता, निर्भरता आदि दिव्य गन विकसित करें. ऐसा करने से वे संभावित नकारात्मक सामाजिक प्रभावों से रक्षा करेंगे और नींव रखेंगे कि बच्चे अच्छे नागरिक बन सकें. यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम माता-पिता के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा नहीं कर रहे हैं.

बच्चों की परवरिश करना बहुत मुश्किल है, लेकिन यह बेहद फायदेमंद भी हो सकता है. याद रखें कि न केवल अपने बच्चे को पढ़ाएँ, बल्कि यह भी सुनिश्चित करें कि आप उस तरह से कार्य करें जिस तरह



से आप अपने बच्चे से कार्य करने की अपेक्षा करते हैं. हर समय पूर्ण होना असंभव है, लेकिन जब बाल विकास में आपकी भूमिका की बात आती है तो आप हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ बनने का प्रयास कर सकते हैं. कोई भी पूर्ण नहीं है और कोई भी परिवार पूर्ण नहीं है. माता-पिता के रूप में, आप अपने बच्चे के पहले शिक्षक हैं. डे केयर या अन्य देखभाल करने वालों से अधिक, आपके बच्चे की अधिकांश शिक्षा उनके परिवार के साथ घर पर होती है. ऐसा वातावरण बनाना जहाँ बच्चा उपयुक्त कौशल और मूल्यों को सीख सके और साथ ही यह भी सीख सके कि कैसे सामाजिक और सुरक्षित रहना है.

पापी पेट

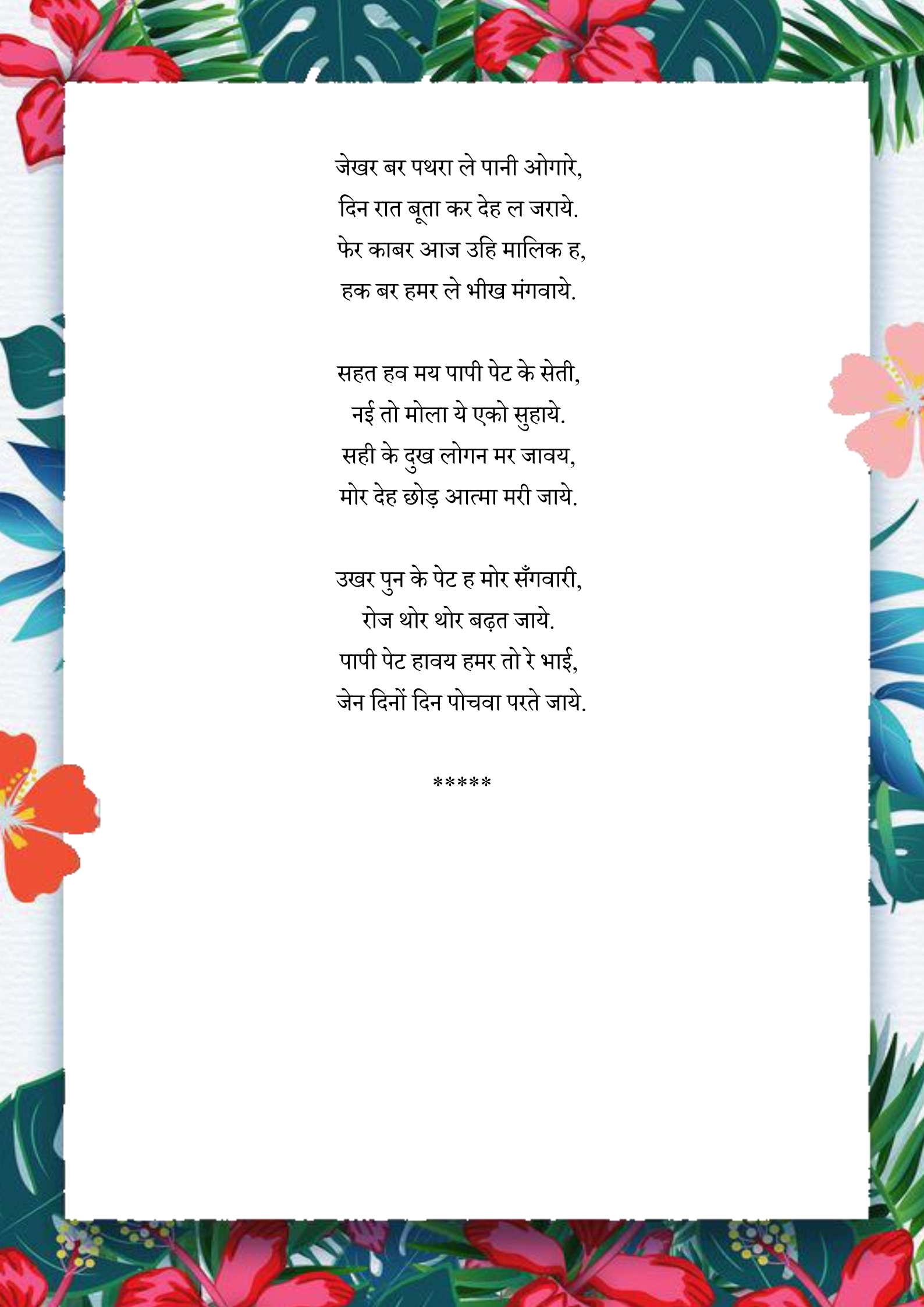
रचनाकार- सोमेश देवांगन



बाह रे पापी पेट मोर तय,
अइसन दिन मोला देखाये.
लांघन रही नइ सके तय,
का का मोर से काम कराये.

आगी उगलत सूरज घाम,
बरसत पानी न आराम कराये.
गोटकररा पथरा चिखला माटी,
रोजे गिरो फेर मोला न जनाये.

चेप चेप पियास म मुह ह सूखे,
लार घलो जावत हवय सुखाये.
मांगे मा पानी अब मिलय नही,
बिन मांगे कोन ह पानी पियाये.



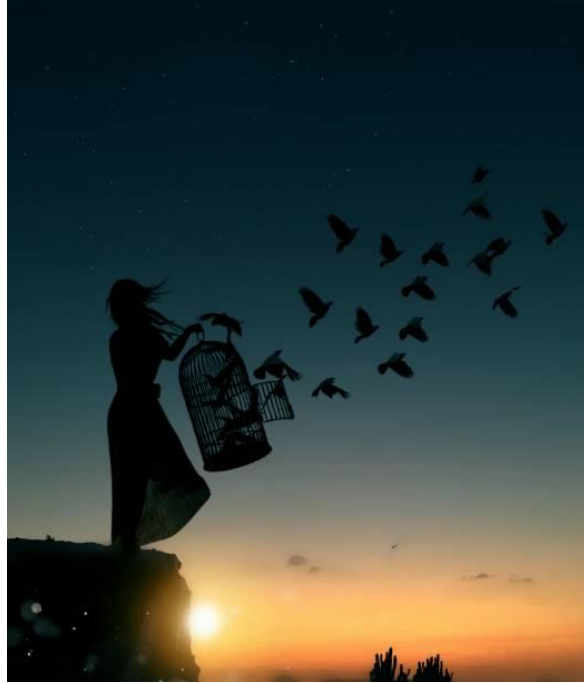
जेखर बर पथरा ले पानी ओगारे,
दिन रात बूता कर देह ल जराये.
फेर काबर आज उहि मालिक ह,
हक बर हमर ले भीख मंगवाये.

सहत हव मय पापी पेट के सेती,
नई तो मोला ये एको सुहाये.
सही के दुख लोगन मर जावय,
मोर देह छोड़ आत्मा मरी जाये.

उखर पुन के पेट ह मोर सँगवारी,
रोज थोर थोर बढ़त जाये.
पापी पेट हावय हमर तो रे भाई,
जेन दिनों दिन पोचवा परते जाये.

आजादी

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम

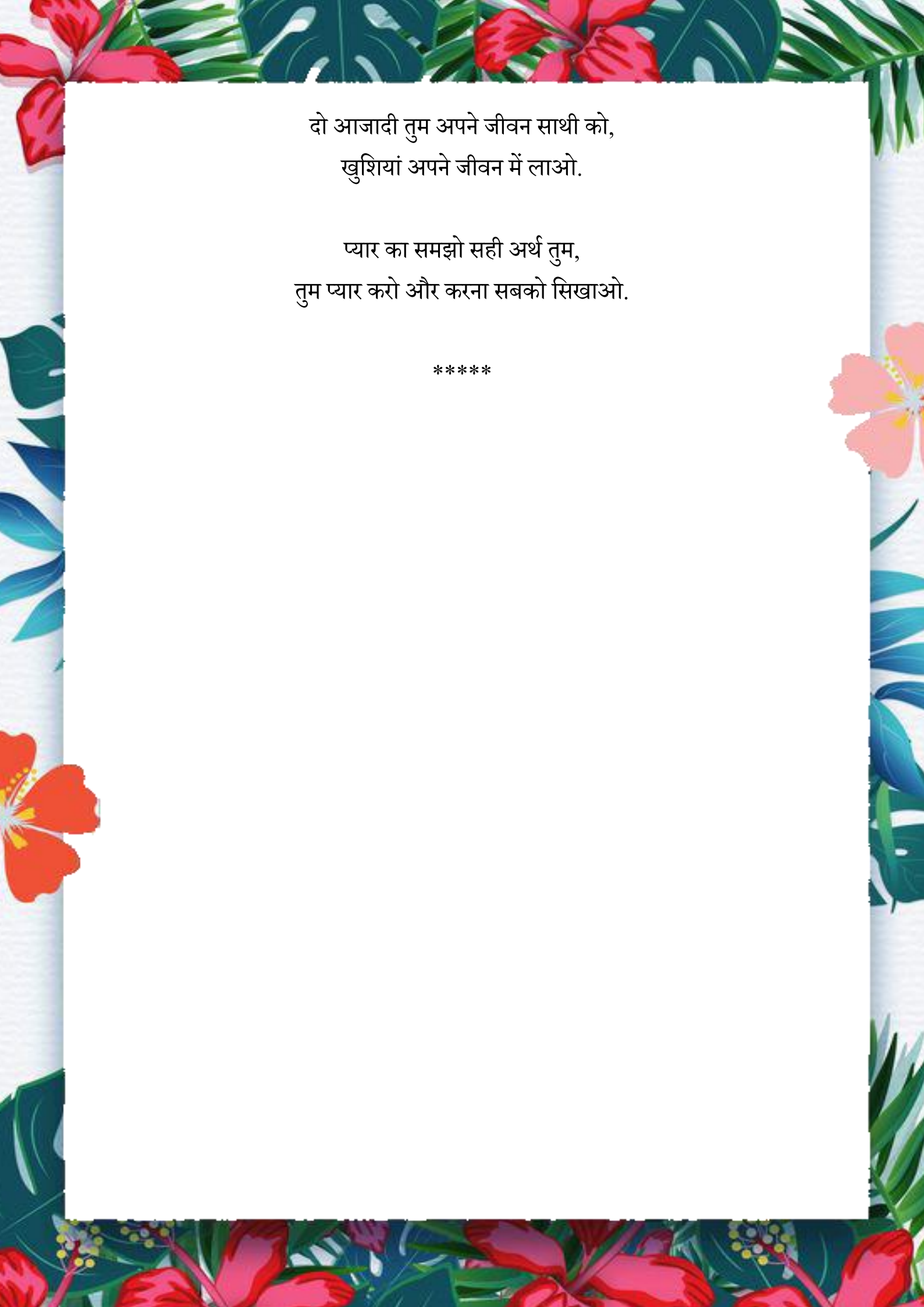


तुम प्यार करो जैसा उन्हें पसंद हैं,
रंग रूप पर न जाओ.

ज़िन्दगी जिओ जिन्दादिली से,
किसी को पिंजरे में कैद न कर आओ.

पक्षी भी पसंद करते हैं उन्मुख गगन को,
तुम भी उनके दोस्त बन जाओ.

ज़िन्दगी जीओ बिना किसी को न तकलीफ दिए,
तुम प्यार से उन्हें अपनाओ.



दो आजादी तुम अपने जीवन साथी को,
खुशियां अपने जीवन में लाओ.

प्यार का समझो सही अर्थ तुम,
तुम प्यार करो और करना सबको सिखाओ.

मिठाई

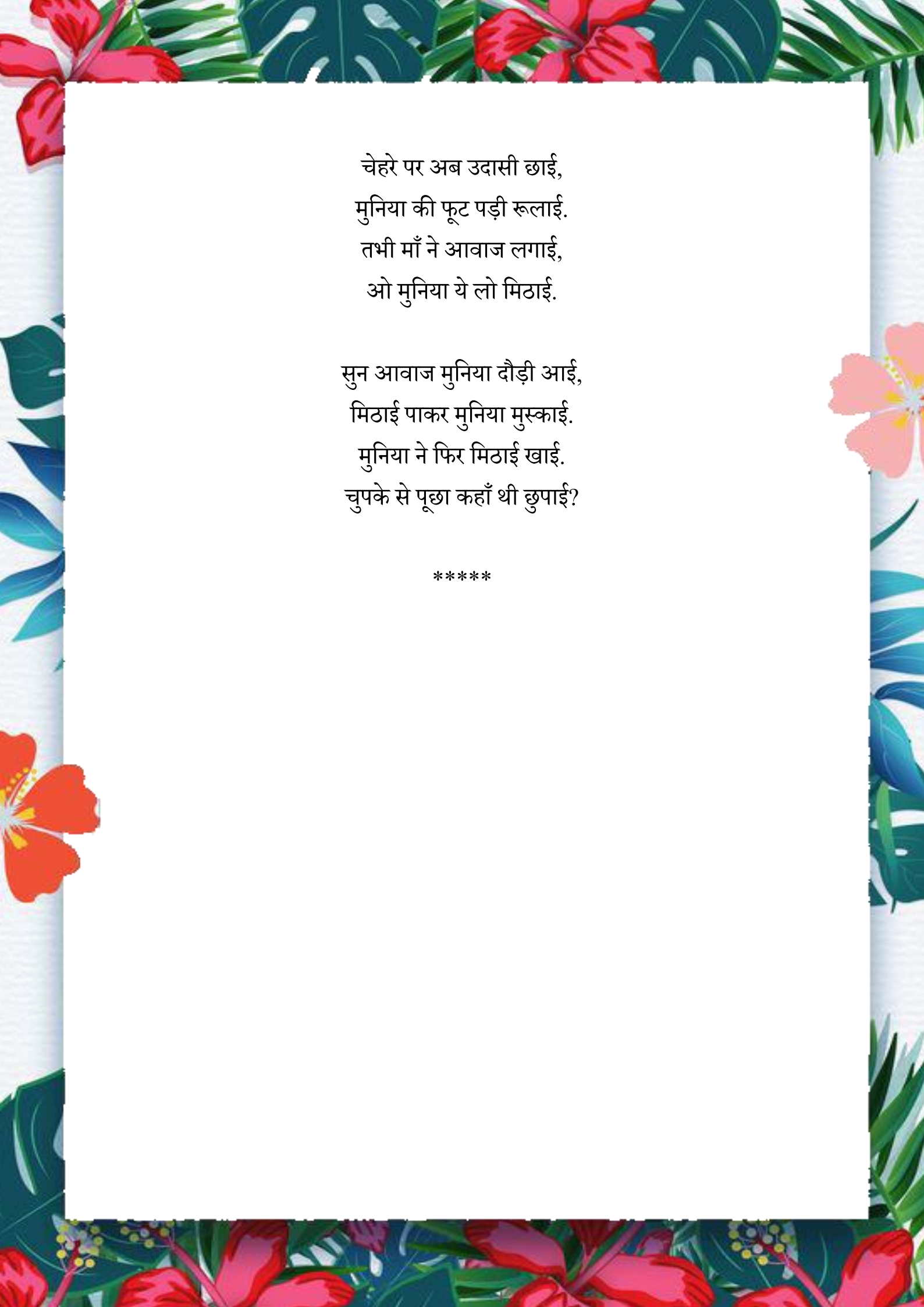
रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू"



मुनिया आज पास हो आई,
पापा लेकर आए मिठाई.
मुनिया को सिर्फ एक खिलाई,
बाकी माँ से रखवाई.

मुनिया को मिठाई बहुत भाई,
उसने सारी जुगत लगाई.
पर मिठाई हाथ न आई,
जाने, थीं माँ ने कहाँ छुपाई.

ढूँढते-ढूँढते शाम हो आई,
पर मिठाई वह ढूँढ न पाई.
उसने अपनी अकल दौड़ाई,
लेकिन वो भी काम न आई.



चेहरे पर अब उदासी छाई,
मुनिया की फूट पड़ी रूलाई.
तभी माँ ने आवाज लगाई,
ओ मुनिया ये लो मिठाई.

सुन आवाज मुनिया दौड़ी आई,
मिठाई पाकर मुनिया मुस्काई.
मुनिया ने फिर मिठाई खाई.
चुपके से पूछा कहाँ थी छुपाई?

छत्तीसगढ़ राज्य के जिलों के नाम

रचनाकार- डागेश्वर प्रसाद साहू



छत्तीसगढ़ के जिलों के नाम याद करने के लिए आसान सूत्र:-

बिमुक काज गौदुध,
बेसुद कोसरा।
जांको राम नाब,
कोबीग बसू बाबरा॥

बि- बिलासपुर
मु- मुंगेली
क- कबीरधाम
का- कांकेर
ज- जशपुर

गौ- गौरिल्ला-पेन्द्रा-मरवाही

दु- दुर्ग

ध- धमतरी

बे- बेमेतरा

सु- सुकमा

द- दंतेवाड़ा

को- कोरबा

स- सरगुजा

रा- राजनान्दगाँव

जां- जांजगीर-चांपा

को- कोरिया

रा- रायगढ़

म- महासमुंद

ना- नारायणपुर

ब- बलरामपुर

को- कोंडागाँव

बी- बीजापुर

ग- गरियाबंद

ब- बलौदाबाजार

सू- सूरजपुर

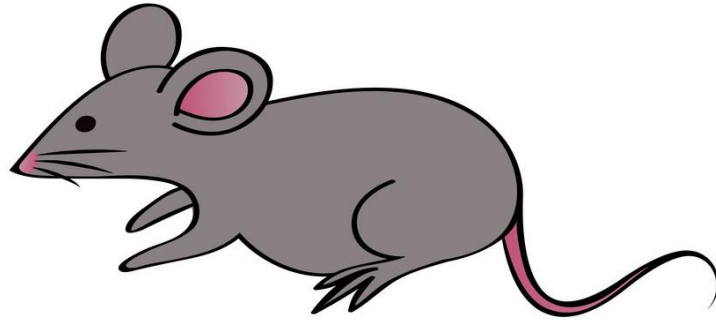
बा- बालोद

ब- बस्तर

रा- रायपुर

नटखट चूहे

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा



नटखट चूहे अन्न चुराते,
नटखट चूहे कागज खाते.

नहीं मिले उनको भोजन तो,
कपड़ों की वे धजी उड़ाते.

बिल्ली से डर के वो छिपते,
अपनी बिल के शेर कहाते.

धमा चौकड़ी करके दिन भर,
नटखट चूहे मौज मनाते.

ट्रेन की पटरियों में बस के,
नटखट चूहे फौज बढ़ाते.

बहुरुपिया हैं चंदामामा

रचनाकार- महेन्द्र कुमार वर्मा




बहुरुपिया हैं चंदामामा,
करते रोजाना हंगामा.

आधा महिना मोटा होते,
छोटा पड़ जाता पाजामा.

तारों संग जगमग करते हैं,
बादल संग करते हैं ड्रामा.

फिर अपना वो रूप घटा के,
बन जाते हैं पतले मामा.

कभी काटती बुढ़िया चरखा,
अद्भुत रूप दिखाते मामा.



दूरबीन से जब देखो तो,
पास बहुत आ जाते मामा.

रात अमावस छुट्टी लेकर,
ना जाने जाते किस धामा.

रोज नवेला रूप दिखाते,
बहुरूपिया हैं चंदामामा.

होंगे सभी निहाल

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा



जंगल के कानून से, गदहा बड़ा उदास.
राशन खातिर अब उसे, लेना होगा पास.

लेना होगा पास, चलेगी न यारी खास.
गीदड़ ले के घूस, करेगा परमिट जारी.

कहें "धीर" कविराय, सब का होगा मंगल.
होंगे सभी निहाल, जब कोई ना करे सवाल.

छुट्टी वाला रविवार कब आएगा

रचनाकार- पिकी सिंघल



आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी को आसान बनाने की जितनी भी कोशिश कर ली जाए, परंतु अपने हिस्से का वक्त कोई निकाल नहीं पाता. बस यही सुनने मिलता है कि

"क्या करें, समय ही नहीं मिलता, पूरे दिन कुछ ना कुछ चलता ही रहता है.

मतलब यह, कि आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति की जिंदगी आपाधापी वाली और बहुत तेज हो गई है. किसी के पास वक्त नहीं है. किसी और की तो बात ही क्या, यहाँ लोगों के पास खुद के लिए भी वक्त निकाल पाना मुश्किल होता जा रहा है. लोग जिंदगी तो जी रहे हैं परंतु मन से नहीं. अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए लोग आगे बढ़ने की अंधाधुंध दौड़ में पागल होते जा रहे हैं. उन्हें यह एहसास ही नहीं होता कि इस भागदौड़ और आगे बढ़ने की चाह में वे कितना कुछ खोते जा रहे हैं.

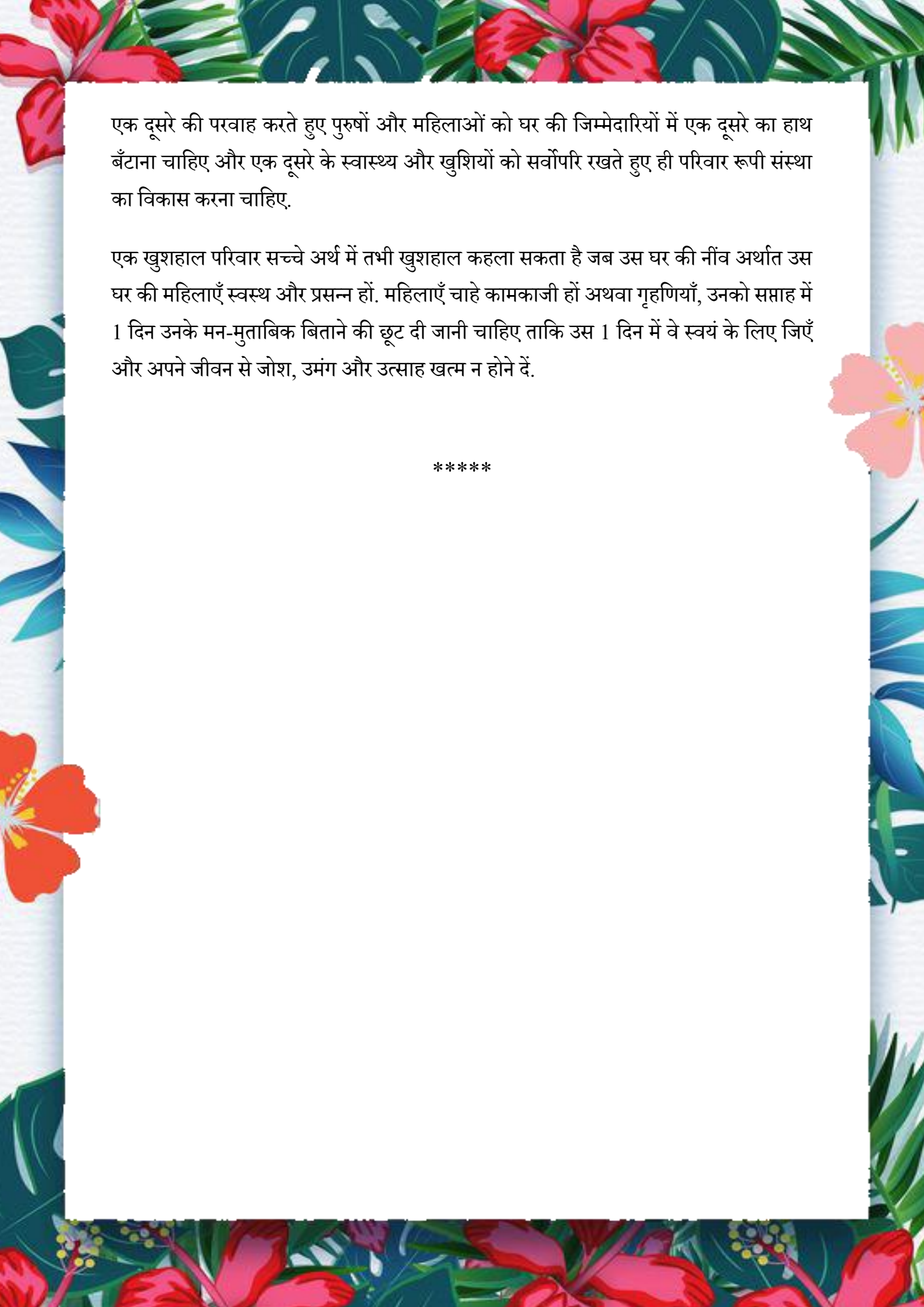
सभी को पता होता है कि बीता समय लौट कर नहीं आता, फिर भी न जाने क्यों हर कोई समय को पीछे छोड़ने की जद्दोजहद में लगा रहता है. कम समय में अधिक हासिल करने का जुनून आज सभी के सिर पर सवार है. कम समय में अधिक पाने की लालसा ने आज व्यक्ति के जीवन की उमंगों और खुशियों पर ताला ही लगा दिया है. आज इंसान अपनी जरूरत से अधिक कमा रहा है परंतु वह सुखी नहीं है.

कारण यह है कि किसी स्तर पर जाकर व्यक्ति संतोष का अनुभव नहीं करता. वह दिन दोगुनी और रात चौगुनी उन्नति करने के स्थान पर दिन आठ गुणी और रात सौलह गुणी उन्नति करने के सपने संजोता है.

आपाधापी भरी दिनचर्या के महिला और पुरुष दोनों ही बराबर के शिकार देखे जाते हैं, परंतु आज इस लेख का मुख्य केंद्र महिलाएँ हैं. यदि रविवार की छुट्टी की बात की जाए तो अधिकतर महिलाओं के हिस्से में रविवार कभी आता ही नहीं है, जिस दिन वे छुट्टी मानकर इंजॉय कर सकें. विशेष रूप से कामकाजी महिलाएँ तो रविवार शब्द, जिसका उन्हें पूरे सप्ताह बेसब्री से इंतजार रहता है, का अर्थ ही भूल गई हैं, क्योंकि पूरे सप्ताह भागम भाग करने के पश्चात जब रविवार आता है तो उनके पास जिम्मेदारियों और कामों की एक बड़ी मोटी गठरी पहले से ही तैयार होती है. इन कामों में, घर के बिखरे सामान संभालना, बच्चों के स्कूल का बचा काम निपटवाना, घरवालों के लिए उनकी पसंद के व्यंजन बनाना, रिश्तेदारों का आना जाना, बाजार जाकर पूरे सप्ताह के राशन और अन्य जरूरतों का सामान जुटाना आदि आदि.

तो क्या करें एक नारी?? जिसके हिस्से में पूरे साल में कोई ऐसा दिन नहीं आता जिसे वह अपने तरीके से इस्तेमाल कर खुद को हल्का और अच्छा महसूस कर सके. इसका प्रत्यक्ष संबंध उसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य से है. वह चाहते हुए भी अपने मन की नहीं कर पाती और हर वक्त अपनों के अनुसार जिंदगी जीना शुरू कर देती है. परिणाम यह होता है कि वह स्वयं को जैसे भूल ही जाती है और उसका मानसिक विकास अवरुद्ध होने लगता है, वह समय से पहले स्वयं को वृद्ध मानने लगती है, उसके मन से उमंग और उत्साह का ह्रास होने लगता है, वह कम काम करने के बाद भी बहुत अधिक थकने लगती है. सारा समय जिम्मेदारियाँ निभाते निभाते एक स्थिति ऐसी भी आती है, जब वह अंदर से चाहने लगती है कि काश!!! इस थका देने वाली दिनचर्या को छोड़कर कहीं दूर शांत एक टापू पर अपना बसेरा बना पाना संभव होता.

यह स्थिति महिलाओं के लिए किसी प्रताड़ना से कम नहीं होती. कोई भी महिला या पुरुष इस प्रकार की नकारात्मक स्थिति का शिकार न होने पाए, इसलिए परिवार के सभी लोगों को मिलजुलकर जिम्मेदारियों का बीड़ा उठाना होगा और महिलाओं के हिस्से का समय उन्हें देना होगा. पुरुष और स्त्री दोनों मिल-जुलकर गृहस्थी चलाते हैं, वे एक दूसरे के पूरक भी कहे जाते हैं, परंतु, हकीकत कुछ और ही होती है. अधिकतर घरों में आज भी घर बाहर की अधिकतर जिम्मेदारियों को निभाने का जिम्मा महिलाओं का ही होता है.



एक दूसरे की परवाह करते हुए पुरुषों और महिलाओं को घर की जिम्मेदारियों में एक दूसरे का हाथ बँटाना चाहिए और एक दूसरे के स्वास्थ्य और खुशियों को सर्वोपरि रखते हुए ही परिवार रूपी संस्था का विकास करना चाहिए.

एक खुशहाल परिवार सच्चे अर्थ में तभी खुशहाल कहला सकता है जब उस घर की नींव अर्थात् उस घर की महिलाएँ स्वस्थ और प्रसन्न हों. महिलाएँ चाहे कामकाजी हों अथवा गृहणियाँ, उनको सप्ताह में 1 दिन उनके मन-मुताबिक बिताने की छूट दी जानी चाहिए ताकि उस 1 दिन में वे स्वयं के लिए जिँ और अपने जीवन से जोश, उमंग और उत्साह खत्म न होने दें.

जंगल में कारोबार

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा



भालू जी को चाकरी, पंछी को व्यापार.
अब जंगल में सभी का. होगा कारोबार.

होगा कारोबार, आलसी सभी डरेंगे,
गाय, बकरियां या, भैंस, जाके खुद ही चरेंगे.

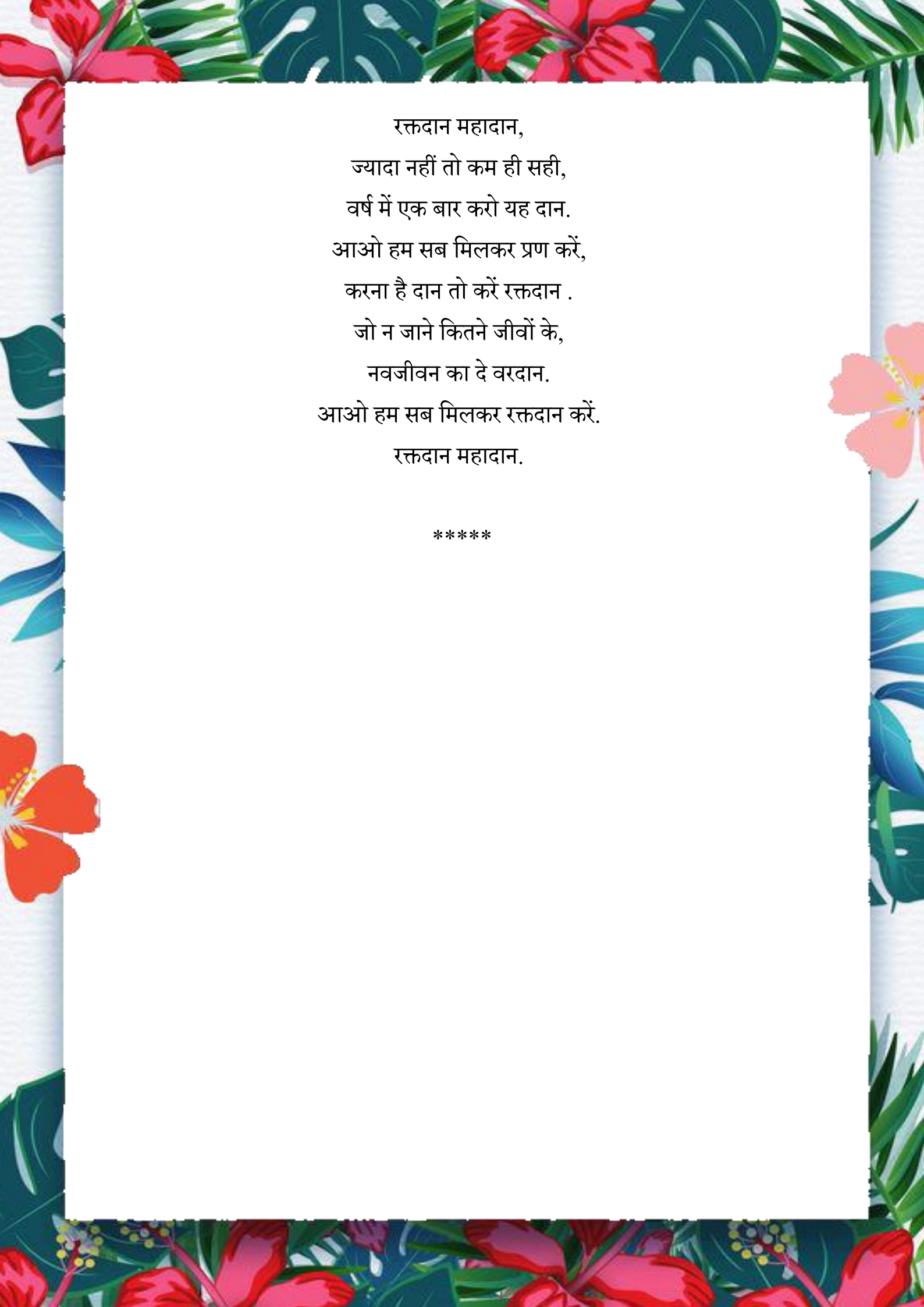
कहें धीर कविराय, कोई न होगा टालू.
काम करेंगे सभी, बन्दर शेर और भालू.

रक्तदान महादान

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे



रक्तदान महादान दान
दान में सबसे ऊंचा स्थान,
रक्तदान महादान.
कर्मों में सबसे महान,
रक्तदान महादान.
न देने वाला, न लेने वाला,
न देखता कि यह है किसका.
जीवन रक्षक है यह सबका.
न अमीर, न गरीब
न ऊंचा, न नीचा
न कोई जात, न कोई पात
सबके लिए है यह,
जीवन का अनमोल दान.



रक्तदान महादान,
ज्यादा नहीं तो कम ही सही,
वर्ष में एक बार करो यह दान.
आओ हम सब मिलकर प्रण करें,
करना है दान तो करें रक्तदान .
जो न जाने कितने जीवों के,
नवजीवन का दे वरदान.
आओ हम सब मिलकर रक्तदान करें.
रक्तदान महादान.

पर्यावरण बचाएं

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे



आओ मिलकर पर्यावरण बचाएं,
आने वाले कल को सजाएं,
हरी-भरी सुगंधित वादियां सवारे,
आओ मिलकर पर्यावरण बचाएं.

वह कल-कल करती झरने,
पक्षियों की चहचहाहट.
उछलते-कूदते, तैरते जीव जंतु,
हरा भरा था जंगल,

आज सब बंजर हो गया.
सभी आज दूषित हो गया.
यह सब देन है मानव की,
आधुनिक खोज कर,

नवआविष्कार कर ली.
आज हम अपने पर्यावरण का
संतुलन बिगड़ चुके हैं.
प्राकृतिक हवा अब दूषित हो गई,

जीवो को अब सांस लेना दुर्लभ हो रहा,
ऑक्सीजन सिलेंडर अब
मिलो से लेना पड़ रहा.
यह हमारे कर्मों का ही फल है.

अभी भी समय है संभल जाओ.
आओ मिलकर पर्यावरण बचाएं,
एक -एक पेड़ मिलकर लगाए.
पानी व्यर्थ न बहने दे,

रासायनिक चीजों से बचें,
जो हमारे जीवों का काल है.
जैविक चीजों का प्रयोग करें.
आओ मिलकर पर्यावरण बचाएं.

आने वाले कल को सजाएं,
हरी भरी सुगंधित, वसुंधरा सवारे.

हीरा

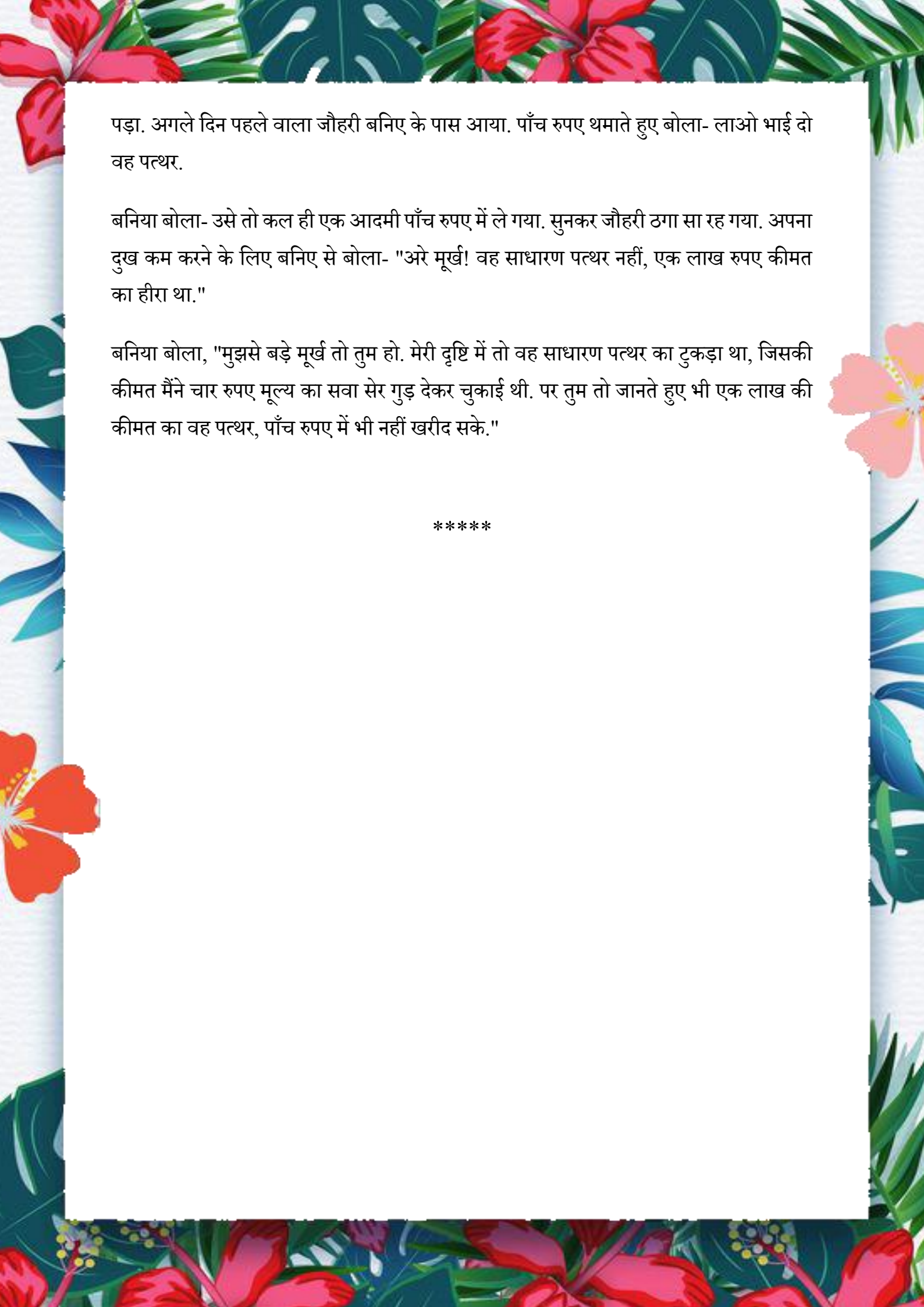
रचनाकार- मनोज कश्यप



एक कुम्हार को मिट्टी खोदते हुए अचानक एक हीरा मिल गया. उसने वह हीरा अपने गधे के गले में बाँध दिया. एक दिन एक बनिए की नजर गधे के गले में बँधे हीरे पर पड़ी. उसने कुम्हार से उसका मूल्य पूछा. कुम्हार ने कहा, सवा सेर गुड़. बनिए ने कुम्हार को सवा सेर गुड़ देकर वह हीरा खरीद लिया. बनिए ने भी उस हीरे को एक चमकीला पत्थर ही समझा और अपनी तराजू की शोभा बढ़ाने के लिए उसकी डंडी से बाँध दिया.

एक दिन एक जौहरी की नजर तराजू पर बँधे हीरे पर पड़ गई. उसने बनिए से उसका दाम पूछा. बनिए ने कहा, पाँच रुपए. जौहरी कंजूस व लालची था. हीरे का मूल्य केवल पाँच रुपए सुनकर वह समझ गया कि बनिया इस कीमती हीरे को एक साधारण पत्थर समझ रहा है. जौहरी भाव-ताव करने लगा-पाँच नहीं, चार रुपए ले लो. बनिये ने मना कर दिया. जौहरी ने सोचा कि इतनी जल्दी भी क्या है ? कल आकर फिर कहूँगा, यदि नहीं मानेगा तो पाँच रुपए देकर खरीद लूँगा.

संयोग से दो घंटे बाद एक दूसरा जौहरी सामान खरीदने बनिए की दुकान पर आया. तराजू पर बँधे हीरे को देखकर वह भी चौंक गया. उसने सामान खरीदने के बाद उस चमकीले पत्थर का दाम पूछ लिया. बनिए के मुख से पाँच रुपए सुनते ही उसने झट उसे पाँच रुपये थमाए और हीरा लेकर खुशी-खुशी चल



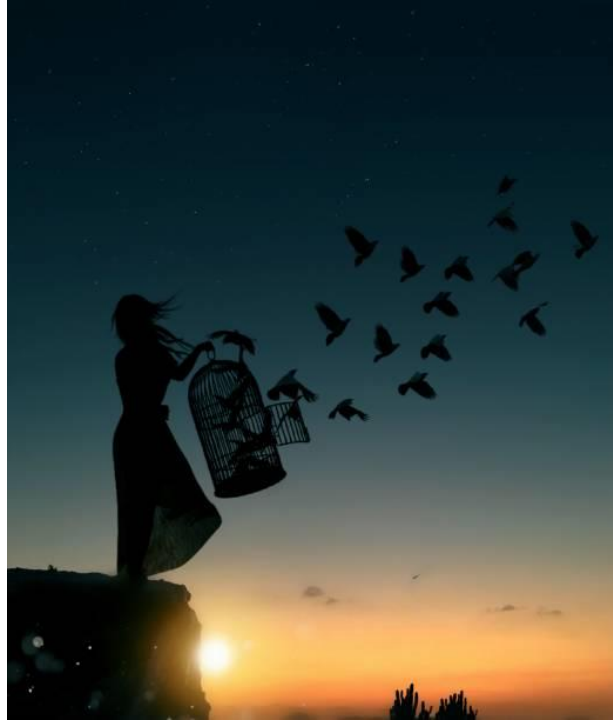
पड़ा. अगले दिन पहले वाला जौहरी बनिए के पास आया. पाँच रुपए थमाते हुए बोला- लाओ भाई दो वह पत्थर.

बनिया बोला- उसे तो कल ही एक आदमी पाँच रुपए में ले गया. सुनकर जौहरी ठगा सा रह गया. अपना दुख कम करने के लिए बनिए से बोला- "अरे मूर्ख! वह साधारण पत्थर नहीं, एक लाख रुपए कीमत का हीरा था."

बनिया बोला, "मुझसे बड़े मूर्ख तो तुम हो. मेरी दृष्टि में तो वह साधारण पत्थर का टुकड़ा था, जिसकी कीमत मैंने चार रुपए मूल्य का सवा सेर गुड़ देकर चुकाई थी. पर तुम तो जानते हुए भी एक लाख की कीमत का वह पत्थर, पाँच रुपए में भी नहीं खरीद सके."

आज़ादी

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे



खुले गगन में उड़ने वाले पंछी को,
यू पिंजरे में कैद ना करो.
उन्हें भी खुले गगन में उड़ना है,
धरती पर दाना चुगना है.
उन्हें भी समूहों में अठखेलियां करना है
खुले गगन में उड़ने वाले पंछी को,
यू पिंजरे में कैद ना करो.
ममता की मोह से,
उनका बचपन न छीनो.
उन्हें भी मां के साथ -साथ
दाना चुगना सीखना है.

पंख फैलाकर उन्हें भी उड़ना है
यह सब उनको भी तो सीखना है.
खुले गगन में उड़ने वाले पंछी को,
यू पिंजरे में कैद ना करो.
अपने घर की सुंदरता खातिर,
पालने का शौक्र मत करो.
दूसरे के घर न उजाडो.
उनकी भी तो इच्छा है,
खुले गगन में विचरण करना है.
सब के साथ अठखेलियां करना है.
खुले गगन में उड़ने वाले पंछी को
यू पिंजरे में कैद ना करो.
यूं स्वयं को एक दिन
पिंजरे में कैद करके देखो,
तब लगेगा कैद क्या होता है.
हमने पंछी को आंख खुलने से
पहले ही कैद कर लिया.
हमने कितना बड़ा गुनाह
आज कर किया,
अब इन नन्हे पंछी को,
आजाद करो,आजाद करो
उनका हक उन्हें दे दो,
उनको आजाद करो,आजाद करो
मानवता उन पर न्यौछावर कर दो.

बड़ी बुआ

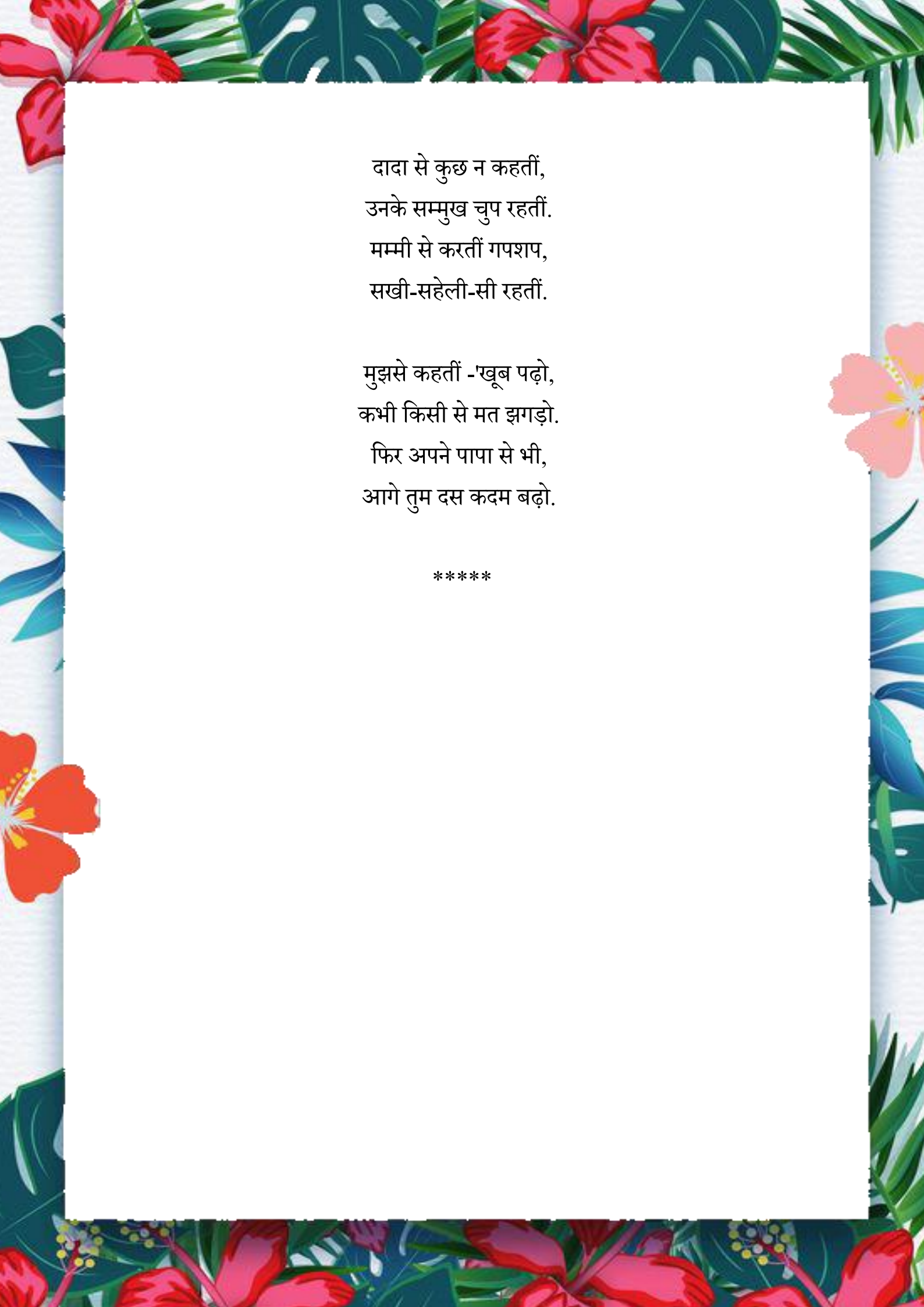
रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव



ये हैं मेरी- बड़ी बुआ,
मुझे कहती हैं 'बबुआ'.
लाड़ बहुत मुझसे करतीं,
मुझे खिलातीं मालपुआ.

जब भी इस घर आती हैं,
खेल-खिलौने लाती हैं.
जाने से पहले मुझको,
कपड़े नये दिलाती हैं.

इनकी माँ मेरी दादी,
बूढ़ी हैं सीधी-सादी.
बुआ कहें, इतने जल्दी,
क्यों कर दी मेरी शादी.



दादा से कुछ न कहतीं,
उनके सम्मुख चुप रहतीं.
मम्मी से करतीं गपशप,
सखी-सहेली-सी रहतीं.

मुझसे कहतीं -'खूब पढ़ो,
कभी किसी से मत झगड़ो.
फिर अपने पापा से भी,
आगे तुम दस कदम बढ़ो.

भारतीय संस्कारों की सरिता, महान परंपरा

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



भारतीय संस्कारों की महान परंपरा, भारतीय सभ्यता, वैचारिक अधिष्ठान रूपी आवाज़ अब केवल भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं है, यह विश्व भर में फैल रही है और पूरे विश्व को जोड़ रही है. इसका एहसास हमें अब होने लगा है, क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और टीवी चैनलों पर भारत के प्रधानमंत्री के विदेश दौरों में, वहाँ पीढ़ियों से बसे भारतीय मूल के लोगों के दिल में उनके पूर्वजों द्वारा भारत से लाए लोकतांत्रिक मूल्यों, कर्तव्यों से संस्कारों का प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा.

भारतीय सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध सभ्यता है. इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है. जीने की कला, विज्ञान या राजनीति के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति का विशेष स्थान रहा है. विश्व की संस्कृतियाँ समय की धारा के साथ-साथ नष्ट हो रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है. पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिये प्रसिद्ध देश है. ये विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है. भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है.

भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व शिष्टाचार, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य आदि हैं. अब जबकि हर एक व्यक्ति की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं. विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक

अनोखा देश, भारत बनाया है. अपनी संस्कृति और परंपरा का अनुसरण करते हुए भारत में लोग शांतिपूर्ण तरीके से रहते हैं.

भारतीय संस्कृति के प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं,

- (1) आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय,
- (2) सम्मानता- समभाव
- (3) अनेकता में एकता
- (4) भारत माता का हित एवं उन्नति की सोच
- (5) ग्रहणशीलता
- (6) शास्त्रों की महानता
- (7) विविधता और प्राचीनता
- (8) भावनाएँ-विश्वास-परम्पराएँ
- (9) गतिशीलता- निरंतरता
- (10) लचीलापन एवं सहिष्णुता
- (11) वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना
- (12) जीवों का संरक्षण, सभी प्राणियों के हितैषी,
- (13) लोकहित और विश्व-कल्याण
- (14) पर्यावरण संरक्षण
- (15) नारियों का सम्मान.

अगर हम माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिनांक, 1 मई 2022 को एक कार्यक्रम में संबोधन की बात करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने कहा, एक भारतीय दुनिया में कहीं भी रहे, कितनी ही पीढ़ियों तक रहे, उसकी भारतीयता, उसकी भारत के प्रति निष्ठा, लेश मात्र भी कम नहीं होती. वो भारतीय जिस देश में रहता है पूरी लगन और ईमानदारी से उस देश की भी सेवा करता है. जो लोकतांत्रिक मूल्य, जो कर्तव्यों का अहसास उसके पुरखे भारत से ले गए होते हैं, वो उसके दिल के कोने में हमेशा जीवंत रहते हैं. ऐसा इसलिए, क्योंकि भारत एक राष्ट्र होने के साथ ही एक महान परंपरा है, एक वैचारिक अधिष्ठान है, एक संस्कार की सरिता है. भारत वो शीर्ष चिंतन है- जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करता है. भारत दूसरे के नुकसान की कीमत पर अपने उत्थान के सपने नहीं देखता. भारत अपने साथ सम्पूर्ण मानवता के, पूरी दुनिया के कल्याण की कामना करता है. इसीलिए, कनाडा या किसी भी और देश में जब भारतीय

संस्कृति के लिए समर्पित कोई सनातन मंदिर खड़ा होता है, तो वो उस देश के मूल्यों को भी समृद्ध करता है. इसलिए, आप कनाडा में भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाते हैं, तो उसमें लोकतन्त्र की साझी विरासत का भी सेलेब्रेशन होता है. इसलिए, मैं मानता हूँ, भारत की आज़ादी के अमृत महोत्सव का ये सेलेब्रेशन कनाडा के लोगों को भारत को और नजदीक से देखने समझने का अवसर देगा.

अगर हम इस पूरे विवरण का विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि भारतीय संस्कारों की सरिता, महान परंपरा विदेशों में बसे भारतीयों के दिल में उनके पुरखों द्वारा भारत से लाए लोकतांत्रिक मूल्यों, कर्तव्यों संस्कारों की सरिता हमेशा जीवंत पर रहती है तथा वैश्विक स्तरपर भारत की प्रतिष्ठा शीर्ष स्तरपर पहुंचाने में भारतीयों, भारतीय मूल के सभी लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका है.

माता पिता की महिमा

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम



न मैं मंदिर जाता न मस्जिद, न गुरुद्वारा जाता हूँ,
रोज सुबह शाम माता-पिता के चरणों में शीश नवाता हूँ.
न नमाज़ पढ़ा न हनुमान चालीसा न पढ़ा गीता कुरान,
फिर भी मिल जाता है मेरी रूह को सुकून, आराम.

माता पिता के चरणों में ही पाया ईश्वर धाम,
फिर क्यों पूजू मैं कोई मूर्ति मूर्ति भगवान.
मां की ममता में ही समाई है जगत की सृष्टि सारी,
मां के बिना अधूरे स्वयं जगत के पालनहारी.

हर बार अवतार लिए और बनें मां नाम के देखो पुजारी,
मात -पिता की महिमा बड़ी ही है देखो महान,
जितना हम करें कम ही है उनका बखान.
जिनसे मुझे प्राप्त हुआ अपार है ज्ञान.

फिर से वो बचपन लौटा दो

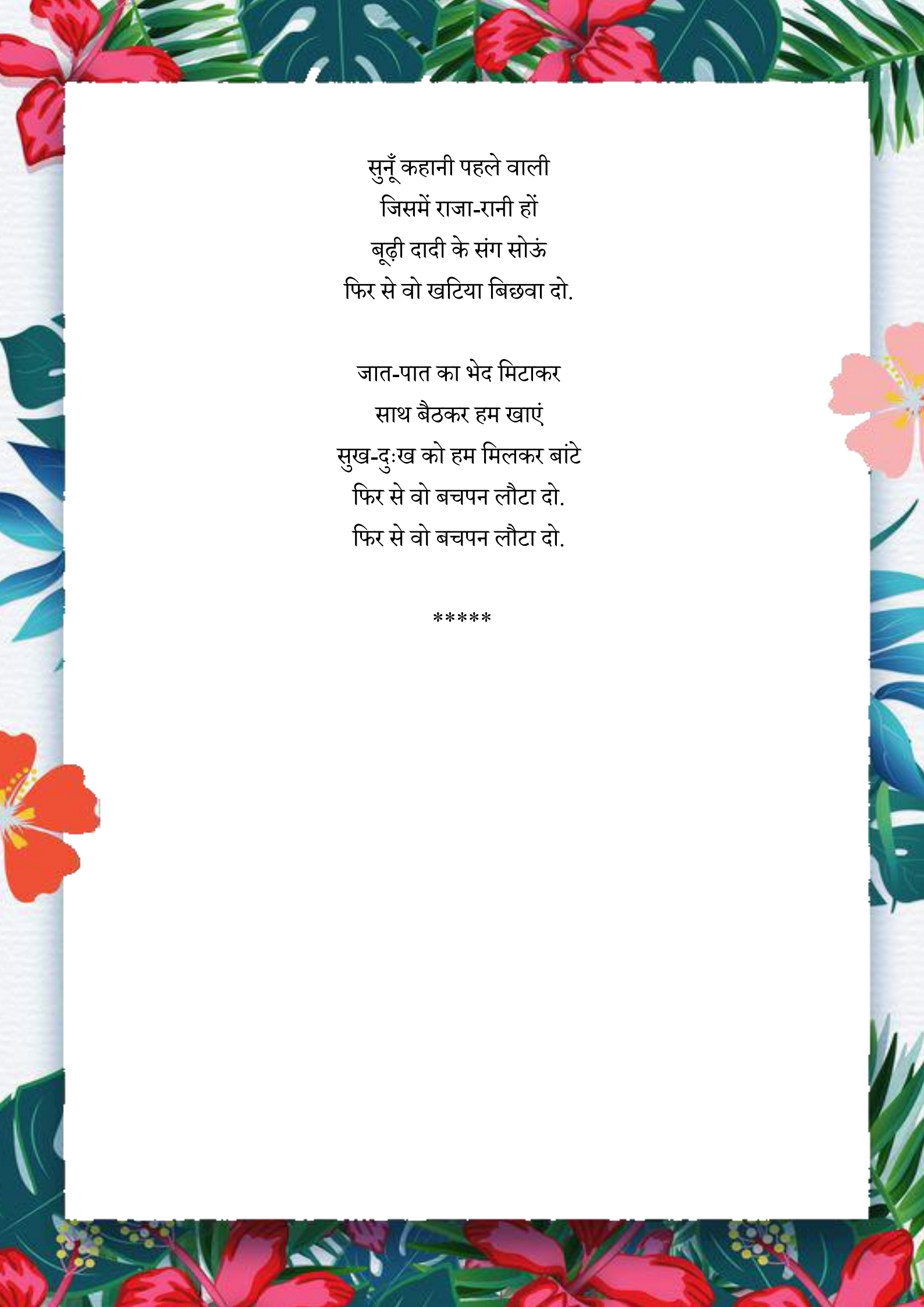
रचनाकार- विजय कनौजिया



क ख ग घ पुनः पढ़ा दो
स्कूलों की सैर करा दो
हंसते गाते पढ़ने जाएं
पहली की कक्षा लगवा दो.

छुपन-छुपाई फिर खेलेंगे
पेड़ों से अमियाँ तोड़ेंगे
उछल कूद वाली डाली की
फिर से वो खुशियाँ लौटा दो.

गर्मी की छुट्टियां मनाने
फिर से नानी के घर जाऊं
आइसक्रीम खाने की ज़िद हो
फिर से वो भोंपू बजवा दो.



सुनूँ कहानी पहले वाली
जिसमें राजा-रानी हों
बूढ़ी दादी के संग सोऊं
फिर से वो खटिया बिछवा दो.

जात-पात का भेद मिटाकर
साथ बैठकर हम खाएं
सुख-दुःख को हम मिलकर बांटे
फिर से वो बचपन लौटा दो.
फिर से वो बचपन लौटा दो.

मेरा भारत सोने की चिड़िया

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



मेरा भारत सोने की चिड़िया,
मेरे भारत की क्या बात है.

सर पर जिसके जगमग चमकता,
हिमालय का स्वर्णिम ताज है.
रखवाली करता आतंकियों से,
वीर जवानों का सदा साथ है.
मेरा भारत सोने की चिड़िया मेरे की.

चारों तरफ हरियाली का राज है.
सदाबहार अपना यह देश है.
हर किसी का अलग पहनावा अलग वेश है.
कहीं पर्वतों की लड़ियां तो कहीं बिखरा रेत है.
मेरा भारत सोने की चिड़िया.

कश्मीर को कहते सब स्वर्ग सदृश्य है.
भारत के कोने-कोने में मनोरम दृश्य है.
पूर्व में सात बहनों का सुंदर संसार मिश्र है.

(मिश्र=मिला हुआ, मिश्रण)

अरुणाचल में उगते सूर्य का मनमोहक दृश्य है.
मेरा भारत सोने की चिड़िया.

दक्षिण में पैरों को धोता महासागरों का सरताज है.
हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक फैला राज है
पूरे भारत में फैला सुंदर नदियों का जाल है.
मेरा भारत अनाजो, खनिजों से मालामाल है.
मेरा भारत सोने की चिड़िया.

बोली यहां की भिन्न-भिन्न है, भिन्न भिन्न है भाषाएं.
खानपान भी भिन्न-भिन्न है धर्मों की है विशिष्टताएं.
भारत है समृद्ध यहां है, अनेकों जैव विविधताएं.
देखा है अनेकों संघर्ष झेले हैं अनेकों विशेषताएं.
मेरा भारत सोने की चिड़िया.

हर राज्य की अपनी यहां अलग पहचान है.
अनेकता में एकता ही भारत की शान है.
शिक्षा संस्कार धर्म यहाँ का गौरवमय अभिमान है.
पुरातन स्वर्णिम संस्कृति हमारी आन, बान शान है.
मेरा भारत सोने की चिड़िया.

धरती का स्वर्ग

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



बचपन से हम सुनते और पढ़ते आ रहे हैं कि धरती पर एक स्वर्ग है और वह जम्मू कश्मीर है. मस्तिष्क में विचार आ ही जाता है कि जन्नत की सैर कर लें. वैसे तो हम दादा-दादी नाना-नानी से स्वर्ग-नर्क के किस्से कहानियाँ सुनते ही आ रहे हैं. मानव जीवन जब त्यागा जाता है तो कर्मों के अनुसार स्वर्ग-नर्क जा सकते हैं ऐसा बताया जाता है परंतु यहाँ तो जीते जी ही स्वर्ग के दर्शन हो रहे हैं. यहाँ नर्क का नामोनिशान नहीं है तो स्वाभाविक रूप से हर व्यक्ति इस स्वर्ग में जाना पसंद करेगा.

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जानकारी के अनुसार वहाँ बहुत ही सुख शांति अमन चैन था. परंतु 1990 से वहाँ की परिस्थितियाँ बदलीं और बदलती चली गईं. दंगे, पलायन का मंजर याद कर, 1947 की व्यथा बुजुर्गों को याद आती है. खैर, हम अभी उनमें न जाकर हमारे स्वर्ग दर्शन, भ्रमण के रास्ते पर तीव्र गति से बढ़ते चरणों की बात करें तो खुशियों की महक आएगी.

अगर हम इस स्वर्ग के निर्बाध खुलते चरणों की बात करें तो आर्टिकल 370 हटने के बाद यह साफ़ हो गया था कि यह क्रम तीव्रता से बढ़ेगा. हमने देखा कि पीएम महोदय ने भी उसके बाद पहली बार अभी कश्मीर का दौरा किया और परिसीमन आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट 5 मई 2022 को जारी कर दी है. मार्च 2020 में एक जस्टिस (सेवानिवृत्त) की अध्यक्षता में बनाई गई कमेटी के कार्यकाल में दो बार वृद्धि की गई, अंतिम बार 6 मई 2022 तक कार्यकाल बढ़ाया गया था. अब रिपोर्ट सरकार को सौंपी

जाएगी और विधानसभा चुनाव कराने का रास्ता साफ हो गया है. अब शीघ्र ही हमें जम्मू कश्मीर में चुनाव का बिगुल सुनाई देगा, अक्टूबर से दिसंबर तक या अमरनाथ यात्रा के बाद चुनाव होने की संभावना है.

अगर हम परिसीमन आयोग की रिपोर्ट की बात करें तो मीडिया के अनुसार, जम्मू कश्मीर विधानसभा की प्रस्तावित कुल सीटें: 90, कश्मीर संभाग : 47, जम्मू संभाग: 43, अनुसूचित जाति: 07 अनुसूचित जनजाति : 09, यानी हम कह सकते हैं, आयोग ने केंद्र शासित प्रदेश में सीटों की संख्या 83 से बढ़ाकर 90 करने का प्रस्ताव दिया है. साथ ही पहली बार अनुसूचित जनजातियों के लिए 9 सीटों को रिजर्व करने के लिए कहा है. इनमें से 43 सीटें जम्मू और 47 सीटें कश्मीर में होंगी. इसके पहले 83 सीटों में 37 जम्मू और 46 कश्मीर में थीं. उल्लेखनीय है कि 2018 से ही जम्मू-कश्मीर में निर्वाचित सरकार नहीं है हाल ही में केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा था कि परिसीमन की प्रक्रिया पूर्ण होते ही जम्मू-कश्मीर में चुनाव होंगे.

5 अगस्त 2019 से पहले जम्मू -कश्मीर विधानसभा में कुल 111 सीटें थीं. इनमें से 46 कश्मीर में, 37 जम्मू में, 4 लद्दाख में थीं. पड़ोसी मुल्क के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के लिए 24 सीटें रिजर्व रखी गई हैं. अभी तक जम्मू-कश्मीर विधानसभा की 87 सीटों पर चुनाव होते रहे हैं.

अलग केंद्र शासित प्रदेश बनने के बाद लद्दाख की 4 सीटों को हटा दिया गया है. इस तरह विधानसभा की कुल 83 सीटें बची हैं. जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन एक्ट 2019 के मुताबिक, जम्मू-कश्मीर विधानसभा में 7 सीटें बढ़ाई जाएंगी. केंद्र सरकार की मंजूरी के बाद चुनाव आयोग वोटर लिस्ट तैयार करने की कार्यवाही शुरू कर देगा. जम्मू-कश्मीर परिसीमन आयोग के अनुसार लोकसभा की पाँच सीटों में दो-दो सीटें जम्मू और कश्मीर संभाग में होंगी जबकि एक सीट दोनों के साझा क्षेत्र में होंगी. यानी आधा इलाका जम्मू संभाग का और आधा कश्मीर घाटी का होगा. इसके अलावा दो सीटें कश्मीरी पंडितों के लिए भी रिजर्व रखी गई हैं. अनंतनाग और जम्मू के राजौरी और पुंछ को मिलाकर एक संसदीय क्षेत्र बनाया गया है.

जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव अक्टूबर-दिसंबर तक हो सकते हैं. केंद्रीय गृहमंत्री ने फरवरी में कहा था कि परिसीमन की प्रक्रिया जल्द पूरी होने वाली है. अगले छह से आठ महीने में विधानसभा के चुनाव होंगे. इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है. माना जा रहा है कि विधानसभा चुनाव अमरनाथ यात्रा के बाद कराना ज्यादा मुफीद माना जा रहा है क्योंकि यात्रा की सुरक्षा व्यवस्था के लिए केंद्रीय

बल प्रदेश में मौजूद रहेंगे. चुनाव में सुरक्षा व्यवस्था के लिए अतिरिक्त तामझाम नहीं करना होगा. ऐसा विचार मीडिया में आया है.

साथियों बात अगर हम परिसीमन आयोग की करें तो, ये हैं आयोग के सदस्य जस्टिस (सेवानिवृत्त) रंजना देसाई के नेतृत्व में गठित इस पैनल में मुख्य चुनाव आयुक्त सुशील चंद्रा और जम्मू-कश्मीर के राज्य चुनाव आयुक्त इसके पदेन सदस्य हैं. परिसीमन आयोग ने अपनी अंतरिम रिपोर्ट सहयोगी सदस्यों को 4 फरवरी को सौंपी थी. फरवरी 2022 में आयोग को काम पूरा करने के लिए दो महीने का विस्तार दिया गया था. वरना आयोग की समय सीमा 6 मार्च को समाप्त हो गई थी.

यह विशेष उल्लेखनीय है कि, केंद्र शासित प्रदेश का पिछला परिसीमन 1995 में हुआ था. जहां पैनल को अपनी रिपोर्ट देने में सात साल का समय लगा था. जबकि मौजूदा आयोग को कोरोना वायरस महामारी के बावजूद अपना काम पूरा करने में दो साल से थोड़ा ज्यादा समय लगा. मार्च 2020 में बने इस पैनल को 2021 में एक साल का विस्तार दिया गया था.

जम्मू-कश्मीर में आखिरी बार परिसीमन 1995 में हुआ था. उस समय जम्मू-कश्मीर में 12 जिले और 58 तहसीलें हुआ करती थीं. वर्तमान में प्रदेश में 20 जिले हैं और 270 तहसील हैं. पिछला परिसीमन 1981 की जनगणना के आधार पर हुआ था. इस बार परिसीमन आयोग 2011 की जनगणना के आधार पर परिसीमन का काम कर रहा है.

परिसीमन में इन चीजों का ख्याल रखा जाता है, विधानसभा क्षेत्रों के परिसीमन में जनसंख्या मुख्य आधार रहता ही है. इसके अलावा क्षेत्रफल, भौगोलिक परिस्थिति, संचार की सुविधा आदि पर भी गौर किया जा रहा है. जम्मू-कश्मीर में अब तक 1963, 1973 व 1995 में परिसीमन की प्रक्रिया हुई है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि धरती का स्वर्ग जम्मू कश्मीर!! परिसीमन आयोग की रिपोर्ट जारी, विधानसभा चुनाव कराए जाने का रास्ता साफ, चुनाव का बिगुल शीघ्र सुनाई देगा, धरती के जन्नत पर हर नागरिक जाने को उत्सुक, अमन चैन से जन्नत की सैर का हर नागरिक का सपना पूरा होगा जो गर्व की बात है!

नई टेक्नोलॉजी की पढ़ाई

रचनाकार- श्रीमती परवीनबेबी दिवाकर "रवि"



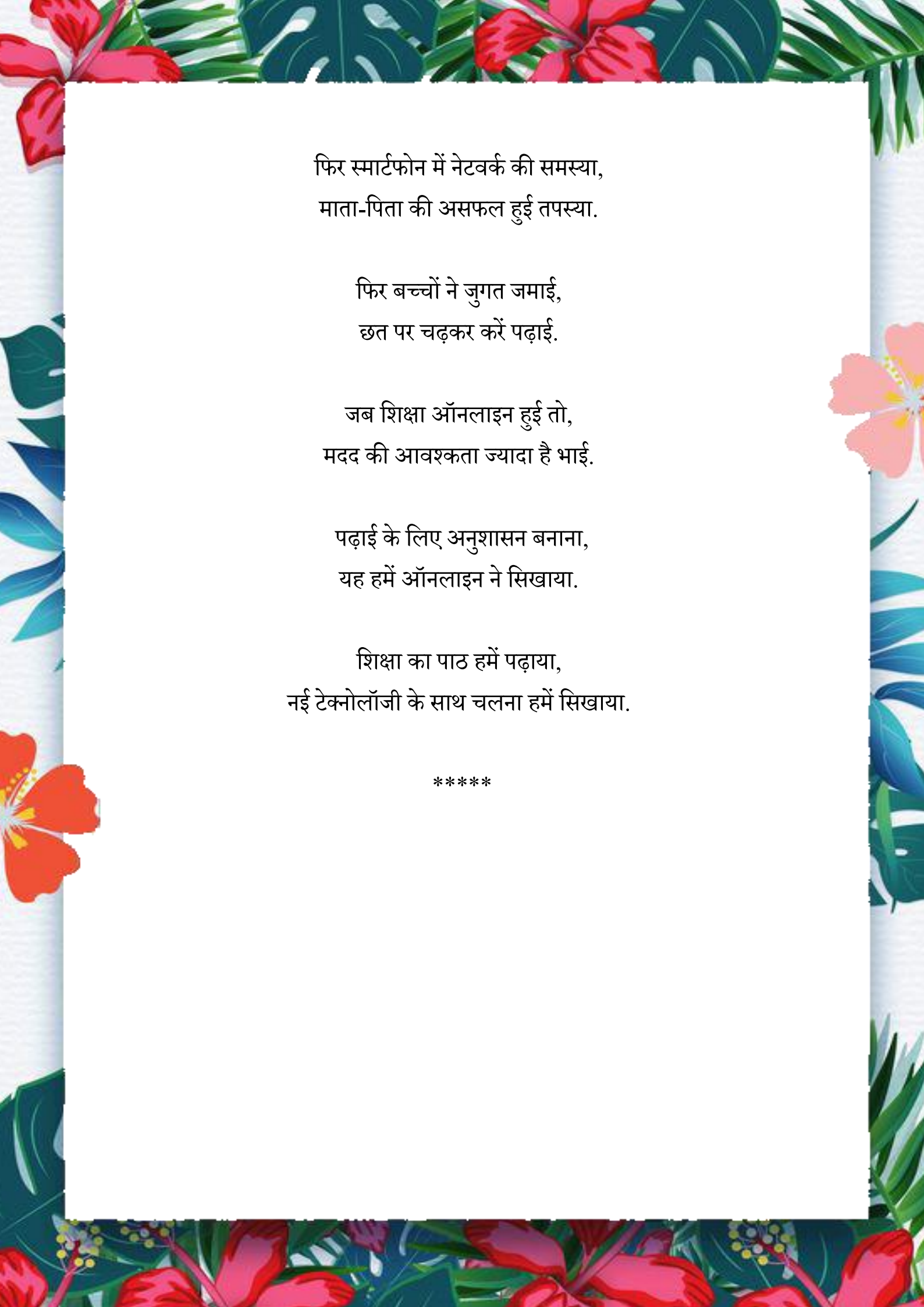
कोरोना ने की चढ़ाई तो,
शुरू हुई ऑनलाइन पढ़ाई.

अनवरत कक्षाएं लगने लगी,
और बच्चे मोबाइल से जुगत लगाई.

माता -पिता की परिस्थिति कमजोर,
फिर भी माता-पिता ने व्यवस्था की पुरजोर.

बच्चों को स्मार्टफोन दिलाया,
कहा अब इसमें पढ़ लो लाला.

नई टेक्नोलॉजी की नई पढ़ाई,
बच्चों ने भी उत्सुकता दिखाई.



फिर स्मार्टफोन में नेटवर्क की समस्या,
माता-पिता की असफल हुई तपस्या.

फिर बच्चों ने जुगत जमाई,
छत पर चढ़कर करें पढ़ाई.

जब शिक्षा ऑनलाइन हुई तो,
मदद की आवश्यकता ज्यादा है भाई.

पढ़ाई के लिए अनुशासन बनाना,
यह हमें ऑनलाइन ने सिखाया.

शिक्षा का पाठ हमें पढ़ाया,
नई टेक्नोलॉजी के साथ चलना हमें सिखाया.

माँ की दुआएं

रचनाकार- मई नुदीन कोहरी "नाचीज़ बीकानेरी"



घर से सफर करने निकलना हो,
माँ को जहन में रख निकला करो.

विघ्न कभी ना आएं ज़िंदगी में,
माँ की दुआएं ले विदा हुआ करो.

माँ का साया गर हमको है नसीब,
सोते उठते माँ की जियारत किया करो.

माँ को धन दौलत की नहीं है तलब,
माँ खुश है, माँ को माँ कह पुकारा करो.

जन्नत तो खुद माँ के कदमों में है,
ये मौका "नाचीज़" छोड़ा ना करो.

सज्जनपुरी गाँव

रचनाकार- कुमारी तारणी साहू, कक्षा 7, कन्या शाला पांडुका गरियाबंद



सज्जनपुरी गाँव में एक आदमी रहता था, उनका एक बेटा था जो बाहर नौकरी करने के लिए गया था. पर वैश्विक महामारी कोरोना फैलने से लड़का अपने पिताजी के पास सज्जनपुरी गाँव आ गया. गाँव में पहुंचते ही लॉकडाउन का सिलसिला शुरू हो गया था. बेटे ने अपने पिता से कहा “मुझे भूख लग रही है. “पापा ने घर में थोड़ा ही अनाज और चावल बचा हुआ था उसे बनाकर अपने बेटे को खाने को दिया.

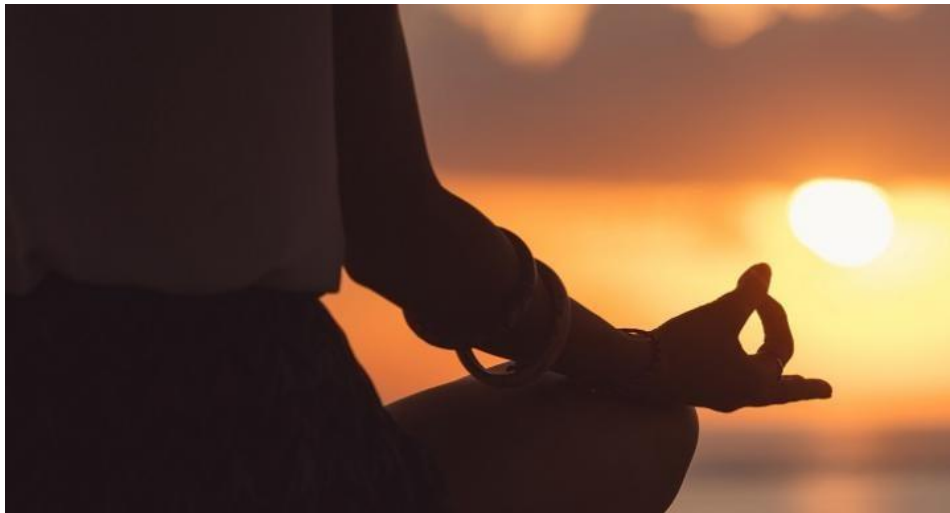
पिता ने कहा “खाने के लिए घर में और कुछ बचा नहीं है। ऊपर से लॉकडाउन के कारण दुकानें भी बंद हो चुकी है.” दोनों ने आपस में चर्चा किया कि कुछ देर के लिए जब दुकान खुलेगा सामान ले आएंगे और घर में सब्जी ना रहने पर बाज़ार से कुछ आम ले आएंगे, जिससे हम अचार बना सकें और ज़रूरत के समय पे आम के अचार बाज़ार में बेच कर कुछ आमदनी भी हो सकती है.

दोनों बाज़ार गए और सामान के साथ आम भी खरीद लाये। कुछ ही दिनों में आम का अचार बनाकर बेचने लगे. पैसा कमाने की शुरुवात होने लगी. पड़ोस के लोग उनके घर से अचार लेने आ रहे देखकर दोनों खुश हुए. का कारोबार अच्छा चलने लगा, साथ में घर की हालत भी बेहतर होने लगी.

नोट: विषम परिस्थिति में भी सही सोच विचार से सकारात्मक परिणाम आ सकता है.

हम अपने अंदर को झाँकें

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



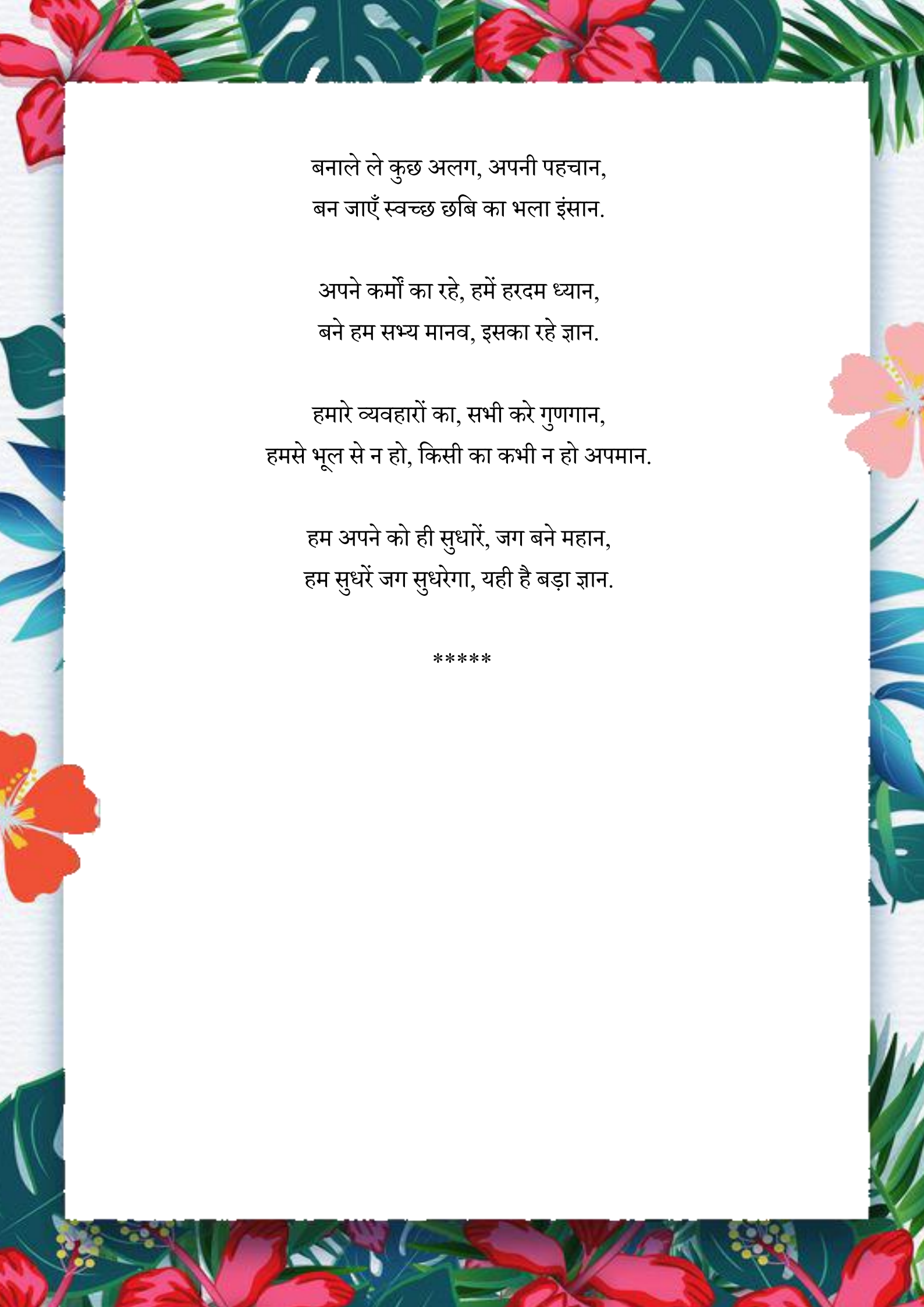
हो सके तो हम, अपने अंदर को झाँकें,
यहाँ-वहाँ हम, दूसरे को बाहर न ताकें.

हम गौर करें खुद को, करें स्वआँकलन,
स्वआत्मा के, आवाज का करें पालन.

हम स्वयं है अपने कुशल मार्गदर्शक,
यहाँ-वहाँ की बातें, करना है निरर्थक.

हम स्वयं हैं स्वप्रेरक, बने अपनी प्रेरणा,
हम प्रकाशवान बने, न करें अवहेलना.

हम अपने कर्म-फल, को बनाएँ महान,
इसी से मिलेगा, जगत में मान-सम्मान.



बनाले ले कुछ अलग, अपनी पहचान,
बन जाएँ स्वच्छ छबि का भला इंसान.

अपने कर्मों का रहे, हमें हरदम ध्यान,
बने हम सभ्य मानव, इसका रहे ज्ञान.

हमारे व्यवहारों का, सभी करे गुणगान,
हमसे भूल से न हो, किसी का कभी न हो अपमान.

हम अपने को ही सुधारें, जग बने महान,
हम सुधरें जग सुधरेगा, यही है बड़ा ज्ञान.

कुछ लोग खास होते हैं

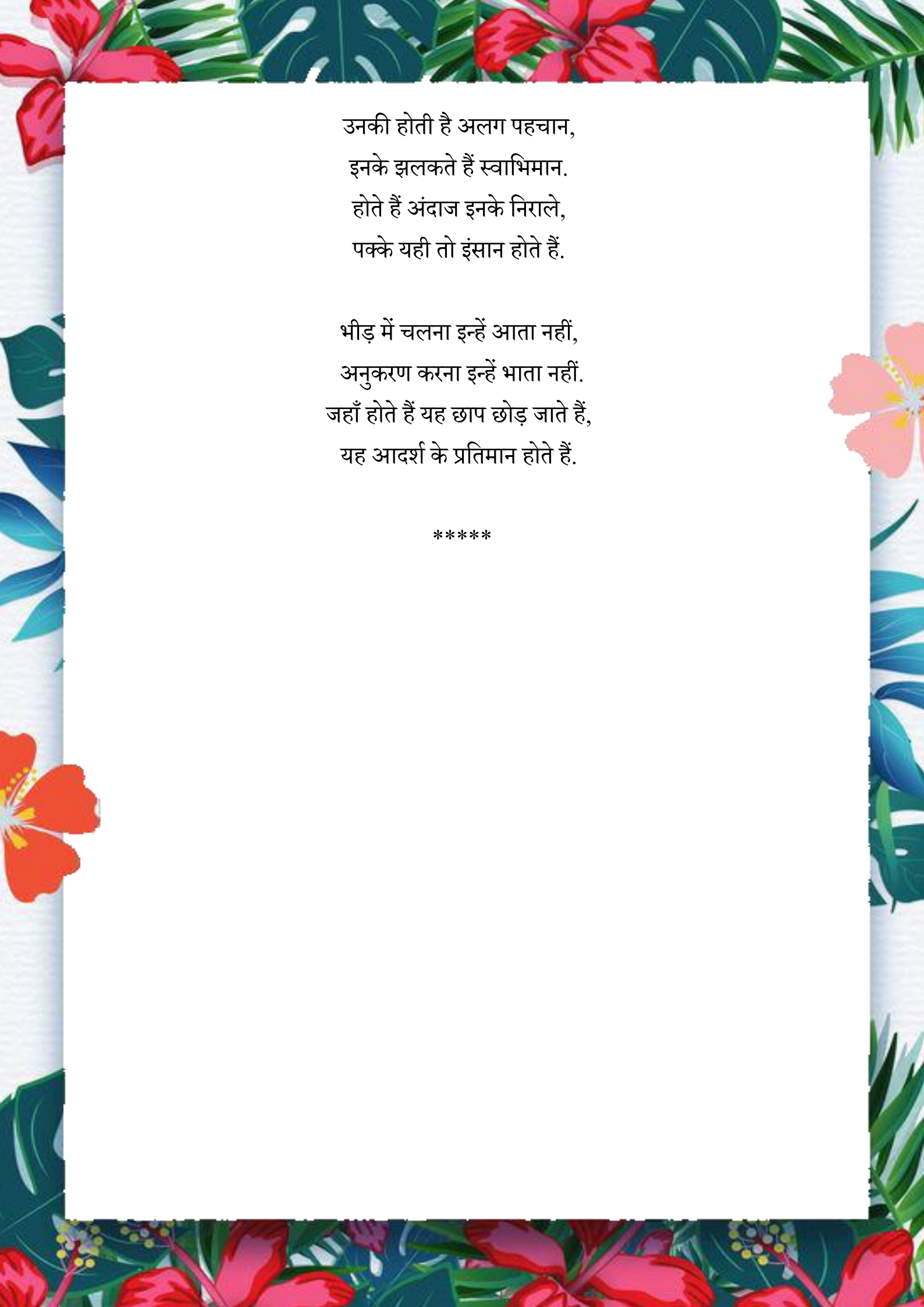
रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



इस धरा में लोग तो बहुत हैं,
पर कुछ लोग खास होते हैं.
यहाँ-वहाँ के भीड़-भाड़ में भी वे,
नजर के आस-पास होते हैं.

इस भीड़ में कौन किसे जाने,
जान पाना भी मुमकिन नहीं.
पर भीड़ के रेले में भी उनके,
वजूद आस-पास ही होते हैं.

कुछ तो है उनकी खासियत,
बयाँ करती है काबिलियत.
करते यह अलग कुछ खास,
ऐसे लोग ही तो महान होते हैं.



उनकी होती है अलग पहचान,
इनके झलकते हैं स्वाभिमान.
होते हैं अंदाज इनके निराले,
पक्के यही तो इंसान होते हैं.

भीड़ में चलना इन्हें आता नहीं,
अनुकरण करना इन्हें भाता नहीं.
जहाँ होते हैं यह छाप छोड़ जाते हैं,
यह आदर्श के प्रतिमान होते हैं.

मैं भोली-भाली चिड़िया हूँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



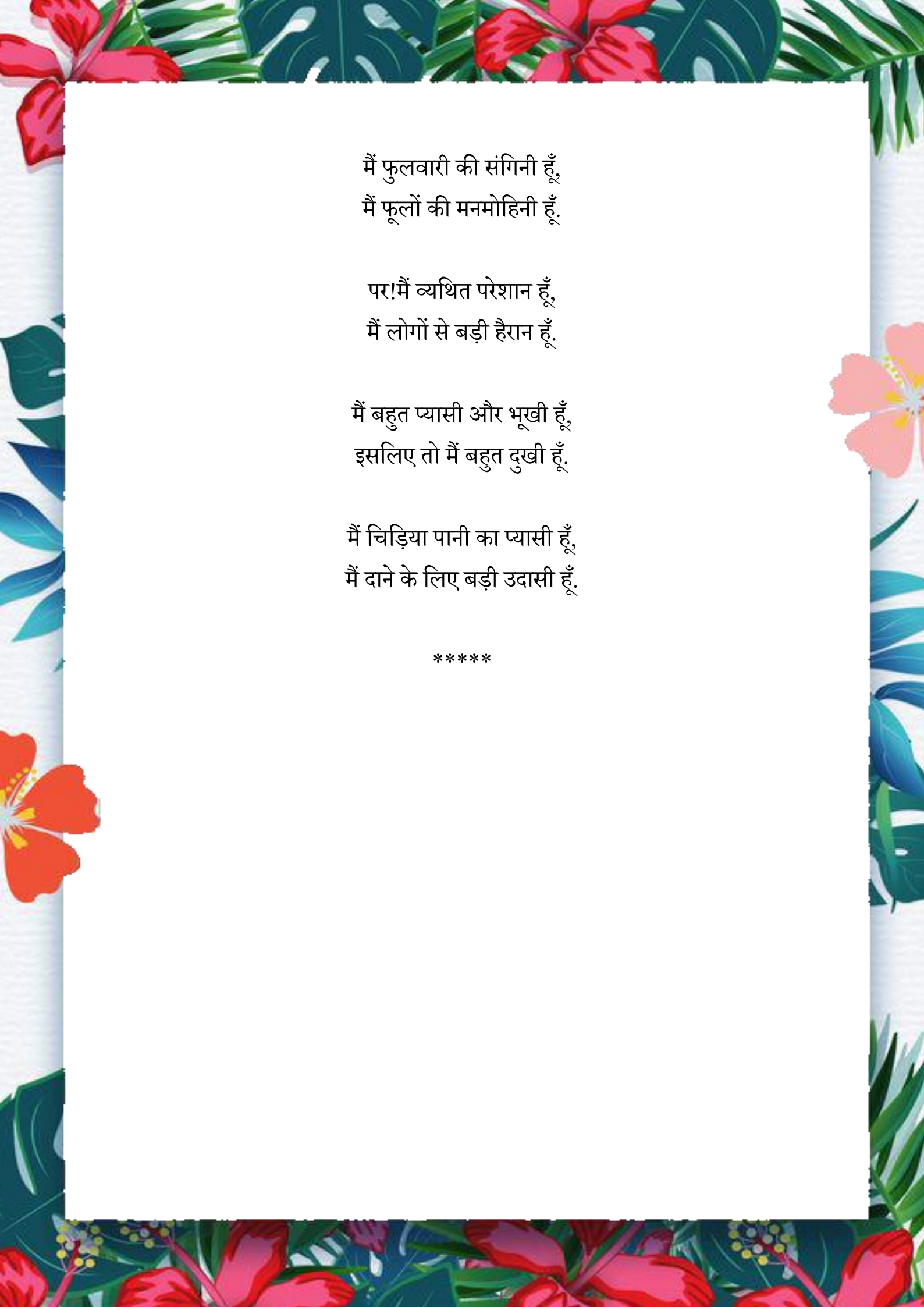
मैं घर-आँगन की पहचान हूँ,
मैं पेड़-पौधों की मुस्कान हूँ.

मैं भोर का सन्देशा लाती हूँ,
मैं सारे जगत को जगाती हूँ.

मैं कलरव के गीत सुनाती हूँ,
मैं रवि का स्वागत करती हूँ.

मैं भोली-भाली चिड़िया हूँ,
मैं जागरण में ही निंदिया हूँ.

मैं नील-गगन का श्रृंगार हूँ,
मैं बादलों का पुष्प-हार हूँ.



मैं फुलवारी की संगिनी हूँ,
मैं फूलों की मनमोहिनी हूँ.

पर! मैं व्यथित परेशान हूँ,
मैं लोगों से बड़ी हैरान हूँ.

मैं बहुत प्यासी और भूखी हूँ,
इसलिए तो मैं बहुत दुखी हूँ.

मैं चिड़िया पानी का प्यासी हूँ,
मैं दाने के लिए बड़ी उदासी हूँ.

बंद मुट्ठी लाख की खुल गई तो खाक की

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



सृष्टि की रचना जब अलौकिक शक्ति ने की होगी तो, भारत पर विशेष कृपा बरसाई होगी. अब्दुत संस्कारों, सभ्यता, मान सम्मान की कृपादृष्टि बरसाई कि भारत माता की मिट्टी में अब्दुत गुण समाहित हो गए और यहाँ जन्म लेने वाले हर जीव की देह में समाहित होकर बौद्धिक गुणों की ज्योति पीढ़ी दर पीढ़ी जागृत है जो, पीढ़ियों से हमारे बड़े बुजुर्गों को मिली और उसी का हम भी लाभ उठा रहे हैं.

साथियों आज हम बड़े बुजुर्गों से सुनी एक कहावत पर चर्चा करेंगे. वैसे तो कहावतें बहुत सी हैं पर आज हम उपरोक्त कहावत पर चर्चा करेंगे.

हमें पारिवारिक, सामाजिक, व्यापारिक औद्योगिक, राजनीतिक आदि अनेक संदर्भ में यह कहावत सटीक होते हमारे व्यवहारिक जीवन में लागू होते हम देखते हैं. मेरा मानना है कि उपरोक्त हर क्षेत्र में इस कहावत से उनकी अंदरूनी ताकत या बड़ी कमजोरियाँ छिप जाती होगी, जिसे सार्वजनिक करना उनके लिए हानिकारक हो सकता है. हर क्षेत्र की अपनी अपनी रणनीतियाँ होती है, कुछ रहस्य होते हैं, जिन्हें सार्वजनिक करना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसा होता है क्योंकि वह प्रतिष्ठा और ताकत का काम करते हैं. मुट्ठी अगर बंद रहेगी तो किसी को यह कमजोरी पता नहीं चलेगी.

साथियों अगर हम पारदर्शिता की बात करें तो यह इस कहावत की विरोधाभासी है! फिर भी इसे अपवाद के रूप में छूट है! क्योंकि रक्षा सहित अनेक क्षेत्र पारदर्शिता से मुक्ति पाने के हकदार हैं इसलिए कानून

विशेषज्ञों को मालूम होगा कि प्रोवीसो, बशर्ते, सिवाय, अपवाद, छूट, लागू नहीं जैसे अनेकों शब्दों के द्वारा करीब-करीब सभी कानूनों में छूट रहती है।

खुल गई तो फिर खाक की हम इसका अर्थ हकीकत सामने आने से है, जो हर क्षेत्र के लिए लागू है। जो बात किसी को पता नहीं हो वह यदि पता चल जाती है तो उस पक्ष की प्रतिष्ठा सहित सभी सकारात्मक स्थितियाँ नकारात्मकता में बदल जाती हैं जो उनकी बदहाली का कारण बनती है। हमें इस कहावत का सकारात्मक अर्थ लेने की ज़रूरत है। किसी गैर कानूनी या किसी को नुकसान पहुँचाने या धोखा देने की दृष्टि से नहीं लेना।

इस कहावत की एक पौराणिक कहानी भी है कि, एक समय एक राजा ने घोषणा की कि वह राज्य के मंदिर में पूजा अर्चना करने के लिए अमुक दिन जाएगा। यह सुनकर मंदिर के पुजारी ने मंदिर में रंग रोगन और सजावट करना शुरू कर दिया। इसके लिए उसने दस हजार रुपए कर्ज लिया। नियत तिथि पर राजा मंदिर में पहुँचे और पूजा अर्चना के बाद आरती की थाली में एक रुपया दक्षिणा स्वरूप रखा और प्रस्थान कर गए।

पूजा की थाली में एक रुपया देखकर पुजारी बड़ा नाराज हुआ, उसे लगा था कि राजा मंदिर में आएँगे तो पर्याप्त दक्षिणा मिलेगी। पुजारी चिंतित हुआ कि कर्ज कैसे चुकाए, फिर उसने एक उपाय सोचा।

पुजारी ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि राजा की दान की हुई वस्तु को नीलाम किया जा रहा है। नीलामी पर उसने अपनी मुट्ठी में रुपया रखा पर मुट्ठी बंद रखी और किसी को दिखाई नहीं। लोगों ने समझा कि राजा की दी हुई वस्तु अमूल्य होगी इसलिए बोली दस हजार से शुरू हुई, बढ़ते बढ़ते पचास हजार रुपए तक पहुँची पर पुजारी ने वो वस्तु फिर भी देने से इनकार कर दिया।

बात राजा के कानों तक पहुँची। राजा ने अपने सैनिक भेजकर पुजारी को बुलवाया और पुजारी से निवेदन किया कि वह मेरी दान की वस्तु को नीलाम न करे। राजा ने एक लाख रुपए देकर प्रजा के सामने अपनी प्रतिष्ठा बचाई। तब से यह कहावत बनी- बंद मुट्ठी लाख की, खुल गई तो खाक की।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि बंद मुट्ठी लाख की खुल गई तो फिर खाक की।

माटी के तिहार मनाबो

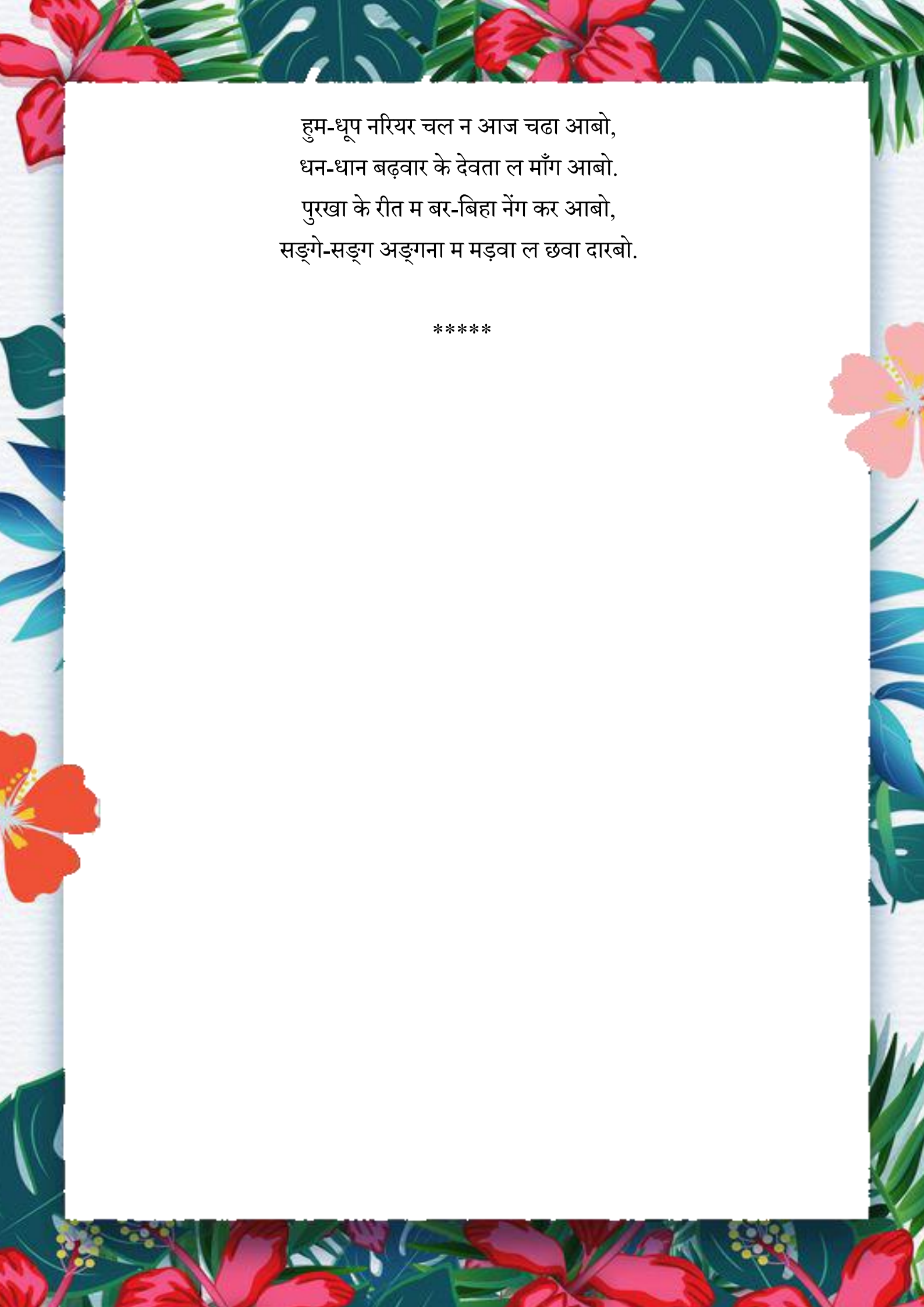
रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



चल सँगी आज माटी के तिहार मनाबो,
अपन जम्मो खेत म चल किंजर आबो.
अक्ति के तिहार हे मुठ ले के आ जाबो,
माटी के संग चल कुल देवता ल मनाबो.

गाँव के चौपाळ, देवाला म जाबो,
सहाड़ा एउ ठाकुर देव ल मना आबो.
गाँव के सुमता बर असित ल माँग लाबो,
धन-धान अन्नपूर्णना ल चल मना आबो.

नावा धान बिजहा ल चल न छींच आबो,
उड़ती अउ बुड़ती के रीत ल मना आबो.
मुठा-मुठा धान ल चल देवता ल चढाबो,
अक्ति के तिहार म चल माटी मना आबो.



हुम-धूप नरियर चल न आज चढा आबो,
धन-धान बढवार के देवता ल माँग आबो.
पुरखा के रीत म बर-बिहा नेंग कर आबो,
सङ्गे-सङ्ग अङ्गना म मड़वा ल छवा दारबो.

माँ तो आखिर में माँ होती है


रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



माँ तो आखिर में माँ होती है,
जगत में यह महान होती है.
माँ से बड़कर कोई और नहीं,
माँ ममता की खान होती है.

माँ दया वात्सल्य की मूर्ति है,
आँचल में मीठी छाँव होती है.
इससे बड़कर और स्वर्ग कहाँ,
माँ के चरण ही तीर्थ होती है.

माँ ही जगत की खेवनहार है,
यही सन्तानों की पालनहार है.



माँ ही सृजन की पावन द्वार है,
माँ ही इस सृष्टि का आधार है.

माँ की महिमा भी अपरम्पार है,
इस जगत में तेरा ही उपकार है.
तेरे समान यहाँ कोई और नहीं
तू ही कर देती सबका उद्धार है.

माँ! क्या हम ऋण चुका पाएंगे?
तेरे उपकार से उऋण हो पाएंगे?
इस जन्म क्या, सात जन्म में भी,
तेरे ऋण को हम न चुका पाएंगे.

जिंदगी के सफर में

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



जिंदगी के सफर में, तू इंसान अकेला है.
तेरा अपना नहीं कोई, बस लाखों झमेला है.
सफर काँटों भरी तेरी और दुखों का रेला है.
डगर लम्बी है तेरी और तुझे चलना अकेला है.

जीवन एक पहेली है, पहेली तू ही सुलझाएगा.
शिवा तेरे नहीं कोई, जो इसको बुझ पायेगा.
उलझन है मुसीबत है, ये संघर्षों का सागर है.
सागर पार तू उतरेगा, जब कशती बन जायेगा.

किनारा दूर दिखता है, हौसले खो मत देना तुम.
कभी लहरों से मत डरना, लड़ना आता तुम्हें खूब.
हौसलो को बना के पंख, अम्बर को तू ही नापेगा.
समंदर को सुखा के तू, मोती चुन-चुन लाएगा.

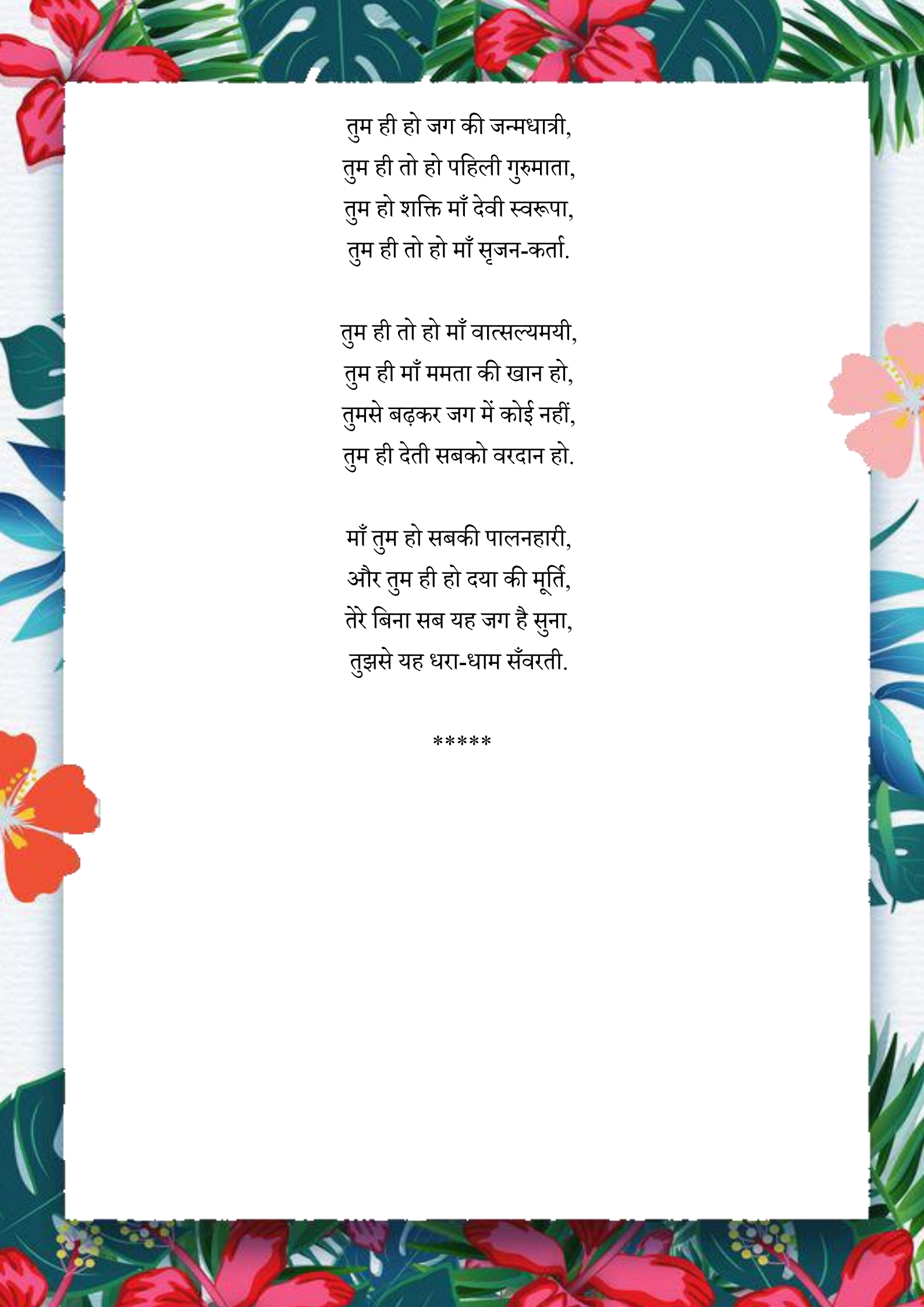
तेरे चरणों मे माँ तीरथ द्वार है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



माँ मैं कहाँ जाऊँ, कहाँ भटकूँ,
तेरे चरणों में ही तीरथ द्वार है,
सारे देवता हैं माँ तेरे चरणों में
नमन करूँ तुझको बारम्बार है.

करूँ स्तुति मैं, करूँ आराधना,
करूँगा मैं तेरा, नित गुणगान है,
जग में है माँ तेरी पावन महिमा,
माँ तू ही इस जगत में महान है.



तुम ही हो जग की जन्मधात्री,
तुम ही तो हो पहिली गुरुमाता,
तुम हो शक्ति माँ देवी स्वरूपा,
तुम ही तो हो माँ सृजन-कर्ता.

तुम ही तो हो माँ वात्सल्यमयी,
तुम ही माँ ममता की खान हो,
तुमसे बढ़कर जग में कोई नहीं,
तुम ही देती सबको वरदान हो.

माँ तुम हो सबकी पालनहारी,
और तुम ही हो दया की मूर्ति,
तेरे बिना सब यह जग है सुना,
तुझसे यह धरा-धाम सँवरती.

बासी हमर परान हे

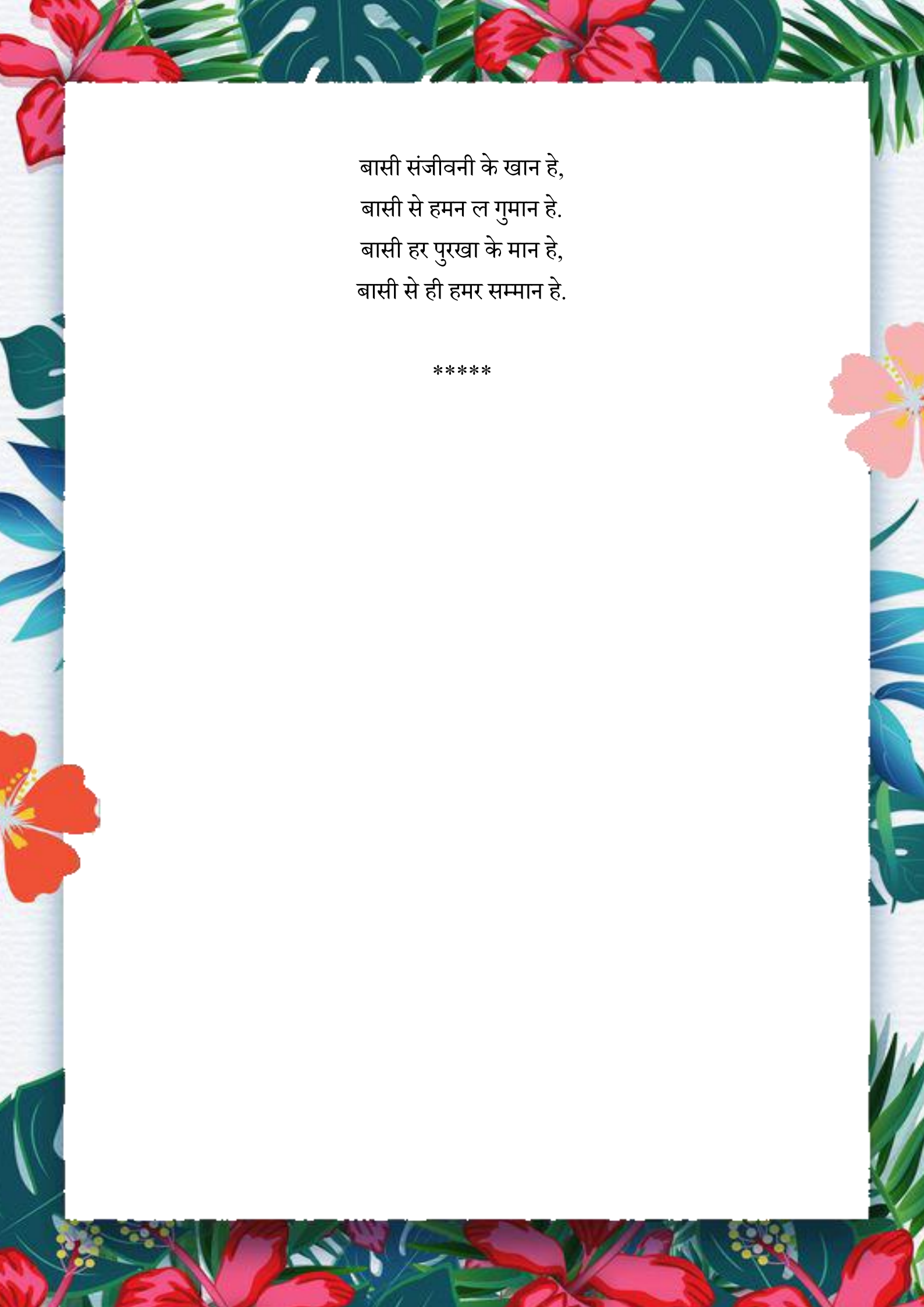
रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



बासी म बसे हमर परान हे,
बासी म हमर अभिमान हे.
बासी हर हमर पहिचान हे,
बासी ह हमर खान-पान हे.

बासी म भरे गजब स्वाद हे,
बासी ह लागे दार-भात हे .
बासी म छप्पन मिठास हे,
बासी हमर लिए खास हे.

बासी के महिमा महान हे,
बासी बिन सुन्ना बिहान हे.
बासी ले बुता म धियान हे,
बासी हर अमृत समान हे.



बासी संजीवनी के खान हे,
बासी से हमन ल गुमान हे.
बासी हर पुरखा के मान हे,
बासी से ही हमर सम्मान हे.

माँ तेरे इस प्यार को

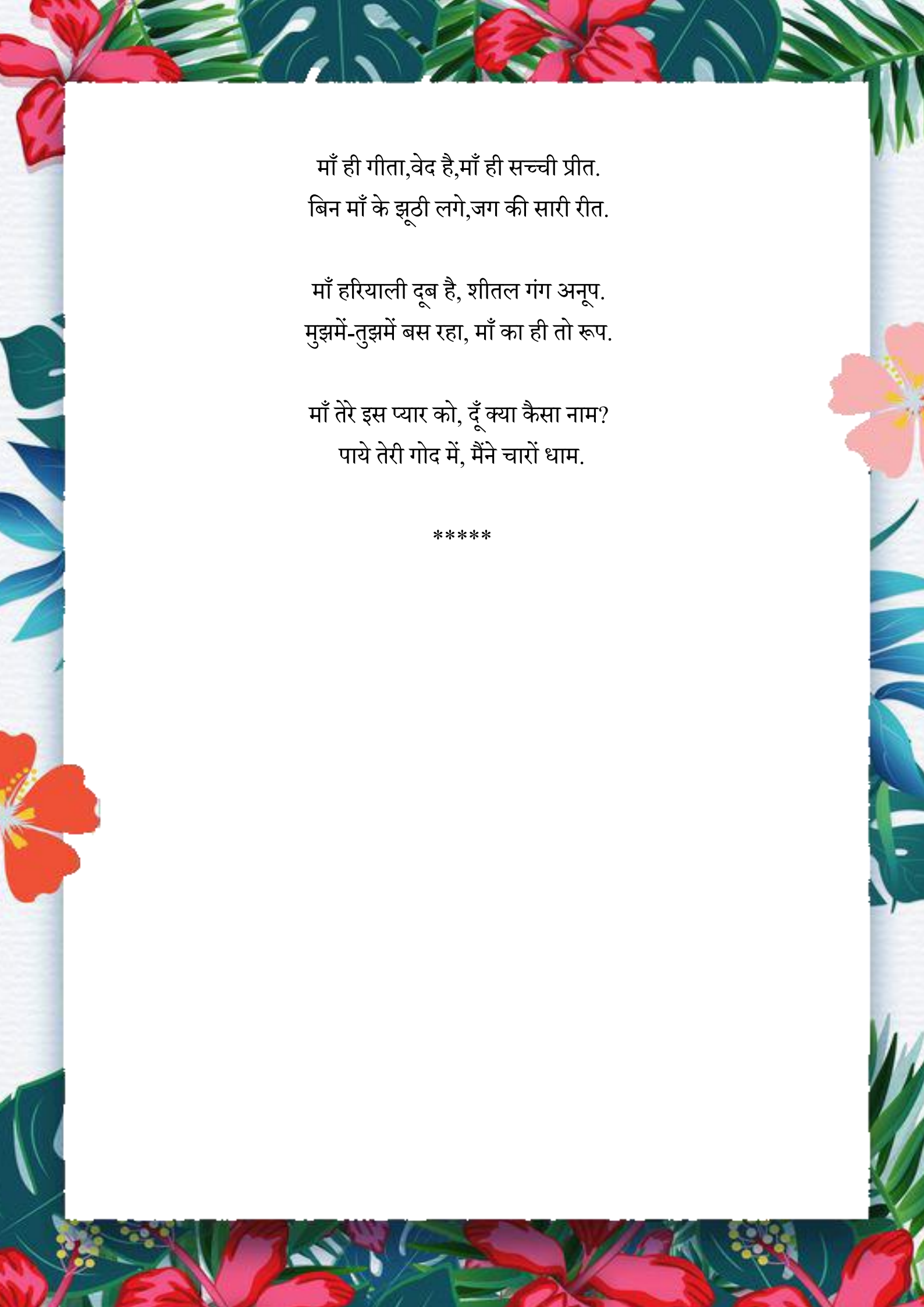
रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



तेरे आँचल में छुपा, कैसा ये अहसास.
सोता हूँ माँ चैन से, जब होती हो पास.

माँ ममता की खान है, धरती पर भगवान.
माँ की महिमा मानिए, सबसे श्रेष्ठ-महान.

माँ वीणा की तार है, माँ है फूल बहार.
माँ ही लय, माँ ताल है, जीवन की झंकार.



माँ ही गीता, वेद है, माँ ही सच्ची प्रीत.
बिन माँ के झूठी लगे, जग की सारी रीत.

माँ हरियाली दूब है, शीतल गंग अनूप.
मुझमें-तुझमें बस रहा, माँ का ही तो रूप.

माँ तेरे इस प्यार को, दूँ क्या कैसा नाम?
पाये तेरी गोद में, मैंने चारों धाम.

चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं


रचनाकार- भावेश देवागंन, कक्षा - 11th, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राजिम



पर्यावरण से है जीवन,
पर्यावरण से है जीवन,
इसे अपना दोस्त बनाते हैं.
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं.

देती हैं साँसे जीवन को,
आओ जाने पेड़ की माया.
करती है ये शुद्ध हवा को,
देती है फल, फूल और छाया.

आओ अपने दिल में हम,
आओ अपने दिल में हम,
प्रकृति प्रेम जगाते हैं.
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं.



सागर,बादल,गगन प्रदूषित,
नदी,धरा और पवन प्रदूषित,
बढ़ गया है प्रदूषण इतना,
कि साँस लेना है मुश्किल.

रूठ गयी है प्रकृति हमसे,
मिलकर सब चलो मनाते हैं.
आओ चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं.

दादा जी की छड़ी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



दादा जी आज सुबह-सुबह सैर के लिए निकल ही रहे थे कि अचानक उनके पाँव ठिठक गए और वे किसी चीज की तलाश में इधर-उधर, यहाँ-वहाँ घूमने लगे.

दादा जी कुछ परेशान लग रहे थे. उधर सैर में जाने के लिए देरी हो रही थी.

तभी उनका आठ साल का नन्हा पोता आया. और कहने लगा-“दादा जी! दादा, जी! आप क्या ढूँढ रहे हैं?” दादा जी कुछ उद्वेलित और परेशान होकर जवाब देते हैं-

बेटा! मेरी छड़ी कहीं गुम हो गई है, मैं उसको ही ढूँढ रहा हूँ. पोते ने कहा -“दादा जी आप रोज-रोज उस छड़ी को हाथ में पकड़ कर क्यों जाते हैं? आखिर उस छड़ी में ऐसा क्या है?”

अपने पोते के इस जिज्ञासा भरे प्रश्नों को सुनकर दादा जी आश्चर्यचकित हो कहते हैं-

"ठीक है! ठीक है बेटा! इन सभी प्रश्नों के उत्तर मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा. पहले तुम मुझे यह बताओ कि क्या तुमने मेरी छड़ी को कहीं देखी है?" पोता कहता है- "नहीं दादा जी! पर छड़ी घूम गई है तो क्या हुआ मैं तो आपकी छड़ी बन सकता हूँ न. आज आप मुझे छड़ी बना लीजिए. आपको जहाँ जाना होगा मैं ले जा सकता हूँ."

इतना सुनते ही दादा जी अवाक रह गए. तब दादा जी कहते हैं- "बेटा तुम तो बहुत समझदार हो गए हो. जिस छड़ी के लिए मैं इतने समय से परेशान था. उस परेशानी को तो तुमने झट से एक ही पल में दूर कर दिया."

वाह! शाबाश! बेटा!"

और फिर दादा जी अपने पोते को सीने से लगा लेते हैं.

फिर दादा जी छड़ी के बारे में बताते हैं-

जैसे बुढ़ापे में तुम मेरा सहारा बनके साथ चलना चाहते हो. वैसे ही सहारा हमारी छड़ी होती है बेटा! अब मुझे किसी छड़ी की आवश्यकता नहीं है. अब से तुम ही मेरे लिए छड़ी हो.

दादा जी मन ही मन सोचने लगते हैं-

काश! ऐसा संस्कार सभी बच्चों को मिल पाता, तो सभी को ऐसे पोते का सहारा मिल जाता. तभी पोता कहता है- "दादा जी क्या सोच रहे हो? दादा जी बोले - "कुछ नहीं बेटा." फिर दोनों उत्साहित हो सैर के लिए निकल जाते हैं.

शहीद भगत सिंह

रचनाकार- समीक्षा गायकवाड़



सुनो जम्बू के वीर लाल,
गाथा वर्णन एक भरत बाल,
रग-रग में जिसके इंकलाब,
जीवन जैसे क्रांति मशाल.

जननी जिसकी विद्यावती
पिता सरदार किशन सिंह
जन्मे 1907 में
नाम पाया भगत सिंह.

बारह बरस में देख रक्तपात,
अपने ही परिवार का.
ठाना भगत ने लूंगा प्रतिशोध,
जलियाँवाला बाग का.

त्याग कर लड़कपन की अठखेलियाँ,
पोथी शूर-वीरों की पढ़ने लगा.
काटकर परतंत्रता की बेड़ियाँ,
आज़ादी का स्वप्न गढ़ने लगा.

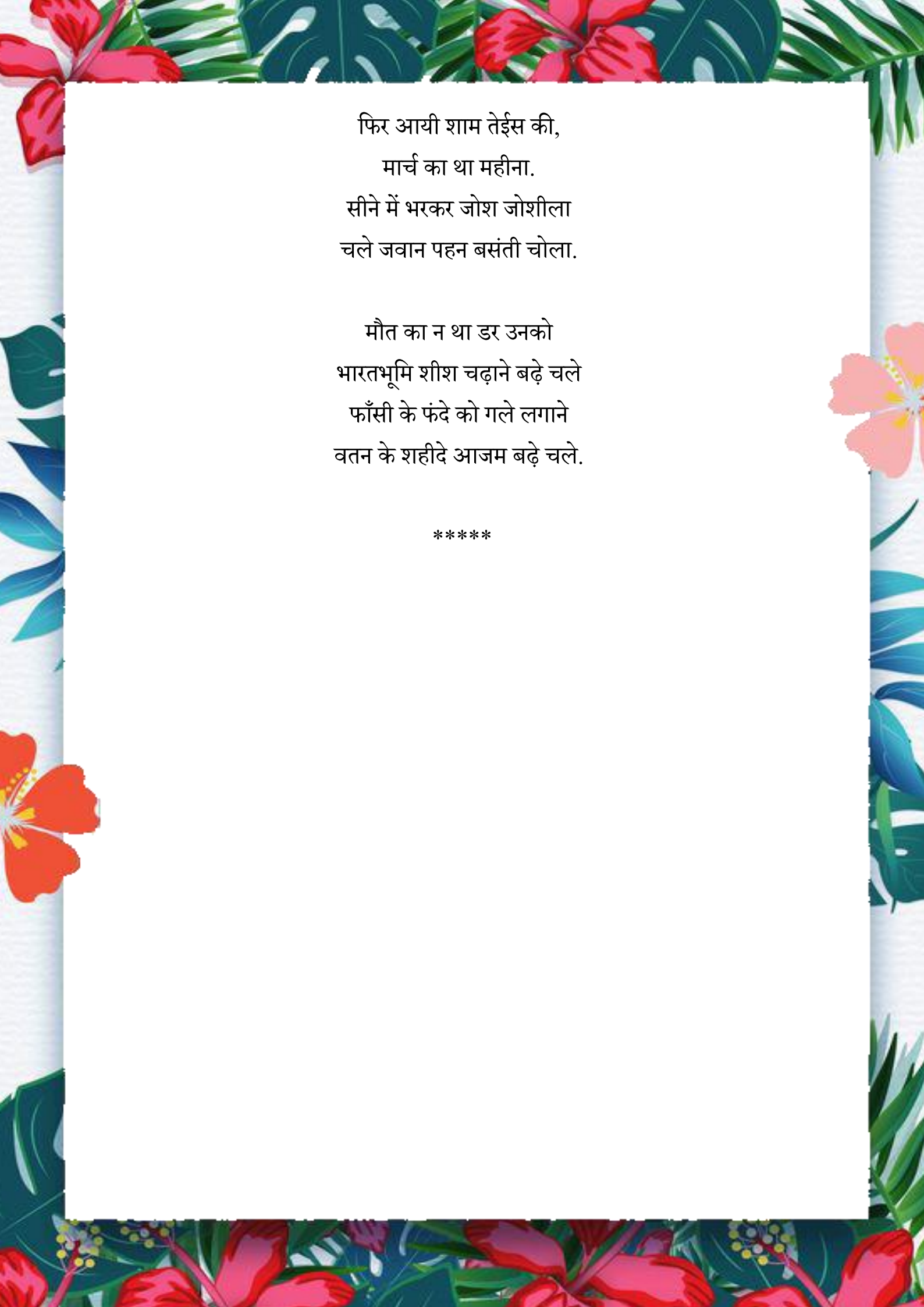
पगड़ी बाँध, भर जोश हृदय में,
नौजवान काफिला उसने बनाया.
निराश हो चौरा-चौरी कांड से,
सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाया.

क्षुब्ध हो लाला जी की हत्या से,
की प्रतिशोध की जंग शुरू.
संगठित किया क्रांति वीरों को,
प्रमुख जिनमें चंद्रशेखर और राजगुरु.

फेका बम असेम्बली में उस स्थान,
जहाँ न खड़ा था कोई इंसान.

जो स्वार्थ में बिक जाये वो देशभक्त नहीं.
जो डरकर भाग जाये ऐसा भगत सिंह नहीं.

कहकर बटुकेश्वर संग अपने पैर जमा दिए.
और इंकलाब जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद,
उद्धोष संग सारे पर्चे उड़ा दिए.



फिर आयी शाम तेईस की,
मार्च का था महीना.
सीने में भरकर जोश जोशीला
चले जवान पहन बसंती चोला.

मौत का न था डर उनको
भारतभूमि शीश चढ़ाने बढ़े चले
फाँसी के फंदे को गले लगाने
वतन के शहीदे आजम बढ़े चले.

माँ तुम बहुत याद आती हो

रचनाकार- पिकी सिंघल



मैं जब भी देखती हूँ मंदिर में माता की मूरत कोई,
करुणा तुम्हारी आंखों की मेरी आंखों में उतर आती है.
झर-झर बहते हैं अश्रु नयनों से मेरे,
चाहूँ मैं कितना पर रोक इन पर न लग पाती है.
मैं क्या करूँ माँ! मुझे तुम्हारी याद बहुत आती है.

मैं जब निवाला रोटी का मुँह तक लाती हूँ,
भरपेट खाने के बाद भी मुझे और खिलाने की तेरी वो जिद याद आती है.
खो जाती हूँ तब मैं माँ बस तुम्हारे ही खयालों में,
तेरे हाथों की खुशबू मेरे स्वाद को कई गुना बढ़ा जाती है.
मैं क्या करूँ माँ! मुझे तुम्हारी याद बहुत आती है.

जब कभी देखती हूँ मैं विदाई किसी दुल्हन की,
मुझे ममता तेरी बरबस याद आ जाती है.
कितना तड़पी थी तू मुझसे जुदा होने के ख्याल से,
तेरी उस तड़प से मेरी बेचैनियाँ बढ़ जाती हैं.
मैं क्या करूँ माँ! मुझे तुम्हारी याद बहुत आती है.

जब आती हूँ घर मैं दिन भर की भाग दौड़ के बाद,
तुम्हारे आंचल की वो ठंडी छांव याद आती है.
कैसे तुम करती थी रह भूखी हर शाम मेरा इंतजार
तेरे समर्पण की हर छोटी-बड़ी बात मेरी आंखें नम कर जाती है.
मैं क्या करूँ माँ! मुझे तुम्हारी याद बहुत आती है.

जब भी होती हूँ मैं असमंजस घिरी मुश्किलों के बीच,
अपनी सभी परेशानियों में तेरी दी हर सीख याद आती है.
क्या ये संभव नहीं अब माँ कि तुम्हारी गोद में मैं सोऊँ सिर रखकर,
क्यों शादी के बाद बेटियाँ इतनी पराई हो जाती हैं.
मैं क्या करूँ माँ! मुझे तुम्हारी याद बहुत आती है.

भारत माता एवं भारत के नायक

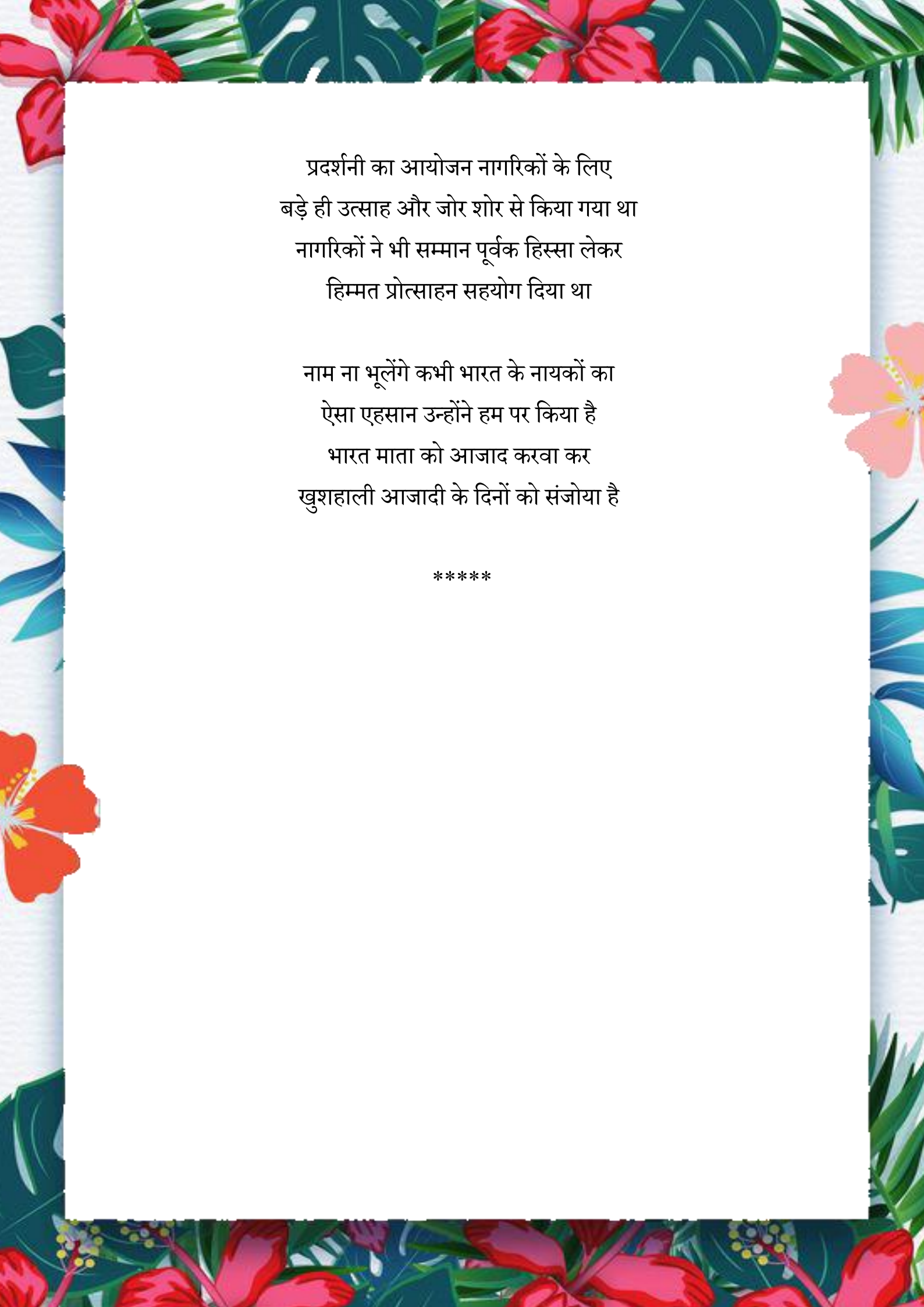
रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



आजादी के अमृत महोत्सव की प्रमुख
पहल के तहत नेशनल अकाडमी फॉर आर्ट
ने भारतमाता एवं भारत के नायक
प्रदर्शनी का आयोजन किया था

प्रदर्शनी में भारत माता के नाम संग
हस्तियों के स्वरूप का डिस्प्ले किया था
भारत माता की मिट्टी ने हमें हस्तियों के
रूप में यह अनमोल तोहफ़ा दिया है

भारत के नायकों को पीढ़ियां याद रखेगी
जिन्होंने हमारे लिए गुलामी मुक्त भारत संजोया है
महान नायकों ने ऐसा बीज बोया है
आज नए भारत का सपना हमने संजोया है



प्रदर्शनी का आयोजन नागरिकों के लिए
बड़े ही उत्साह और जोर शोर से किया गया था
नागरिकों ने भी सम्मान पूर्वक हिस्सा लेकर
हिम्मत प्रोत्साहन सहयोग दिया था

नाम ना भूलेंगे कभी भारत के नायकों का
ऐसा एहसान उन्होंने हम पर किया है
भारत माता को आजाद करवा कर
खुशहाली आजादी के दिनों को संजोया है

खानपान

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



गरमी के मौसम आते ही आम के सीजन जाते हैं। आम के नाम से मुँह में पानी आ जाता है। आम के अंबड़ अकन जिन्स बनते हैं। फेर आम के अथान के बात अलग है, एला बनाये बर

चेर बाँधायें आम, सरसों, लहसुन, तेल, नून, मिर्चा, हींग, पीसी हरदी, सौंफ के जरूरत होते हैं

हमर दाई माई मन सबले पहिली आम ला रात भर पानी में बोर दें। ओकर बाद बिहनिया बेरा पानी ले निकाल के सरोता में लम्बा - लम्बा दू या चार चानी कर दें। आम के चानी ला थोरिक घाम में सुखो दें। ओकर बाद सरसों, तेल, लहसुन, मिर्चा, सौंफ ला गरम कढ़ाई में भून के येखर मसाला तैयार करे जायें। फेर ये मसाला ल सुपा, परा या टुकनी में मिलाय जायें। मसाला में थोरिक हींग मिलाय ले स्वाद अउ खुशबू अच्छा आये। आम के अइलाये के बाद सबो मसाला ला आम डराये हैंडिया, बरनी, अउ नहिंते प्लास्टिक डब्बा मिला देय जायें, अउ ऊपर से स्वादानुसार नून डारे जायें। सरसों के तेल ला ऊपर ले डारे जायें। सबो मसाला मिल जायें ओला कूर कहे जायें। आमचानी ह जतका तेल में भीगे रहिये, वतकी मिठाये।

ये प्रकार से आम के अथान बनाये जायें। येला बासी, भात, रोटी संग में खाये में अंबड़ मजा आये।

गाँव हमारा

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार



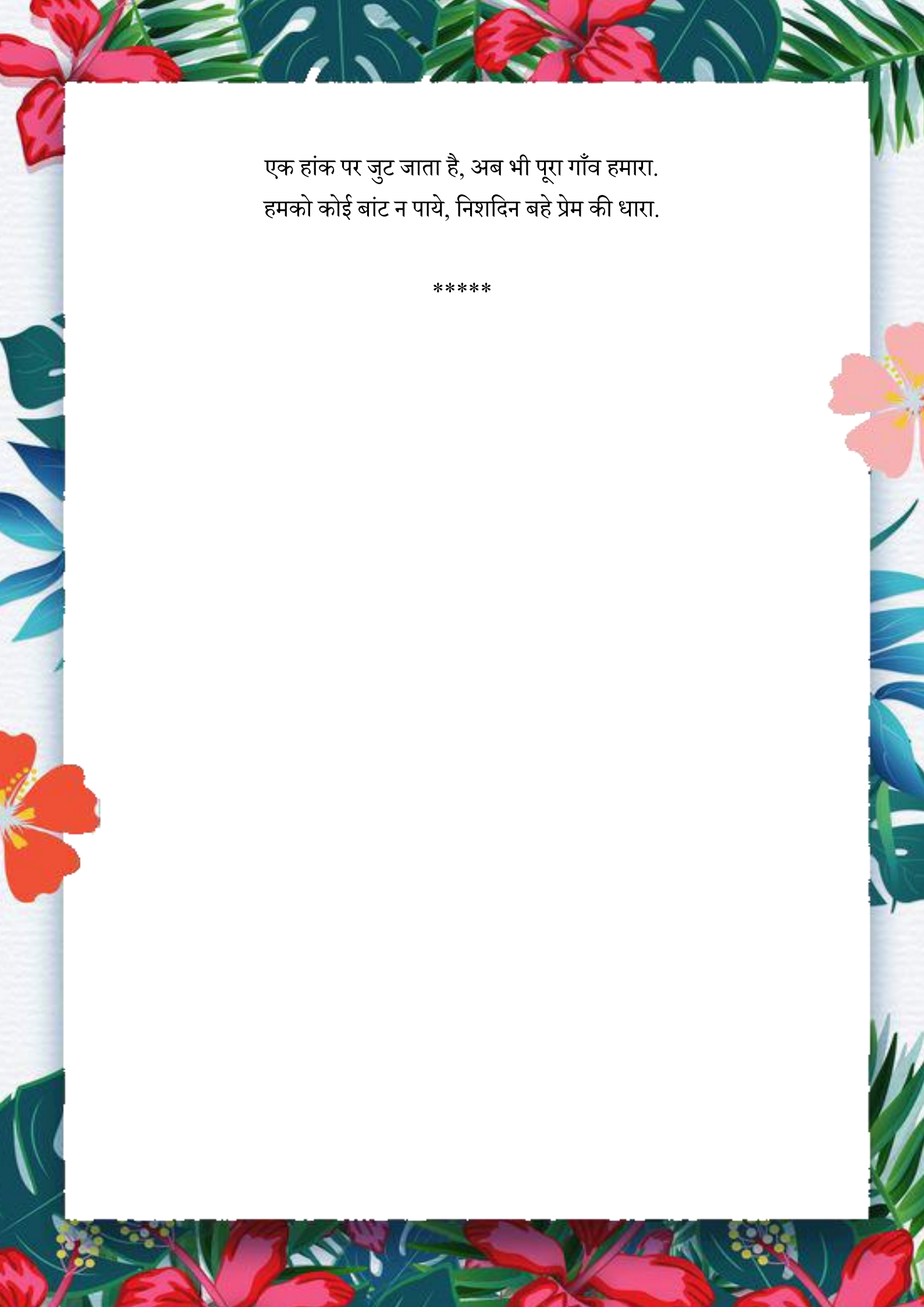
नगरों की जद से दूर, अभी है गाँव हमारा.
पगडण्डी पर चले बटोही, निर्मल जल की धारा.

हरे-भरे तालाब यहाँ हैं, मुस्काती-सी फसलें.
साफ-शुद्ध हवा के झोंके, सीधी-सादी नस्लें.

जुम्मन चाचा अब भी सिलते, रामरतन की टोपी.
सुखिया काकी गूँथ रही है, सलमा बी की चोटी.

साझे हैं त्यौहार सभी के, खुशियाँ मिलकर बांटें.
गलती करने वाले को, घर-बाहर के सारे डांटें.

रगधू घर-घर पहुँचा देता, मिट्टी वाले बर्तन-भांडे.
बदले में अनाज की ढेरी, अब्दुल, रामू, प्रीतम पांडे.



एक हांक पर जुट जाता है, अब भी पूरा गाँव हमारा.
हमको कोई बांट न पाये, निशदिन बहे प्रेम की धारा.

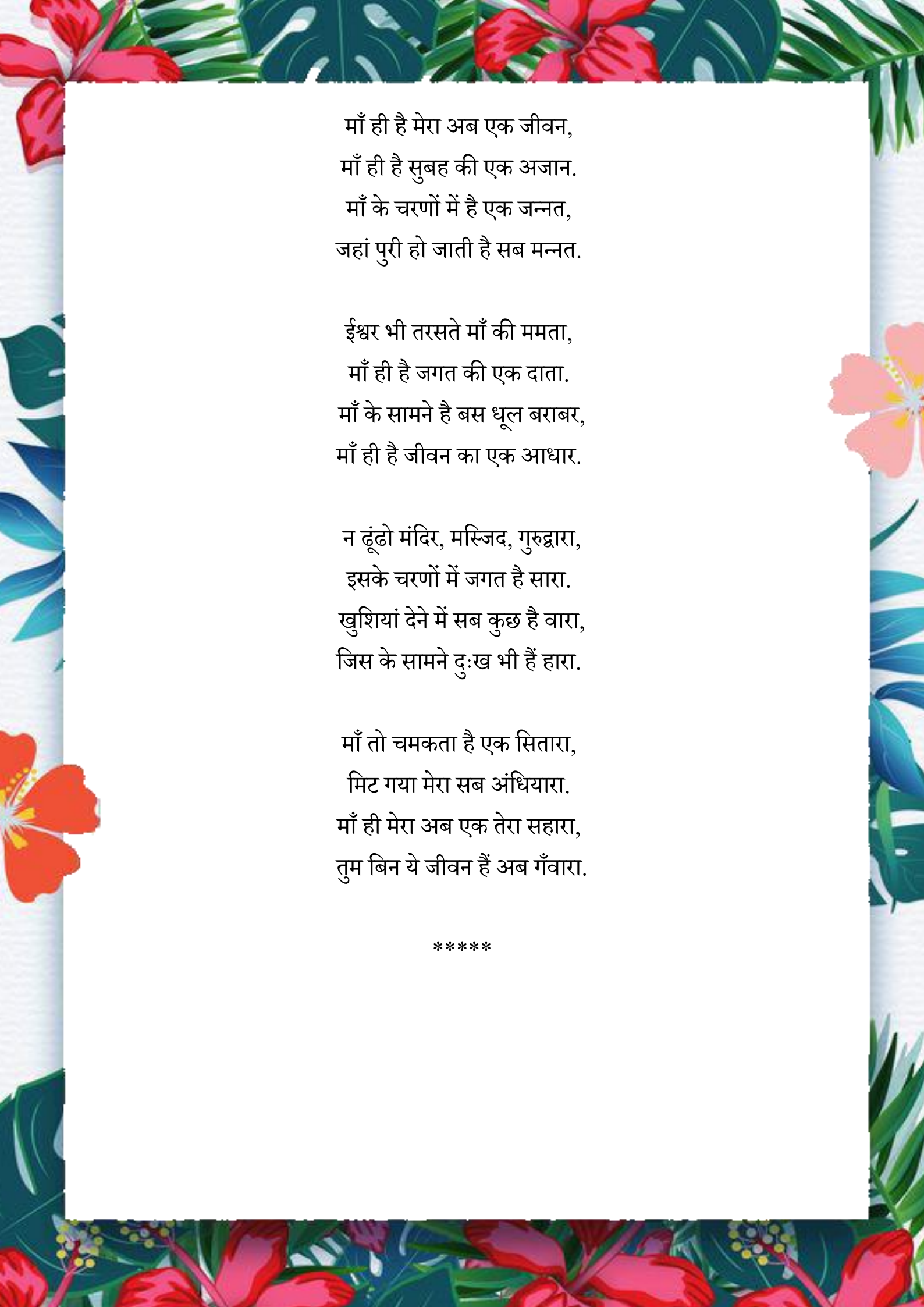
माँ की ममता

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम



माँ के बिना नश्वर-सी है ये काया,
माँ की ममता, जन्नत की छाया.
धन्य है मानव जो मिला है साया,
माँ ने अपना हर फर्ज है निभाया.

माँ की ममता है एक प्यारी मूरत,
ईश्वर में भी नजर आती है सूरत.
माँ ही है बच्चों की एक ज़रूरत,
माँ ही है गीता बाईबल इबादत.



माँ ही है मेरा अब एक जीवन,
माँ ही है सुबह की एक अजान.
माँ के चरणों में है एक जन्नत,
जहां पुरी हो जाती है सब मन्नत.

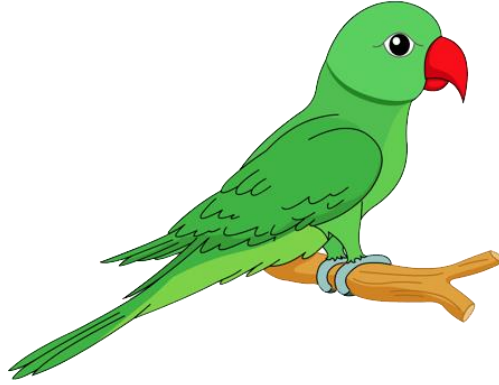
ईश्वर भी तरसते माँ की ममता,
माँ ही है जगत की एक दाता.
माँ के सामने है बस धूल बराबर,
माँ ही है जीवन का एक आधार.

न ढूंढो मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा,
इसके चरणों में जगत है सारा.
खुशियां देने में सब कुछ है वारा,
जिस के सामने दुःख भी हैं हारा.

माँ तो चमकता है एक सितारा,
मिट गया मेरा सब अंधियारा.
माँ ही मेरा अब एक तेरा सहारा,
तुम बिन ये जीवन हैं अब गँवारा.

तोता

रचनाकार- कु.अंशिका कश्यप, कक्षा 7वी, शासकीय माध्यमिक शाला
सूरजपुराकला, कबीरधाम



हरा-हरा और भोला-भाला.
नन्हा-सा प्यारा तोता राजा.

मिर्ची खाता, फल भी खाता.
दूध रोटी भी यह खाता.

टें-टें-टें यह करता रहता.
राम-राम जी यह कहता.

पिंजरे में क्यों इस को रखते हैं?
पिंजरा खोलो तुम अपना.

पंख फड़फड़ाकर इसको उड़ने दो.
नन्हा-सा प्यारा तोता अपना.

किसका कार्य

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



आज 21वीं सदी में, हम पूरी तरह से पुरानी सोच से आजाद हो चुके हैं, फिर भी बहुत से व्यक्ति इस से आजाद नहीं होना चाहते हैं, पुरुष को लगता है की घरेलू कार्य सिर्फ महिलाओं के लिए है, वहीं बहुत सी महिलाओं को भी लगता है नौकरी करना और पैसे कमाना या कोई तकनीकी कार्य सिर्फ पुरुषों का है.

हालांकि, बहुत से लोगों ने इन दोनों ही कार्यों को जिम्मेदारी से अपनाया और वही सही मायनों में शिक्षित कहलाए जा सकते हैं. ऐसी कोई किताब में नहीं लिखा हुआ है यहां तक की हर एक पुस्तक में हमें विज्ञान हो चाहे नैतिक शिक्षा हो, उसमें यही सिखाया गया है क्लीनलीनेस इस नेक्स्ट टू गॉडलीनेस और यह सभी को सिखाया गया है, और उसी को हिंदी में भी प्रसिद्ध कहावत में कहा गया है की स्वच्छता भक्ति से भी बढ़कर है, वही जो पाठशाला में कोई भी तकनीकी ज्ञान सिखाया जाता है तो वह सभी को सिखाया जाता है.

यदि हम समाज में समानता चाहते हैं, तो हमें सभी कार्यों को अपनाना होगा और यह भेदभाव करना बंद करना होगा कि यह कार्य महिलाओं का है और यह कार्य पुरुषों का है.

जब तक आप दोनों कार्यों को नहीं संभालते तब तक आप इन सब का महत्व भी नहीं समझ पाएंगे, आज भी बहुत से पुरुष महिलाओं को यही कहते हैं, करती क्या हो तुम पूरे दिन? वहीं महिलाएं नहीं समझ पाती कि धन कैसे कमाया जाता है और इसीलिए शॉपिंग में और किटी पार्टीज में कभी-कभी पानी की तरह धन बहा देती है.

हर कार्य को करने में मेहनत होती है और हमें तब तक नहीं पता चलेगी जब तक हम उस कार्य को कर ना ले, तभी हम एक दूसरे का सम्मान, और कार्यों का महत्व जान पाएंगे.

अगर कोई महिला चाहती है की उसे हर वक्त घरेलू कार्य में ना उलजना पड़े तो उसे भी नौकरी करना आवश्यक है वहीं अगर कोई पुरुष ऐसी महिला से विवाह करता है जो नौकरी करती है तो उसे भी घरेलू कार्य आने चाहिए.

आज भी बहुत सी महिलाओं को धन कमाना भार लगता है वहीं बहुत से पुरुषों को घरेलू कार्य करने में शर्म आती है. सदियों से यही होता आ रहा है एक व्यक्ति घर में कमा रहा है तो बाकी बैठकर खा रहे हैं वही एक सारे घर के कामों को कर रही है तो बाकी मजे से रह रहे हैं. आज के समय में एक दूसरे का हर तरह से हाथ बटाना बहुत जरूरी है.

मम्मी या पापा दोनों को ही हर तरह से, सारे कार्यों को सीखना चाहिए कि अगर बच्चे को भूख लगी हो या बाहर कुछ खरीदने को कहे तो हमारी आंखें एक दूसरे को ना ढूंढते हुए स्वाभिमान से उसकी जरूरतों को पूरी कर सके. जिस दिन हमारे देश में, यह कार्यों का भेदभाव समाप्त हो जाएगा और हर पुरुष यह समझेगा छोटे-मोटे घर के कार्य करने से उनका स्वाभिमान बढ़ेगा ना कि घटेगा और हर महिला कार्य करने लगेगी, तकनीकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारेगी उस दिन हमारा देश बहुत ही आगे होगा, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं.

चलिए बताते हैं एक दूसरे का हाथ,
कभी ना छोड़े एक दूसरे का साथ,
यह तुम्हारा कार्य, यह मेरा कार्य ना करें,
करते हैं सिर्फ स्वाभिमान और समानता की बात.

चिड़िया

रचनाकार- कु.अंशिका कश्यप, कक्षा 7वी, शासकीय माध्यमिक शाला
सूरजपुराकला, कबीरधाम



रोज सवेरे उठ जाती.
चीं-चीं-चीं-चीं शोर मचाती.

करती अपनी मनमानी.
रोज सवेरे सबको जगाती.

दाना खाती, पानी पीती.
पंख फैलाकर उड़ जाती.

चिड़िया रानी, चिड़िया रानी.
तुम हो बड़ी सयानी.

तितली

रचनाकार- कु.अंशिका कश्यप, कक्षा 7वी, शासकीय माध्यमिक शाला
सूरजपुराकला, कबीरधाम



तितली रानी, तितली रानी.
लगती हमें बड़ी सुहानी.

सुबह सवेरे उठ जाती.
फूलों का रस पी जाती.

रंग-बिरंगे पंखों वाली.
सबके मन को ललचाती.

खोल पंखों को उड़ जाती.
तितली रानी तितली रानी.
करती अपनी मनमानी.

फूल

रचनाकार- कु.अंशिका कश्यप, कक्षा 7वी, शासकीय माध्यमिक शाला
सूरजपुराकला, कबीरधाम



फूल लगाओ, घर में खुशहाली लाओ.
सबको इनकी खुशबू दो.

रंग बिरंगे फूल लगाओ.
तितलियों को तुम पास बुलाओ.

अपने घर आंगन को महकाओ.
फूल लगाओ, घर में खुशहाली लाओ.

धैर्य रखिए

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



आजकल के समय में, सभी के अंदर धैर्य की बहुत कमी है, बहुत सी बार कर्मचारियों से गलती हो जाती है, पर उसे समझाने की जगह मालिक उस पर चिल्लाने लगता है, उसे डांटने लगता है. अब जब भी वह गलती करेगा उसे आपकी डांट याद आएगी, अगर यही बात हमने उन्हें समझदारी से समझायी होती तो जब भी वह यह गलती करता तो जानता की इसके पीछे क्या नुकसान है. बचपन में भी बहुत से बच्चों को इस चीज से गुजरना होता है, कभी-कभी माता पिता और टीचर्स में धैर्य की कमी से उन्हें डांट पड़ती है यहां तक की मार भी पड़ती है. अब वह छोटा सा बच्चा जब- जब वह गलती करेगा तो उसे उनकी डांट और मार ही याद आएगी. कितना अच्छा होता अगर उसके बड़े उसे प्यार से समझा दे और क्या सही है, क्या गलत है, सब में फर्क बताते, पर नहीं कभी-कभी बड़ों को यह लगता है, की शॉर्टकट रास्ता अपना लिया जाए , इस डांट फटकार से उस बच्चे पर क्या असर पड़ता है, उसका उन्हें अंदाजा भी नहीं, अब बड़े होते होते जब जब कोई और भी वह गलती करेगा तो वह बच्चा यही समझेगा की डांट ना और फटकारना इसका उपाय है क्योंकि उसने भी यही देखा, समझा, और सीखा. यहां तक की जब बड़ा हो जाएगा और कोई गलती करेगा तो खुद को सजा देगा इसीलिए आजकल बहुत से लोग कभी खुद को मारते हैं, चिल्लाते हैं, यहां तक की आत्महत्या तक कर लेते हैं क्योंकि उन्हें लगता है वह सजा के पात्र हैं. अगर हम इंसान है तो हमें हर बात में इंसानियत रखनी चाहिए. हम अपने बच्चों पर

किसी तरह का दबाव तो नहीं डाल रहे हैं. क्या हम उन्हें छोटी-छोटी बात पर हाथ तो नहीं उठा रहे हे. क्या सबके सामने उनके बेज्जती तो नहीं कर रहे हो.

माता - पिता और शिक्षक भगवान का रूप माने जाते हैं पर यह भी इंसानी व्यवहार नहीं है की हम अपनों से छोटों पर या किसी और पर भी हाथ उठाए और क्रोध करें या मजाक उड़ाए.

किसी की गरिमा को ठेस पहुंचाना, चाहे वह छोटा सा बच्चा ही क्यों ना हो, सरासर गलत है. यहां तक की गिड़गिड़ा कर, रो कर अपनी बात को मनवाना भी अधीरता है.

अक्सर एक वाक्य पूछा जाता है की अकल बड़ी या भैंस बड़ी? क्योंकि अगर इंसान दिमाग से और शांति से कोई बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़े तो वह लड़ाई बहुत आसानी से लड़ सकता है , अपने दिमाग के बल पर ना कि हाथ पैरों से, और यही तो फर्क है इंसान और जानवर में.

जानवर अपने बच्चों को बोलकर और समझदारी से अपनी बातों को समझा नहीं सकते हैं पर इंसान कर सकता है.

क्यों ना हमको ऊपर वाले ने माता पिता, शिक्षक, मालिक बनाया हो पर इन सभी रिश्तों को हम प्यार, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, और धैर्य के साथ निभा सकते हैं.

छोटी सी जिंदगी है, तो क्यों ना हम सभी से प्यार से, खुशी से, शिष्टाचार से, धैर्य से, सम्मान से, सत्कार से, अच्छाई से, समझदारी से पेश आए और सोचे, समझे कि अगर हम उनकी जगह होते तो कैसा व्यवहार चाहते, ठीक वैसा ही व्यवहार हमें किसी की गलती पर करना चाहिए. विशेष रुप से छोटे बच्चे, अच्छे व्यक्ति के साथ.

हां अगर कोई अपराध करे तो, कानूनी कार्यवाही उन अपराधियों के खिलाफ की जाए पर हमें खुद को जीवन में शांति चाहिए, प्रसन्न मन चाहिए तो हमें खुद को और दूसरों को हर बात समझदारी और धैर्य से समझानी होगी.

पहले तो हम अपने आप को यह बात समझाएं की हर एक चीज का समाधान हो सकता है. किसी पर भी अपने या अपनों से बड़ों के फैसले को दूसरों पर ना थोपे.

बहुत से माता पिता अपने बच्चों की शादी जल्दबाजी में करा देते हैं क्योंकि उनके दादा- दादी या नाना-नानी की यह आखिरी इच्छा होती है, पर उन बच्चों के भविष्य का क्या? तो आप उन्हें प्यार और स्नेह देते हुए समझाएं.

बहुत से बच्चे शादी होते ही कुछ महीनों में अपने मां-बाप से अलग हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वह कभी नहीं समझेंगे की उनकी बहू - बेटे उनसे क्या चाहते हैं. पर वो यह भूल जाते हैं की जब से वह मां-बाप बने है, तो उनकी चाहत के लिए ही तो जी रहे हैं, क्यों ना हम भी उन्हें ठीक वैसे ही समझाएं जैसे वह हमें बचपन में समझाते थे, जब उन्होंने हमें बचपन में नहीं छोड़ा तो हम उनको उनके बुढ़ापे में अलग क्यों कर दे.

धैर्य से काम ले, हर बात पर जल्दबाजी, दुर्यवहार करना, अपशब्द का उपयोग करना बंद करें.

अगर किसी की गलती करने पर आप उस पर चिल्लाते हैं और अपशब्द बोलते हैं तो वह तो गुनाहगार है पर आप मानसिक रूप से बीमार है.

खुद को पहचाने कि हम उस शक्ति से बने हैं, हम में बहुत सारा, धैर्य, स्नेह, शिष्टाचार और इंसानियत है.

सूरज

रचनाकार- कु.अंशिका कश्यप, कक्षा 7वी, शासकीय माध्यमिक शाला
सूरजपुराकला, कबीरधाम



आओ प्यारे सूरज दादा.
बड़े सवेरे तुम आ जाते.

सर्दियों में अपनी किरणों से,
ठंड को भगाते हो.

गर्मियों में सबको झुलसाते हो.
पेड़ पौधों के जीवन कहलाते हो.

आओ प्यारे सूरज दादा,
जग से न्यारे सूरज दादा.

चंदा

रचनाकार- कु.अंशिका कश्यप, कक्षा 7वी, शासकीय माध्यमिक शाला
सूरजपुराकला, कबीरधाम



चंदा मामा, चंदा मामा,
प्यारे-प्यारे चंदा मामा.
तुम हो न्यारे, चंदा मामा.

रात में तुम जब आते,
सबके दिलों में छा जाते.

कभी तुम घट जाते,
तो कभी तुम बढ़ जाते.

करते हो अपनी मनमानी.
बनाते हो हर दिन नई कहानी.

शिष्टाचार, संस्कार और अच्छा व्यवहार

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



शिष्टाचार हर देश में अलग होता है, लेकिन सच्ची विनम्रता और प्रभाव हर जगह एक ही तरह से देखा जा सकता है. एक व्यक्ति जो अपने भीतर अच्छाई रखता है, हमेशा अच्छे शिष्टाचार और शिष्टाचार के कपड़े पहने रहता है. विनम्रता जैसी कोई नीति नहीं है- और अच्छा नाम और मूल्यवान पहचान पाने के लिए एक अच्छा तरीका दुनिया में सबसे अच्छी चीज है. अच्छे शिष्टाचार अच्छे नैतिकता का एक हिस्सा हैं, और हम इसे शिक्षा, ज्ञान और अंत में अपने परिवेश जैसे घर, स्कूल आदि से प्राप्त करते हैं. अच्छे शिष्टाचार हमारे आस-पास के लोगों को आसान और आरामदायक बनाने की कला है. अच्छे संस्कारों की शुरुआत हमेशा घर से होनी चाहिए. शिष्टता कोई गहना या कपड़ा नहीं है जिसे केवल पहनने के लिए पहना जाता है, इसके बावजूद यह वह दृष्टि है जो हर किसी को अपनी भाषा, व्यवहार और अपने व्यवहार में होनी चाहिए. एक व्यक्ति हमेशा वास्तविक रूप में दिखने के लिए संतुष्ट होने से अधिक प्राप्त करता है, जो वह वास्तव में नहीं है उसे प्रकट करने का प्रयास करने से. अच्छे संस्कार बहुत अच्छी समझ, कुछ अच्छे स्वभाव और थोड़े से आत्म-दयालु हृदय का परिणाम होते हैं जो कभी-कभी वास्तविक प्रशंसा के तरीके से दूसरों की भावनाओं, भावनाओं और दिल को छू लेते हैं. यह सामाजिक रूप से दिल से महसूस किया जाना चाहिए, सभी को हमेशा याद रखने के लिए कि वास्तविक अर्थों में शिष्टाचार का मूल्य भावनाओं की ईमानदार अभिव्यक्ति और पूर्ण भावनाओं को व्यक्त करना है.

युवा छात्रों को व्यवहार करना चाहिए, लेकिन कभी-कभी वे अक्सर उस समय डरपोक, संकोची और आत्म-भयभीत महसूस करते हैं जब भी उन्हें कई लोगों के सामने किसी अजनबी द्वारा पेश किया जाता है। इस भावना को दूर करने का एक ही तरीका है कि वे अपने माता-पिता की मदद से और अपने स्कूल से भी अपने शिक्षकों, दोस्तों आदि की मदद से घर से शिष्टाचार के पहलुओं को सीखना शुरू कर दें। अच्छे शिष्टाचार को इतना नहीं सीखा जाता है जितना कि आदत से ही आसानी से। हम सभी को विनम्र, ऊर्जावान, दयालु, उत्साही, एक अच्छा शिक्षार्थी होना चाहिए, तभी हम अपने अंदर सभी प्रकार के गुण अर्जित कर सकते हैं। यह सच में देखा गया है कि अगर हम सभी अपने घर में कर्कश और शोरगुल वाला व्यवहार करेंगे, तो उसी तरह हम बाहर के अजनबियों के साथ भी व्यवहार करेंगे। इसलिए, यह हमारा नैतिक कर्तव्य और जिम्मेदारी है कि हम अपने भीतर ऐसी चीजों को अपनाएं जो हमें अपने जीवन को सबसे सुविधाजनक और केंद्रित तरीके से जीने में मदद करें। एक कंपनी में सबसे अधिक सहमत व्यक्ति वे होते हैं जो घर पर सबसे अधिक सहमत होते हैं। घर उन सभी बेहतरीन चीजों का पाठशाला है, जो हम सभी अपनी उम्र के हर पड़ाव पर हासिल करते हैं और अपने जीवन में सामना करते हैं।

अच्छे संस्कार हमारे जीवन-शिक्षा, करियर और ज्ञान का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। यह बहुत ही रोचक बात है कि विशेष प्रशिक्षण की सहायता के बिना कोई मिथ्या उदाहरण नहीं, कोई परम्परा नहीं, बल्कि अपनी प्रकृति के कारण, सद्बुद्धि के उपहार, एक सच्ची गर्व की भावना पर्याप्त उपाय हैं जो हमें स्वतंत्र महसूस करने और अपने जीवन का सामना करने में सक्षम बनाते हैं। आसानी से और सराहनीय। एक सहमत व्यक्ति होने की सच्ची कला सभी कंपनी के साथ अच्छी तरह से प्रसन्न दिखना और सभी परिस्थितियों का सामना एक सौम्य और दयालु हृदय और शांत दृष्टिकोण के साथ करना है। यदि एक आदमी ने खुद को निपटा दिया, तो शायद उसके पास ज्यादा समझदारी, सीखने की क्षमता नहीं है, लेकिन अगर उसके पास सामान्य ज्ञान है, और उसके व्यवहार में कुछ दोस्ताना है, तो निश्चित रूप से यह इस स्वभाव के बिना सबसे चमकीले हिस्सों की तुलना में पुरुषों के दिमाग को अधिक दर्शाता है। यह केवल माना जाता है कि एक प्यारी मुस्कान, शांत अभिव्यक्ति, एक दोस्त या विशेष रूप से एक अजनबी को संबोधित करने में एक बुद्धिमान और विनम्र आंदोलन, जिसे कोई हमारे अच्छे संबंध के लिए सिफारिश कर सकता है, हमेशा हमारा ध्यान आकर्षित करता है, जो इतना आकर्षक है और सकारात्मक रूप से हमारे प्रभाव को चिह्नित करता है उन पर। अंत में, लेकिन कम से कम नहीं एक निश्चित कोमलता है जिसे हर इंसान में विकसित किया जाना चाहिए जो एक आकर्षण जोड़ता है जो हमेशा सुंदरता और दिमाग की कमी के लिए पूरी तरह से क्षतिपूर्ति करता है।

एक चरित्र के सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय पहलुओं में से एक वह तरीका है जिससे हम दूसरों के प्रति व्यवहार करते हैं। वरिष्ठों, छोटों और समान के प्रति एक सुंदर, सक्रिय और प्रभावशाली व्यवहार किसी के जीवन में खुशी और खुशी का एक निरंतर स्रोत है। यह दूसरों को प्रसन्न करता है क्योंकि यह उनके व्यक्तित्व और दृष्टिकोण के लिए सम्मान का संकेत देता है, लेकिन यह स्वयं को दस गुना अधिक आनंद देता है। प्रत्येक व्यक्ति को अच्छे व्यवहार और सकारात्मक दृष्टिकोण में काफी हद तक स्व-शिक्षक बनना चाहिए, ताकि वह अपने जीवन यापन के लिए आसानी से कमा सके। हम सभी को एक बात पर विश्वास करना चाहिए कि हमारे मन में गरिमा होनी चाहिए, तभी शिष्टाचार की कमी अपने आप पूरी तरह से दूर हो सकती है। किसी व्यक्ति की भाषा उसके चरित्र का एक आदर्श वास्तविक अच्छा संकेतक है। यह चुपचाप देखा गया है कि एक शिक्षित, सुसंस्कृत और परिष्कृत व्यक्ति हमेशा, धीरे से, चुपचाप, धीरे से इस तरह से बोलता है कि उनका हर शब्द शांति के साथ, यहां तक कि बुरी परिस्थितियों में भी बोला जाता है। कभी-कभी ऐसे व्यक्ति नाराज होते हैं और दिमाग से भी बाहर होते हैं, फिर भी उनके संवाद करने के तरीके में अभिव्यक्तिपूर्ण चुप्पी होती है और हालांकि वे हमेशा अपना स्वाभिमान बनाए रखते हैं।

शिष्टाचार क्रिया का आभूषण है और एक प्रकार का शब्द बोलने का, या एक तरह का काम करने का एक तरीका है, जो उनके मूल्य को बहुत बढ़ाता है और किसी के जीवन में एक उल्लेखनीय स्थान बनाता है। फिर भी ऐसे बहुत से पुरुष हैं जो अपने झूठे और नकली रवैये पर गर्व करते हैं और यद्यपि उनके पास गुण क्षमता हो सकती है, अंत में उनके तरीके से काम के इस तरीके में उनका समर्थन नहीं किया जाता है। एक ऐसे व्यक्ति के लिए व्यवहार की खेती अत्यधिक आवश्यक है जो व्यवसाय, शिक्षा और व्यक्तिगत आधार पर भी दूसरों के साथ बातचीत करने के लिए तैयार और इच्छुक है। जीवन के किसी भी प्रतिष्ठित चरण और क्षेत्र में किसी व्यक्ति की सफलता के लिए मिलनसारिता और अच्छे प्रजनन को हमेशा एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता है। नहीं, संदेह है कि कुछ मजबूत सहिष्णु दिमाग हैं जो दोषों और अमान्य रूपों को सहन कर सकते हैं, और इसलिए केवल अधिक वास्तविक गुणों की तरफ देखते हैं। स्वीकार्य शिष्टाचार एक आदमी की सफलता और खुशी के लिए आश्चर्यजनक रूप से योगदान देता है जो इसलिए उसके संतुष्टि स्तर से मेल खाता है। सदाचारी व्यक्ति को हमेशा सज्जन, दयालु, आज्ञाकारी और बुद्धिमान तरीके से व्यवहार करना चाहिए।

अच्छे शिष्टाचार न केवल व्यक्तिगत आकर्षण के लिए एक अलंकरण हैं, बल्कि उनके लिए एक उत्कृष्ट विकल्प हैं जब वे वास्तविक समय में मौजूद नहीं होते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात जो हम सभी को ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह है कि जब सुंदरता के आकर्षण गायब हो जाते हैं, तो उनके स्थान की आपूर्ति

करने के लिए एक लालित्य और शिष्टाचार का परिशोधन होना चाहिए. सुंदरता प्रकृति का उपहार है, लेकिन संस्कार साधना, परिवेश, अभ्यास और अनुकूलन द्वारा प्राप्त किए जाते हैं. शिष्टाचार, शिष्टाचार, ज्ञान, गुण, बुद्धि और मूल्य, सार्वभौमिक रूप से सम्मानित और सराहना की जाती हैं. ये सभी हमें अपने-अपने जीवन में अपनी मौलिकता और व्यक्तित्व को खोजने में मदद करते हैं. हम बच्चे सोचते हैं कि शिष्टाचार उबाऊ है, लेकिन हम कुछ ऐसा सीख रहे हैं जिससे हमें जीवन भर फायदा होगा. चूंकि हमें नियम, घर के नियम, स्कूल के नियम और बाहर जाते समय नियम आदि याद रखने में कठिनाई होती है. हमारे जीवन में अच्छे शिष्टाचार सीखने और अभ्यास करने का महत्व बहुत आवश्यक है जो हम सभी को सबसे अधिक जीने में मदद करेगा. सुंदर तरीका.

शिष्टाचार आचरण के सबसे महत्वपूर्ण मानक हैं जो एक व्यक्ति को सुसंस्कृत, विनम्र, शिक्षित, बुद्धिमान और परिष्कृत दिखाते हैं. उन्होंने मानव व्यवहार, दृष्टिकोण और सोच के लिए एक मानक निर्धारित किया. शिष्टाचार की बात इस तथ्य से प्रकट होती है कि इस विषय पर बड़ी किताबें और रचनाएँ लिखी गई हैं और यह कि स्कूल बहुत लंबे समय से शिष्टाचार और शिष्टाचार सिखाने के एकमात्र उद्देश्य के लिए मौजूद हैं. अच्छे व्यवहार अच्छे प्रजनन और उन्मुख वातावरण का पहला निशान है जो सीधे व्यक्ति के पालन-पोषण को दर्शाता है और इसलिए अच्छे शिष्टाचार सीखना घर से शुरू होता है और माता-पिता द्वारा सिखाया जाना चाहिए. अच्छे संस्कार हमारे पास स्वाभाविक रूप से नहीं आते, उन्हें सीखना पड़ता है और अपने जीवन में दिन-ब-दिन अधिक अभ्यास करना पड़ता है. यदि बच्चों को यह नहीं बताया गया और यह नहीं दिखाया गया कि सभी के साथ विनम्रता से कैसे व्यवहार किया जाए, तो वे सभी के साथ असभ्य और असभ्य हो जाएंगे.

शिष्टाचार एक ऐसी चीज है जिसका उपयोग हर दिन दूसरों पर अच्छा प्रभाव डालने और अपने बारे में अच्छा महसूस करने के लिए किया जाता है ताकि हम अपने जीवन में स्वतंत्र और आसानी से रह सकें. अच्छे शिष्टाचार "दरवाजे खोलने" से कहीं अधिक हैं, ताकि सबसे सरल और प्रशंसनीय तरीके से दूसरों के प्रति अपनी कृतज्ञता वापस देने के लिए हर किसी का खुले हाथों से स्वागत किया जाना चाहिए और "धन्यवाद नोट्स लिखना" चाहिए. खैर, विनम्र और विनम्र होने का मतलब है कि दूसरे हमारे लिए कैसा महसूस कर रहे हैं और यथार्थवादी तरीके से हमारे बारे में उनकी क्या राय है. यदि हम अच्छे शिष्टाचार का अभ्यास करते हैं, तो हम अपने आस-पास के लोगों को दिखा रहे हैं कि हम उनकी भावनाओं का ध्यान रखते हैं और दिल से उनका सम्मान करते हैं. इस तरह, हम दूसरे के व्यवहार के लिए मानक भी स्थापित कर रहे हैं और उन्हें हमारे साथ समान सम्मान, ध्यान, सम्मान, देखभाल और प्यार के साथ व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं. यह वास्तव में कहा और देखा गया है कि हमेशा 'दूसरों के

साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपसे व्यवहार करें'. अच्छे शिष्टाचार सभी देशों में समान नहीं होते क्योंकि विभिन्न राष्ट्रों के अलग-अलग रीति-रिवाज होते हैं. अच्छे शिष्टाचार अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग हो सकते हैं, अच्छे शिष्टाचार का सिद्धांत हमेशा हर जगह समान होता है, यह दूसरों की भावनाओं के लिए एक विचार है और लगभग सच्चे दिल से उनका सम्मान करना है. अच्छे शिष्टाचार बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें समाज में व्यवहार करने का तरीका सिखाते हैं. वे हमें दूसरों पर, स्कूल में, नौकरी के साक्षात्कार में, और जीवन की लगभग हर स्थिति में अनुकूल प्रभाव डालने में सक्षम बनाते हैं.

जो बच्चे अच्छे शिष्टाचार को समझते हैं और उनका अभ्यास करते हैं, वे अधिक आत्मविश्वासी महसूस करते हैं और वयस्कों के साथ अपने व्यवहार में अधिक सक्रिय हो जाते हैं. आत्मविश्वास की यह भावना हमारी भविष्य की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और हमारे जीवन में हमारी खुशी के स्तर को ऊपर उठाकर हमारे संतुष्टि स्तर को बनाए रखने के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है. अच्छे संस्कारों का अभ्यास करके हम अपने स्कूल, अपने समुदाय, अपने राज्य और अपने देश में बदलाव ला सकते हैं. अच्छे शिष्टाचार एक समुदाय में शांति और सद्भावना बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. अच्छे शिष्टाचार वाला व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को आहत नहीं करता है, और इसलिए वह अपने दोस्तों और पड़ोसियों के साथ और दूसरों के साथ भी अच्छे संबंध रखता है. इस तरह वह समाज में शांति बनाए रखने में मदद करता है. हम सभी के लिए इस तथ्य को जानना बहुत जरूरी है कि समाज में अच्छी तरह से जीने के लिए सिर्फ पैसा ही काफी नहीं है. हमारा आचरण भी अच्छा होना चाहिए, क्योंकि दूसरों से मित्रता, प्रेम और सम्मान प्राप्त करना मानव स्वभाव है. दूसरों के साथ मित्रता जीवन को सुखद बनाती है और इसे दूसरों के प्रति अपने दृष्टिकोण से अर्जित करना पड़ता है.

यदि हम दूसरों के प्रति दयालु हैं, तो वे हमारे प्रति दयालु होंगे, और दयालुता अच्छे आचरण का सार है. बुरे आचरण न केवल मित्रों को बल्कि हमारे अपने परिवार के सदस्यों सहित अन्य लोगों को भी दूर भगाते हैं. एक आदमी के पास इतना पैसा हो सकता है कि वह सब कुछ खरीद सके जो वह चाहता है, लेकिन अगर उसका व्यवहार खराब है तो उसका कोई दोस्त नहीं होगा, और कोई भी दोस्तों के बिना खुशी से नहीं रह सकता है. हो सकता है कि उसके अपने परिवार के सदस्य भी उसका सम्मान न करें और आखिरकार वह अकेला आदमी बन जाएगा. दूसरी ओर, जिस व्यक्ति का व्यवहार अच्छा होता है उसके कई मित्र होते हैं. वह उन सभी के सम्मान की आज्ञा देता है जो उसके संपर्क में आते हैं. वह दूसरों के बारे में बुरा नहीं बोलता. यहां तक कि जब उसे उकसाया जाता है, तो वह शब्दों का इस तरह से उपयोग करने की पूरी कोशिश करता है जिससे दूसरों को ठेस न पहुंचे. वह कमजोर और अज्ञानी के

प्रति भी सहानुभूति रखता है और दूसरों की विकृतियों और कमजोरियों का मजाक नहीं उड़ाता है. हालाँकि, बहुत से लोग हैं जो अपने घरों के बाहर इतना अच्छा व्यवहार करते हैं कि बाहर के सभी लोग उनका सम्मान करते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं. लेकिन अपने ही घरों में वे शैतान से भी बदतर हैं. ऐसे लोगों को अच्छा शिष्टाचार नहीं कहा जा सकता. यदि किसी का आचरण अच्छा है, तो वह हर जगह अच्छा व्यवहार करता है, भले ही वह दूसरों की आलोचनात्मक निगाहों से दूर हो. ऐसा व्यक्ति ही समाज में अच्छा जीवन व्यतीत कर सकता है. इसलिए सभी के लिए अच्छे संस्कारों का विकास करना आवश्यक है.

आदर्श पिता

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



हर पिता होता है अपने बच्चों के लिए आदर्श.
क्योंकि वह करता है अपने बच्चों के लिए संघर्ष.

करता है कठिन परिश्रम वह दिन रात.
बच्चों के भविष्य की चिंता सताती है उसे दिन रात.

अपने अरमानों को भूल बच्चों की ख्वाहिश करते पूरी.
अपनी खुद की चाहत छोड़ देते हैं अधूरी.

बच्चों की मुस्कुराहट देख मुस्कुरा लेते हैं वे.
अपना दर्द बच्चों से कितनी सफाई से छुपा लेते हैं वे.

बच्चों की जरूरतें पूरी करते, अपनी जरूरत भूल जाते हैं.
वही बच्चे अपनी जरूरत पूरी करने, उनसे दूर चले जाते हैं.

पिता वह इमारत हैं जो जर्जर होकर भी बच्चों को सुरक्षा देते हैं.
सारी मुश्किलें खुद सह लेते किसी पर आंच नहीं आने देते हैं.

गर्मी धूप बरसात सबकी मार अकेले सहते रहते हैं.
अमीर गरीब जैसे भी हो बच्चों के लिए आदर्श पिता होते हैं.

पिता तो बस प्यार और सम्मान के लायक होते हैं.
अपनी सेवा से जीत लो मन, सेवा के हकदार होते हैं.

पितृ ऋण है भारी ऋण इसे चुका ना पाओगे.
मान दो, सम्मान दो उन्हें, तभी सपूत कहला पाओगे.

जन्म देकर हमें धरा पर लाए यह हमारे जनक हैं.
पिता सदा पितृ देवो भवह के परिचायक है.

माँ तो बस माँ होती है

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



माँ तो बस माँ होती है, माँ की महिमा निराली है.
माँ अन्नपूर्णा, सरस्वती, माँ दुर्गा, रमा, महाकाली है.
बच्चों की खुशियां हेतु खुद को मिटा देने वाली है.
माँ हमपर दया, प्रेम, करुणा, ममता लुटाने वाली है.

माँ तो बस माँ होती है, माँ की महिमा निराली है.
माँ तो है प्रकृति का रूप, वह सृष्टि चलाने वाली है.
बच्चों को खुश देख के, माँ खुश हो जाने वाली है.
माँ खुश है तो बच्चे की हर रोज होली, दिवाली है.

माँ तो बस माँ होती है, माँ की महिमा निराली है.
बच्चे जिनका सम्मान करें, वह माँ किस्मत वाली है.

बच्चे की रक्षा के लिए माँ बन जाती दुर्गा, काली है.
माँ बच्चों की खुशियों की रखवाली करने वाली है.

माँ तो बस माँ होती है, माँ की महिमा निराली है.
अपनी खुशियां निछावर करे बच्चों पर, माँ दानी है.
बच्चों का सदा हित चाहे जग में माँ कल्याणी है.
जैसी भी हो माँ बच्चे के लिए वह सदा ही ज्ञानी है.

माँ तो बस माँ होती है, माँ की महिमा निराली है.
जिनका कोई नहीं जग में, उनकी माँ शेरावाली है.
हर परिस्थिति में करती सदा बच्चों की रखवाली है.
जिस घर होती नहीं माँ, वह घर ममता से खाली है.

माँ तो बस माँ होती है, माँ की महिमा निराली है.
बाग रूपी परिवार को संवारने मारने वाली माली है.
बच्चों के साथ बिना माँ का जीवन होता खाली है.
माँ तो बच्चों की सुख-दुख बाँटने वाली आली है।
(आली =सखी)

माँ तो बस माँ होती है, माँ की महिमा निराली है.
जब तक है माँ का आशीष, बेटियां मायके वाली है.
बच्चे के लिए हर दर्द से गुजर जाती माँ धैर्य वाली है.
माँ का करें सम्मान सदा, माँ तो जगतजननी है.

हर एक किसी एक को सिखाए

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



हर एक किसी एक को सिखाए,
निरक्षरता को दूर भगाएं,
इस अभियान को और बढ़ाएं,
वंचितों को अवसर प्रदान कराए.

शिक्षा मानव विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसके बिना मनुष्य का बढ़ना और फलना-फूलना काफी मुश्किल हो जाता है. वाक्यांश 'हर एक, एक को सिखाओ' इच वन टीच वन की उत्पत्ति संयुक्त राज्य अमेरिका में गुलामी के समय में हुई थी, जब अफ्रीकी और अफ्रीकी अमेरिकियों को शिक्षा से वंचित कर दिया गया था, जिसमें पढ़ना - सीखना भी शामिल था. अधिकांश दासों को उनकी तात्कालिक परिस्थितियों से परे किसी भी चीज़ के बारे में अज्ञानता की स्थिति में रखा गया था, जो लगभग मालिकों, सांसदों और संबंधित अधिकारियों के नियंत्रण में थे. यह उस समय था जब एक दास ने सीखा या पढ़ना सिखाया, यह उनका कर्तव्य बन गया कि वे किसी और को पढ़ाएं.

प्रत्येक की अवधारणा, एक सिखाओ की स्थापना शिक्षा की आवश्यकता और अस्तित्व के लिए मूलभूत सिद्धांतों के रूप में एकता पर की गई थी. जैसा कि हम सभी जानते हैं कि शिक्षा मनुष्य के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है और उसके जीवन के निर्माण खंड के रूप में कार्य करती है. यह कहना गलत नहीं होगा कि शिक्षा किसी व्यक्ति की सफलता और असफलता के बीच का निर्धारण कारक है. किसी व्यक्ति का विकास उसकी उचित शिक्षा से निकटता से संबंधित है जैसे कि नैतिक प्रशिक्षण, व्यवहार, स्वयं का ज्ञान और सामान्य रूप से दुनिया को समझना. शिक्षा एक ऐसी चीज है जिसकी सभी को आवश्यकता होती है और इसका महत्व हमारे दैनिक जीवन में लिए गए निर्णयों के रूप में प्रदर्शित होता है. उचित शिक्षा यानी हमारे आस-पास की चीजों का ज्ञान, कुछ बुनियादी तथ्य, सच्चाई और परिवेश, अच्छे जीवन के फैसले ले सकते हैं जो हमारे जीवन को संजोने योग्य बना देंगे.

यह एक आधुनिक युग का तथ्य है कि शिक्षा और साक्षरता किसी भी व्यक्ति के अच्छे भविष्य की कुंजी है, फिर भी यह देखा गया है कि शिक्षा के महत्व को जानने के बाद भी हमारी अधिकांश आबादी निरक्षर बनी हुई है. प्रत्येक भारतीय नागरिक की यह जिम्मेदारी है कि वह निरक्षरता के खिलाफ खड़ा हो और देश को इस अभिशाप के खिलाफ लड़ने में मदद करे. हालाँकि युवाओं को इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की आवश्यकता है और उनके पास अपने देश में निरक्षरता को मिटाने में मदद करने की सामाजिक जिम्मेदारी है.

भारत, हमेशा से, समाज के दो वर्गों में विभाजित किया गया है जिसमें विशेषाधिकार प्राप्त और वंचित वर्ग शामिल हैं. इस अंतर को कैसे मिटाया जाए और एक समृद्ध राष्ट्र कैसे बनाया जाए, इस पर लगातार बहस और चर्चा होती रही है. आशा की एक किरण जो इस अंतर को कम कर सकती है वह शिक्षा के रूप में हो सकती है. शिक्षा बहुत कुछ हासिल करने में मदद कर सकती है, एक शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों के बारे में अच्छी तरह से जानता है और बेहतर तरीके से काम करने की स्थिति में है और इसलिए अपने जीवन को सफल बनाने के अवसरों की कभी कमी नहीं होती है. लेकिन दुर्भाग्य से, हमारे देश में वंचित वर्गों के लिए शिक्षा तक पहुंच वास्तव में आसान नहीं रही है. समाज में बहुत से जाति और समुदाय आधारित मतभेद भी प्रचलित हैं, जिसके परिणामस्वरूप गरीब बच्चों को वह शिक्षा नहीं मिल पाती है जो उन्हें मिलनी चाहिए. यद्यपि सरकार ने हमारे देश के हर एक बच्चे की शिक्षा के लिए प्रावधान किया है और आरटीई अधिनियम द्वारा प्रारंभिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया है, फिर भी इन बच्चों को वह नहीं मिलता है जिसके वे हकदार हैं और या तो बाल मजदूरों के रूप में काम करने के लिए छोड़ दिए जाते हैं या अभाव के कारण शिक्षा से वंचित रह जाते हैं.

निश्चित रूप से, इसमें कोई संदेह नहीं है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण जीवन और सुरक्षित भविष्य के लिए भी सशक्त बनाती है। शिक्षा एक ऐसी चीज है जो सफलता और स्वतंत्र सोच के सभी द्वार खोलती है और एक शिक्षित व्यक्ति जीवन के प्रति एक बेहतर और आत्मविश्वासी दृष्टिकोण का निर्माण करता है। सरकार ने विभिन्न योजनाओं, परियोजनाओं और योजनाओं जैसे सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन और विभिन्न शिक्षा कानूनों जैसे शिक्षा का अधिकार अधिनियम को बढ़ावा देने के साथ-साथ सुगमता की मदद से देश में उचित शिक्षा स्तर सुनिश्चित करने के लिए कई उपाय किए हैं। किसी भी देश में, मुख्य उद्देश्य राष्ट्र का सामाजिक विकास है। साथ ही नागरिकों, विशेष रूप से भारत के युवाओं को भी भारत के सभी बच्चों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए समर्पित होने की आवश्यकता है, और जितना संभव हो सके इस उद्देश्य के लिए अपना योगदान दें।

सरकार वास्तव में शिक्षा के मुद्दे पर चिंतित है और लगातार विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के साथ आ रही है और काफी धन भी खर्च कर रही है, लेकिन उन लोगों की कमी है जो इन योजनाओं को प्रभावी ढंग से और विवेकपूर्ण ढंग से काम कर सकते हैं। युवाओं में शिक्षा के प्रति प्रेरणा और इच्छा की भी कमी है। इसलिए आवश्यकता है कि युवा नवीन विचारों के साथ आएँ और अधिक से अधिक लोगों की मदद करने के लिए समूह भी बनाएँ। बहुत सारे छात्र समूह हैं जो जरूरतमंद बच्चों को मुफ्त ट्यूशन के रूप में मुफ्त शिक्षा दे रहे हैं या शाम के समय उन्हें कुछ बुनियादी ज्ञान सिखा रहे हैं।

शिक्षा आग की लौ की तरह है जिसे फैलाने के लिए सिर्फ एक माध्यम की जरूरत होती है, एक छोटी सी चिंगारी पूरी लौ को जला सकती है। इस 21वीं सदी में भी हमारे देश में लाखों ऐसे लोग हैं जो आज भी ज्ञान की दुनिया से अनभिज्ञ हैं। बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं जो शिक्षा की आवश्यकता और लाभों को स्पष्ट रूप से समझते हैं लेकिन फिर भी या तो अपने बच्चों का शिक्षा में नामांकन नहीं कराते हैं या उनके पास अपने बच्चों की शिक्षा का प्रबंधन करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो शिक्षा की आवश्यकता के प्रति लापरवाह हैं। उनकी स्थिति के लिए काम करने वाले कई कारक स्कूल में शिक्षा के लिए समय नहीं देते हैं। इसका एक कारण आर्थिक पिछड़ापन माना जा सकता है।

बहुत सारे बच्चे ऐसे भी हैं जो अपनी बुनियादी स्कूली शिक्षा पूरी करने से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि भारत काफी तेज गति से विकास कर रहा है और यह सच है कि देश में अभी भी लाखों लोग ऐसे हैं जो अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकार सभी बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए कई पहल कर रही है, लेकिन

प्रमुख सीमा जन- जागरूकता है, जन -जागरूकता के साथ-साथ जागरूकता की कमी के कारण ये पहल भी फलदायी नहीं लगती हैं.

कई आधुनिक स्कूलों के साथ-साथ कॉलेजों ने 'इच वन टीच वन' नामक एक परियोजना शुरू की है जिसके तहत उच्च वर्ग के छात्र उन छात्रों को पढ़ाने में लगे हैं जो या तो आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग से हैं या कुछ विकलांग हैं. साथ ही, कुछ कॉलेज अपने छात्रों को उपस्थिति में छूट और सामाजिक सेवाओं में शामिल लोगों को कुछ अतिरिक्त सुविधाएं दे रहे हैं जैसे कि जरूरतमंदों को पढ़ाना आदि.

कार्य में युवाओं की भूमिका

किसी राष्ट्र की विकास प्रक्रिया में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. युवा वास्तव में कुछ उच्च उपलब्धि स्तरों की ओर एक राष्ट्र का नेतृत्व कर सकते हैं. यदि युवा इन गतिविधियों में रुचि लेते हैं, तो वे वास्तव में कुछ आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं और लोगों में जागरूकता पैदा करने में भी मदद कर सकते हैं. सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं या कुछ गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किए गए सहयोगात्मक प्रयासों के अलावा, हमारे समाज के शिक्षित युवा लोगों को शिक्षा की आवश्यकता के बारे में जागरूकता फैलाने और 'हर एक सिखाना' जैसी सरल घटनाओं का अभ्यास करके गहरी दिलचस्पी लेनी चाहिए और योगदान देना चाहिए. एक छात्र और युवा पेशावर कई तरह से मदद कर सकते हैं. आपको विद्वान होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन फिर भी, आपकी मूल बातें किसी और के लिए वास्तव में उपयोगी ज्ञान साबित हो सकती हैं.

यदि कॉलेजों के छात्रों के विभिन्न समूह चुनौती लेने का निर्णय लेते हैं तो वे शिक्षित होने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता फैला सकते हैं. इसके अलावा वे जरूरतमंद बच्चों के लिए एक समूह में कक्षाएं आयोजित कर सकते हैं या आसपास के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित सप्ताहांत शिविर भी आयोजित कर सकते हैं जो दोस्तों के साथ एक अच्छी मजेदार यात्रा भी साबित हो सकती है. यह उन लोगों के लिए भी वास्तव में प्रेरक साबित हो सकता है जो वास्तव में हमारे देश के शिक्षा स्तर के बारे में चिंतित हैं और समाज को बहुत कुछ प्रदान करने की प्रतिभा से कम हैं, लेकिन पारिवारिक बाधाओं के कारण या अभाव के कारण काम नहीं कर सकते हैं. प्रेरणा और समर्थन का. अन्य समूहों को ऐसा करते हुए देखना भी उनके साथ जुड़ने और इस उद्देश्य में मदद करने के लिए एक प्रेरक शक्ति हो सकती है.

इस प्रत्यक्ष व्यक्तिगत भागीदारी के अलावा, युवा, शिक्षित और उत्साही दिमाग भी हर बच्चे की पहुंच के भीतर शिक्षा बनाने के लिए सरकार द्वारा बनाई गई रणनीतियों में भूमिका निभा सकते हैं. युवा पेशेवर अधिक से अधिक छात्रों और योजनाओं को नामांकित करने के लिए वास्तव में कुछ दिलचस्प और नवीन विचारों या योजनाओं के साथ आ सकते हैं जो समाज के सभी वर्गों को लाभान्वित करेंगे. 'सबके लिए शिक्षा' के लक्ष्य की सफलता तभी संभव है जब हमारे देश के युवा इस उद्देश्य के प्रति समर्पित हों और भारत और उसके प्रत्येक नागरिक के इस 'वास्तविक विकास' की दिशा में बदलाव लाने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें.

प्रत्येक को पढ़ाना एक अवधारणा है जो अपने साथ बहुत अधिक मानसिक संतुष्टि लाती है यदि आप किसी को पढ़ाने में शामिल हैं या भले ही आप जागरूकता फैलाने की अवधारणा को बढ़ावा दे रहे हों. सामाजिक उद्देश्य के लिए काम करने का विचार आपको अत्यधिक संतुष्टि और मन की शांति प्रदान करता है. यह वास्तव में एक नेक कार्य है जो पढ़ाए जा रहे व्यक्ति के पूरे जीवन को बदल सकता है. मानसिक संतुष्टि के अलावा, देश की प्रगति का सीधा संबंध देश के शिक्षा स्तर से भी होता है जो आगे चलकर किसी देश की अपराध दर को भी निर्धारित करता है. अवधारणा से संबंधित कुछ अन्य लाभ हैं:

अपनी नौकरानी, चौकीदार, कचरा संग्रहकर्ता, एक सब्जी विक्रेता और वंचित लोगों को सीखने में मदद करें; पढ़ें और लिखें, और ये लोग आपके जीवन को बेहतर और आसान बनाने में मदद करते हैं.

आप दूसरों को सिखाने या सीखने के इच्छुक लोगों को लाने की पेशकश भी कर सकते हैं. आप कुछ अन्य लोगों को प्रेरित कर सकते हैं जिनके पास ऐसा करने का कौशल है, लेकिन बस उन्हें बढ़ावा देने की आवश्यकता है.

आप शिक्षण के लिए सामग्री या स्थान का भी योगदान कर सकते हैं जो एक महान कारण के प्रति संतुष्टि की भावना भी देता है.

जिस तरह की सेवा वे दे रहे हैं, उससे शिक्षक और सिखाए गए लोगों को अत्यधिक संतुष्टि मिलेगी.

हमारी सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी,
सभी के लिए शिक्षा रखे जारी,
चलो सब मिलकर कोशिश करें,
की हर बच्चा कर पाए परीक्षा की तैयारी!

सशक्त माँ, सशक्त विश्व

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



अत्यंत बुरे अनुभवों में से एक जो एक बच्चा देख सकता है, वह परिवार या समाज के हाथों अपनी माँ का उत्पीड़न है. चाहे वह घरेलू हिंसा, मौखिक दुर्व्यवहार, प्रतिबंध या अपने सपनों का पीछा करने के निषेध के माध्यम से हो, हमारी माताओं को कई तरह से प्रताड़ित किया जाता है.

यह न केवल स्वयं माताओं के जीवन को नष्ट कर देता है बल्कि उनके बच्चों का भी जो कम उम्र में कठोर वास्तविकताओं के साक्षी बन जाते हैं. यह उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को उतना ही प्रभावित करता है जितना कि यह माताओं को प्रभावित करता है. लेकिन इन घावों को भरने के लिए एक वयस्क के रूप में बच्चा जो सबसे अच्छी चीज कर सकता है, वह है खुद को और अपनी माताओं को सशक्त बनाना.

न केवल माताओं को अपनी बेटियों को नारीवादी परवरिश देनी चाहिए बल्कि बेटियों को भी अपनी माँ को नारीवादी बनाना चाहिए और जिस तरह पुरुष अपने आने वाले वक्त में अपनी बेटी को आत्मनिर्भर देखना चाहता है उसी तरह उसे उसकी माँ का भी साथ देना चाहिए प्रोत्साहन बढ़ाना चाहिए

पितृसत्तात्मक परवरिश को दूर करने में उसकी मदद करें, हमारी माताओं द्वारा प्रतिबंधों को सहन करने और आंतरिक बनाने का सबसे बड़ा कारण उनकी पितृसत्तात्मक परवरिश है। आपकी माँ शादी के बाद शिक्षा और नौकरी छोड़ना सही मान सकती है क्योंकि उसके माँ या पिता ने उसे सिखाया है। माँ को पति या ससुराल वालों द्वारा गाली देना सामान्य बात लग सकती है क्योंकि उसने देखा कि यह उसकी माँ के साथ भी होता है, जिसने चुप रहना चुना। आपकी माँ आप पर प्रतिबंध लगा सकती है क्योंकि उसकी माँ ने कहा कि बेटी के सुरक्षित जीवन को सुनिश्चित करने के लिए ये आवश्यक हैं।

लेकिन एक सशक्त बेटा या बेटी होने के नाते अपनी माँ को सिखाएं कि पितृसत्तात्मक समाज द्वारा अपने ऊपर किए जा रहे उत्पीड़न के लिए एक महिला को कभी भी खुद को दोष नहीं देना चाहिए। उसे बताएं कि मानवता के मूल नियम को भंग करने, एक-दूसरे के साथ असमान व्यवहार करने और अपमान करने के लिए उत्पीड़क को दोषी ठहराया जाना चाहिए और दंडित किया जाना चाहिए। उसे लैंगिक समानता के बारे में शिक्षित करें ताकि वह समझ सके कि उसके लिए गरिमा के साथ जीवन जीना क्यों महत्वपूर्ण है!

घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने के लिए उसे समर्थन और प्रोत्साहित करें, दुर्भाग्य से, हम में से कुछ ऐसे परिवारों से हैं जहां घरेलू हिंसा और माता-पिता के बीच मौखिक दुर्व्यवहार एक रोजमर्रा की वास्तविकता है। हम इसके लिए जागते हैं और दिन भर उस दर्द के साथ सत्ता के लिए संघर्ष करते हैं जो हमारे दिल और दिमाग में हिंसा और दुर्व्यवहार का कारण बनता है। लेकिन इन घावों और हमारी माताओं के घावों को ठीक करने का एकमात्र तरीका उनके साथ खड़ा होना और उनका समर्थन करना है। हम सभी जानते हैं कि घरेलू हिंसा एक दंडनीय अपराध है और जागरूक नागरिकों के रूप में, हमें उत्पीड़कों को रोकने और उनके खिलाफ आवाज उठाने से नहीं शर्माना चाहिए, भले ही हम उनसे प्यार करते हों। हमें अपनी माताओं को उनके कानूनी अधिकारों के बारे में प्रोत्साहित करने और शिक्षित करने की आवश्यकता है और जब वे उनका प्रयोग करती हैं तो उनके साथ खड़े होते हैं।

अगर वह तलाक चाहती है तो उसका समर्थन करें, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि आज भी हमारे समाज में तलाक एक टैबू बना हुआ है। महिलाओं को ऐसी दुनिया में जाने के बजाय शादी के भीतर होने वाले सभी अन्याय और समस्याओं को सहन करना सिखाया जाता है जहां अलग-अलग महिलाओं का कोई सम्मान नहीं होता है। ऐसे में अगर आपकी माँ को वैवाहिक जीवन छोड़ने की जरूरत महसूस होती है तो उनकी स्थिति को समझें और उनका साथ दें। आप एकमात्र व्यक्ति हो सकते

हैं जिससे वह सहायता और समर्थन माँग सकती है. इसलिए अपनी माँ के लिए अपने प्यार को सामाजिक पूर्वाग्रहों से प्रभावित न होने दें, जो हमेशा एक असफल विवाह के लिए महिलाओं को दोषी ठहराते हैं.

यह सबसे अच्छा होगा यदि आप वह हैं जो अपनी माँ को गरिमा के साथ एक नया जीवन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं.

जब भी संभव हो उसकी आर्थिक मदद करें, हमारी अधिकांश माताएँ गृहिणी हो सकती हैं जिनके पास वित्तीय शक्ति नहीं है जिसके बिना एक व्यक्ति हमारे समाज में कभी भी सम्मान और समानता अर्जित नहीं कर सकता है. आज भी, हमारी माताओं को एक-एक पैसे के लिए अपने पतियों पर निर्भर रहना पड़ सकता है, जबकि पति अपनी पत्नी को अपने बैंक बैलेंस की आसान पहुँच की अनुमति देने के लिए बहुत गर्व और नियंत्रण में हो सकता है. इसलिए सशक्त और कमाई करने वाले वयस्कों के रूप में, अपनी माताओं की आर्थिक मदद करें और उसे आर्थिक रूप से सशक्त और शिक्षित बनने में भी मदद करें ताकि उसे अपने पति से उधार लिए गए हर पैसे के लिए विनम्र और जवाबदेह न बनना पड़े.

उसे उस शिक्षा, व्यवसाय या नौकरी को फिर से शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करें जिसे उसने छोड़ दिया था, एक बार शादी हो जाने या माँ बनने के बाद माताओं में अपनी शिक्षा या नौकरी छोड़ देना आम बात है. उन्हें अपना समय पति और बच्चों को देना पड़ता था जबकि उनकी शिक्षा या नौकरी को कभी भी महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था. लेकिन सशक्त बेटों और बेटियों के रूप में, अपनी माताओं को फिर से विश्वविद्यालय में दाखिला लेने और उनकी शिक्षा को फिर से शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करें. यह कभी न सोचें कि फिर से शुरू करने में बहुत देर हो चुकी है. समाज ने इस बात के पर्याप्त उदाहरण दिए हैं कि कैसे माताओं ने अपनी पी एच डी पूरी की है या कम उम्र में विभिन्न क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है. हां, इस फैसले को कई विरोधों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन क्या आपकी माँ के सशक्तिकरण और खुशी से ज्यादा कुछ तर्क मायने रखते हैं?

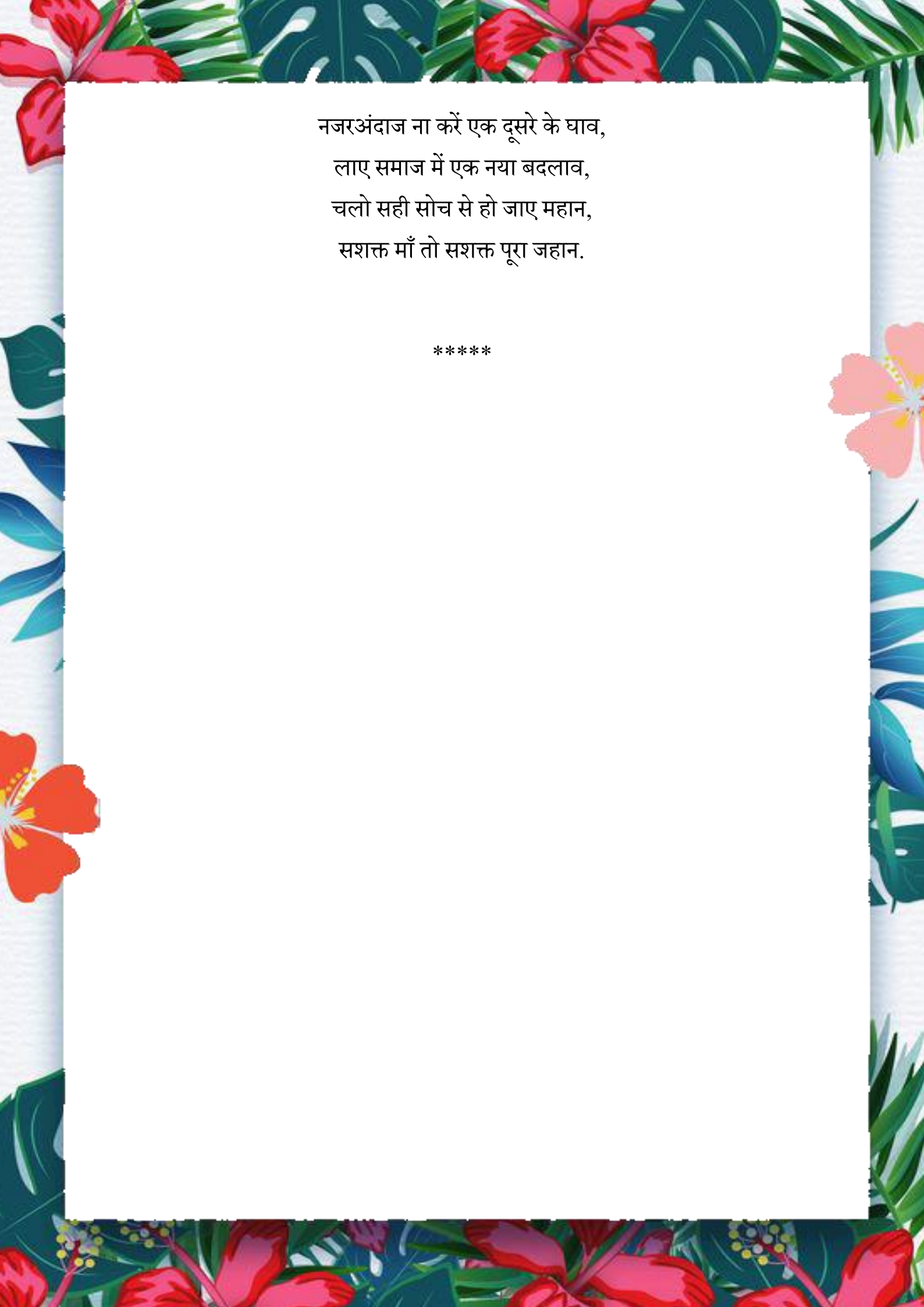
माँ बनना एक कठिन काम है चाहे आप कहीं भी रहती हों. परिवार का पालन-पोषण करने से लेकर व्यवसाय चलाने या खेत चलाने तक, दुनिया भर की माताएँ कई ज़िम्मेदारियाँ निभाती हैं. वे गरीबी के प्रभावों को महसूस करने वाले पहले लोगों में भी हैं. महिलाओं और पुरुषों के बीच गरीबी की खाई विशेष रूप से 25 और 34 की उम्र के बीच स्पष्ट होती है, क्योंकि कई महिलाएं शिशु सुरक्षा के असमान बोझ के साथ भुगतान किए गए काम को संतुलित करने का प्रयास करती हैं. दुनिया भर में, इस आयु वर्ग के हर 100 पुरुष जो गरीब हैं, उनमें 122 महिलाएं हैं.

माँ अपने बच्चों और अपने समुदायों के लिए एक बेहतर भविष्य प्रदान करने की कोशिश करते हुए भारी चुनौतियों का सामना करती हैं. महिलाओं के अधिकारों के सवाल ने हमेशा गहरे विवाद को जन्म दिया है. जबकि कुछ परंपरावादियों का दावा है कि महिलाओं को अपने घरों और बच्चों के रखरखाव पर ध्यान देना चाहिए, अधिक उदारवादी लोगों ने दावा किया है कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार होने चाहिए.

सबसे पहले, यह मानना गलत है कि एक महिला के पास नौकरी नहीं हो सकती है और वह अपने बच्चों को प्रभावी ढंग से नहीं उठा सकती है. ऐसा इसलिए है क्योंकि अंशकालिक और ऑनलाइन काम स्पष्ट रूप से महिलाओं को अपने बच्चों की देखभाल के लिए समय और स्थान देता है. उदाहरण के लिए, ऑर्गनाइजेशन फॉर चाइल्ड केयर ने पाया कि जिन माताओं ने पार्ट टाइम या ऑनलाइन काम किया है, वे अपने बच्चों (स्कूल के घंटों के बाद) के साथ गृहिणियों के रूप में ज्यादा समय बिताती हैं. इसलिए, यह दावा करना असंगत है - जैसा कि परंपरावादी करते हैं - कि करियर होने से एक माँ की अपने बच्चों की देखभाल करने की क्षमता से समझौता होता है.

दूसरे, काम करने वाली माताओं को भी अपने बच्चों की शिक्षा और व्यक्तिगत विकास में अधिक निवेश करने का साधन प्राप्त होता है. ऐसा इसलिए है क्योंकि राजस्व का एक अतिरिक्त स्रोत माता-पिता को अपने बच्चों को निजी स्कूलों और अतिरिक्त-भित्ति कक्षाओं में भेजने में सक्षम बनाता है. उदाहरण के लिए, हार्वर्ड के एक अध्ययन में पाया गया कि यदि माता-पिता दोनों के पास वित्तीय आय के अलग-अलग स्रोत थे, तो माता-पिता के इसमें निवेश करने की संभावना 50% अधिक थी. इसलिए यह स्पष्ट है कि एक कामकाजी माँ होने के नाते, अच्छे पालन-पोषण में बाधा के बजाय सुविधा हो सकती है.

निष्कर्ष रूप में, इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि महिलाएं नौकरी कर सकती हैं और अच्छी माँ बन सकती हैं. इस दृष्टि से देखा जाए तो यह स्पष्ट है कि परम्परावादी दृष्टिकोण काफी हद तक निराधार है! गरीबी के मुद्दों से निपटना महिलाओं और माताओं के सशक्तिकरण से बहुत जुड़ा हुआ है; यह उन्हें स्वास्थ्य और शिक्षा के मुद्दों के लिए पर्याप्त समर्थन प्राप्त कराएगा, साथ ही उनकी आर्थिक स्वायत्तता की उपलब्धि के लिए, और इस प्रकार उन्हें अपने परिवार को विकसित करने में मदद मिलेगी! इसलिए, गरीबी उन्मूलन के लिए किसी भी रणनीति और नीति-निर्माण के केंद्र में माताओं को होना चाहिए. माताओं पर ध्यान केंद्रित करने से गरीबी के अंतर-पीढ़ी के चक्र को तोड़ने की क्षमता है.



नजरअंदाज ना करें एक दूसरे के घाव,
लाए समाज में एक नया बदलाव,
चलो सही सोच से हो जाए महान,
सशक्त माँ तो सशक्त पूरा जहान.

डिजिटल भारत मेक इन इंडिया

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी




रचनात्मक नवाचार से जुड़ा विज्ञान,
आम आदमी के लिए जीवन में सहजता लाता है.
डिजिटल भारत मेक इन इंडिया,
जैसी थीम जनहित में लाता है.

भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के फलक को,
विकसित करने नए आयाम बनाता है.

सतत विकास और नए तकनीकी
नवाचारों के माध्यम के साथ उन्नति दिखाता है.

भारत नवाचारों का उपयोग करके,
ऐसी तकनीकी विकसित करता है.



जनता के लिए सस्ती सुगम सहजता लाए,
ऐसा नवाचार विज्ञान नए भारत में लाता है.

उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है,
उन्नत ग्राम, उन्नत शहर में विज्ञान लाकर
नमामि गंगे का अभियान चलाता है
नवाचार आम आदमी के जीवन में सहजता लाता है.

बूंदें

रचनाकार- अशोक 'आनन'

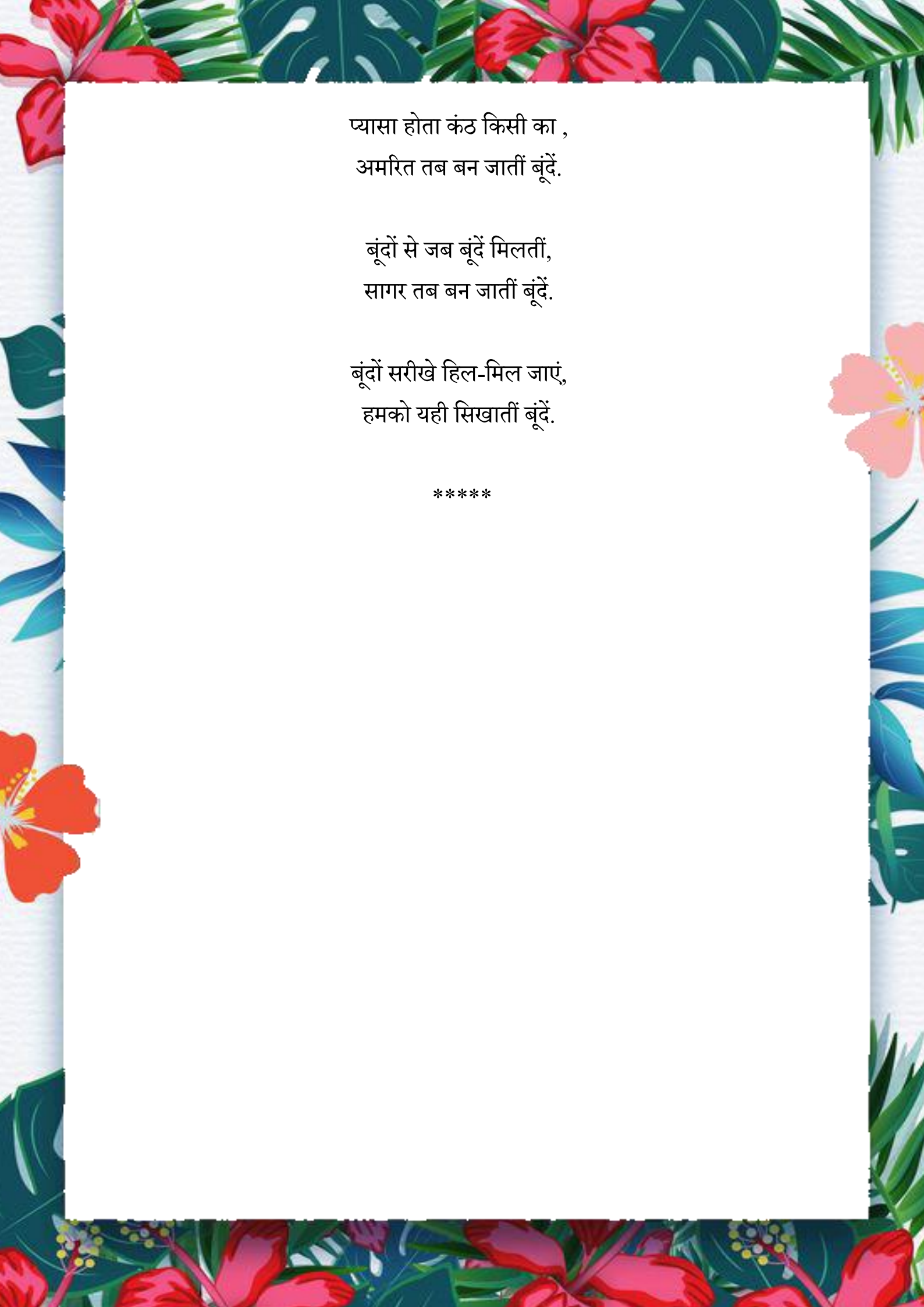


आसमान से आतीं बूंदें,
आकर प्यास बुझातीं बूंदें.

सूरज की जब किरणें पड़तीं,
मोती तब बन जातीं किरणें.

नयनों से जब आंसू बनकर,
बहतीं, तब रुलातीं बूंदें.

स्वाति में ढलकर जब मोती,
बनतीं, तब इठलातीं बूंदें.



प्यासा होता कंठ किसी का ,
अमरित तब बन जातीं बूंदें.

बूंदों से जब बूंदें मिलतीं,
सागर तब बन जातीं बूंदें.

बूंदों सरीखे हिल-मिल जाएं,
हमको यही सिखातीं बूंदें.

नदियाँ

रचनाकार- अशोक 'आनन'




आगे बढ़ती जाए नदियाँ.
वापस फिर न आए नदियाँ.

समझो, इनके भाव गीत के,
गाकर जो सुनाएं नदियाँ.

कैसी भी हो, राह डगर की,
मंज़िल पर सुस्ताएं नदियाँ.

हाथ मिलाने वालों से ये,
हाथ मिलाती जाएं नदियाँ.



राह रोकने वालों को भी ये,
सबक सिखाती जाए नदियाँ.

सीख एकता की सिखाकर,
सागर में मिल जाए नदियाँ.

छात्रों को एक साथ दो डिग्रियों के अवसर

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



मानवीय जीवन में समय के चक्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि परिस्थितियों के अनुसार समय का चक्र बदलते रहता है और मानवीय जीवन को समय-चक्र के पीछे चलकर अपनी जीवनशैली, स्थितियों परिस्थितियों के अनुसार ढलने के लिए मजबूर होना पड़ता है जो वर्तमान पिछले दो वर्षों से हम देख रहे हैं कि समय के चक्र ने कोरोना महामारी के भयंकर प्रकोप की स्थितियों परिस्थितियों के रास्ते से हमें लाकर और फिर आगे बढ़ाकर फिर उसमें से उबार कर लाया है जिसका शिक्षा स्वास्थ्य और वित्तीय क्षेत्र सहित अनेक क्षेत्रों ने भारी नुकसान हुआ है .

आज हम सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक शिक्षा क्षेत्र पर अति महत्वपूर्ण विस्तृत व सुधारात्मक उपायों की सुविधाओं की चर्चा करेंगे क्योंकि कोविड-19 के कारण हुई शिक्षा क्षेत्र की क्षति को छात्रों को एक साथ दो डिग्रियों के अवसर प्रदान कर गैप को भरने की महत्वपूर्ण कोशिश की जा रही है अब अधिसूचना जारी होने के बाद एक छात्र एक ही समय में दो स्नातक, स्नातकोत्तर या डिप्लोमा पाठ्यक्रम एक साथ कर सकते हैं जिसमें कुछ शर्तों बंधनों को जोड़ा गया है.

हालांकि इस व्यवस्था के कुछ विपरीत परिणाम भी हो सकते हैं क्योंकि छात्रों के पास डिग्रियों का जमावड़ा होगा और उससे बेरोजगारी संघर्ष के बढ़ने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता.

साथियों बात अगर हम एक साथ दो डिग्रियों के अवसर की करें तो, क्या पहले किसी ने सोचा था कि कोई छात्र डिप्लोमा, ग्रेजुएशन या पोस्ट ग्रेजुएशन किसी में भी एक साथ दाखिला ले सकता है ? भारतीय छात्रों के पास अब यह स्वतंत्रता है कि वह एक ही समय में डिप्लोमा और ग्रेजुएशन अथवा ग्रेजुएशन एवं पोस्ट ग्रेजुएशन या फिर दो ग्रेजुएशन पाठ्यक्रमों में एक साथ दाखिला ले सकते हैं. उच्च शिक्षा में

यह नए बदलाव यूजीसी द्वारा किए गए हैं. इस नए बदलाव के बाद अब विश्वविद्यालयों को अपने अटेंडेंस सिस्टम में भी व्यापक बदलाव करना होगा. एक साथ दो डिग्री ले रहे छात्रों कि अटेंडेंस कैसे व्यवस्थित की जाए इसके लिए नए नियम स्वयं विश्वविद्यालय बनाएंगे. विश्वविद्यालय को न केवल अटेंडेंस सिस्टम बनाना होगा, बल्कि परीक्षा एवं प्रैक्टिकल जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के लिए भी नया कैलेंडर तैयार करना विश्वविद्यालयों का अधिकार क्षेत्र रहेगा. छात्र चाहे तो दो अलग-अलग विश्वविद्यालयों अथवा कॉलेजों से एक साथ एक समय में दो डिग्री हासिल कर सकते हैं. इसके साथ ही एक ही समय में दोनों डिग्रियां एक ही यूनिवर्सिटी से ली जा सकती है. छात्रों को एक ही समय में दो फुल टाइम डिग्री प्राप्त करने की है यह स्वतंत्रता राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रदान की जा रही है.

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार डुअल डिग्री को लेकर एक गाइडलाइन है. छात्रों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि दो डिग्री एक साथ पूरा करने पर दोनों पाठ्यक्रमों के समय में कोई टकराव न हो अलग-अलग पाठ्यक्रमों की कक्षा के समय में टकराव से बचने के लिए छात्रों को कुछ नियमों का पालन करना पड़ेगा. दोहरी डिग्री के लिए आवेदन कर रहे छात्र चाहे तो एक डिग्री फिजिकल मोड में और दूसरी ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग अथवा ऑनलाइन मोड में कर सकते हैं. यूजीसी के मुताबिक छात्रों के पास इसके अलावा भी विकल्प उपलब्ध हैं. छात्र चाहे तो दोनों डिग्री एक साथ एक समय में ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग से कर सकते हैं. इसी तरह छात्र ऑनलाइन पाठ्यक्रम में भी दो डिग्री एक साथ एक ही समय में कर सकते हैं.

एक बार अधिसूचित होने के बाद छात्र एक ही समय में दो स्नातक, स्नातकोत्तर डिग्री या डिप्लोमा पाठ्यक्रम कर सकते हैं, जब तक कि कक्षाएं आपस में न टकराएं या यदि एक या दोनों को ऑनलाइन पढ़ाया जा रहा हो. यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुसार था, जिसने विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल सहित सभी क्षेत्रों में बहु-विषयक शिक्षा का समर्थन किया. एनईपी 2020 छात्रों को अपनी शिक्षा को निजीकृत और अनुकूलित करने के लिए जितना संभव हो उतना लचीलापन प्रदान करने की सिफारिश करता है ताकि वे सभी विषयों में बहु विषयक और समग्र शिक्षा प्राप्त कर सकें. इसलिए यदि छात्र एक साथ दो डिग्री करना चाहते हैं, तो उनके पास अब एक विकल्प होगा. यह सब छात्रों की पसंद पर निर्भर करता है, कुमार ने कहा.

ड्राफ्ट गाइडलाइंस के मुताबिक छात्र तीन तरह से दो फुल टाइम डिग्री हासिल कर सकते हैं. सबसे पहले, वे दोनों अकादमिक कार्यक्रमों को व्यक्तिगत रूप से आगे बढ़ा सकते हैं बशर्ते कि कक्षा का

समय ओवरलैप न हो. दूसरा, वे एक कार्यक्रम को व्यक्तिगत रूप से और दूसरा ऑनलाइन या दूरस्थ शिक्षा में कर सकते हैं. और तीसरा, वे ऑनलाइन या दूरस्थ शिक्षा के रूप में अधिकतम दो कार्यक्रम कर सकते हैं.

दो विश्वविद्यालय या कॉलेज एक दूसरे के निकट होने चाहिए. अलग-अलग शहरों में स्थित दो विश्वविद्यालयों से व्यक्तिगत रूप से दो कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना संभव नहीं है, अधिकारी ने कुछ शर्तों को स्पष्ट करते हुए कहा, जिसमें इसकी अनुमति दी जाएगी. उन्होंने कहा कि छात्र उसी कॉलेज या विश्वविद्यालय से दूसरा कार्यक्रम कर सकते हैं. यूजीसी ने यह भी आगाह किया कि इस प्रावधान के तहत आयोग या भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त उच्च शिक्षा संस्थानों से ही ऑनलाइन कार्यक्रमों की अनुमति होगी.

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम के दिनांक 7 मई 2022 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन में प्रगति की समीक्षा के लिए एक उच्चस्तरीय बैठक की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्हें बताया गया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार छात्रों को एक साथ दो शैक्षणिक पाठ्यक्रमों को पूरा करने की अनुमति दी गई है. उच्च शिक्षा में बहुविषयकता प्रधानमंत्री को यह भी बताया गया कि लचीलेपन और आजीवन शिक्षण के लिए मल्टीपल एंट्री-एग्जिट के दिशा-निर्देशों के साथ-साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट लॉन्च करने से अब छात्रों को उनकी सुविधा और पसंद के अनुसार अध्ययन करना संभव हो जाएगा.

स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों दोनों द्वारा ऑनलाइन, ओपन और मल्टी-मोडल शिक्षण को अत्यधिक बढ़ावा दिया गया है. इस पहल ने कोविड-19 महामारी के कारण शिक्षण की भरपाई को कम करने में मदद की है और देश के दूरस्थ और दुर्गम हिस्सों तक शिक्षा के विस्तार में बहुत योगदान देगा.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि छात्रों को एक साथ दो डिग्रियों का अवसर!! एक छात्र एक ही समय में दो स्नातक स्नातकोत्तर या डिप्लोमा पाठ्यक्रम कर सकते हैं. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा क्षेत्र को स्वर्णिम बनाने की अनेक योजनाएं हैं. नए भारत के निर्माण में शिक्षा क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होगी.

बादल

रचनाकार- अशोक 'आनन'



बादल नभ में छाना जी.
पानी लेकर आना जी.

प्यासी नदियाँ, ताल, तलैया,
इनकी प्यास बुझाना जी.

पीली पड़ गई खेती सारी,
उनको तुम लहलहाना जी.

मोर म्याऊ - म्याऊं बुलाता,
उसके पंख भिगोना जी.

ककड़ी-भुट्टे खाने मन करता,
उन सबको जल्दी लाना जी.

जल्दी आना लेकिन तुम,
जल्दी घर न जाना जी.

आता पानी

रचनाकार- अशोक 'आनन'



रिमझिम - रिमझिम आता पानी.

ढेरों खुशियां लाता पानी.

फूलों - से खिल जाते चेहरे,

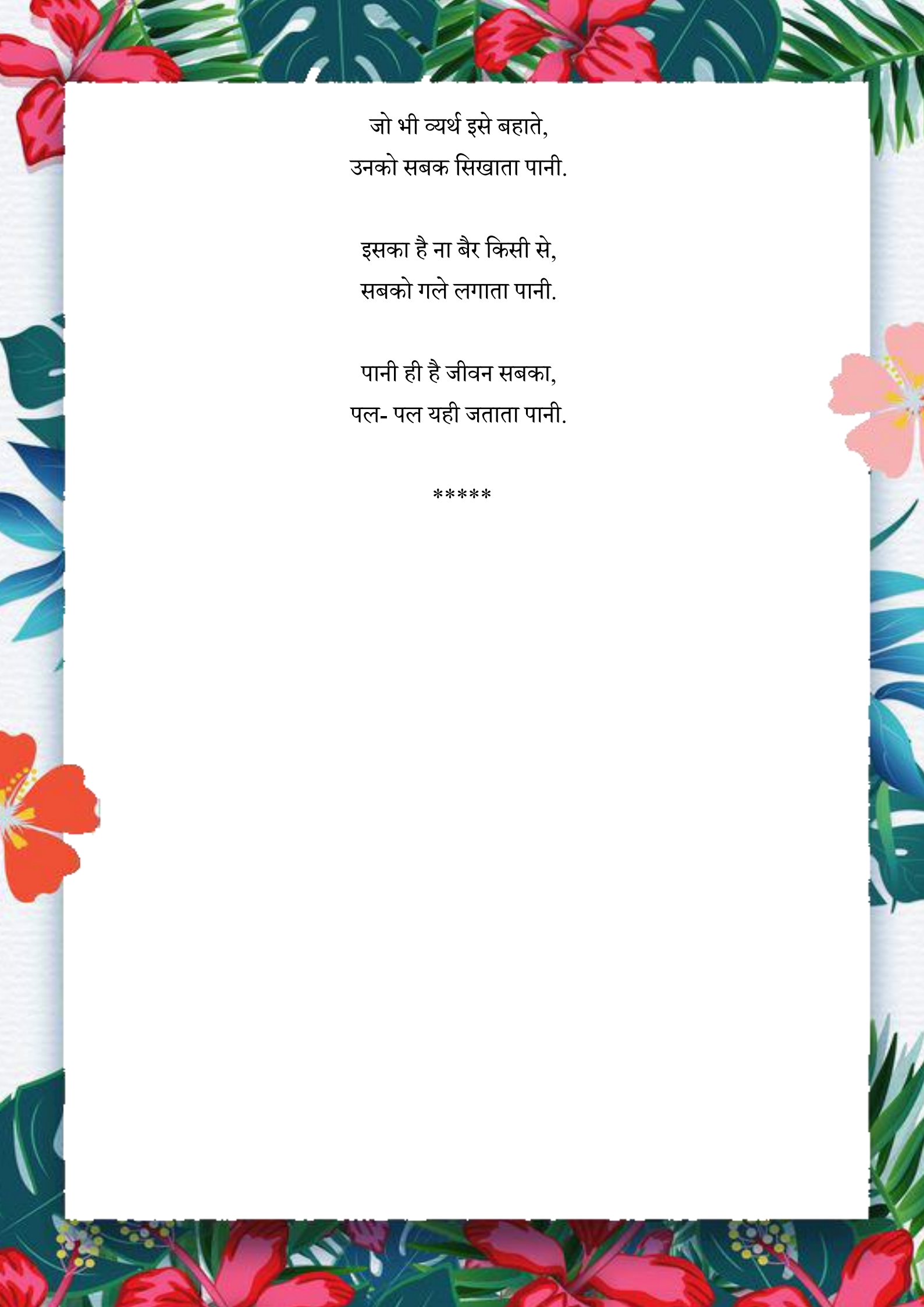
फसलें जब लहराता पानी.

प्यासों की यह प्यास बुझाकर,

जीवन - ज्योत जलाता पानी.

जंगल जो भी हो गए रेत,

उन पर नीर बहाता पानी.



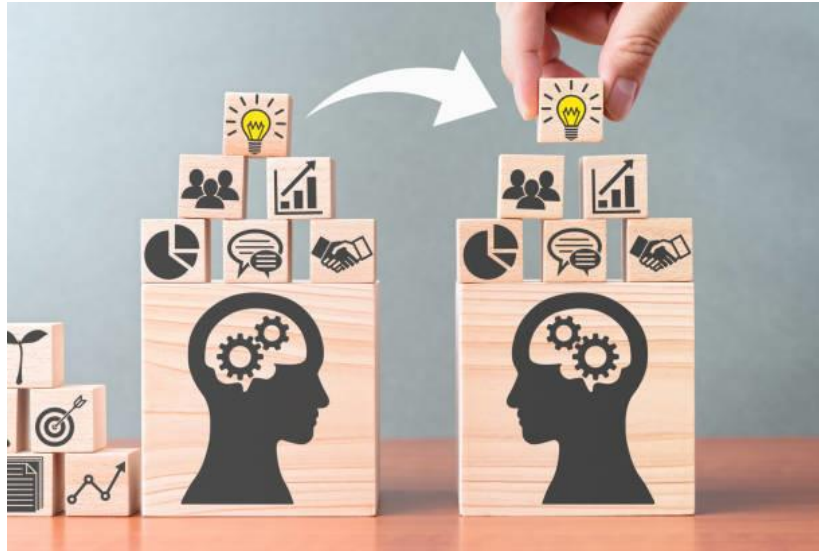
जो भी व्यर्थ इसे बहाते,
उनको सबक सिखाता पानी.

इसका है ना बैर किसी से,
सबको गले लगाता पानी.

पानी ही है जीवन सबका,
पल- पल यही जताता पानी.

ज्ञान को साझा करना

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



दुनिया रूपी इस खूबसूरत सृष्टि में विद्या एक ऐसा धन है, जो खर्च करने से याने साझा करने से बढ़ता ही चला जाता है. जो सभी धनों में सर्वश्रेष्ठ धन है. इसलिए ही बड़े बुजुर्गों ने कहा है, ज्ञान को साझा करें. जैसे एक दीप हजारों दीपों को जलाकर जगमगाहट पैदा कर देता है, उसी तरह ज्ञान को साझा करना भी हमारी परंपरा का हिस्सा रहा है. विद्या श्रद्धेय मां सरस्वती का ऐसा अस्त्र है जो मनुष्य का असली सौंदर्य होता है, जिसके बल पर हम यश, सुख, समृद्धि रूपी धन प्राप्त करते हैं. जो सभी धनों से श्रेष्ठ धन हैं ऐसा वेदों में भी दिया गया है.

साथियों बात अगर हम विद्या की करें, तो यह ज्योत किसी अमीर-गरीब, दिव्यांगों या देशों की सीमाओं तक सीमित नहीं रहती. न ही इसे कोई रोक सकता है. हमने दो दिन पहले ही मीडिया द्वारा सुना कि यूपी में एक सब्जी बेचने वाली लड़की जिसके माता-पिता भी सब्जी बेचते हैं वह एक सिविल जज बन गई. महाराष्ट्र में एक ऑटो चालक की बेटी भी सी ए में टॉपर आई थी. किसी गरीब के तीनों बच्चे आईएएस बन गए तो हमारे छोटे से शहर गोंदिया में भी स्टाम्प वेंडर के यहां काम करने वाले की लड़की सिविल सर्वेंट बनी.

बात अगर हम ज्ञान की करें तो, आज के समय की सबसे बड़ी शक्ति ज्ञान ही है. ज्ञान जितना देखने में छोटा, उतनी ही व्यापकता लिए हुए है. ज्ञान का क्षेत्र बहुत विशाल है. यह जीवन-पर्यंत चलता है. आज

वही देश सबसे कामयाब है जिसके पास ज्ञान की अद्भुत शक्ति है. यह ज्ञान ही है जो मनुष्य को अन्य जीव-जन्तुओं से श्रेष्ठ बनाता है. ज्ञान दिया जा सकता है या रोका जा सकता है, साझा किया जा सकता है या गुप्त रखा जा सकता है, और इनमें से किसी भी मामले में शक्ति के स्रोत के बराबर है. सामाजिक प्राणी के रूप में शक्ति का प्रयोग मनुष्य को स्थानिक लगता है. ज्ञान शक्ति का स्रोत बन जाता है जब इसे दूसरों के साथ साझा किया जाता है.

बात अगर हम ज्ञान के महत्व की करें तो, ज्ञान एक चुम्बक की भांति होता है, जो आस-पास की सूचनाओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है. यदि हमें किसी भी चीज के बारे में बेहतर ज्ञान होता है, तब उस सूचना या तथ्य को आत्मसात करना ज्यादा आसान होता है. ज्ञान सभी के जीवन में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है. ज्ञान ही हमें जीवन जीने का सलीका सिखाता है. ज्ञान अर्जन की यात्रा इस संसार में आने के तुरंत बाद शुरू हो जाती है. नवजात सर्वप्रथम अपनी इंद्रियों से ज्ञान प्राप्त करता है. स्पर्श के माध्यम से उसे पता चल जाता है कि कौन अपना है, कौन पराया.

बात अगर हम सौंदर्य बोध की करें तो, सौंदर्य मतलब सुंदरता और बोध मतलब ज्ञान. यानी सुंदरता की समझ या ज्ञान ही सौंदर्य बोध है. हर किसी में सौंदर्य बोध की भावना होनी चाहिए. सौंदर्यबोध से ही हम किसी की बाह्य या आंतरिक सुंदरता को मापते हैं. बाहरी सुंदरता उम्र के साथ ढल जाती है मगर आंतरिक सुंदरता स्थायी रहती है.

अगर व्यक्ति दुनिया में नहीं रहता तब भी वह अपने आचार-विचार व व्यवहार आदि गुणों यानी आंतरिक सुंदरता के बल पर लोगों के दिल में जिंदा रहता है. इससे साफ पता चलता है कि व्यक्ति के जीवन में आंतरिक सुंदरता का कितना महत्वपूर्ण योगदान है. किसी के आकर्षक चेहरे को देखकर ही सौंदर्यबोध करना चूक है. असली सुंदरता गुणवान होने में है. सौंदर्यबोध सदियों से हमारे विचार-विमर्श का केंद्र रहा है.

बात अगर हम वर्तमान आधुनिक परिप्रेक्ष्य की करें तो आज ज्ञान को साझा करने की थ्योरी एक व्यवसाय के रूप में परिणित होते जा रही है. क्योंकि वर्तमान प्रतिस्पर्धा के युग में हर किसी के पास अपनी-अपनी थ्योरी और जानकारी होती है, जिसके बल पर वह उस प्रोफेशन का मास्टर कहलाता है और उसी के बल पर उसका रुतबा चलता है. तो यदि वह उसकी चाबी है तो फिर वह अपनी चाबी किसी और को क्यों देगा ? बस, यही सोच!! ज्ञान साझा करने का रोड़ा अपनी विशालता की ओर बढ़ता जा रहा है जिसे रेखांकित करने की ज़रूरत है.. बात अगर हम माननीय राष्ट्रपति द्वारा दिनांक 8 मई 2022 को एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने कहा, कि हमेशा हमारी परंपराओं ने विशेष

तौर पर ज्ञान के क्षेत्र में साझा करने पर जोर दिया है. इसलिए, हमने जो ज्ञान अर्जित किया है, उसे साझा करना हमारा कर्तव्य है. उन्होंने कहा कि हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां नवाचार और उद्यमिता को सराहा और प्रोत्साहित किया जाता है. नवाचार और उद्यमिता दोनों में न केवल प्रौद्योगिकी के माध्यम से हमारे जीवन को आसान बनाने की क्षमता है, बल्कि कई लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान कर सकते हैं. उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि आईआईएम, का इको-सिस्टम छात्रों में नौकरी तलाशने वाले के बजाय नौकरी देने वाले बनने की मानसिकता को बढ़ावा देगा. वेदों में ठीक ही कहा गया है कि

विद्याधनम्
न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि.
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्.
विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः.
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या-विहीनः पशुः.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ज्ञान को साझा करना ज़रूरी है. ज्ञान का दीप जला कर, करे अज्ञान का दूर अंधेरा, विद्या रूपी ज्ञान अस्त्र है ऐसा. विद्या मनुष्य का असली सौंदर्यबोध होता है, जो यश, सुख, समृद्धि प्रदान करने का सभी धनों से सर्वश्रेष्ठ धन है. ऐसा वेदों में भी आया है.

वो भी क्या दिन थे

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली



ना कोई काम ना कोई आराम,
ना कोई थकावट खेल में लीन थे.
वो भी क्या दिन थे,

दोस्तों के साथ आम इमली चुराना,
खेत-खलियान मे जाते प्रतिदिन थे.
वो भी क्या दिन थे,

बारिश का समय, घर का टपकना,
घर में ना छत थी और ना ही टिन थे.
वो भी क्या दिन थे,

दोस्तों के साथ खेलने कूदने में मस्त,
पता ही नहीं क्या शाम क्या दिन थे.
वो भी क्या दिन थे,

ना मोबाइल ना था कोई कैरम,
हम तो चल गोटी खेलने में लीन थे.
वो भी क्या दिन थे,

गर्मी में गिल्ली डंडे से खेलना,
पत्ते के बाजे, ना बाँसुरी ना बिन थे.
वो भी क्या दिन थे,

नए स्कूल ड्रेस की तो चाह भी नहीं,
पुराने ड्रेस में भी, न बटन न पिन थे.
वो भी क्या दिन थे,

सुबह शाम की हवा में टहलना,
शाम में प्रकृति के क्या सीन थे.
वो भी क्या दिन थे,

बचपन की वो यादें, याद आती है,
हम अब ऐसे नहीं, यह बात सताती है,
वो भी क्या दिन थे.

जन औषधि बाल मित्र

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



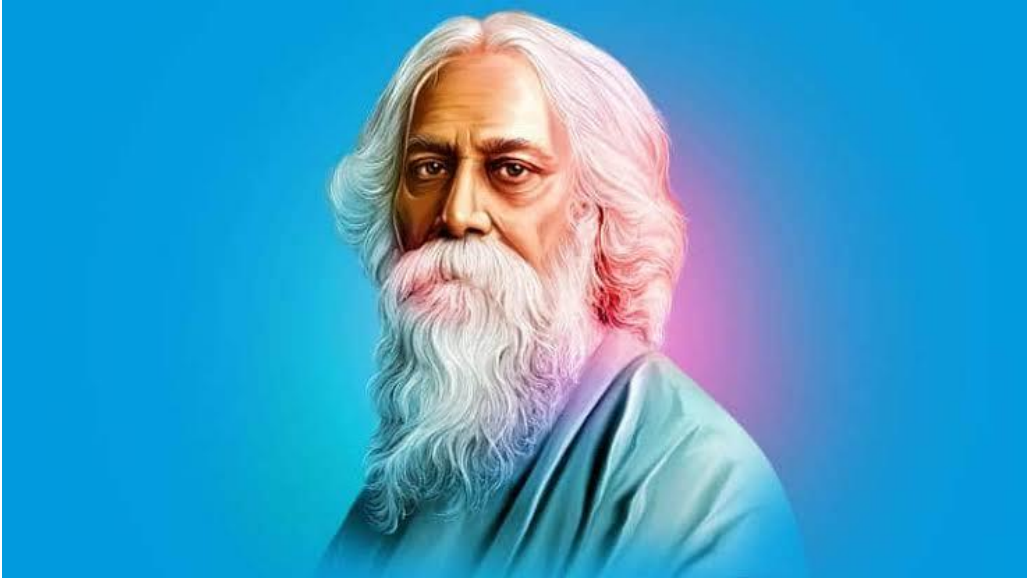
जन औषधि बालमित्र कार्यक्रम
75 स्थानों पर आयोजित किया गया है
उद्देश्य बच्चों को जन औषधि योजना के साथ
बालमित्र के रूप में शामिल किया जाना है

बालमित्र परियोजनाओं के बारे में ज्ञान देना है
बच्चों का जन औषधि दवाओं और ब्रांडेड
दवाओं के बीच मुख्य अंतर बताना है
जन औषधियों का पूर्ण ज्ञान देना है

जन औषधि कार्यक्रम से जोड़ने बाल मित्रों
को माईगो प्लेटफार्म पर लाना है
प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में भाग दिलाना है
जन औषधि का जागरूकता संदेश फैलाना है

रवींद्रनाथ टैगोर

रचनाकार- प्रियंका सौरभ



रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941) एक महान कवि, उपन्यासकार और गीतकार थे जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कई राजनीतिक विचारों का योगदान दिया. रवींद्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की निंदा की, फिर भी उन्होंने गांधी और उनके असहयोग आंदोलन का पूरी तरह से समर्थन या सहमति नहीं दी. उन्होंने ब्रिटिश शासन को जनता की सामाजिक "बीमारी" की समग्र "बीमारी" के लक्षण के रूप में देखा.

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति में टैगोर का योगदान अतुलनीय है; टैगोर ने आमतौर पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद की निंदा की और अपने कुछ लेखों में इसके खिलाफ आवाज उठाई. अपने लेखन में उन्होंने भारतीय राष्ट्रवादियों के समर्थन में भी आवाज उठाई. बंगाल के विभाजन के ब्रिटिश प्रस्ताव से टैगोर नाराज थे और उन्होंने तर्क दिया कि बंगाल के विभाजन के बजाय, बंगाल के स्वयं सहायता आधारित पुनर्गठन की आवश्यकता थी.

रवींद्रनाथ टैगोर ने 1905 में बंगाल विभाजन के बाद बंगाली आबादी को एकजुट करने के लिए बांग्ला माटी बांग्ला जोल (बंगाल की मिट्टी, बंगाल का पानी) गीत लिखा. उन्होंने प्रसिद्ध 'अमर सोनार बांग्ला' भी लिखा, जिसने लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को प्रज्वलित करने में मदद की. उन्होंने राखी उत्सव

की शुरुआत की जहां हिंदू और मुस्लिम समुदायों के लोगों ने एक-दूसरे की कलाई पर रंग-बिरंगे धागे बांधे. 1911 में बंगाल के दो हिस्सों को फिर से मिला दिया गया.

यद्यपि उन्होंने राष्ट्रवाद का समर्थन किया, टैगोर ने गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में स्वदेशी आंदोलन नामक तत्व का समर्थन नहीं किया, जो एक आर्थिक रणनीति थी जिसका उद्देश्य स्वदेशी के सिद्धांतों जैसे कि ब्रिटिश उत्पादों का बहिष्कार और उत्पादन में सुधार करके भारत में अंग्रेजों को सत्ता से हटाना था. उन्होंने कई टुकड़े लिखे और राष्ट्रवाद के बारे में अपने विश्वासों और विशेष रूप से राष्ट्रवाद के उदाहरणों पर व्याख्यान दिए जो उन्होंने अपनी व्यापक यात्राओं और द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी में देखे गए बढ़ते राष्ट्रवाद में देखे.

राष्ट्रवाद की उनकी आलोचना एक स्वस्थ और समग्र विचारक की थी जो अनिवार्यता और एकतरफा प्रवचनों के खिलाफ बहस कर रहा था कि चैंपियन शक्ति और धन लेकिन आत्मा और विवेक नहीं, लालच लेकिन अच्छाई नहीं, रखने लेकिन देने नहीं, आत्म-उन्नति लेकिन आत्म-उन्नति नहीं-बलिदान, बनना लेकिन होना नहीं. राष्ट्रवाद की प्रकृति के बारे में अपनी नकारात्मक राय व्यक्त करने के बावजूद, टैगोर ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रशंसा करते हुए कई गीत लिखे.

जबकि टैगोर को बालगंगाधर तिलक, अरबिंदो घोष और अन्य के नेतृत्व वाले चरमपंथियों के साथ अधिक सहानुभूति थी, वे युवा पीढ़ी के तहत एक वैकल्पिक नेतृत्व की तलाश में थे. हालाँकि, वह आतंकवादी उग्रवाद के साथ सामंजस्य नहीं बिठा सके क्योंकि साम्राज्यवादी शासन की अपनी सभी तीखी आलोचनाओं के बावजूद उन्होंने कभी भी दो चीजों को मंजूरी नहीं दी- रोमांटिक दुस्साहसवाद और असहिष्णुता से पैदा हुई हिंसा.

टैगोर ने अंग्रेजों की हिंसा को भी खारिज कर दिया और 1915 में लॉर्ड हार्डिंग द्वारा उन्हें दी गई नाइटहुड की उपाधि को त्याग दिया, जिसमें अमृतसर में हिंसक नरसंहार के विरोध में अंग्रेजों ने कम से कम 1526 निहत्थे भारतीय नागरिकों को मार डाला था. टैगोर के विश्वासों और कार्यों की आधारशिला यह विचार है कि उपनिवेशवाद विरोधी केवल ब्रिटिश सभी चीजों को खारिज करके हासिल नहीं किया जा सकता है, बल्कि इसमें पश्चिमी संस्कृति के सभी बेहतरीन पहलुओं को भारतीय संस्कृति में शामिल करना चाहिए.

टैगोर द्वारा दिए गए सबसे महत्वपूर्ण विचारों में से एक यह है कि "स्वतंत्रता" का अर्थ केवल अंग्रेजों से राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं है; सच्ची स्वतंत्रता का अर्थ है स्वयं के प्रति सच्चे और ईमानदार होने की

क्षमता अन्यथा स्वायत्तता अपनी सारी कीमत खो देती है. टैगोर अनिवार्य रूप से एक सार्वभौमिक मानवतावादी थे जो मानव एकता के सार में विश्वास करते थे. उन्होंने इस सार्वभौमिकता और भारत के राष्ट्र-हुड और अपने स्वयं के भाग्य की पूर्ति के बीच कोई विरोधाभास नहीं देखा. टैगोर का शांतिनिकेतन उनके सार्वभौमिक सपने का संगम लाने का एक प्रयास था.

भारत की राष्ट्रीयता और ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए टैगोर के दृष्टिकोण का मूल जोर जड़ और शाखा सामाजिक सुधार पर उनका व्यापक जोर था और भारत के समाज को होने वाली घोर असमानताओं को दूर करना था. शांति, सद्भाव और मानव जाति की आध्यात्मिक एकता की टैगोर की वैकल्पिक दृष्टि अब पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक लगती है.

भारत के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर को भारत में हमेशा याद किया जाएगा क्योंकि उनकी काव्य रचना हमारे राष्ट्रगान के रूप में हमारे दिलों और आत्माओं में गूंजती है. एक कवि, दार्शनिक, देशभक्त, और एक सामाजिक विचारक, टैगोर भारत के सबसे महान क्रांतिकारियों में से एक हैं. टैगोर ने महसूस किया कि प्रकृति ज्ञान का खजाना है और इसलिए शिक्षा एक प्राकृतिक सेटिंग में होनी चाहिए. उन्होंने प्रकृतिवाद, मानवतावाद, अंतर्राष्ट्रीयवाद और आदर्शवाद के आदर्शों का समर्थन किया.

गजल

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम



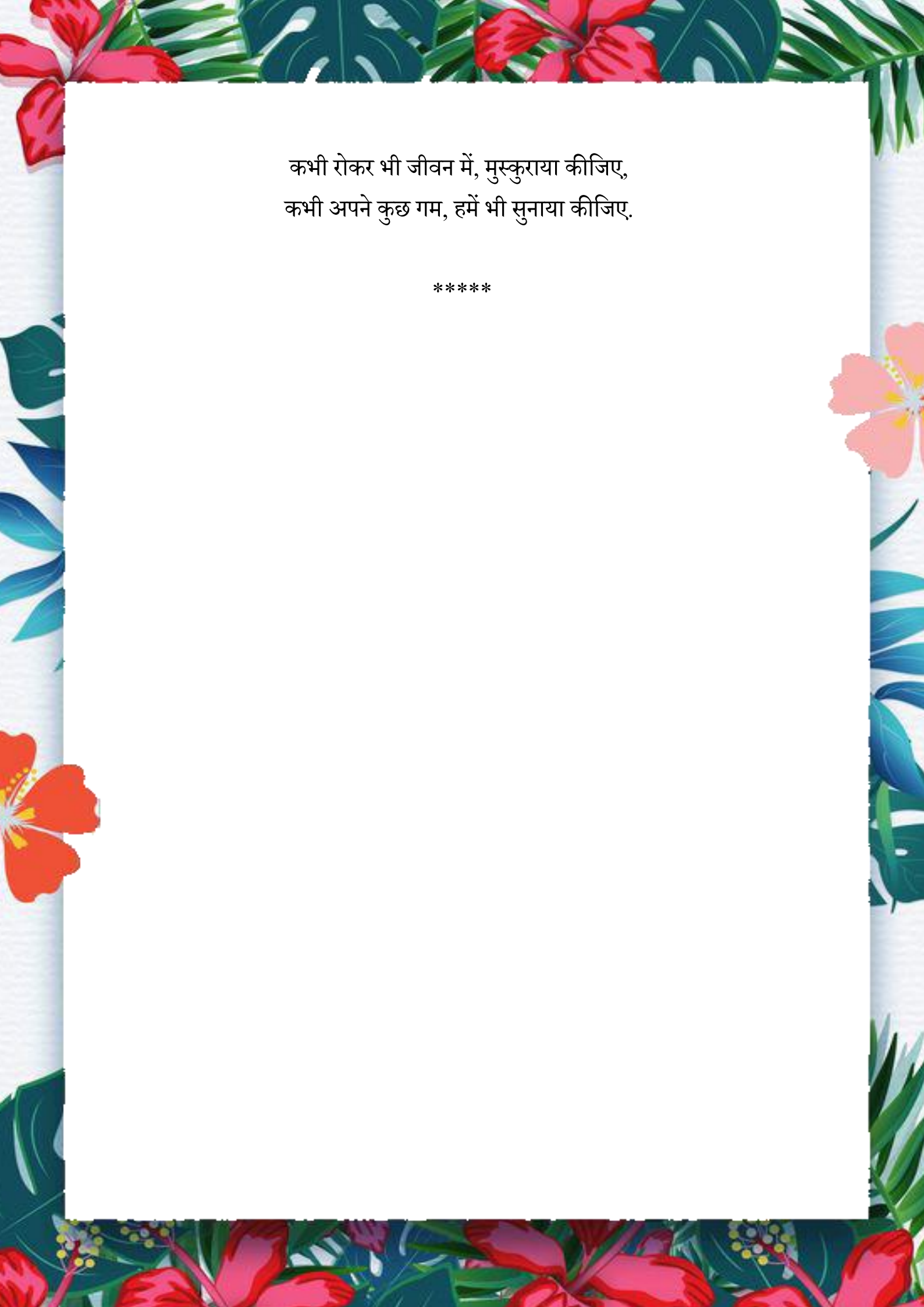
खूबसूरत सी गजल, कोई सुनाया कीजिये,
वक्त है ये कीमती, इसको न जाया कीजिये.

है बड़ी अनमोल अपनी ज़िंदगी, समझो ज़रा,
इसको जैसे भी चाहो, बशर सजाया कीजिये.

लोग बुरे हैं पर आप, जहर न बरसाया कीजिए,
अपनी बात के लिए, यूँ न चिल्लाया कीजिए.

अपनों को छोटी बात पर, न रूलाया कीजिए,
पैसे के लिए रिश्तों का, न मोल लगाया कीजिए.

हजार होंगे चाहने वाले, यूँ न तरसाया कीजिए,
जरा सी बात पर अपनों को, न पराया कीजिए.



कभी रोकर भी जीवन में, मुस्कुराया कीजिए,
कभी अपने कुछ गम, हमें भी सुनाया कीजिए.

अंधविश्वास

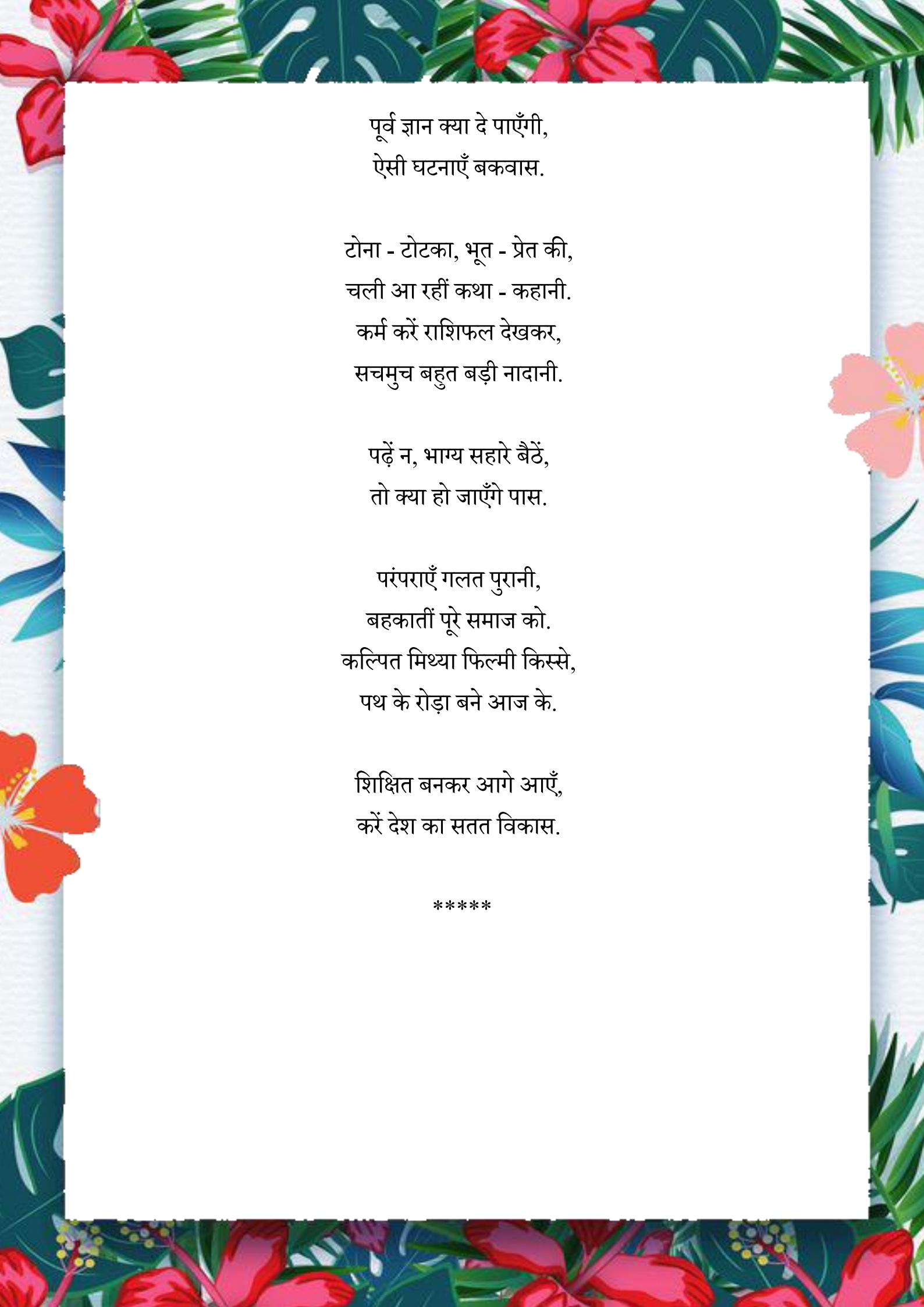
रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



मन से भय-भ्रम सोच निकालें,
तर्कपूर्ण विधियाँ अपनाएँ.
रूढ़िवाद से कर लें टाटा,
ज्ञान, विवेक, सुबुद्धि जगाएँ.

अवैज्ञानिक बात हानिप्रद,
स्वयं करें सच का आभास.

बिल्ली ने रस्ता काटा है,
क्या वह दुर्घटना लाएगी.
छत पर कौआ बोल गया है,
अतिथि सूचना आ जाएगी.



पूर्व ज्ञान क्या दे पाएँगी,
ऐसी घटनाएँ बकवास.

टोना - टोटका, भूत - प्रेत की,
चली आ रहीं कथा - कहानी.
कर्म करें राशिफल देखकर,
सचमुच बहुत बड़ी नादानी.

पढ़ें न, भाग्य सहारे बैठें,
तो क्या हो जाएँगे पास.

परंपराएँ गलत पुरानी,
बहकातीं पूरे समाज को.
कल्पित मिथ्या फिल्मी किस्से,
पथ के रोड़ा बने आज के.

शिक्षित बनकर आगे आएँ,
करें देश का सतत विकास.

पीछे छूटा

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



मुड़ कर ना देखो,
जो पीछे छूट गया,
आगे बढ़कर लिखो,
अपना भविष्य नया.

कुछ छूटने का क्या पछतावा,
सब यहां है अस्थाई,
किस बात का करे दावा,
जीवन में हर चीज पराई.

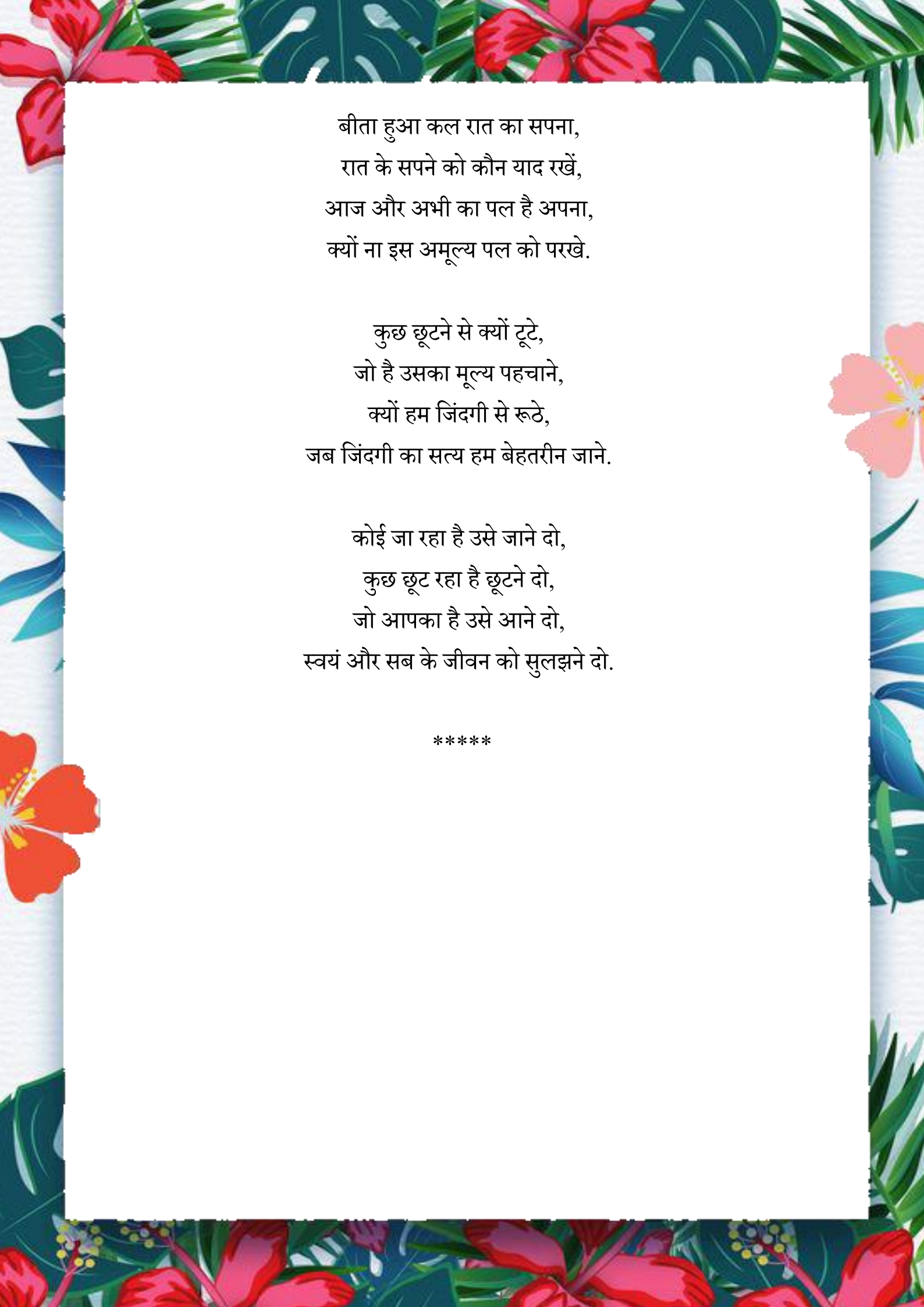
वर्तमान में जीना बेहतर,
जो चला गया वह चला गया,
क्यों पछताए भूत में रहकर,
स्वयं पर करें थोड़ी दया.

तनाव, परेशानी, दुख, दर्द,
जिंदगी के कुछ किस्से है,
वर्षा, बसंत, ग्रीष्म, सर्द,
ऋतु और मौसम के हिस्से हैं.

जब जीना हर हाल में है,
क्यों ना मुस्कुराते हुए जिए,
जब बदलाव हर साल में है,
क्यों ना रोशनी के जलाए दिए.

मजबूती से कदम बढ़ाए,
पीछे छूटा उसे भूलकर,
अपने साहस को हर दिन आजमाएं,
इस जिंदगी के झूले में झूलकर.

बीते हुए को बदल नहीं सकते,
वर्तमान के पलों में जीते जाए,
क्यों दर्द को ध्यान में रखते,
आने वाले भविष्य को उज्ज्वल बनाएं.



बीता हुआ कल रात का सपना,
रात के सपने को कौन याद रखें,
आज और अभी का पल है अपना,
क्यों ना इस अमूल्य पल को परखे.

कुछ छूटने से क्यों टूटे,
जो है उसका मूल्य पहचाने,
क्यों हम जिंदगी से रूठे,
जब जिंदगी का सत्य हम बेहतरीन जाने.

कोई जा रहा है उसे जाने दो,
कुछ छूट रहा है छूटने दो,
जो आपका है उसे आने दो,
स्वयं और सब के जीवन को सुलझने दो.

हेलमेट और पत्नी दोनों सुरक्षा कवच

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



वैश्विक स्तर पर नारी का सम्मान हर देश में किया जाता है. नारी के हक़,अधिकार, समानता का भाव इत्यादि अनेक अवसरों के लिए वैश्विक स्तर पर अनेक दिन मनाए जाते हैं. हमने अभी 8 मार्च 2022 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस बड़े जोरदार ढंग से और शिद्दत के साथ मनाया. साथियों, आधी आबादी के तौर पर महिलाएं हमारे समाज तथा जीवन का एक मजबूत आधार है. महिलाओं के बिना इस दुनिया की कल्पना करना ही असंभव है.कई बार महिलाओं के साथ पेशेवर जिंदगी में भेदभाव होता है. घर-परिवार में भी कई दफा उन्हें समान हक़ और सम्मान नहीं मिल पाता है. फिर वे जूझती हैं. संघर्ष करती हैं. इस दुनिया को खूबसूरत बनाने में उनका ही सर्वाधिक योगदान है.महिला/स्त्री/नारी/औरत शब्द कुछ भी हो, मां/बहन/बेटी/पत्नी रिश्ता कोई सा भी हो वे हर जगह सम्मान की हकदार है. चाहे वह शिक्षक/वकील/डॉक्टर/पत्रकार/सैनिक/सरकारी कर्मी/इंजीनियर जैसे किसी पेशे में हों या फिर गृहिणी ही क्यों न हों, समानता, सम्मान का अधिकार उन्हें भी उतना ही है, जितना की पुरुषों का है.

साथियों आज हम इन अधिकारों में जो नारी का पत्नी के रूप में सराहनीय ज़वाबदारी निभाने से संबंधित है, जो गृहिणी के साथ घर का प्रबंधन, सास-ससुर की माता-पिता के रूप में सेवा, पति के जीवन में हर

मोड़ पर संगिनी का रूप होता है. पत्नी को हर पति और परिवार द्वारा सम्मान दिए जाने को रेखांकित करना जरूरी है.

मीडिया में या हम कई जगहों पर एक व्यंग्य या जोक्स के रूप में पढ़ते हैं कि हेलमेट और पत्नी दोनों का स्वभाव एक जैसा होता है. सिर पर बिठाके रखो तो जान बची रहेगी!! साथियों इसमें भी हम सकारात्मकता और गंभीरता से सोचे तो यह सच है कि जो नारी पत्नी के रूप में इतनी जवाबदारियां निभाती है वह सम्मान की हकदार तो होगी ही!! यहां हम सिर पर बैठा कर रखो से का अर्थ, मान-सम्मान और उसके हक के संबंध में करते हैं, और करें भी क्यों ना? क्योंकि हमने अनेक बार यह कहावत सुनी है कि पुरुष की सफलता के पीछे नारी का ही हाथ होता है. अनेकों बार पति की सफलता के पीछे भी पत्नी का बहुत बड़ा हाथ होता है . कुछ अपवादों को छोड़ दें तो वह हर स्थिति- परिस्थितियों में पति का साथ देती है.

साथियों बात अगर हम पति-पत्नी के दांपत्य जीवन में सोच की करें तो, दांपत्य जीवन में पति-पत्नी की अलग सोच रिश्ते को कमजोर कर सकती हैं. जब पति-पत्नी के विचार एक दूसरे से नहीं मिलते तो लड़ाई या टकराव होना स्वाभाविक है. हर व्यक्ति का स्वभाव अलग-अलग होता है और अगर दो अलग स्वभाव के व्यक्ति एक रिश्ते में बंध जाएं तो ऐसे में समझदारी से काम लेना जरूरी है. लेकिन कभी-कभी गलत फैसले लेने से रिश्ते में गलतफहमी बढ़ती चली जाती है और रिश्ता टूटने लगता है. ऐसे में समय रहते रिश्ते को बचाना जरूरी है. बता दें कि कुछ तरीके रिश्ते में खुशहाली और प्यार दोनों ला सकते हैं. ऐसे अनेक तरीके हैं जो अलग-अलग स्वभाव के व्यक्ति एक दूसरे के साथ ताल-मेल बैठाने के लिए अपना सकते हैं.

साथियों बात अगर हम दांपत्य जीवन में आपस में सामंजस्य बैठाने की करें तो, अगर आपकी अपने पार्टनर के साथ कई मसलों पर सहमति नहीं होती है तो ऐसे में लड़ाई करने के बजाए कोई ऐसा रास्ता निकालें, जिससे आपका और आपके पार्टनर का दोनों की बात का ही मान रह जाए. हर व्यक्ति की अपनी पसंद, अपनी इच्छा होती है. ऐसे में अपने पार्टनर पर उस इच्छा को थोपना गलत बात है. अपने पार्टनर को पर्सनल स्पेस दें. हमेशा दांपत्य जीवन में एक दूसरे को समान समझे और दोनों के फैसले को महत्व दें.

साथियों बात अगर हम दांपत्य जीवन में रिश्ते और परिवार के स्वभाव की करें तो, दांपत्य जीवन में एक दूसरे से प्यार करने के साथ-साथ उसकी इज्जत करना भी बेहद जरूरी है. ऐसे में यदि आपको पता है कि आपके पार्टनर का स्वभाव अलग है या उसके कुछ फैसले आपको पसंद नहीं हैं तो उसका मतलब

यह बिल्कुल नहीं है कि आप अपने पार्टनर के स्वभाव को बदलें. ऐसा करने से आपके पार्टनर को लग सकता है कि आप उससे प्यार नहीं करते और आप को उनके कारण शर्मिंदगी होती है. ऐसे में अपने पार्टनर का स्वभाव बदलने के बजाय आप अपने पार्टनर को अपनी परेशानी के बारे में बताएं और एक दूसरे से बातचीत करें.

साथियों बात अगर हम सिर पर बिठा कर रखो तो जान बची रहेगी की करें, तो इस आर्टिकल का उद्देश्य दांपत्य जीवन में पति पत्नी को हर्ट करना नहीं है. इसका मतलब हमें पत्नी को सम्मान, अधिकार देने से है, न कि पति या पति को हर्ट करने से!! क्योंकि सामान्यतः मीडिया में यह पंक्ति हास्य, व्यंग्य, जोक्स के रूप में ही आती है परंतु हमें इस व्यंग्य और जोक्स को भी सकारात्मकता से रेखांकित करने की जरूरत है क्योंकि एक सुखी दांपत्य जीवन के लिए पत्नी को हक, अधिकार, प्यार और महत्व देना वर्तमान समय की नजाकत को देखते हुए जरूरी भी है क्योंकि मेरा ऐसा मानना है कि इसकी हर पत्नी हकदार भी है. हालांकि इसके साथ पत्नी को भी पूरी शिद्दत के साथ अपनी जवाबदारी, कर्तव्य निभाने की उतनी ही जरूरत है जितना इस पंक्ति को सकारात्मक और गंभीरता से रेखांकित करना जरूरी है .

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि यह आलेख हेलमेट और पत्नी दोनों सुरक्षा का कवच है? हेलमेट और पत्नी दोनों का स्वभाव एक जैसा!! सिर पर बिठा कर रखो तो जान बची रहेगी?!!तो पाएंगे कि नारी त्याग की मूरत है, हर रिश्ते को अपनत्व, कर्तव्य, जवाबदारी से निभाने में परिपूर्ण है.

पर्यावरण की सुरक्षा करो

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

कहीं धुँए का गुब्बार है, कहीं बरस रहा कुहासा,
इंसान तेरे करतूत से प्रकृति हो गई है रूआसा.

अब भी वक़्त बांकी है, तू गलतियों को सुधार ले,
अपने आने वाली पीढ़ियों को संकट से उबार ले.

ऐसा काम कर की पर्यावरण का नुकसान ना हो,
बचा ले कटते वृक्षों को, घर-कानन सुनसान न हो.

आज के स्वार्थ के लिए, ऐ इंसान तू हत्यारा न बन,
प्राणियों से प्रेम कर , इतना कठोर निर्दयी न बन.

वन और वन प्राणियों से ही, प्रकृति का श्रृंगार है,
पर्यावरण संरक्षित रहेगा ,तभी सुरक्षित संसार है.



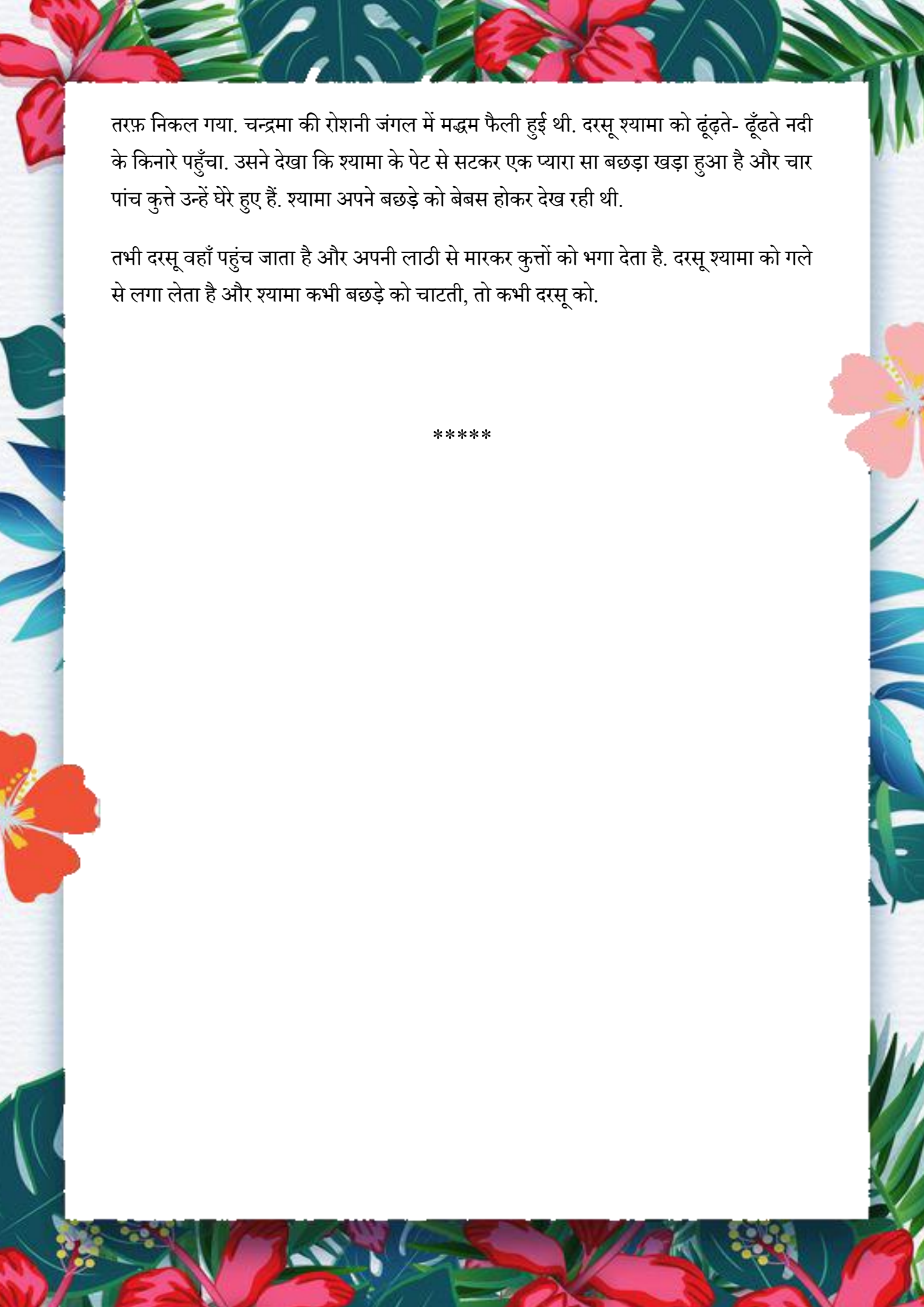
दरसू दूधवाला

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न



बहुत दिनों की बात है. एक गाँव में दरसू नाम का एक दूधवाला रहता था. उसके पास पांच गायें थीं. वह अपने गायों से बहुत प्रेम करता था और उनकी खूब देखभाल किया करता था. रोज सुबह- सुबह पांच बजे उठकर गायों को पैरा- चारा खिलाता. दूध निकालता और पड़ोस के शहर में रोज बेचने जाता था. शहर के लोग उसके दूध को बहुत पसंद करते थे. दरसू का दूध शुद्ध रहता था और वह अन्य दूधवालों से कम कीमत में दूध बेचता था. दूध बेचकर वापस आने के बाद वह गायों को लेकर जंगल चला जाता और शाम को अंधेरा होने से पहले घर लौट आता था। यही उसकी रोज की दिनचर्या थी.

गर्मी का मौसम था, तेज धूप पड़ रही थी. दरसू हर दिन की तरह आज भी जंगल में गाय चरा रहा था. गाय ईधर-उधर बिखरकर चर रहे थे. दरसू एक पेड़ के छांव में अपना पटकू (गमछा) बिछाकर लेट गया. ठंडी छांव में उसकी आंख लग गई. सभी गायें आसपास ही चर रहे थे लेकिन श्यामा नाम की गाय चरते-चरते दूर चली गई और वह रास्ता भटक गई. श्यामा गाभिन (गर्भवती) थी. दरसू की आंखें खुली तो अंधेरा होने लगा था. उसने गायों को आवाज देकर बुलाया. चारों गायें आ गईं लेकिन श्यामा अभी तक नहीं आई. दरसू की आवाज सुनते ही श्यामा ही सबसे पहले दौड़ी चली आती थी. आज उसे क्या हो गया? अंधेरा बढ़ने लगा था। दरसू चारों गायों को लेकर घर आ गया। खाना खाकर वह खाट पर लेट गया। लेकिन दरसू को नींद कहाँ से आती. जैसे-तैसे दो प्रहर बीती और आधी रात को ही वह जंगल के



तरफ़ निकल गया. चन्द्रमा की रोशनी जंगल में मद्धम फैली हुई थी. दरसू श्यामा को ढूँढ़ते- ढूँढ़ते नदी के किनारे पहुँचा. उसने देखा कि श्यामा के पेट से सटकर एक प्यारा सा बछड़ा खड़ा हुआ है और चार पांच कुत्ते उन्हें घेरे हुए हैं. श्यामा अपने बछड़े को बेबस होकर देख रही थी.

तभी दरसू वहाँ पहुंच जाता है और अपनी लाठी से मारकर कुत्तों को भगा देता है. दरसू श्यामा को गले से लगा लेता है और श्यामा कभी बछड़े को चाटती, तो कभी दरसू को.

भारत जल प्रभाव शिखर सम्मेलन

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



नदी संसाधनों का आवंटन क्षेत्रीय स्तर पर,
नियोजन व प्रबंधन विषय पर आधारित छठवां.
भारत जल प्रभाव शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ,
जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन पर संकल्प हुआ.

नदियों एवं उसके संसाधनों के आधुनिक प्रबंधन,
नियोजन व संरक्षण परिचर्चा का आयोजन हुआ.
वैज्ञानिक ज्ञान और दृष्टिकोण का विकास हुआ,
गंगा नदी घाटी प्रबंधन योजना कार्य मजबूत हुआ.

अब जरूरत है परिणामों को लागू करने व्यवहारिक,
दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करने मंथन हुआ।
अनुसंधान एवं ज्ञापन पर समझौता हस्ताक्षर हुआ,
भारत जल प्रभाव शिखर सम्मेलन सफल हुआ.

बढ़ती गरमी

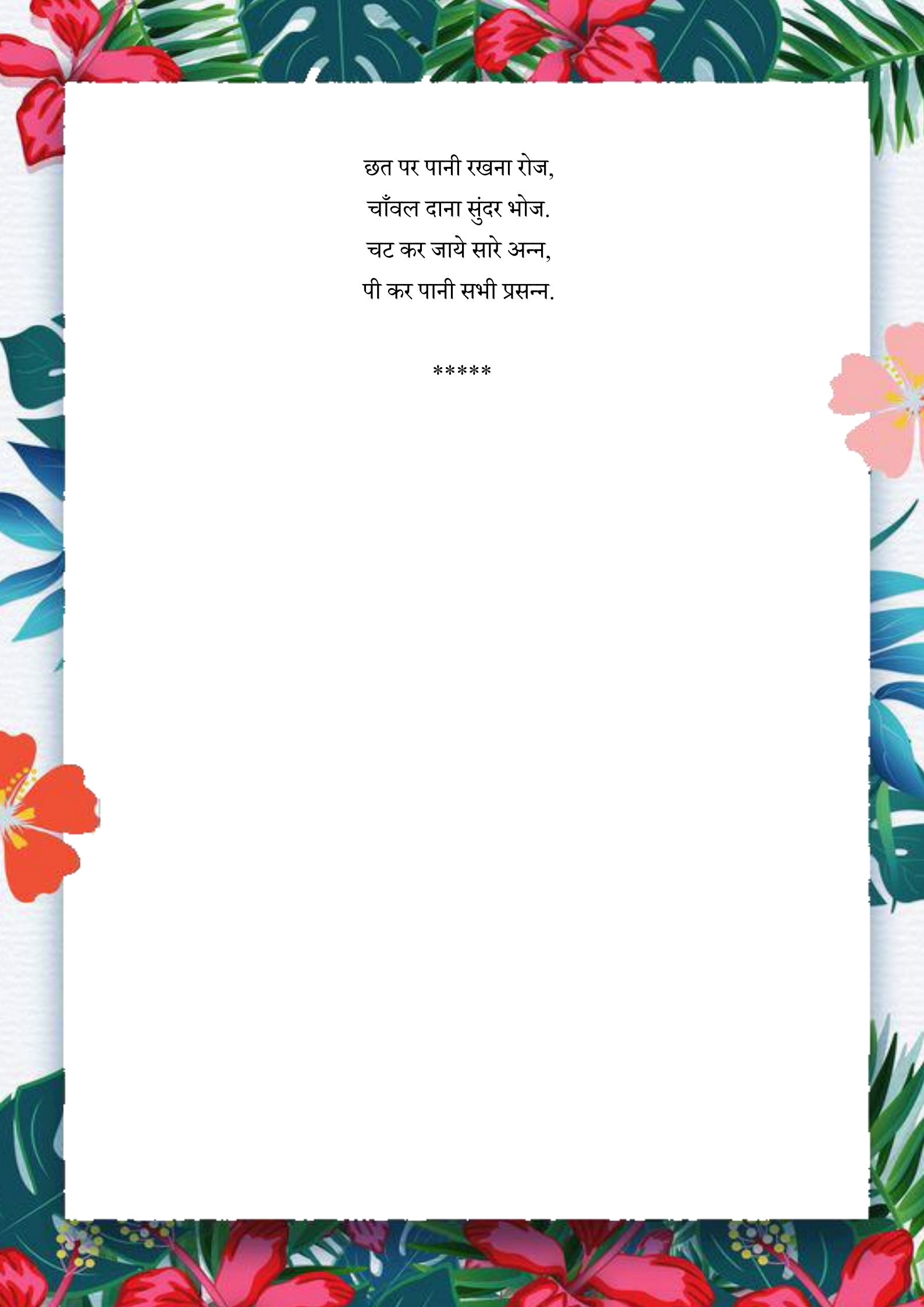
रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



लगती गरमी, बढ़ती धूप,
सूख रहे सब नदियाँ कूप.
पक्षी करते जल की आस,
गला सूखते लगती प्यास.

इधर-उधर सब भटके रोज,
पानी की करते हैं खोज.
छत पर ढूँढे चिड़िया नीर,
नहीं मिले तब होवे पीर.

चिड़िया कैसे प्यास बुझाय.
तड़प-तड़प कर वो मर जाय,
आओ सभी बढ़ाये हाथ,
देंगे मिलकर इनका साथ.



छत पर पानी रखना रोज,
चाँवल दाना सुंदर भोज.
चट कर जाये सारे अन्न,
पी कर पानी सभी प्रसन्न.

इम्यूनिटी बूस्टर

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



कुदरत ने इस खूबसूरत सृष्टि रूपी कायनात में एक खूबसूरत प्राणी मनुष्य की रचना कर 84 लाख जीवों से अलग एक विशेष कलाकृति बुद्धि का सृजन मानव शरीर में समाहित किया ताकि उस के बल पर वह अन्य जीवों से अति उत्तम जीव बन कर रहे! वैसे तो मानव शरीर की संरचना के अंग हर दूसरे प्राणियों में भी होते हैं पर बुद्धि अपेक्षाकृत सर्वश्रेष्ठ होती है! जिसका उपयोग हम सकारात्मकता से अपने-अपने क्षेत्रों और अपने शरीर को स्वस्थ, निरोगी काया बनाने में करने की विचारधारा को रेखांकित करना होगा!

साथियों बात अगर हम अपने शरीर के स्वस्थ एवं निरोगी रखने की करें तो उसके अनेक तरीकों में से एक हंसना और मुस्कुराना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसका उपयोग करने से हमारे स्वास्थ्य पर बहुत अधिक फायदा होता है. यह स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा भी कहा गया है. परंतु वह हंसना-मुस्कुराना असली होना चाहिए! इसीलिए बड़ों की तुलना में बच्चे ज्यादा खुश रहते हैं. लेकिन ये बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम मुस्कुराना भूल जाते हैं. बच्चे हम बड़ों की तुलना में 10 गुना ज्यादा मुस्कुराते हैं. आमतौर पर बच्चे एक दिन में करीब 400 बार मुस्कुराते और हँसते हैं, वहीं हम एडल्ट लोग सिर्फ 40 से 50 बार ही मुस्कुराते हैं.

असली मुस्कान में आंखों के नीचे की मांसपेशियां एक्टिव होती हैं. जबकि झूठी स्माइल हमारे होंठों के आसपास की मांसपेशियों के इस्तेमाल से ही आती है. जब स्माइल असली होती है, हमारे दिमाग में न्यूरोनल सिग्नल्स चेहरे की मसल्स को एक्टिवेट कर देते हैं. असली मुस्कान में हमारा दिमाग हमारे चेहरे को बताता है कि हमें मुस्कुराना है.

साथियों बात अगर हम मुस्कान और हंसी की करें तो, मुस्कान एक चेहरे की अभिव्यक्ति है जो तब होती है जब हम खुश और प्रसन्न होते हैं. लेकिन मुस्कान की शक्ति हमारे विचार से कहीं अधिक मजबूत होती है. यह न केवल हमारे स्वास्थ्य और कल्याण को लाभ पहुंचाता है, बल्कि यह हमारे आस-पास के लोगों पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है. कहावत सच है - मुस्कान वास्तव में संक्रामक होती है . एक मुस्कान बहुत आगे तक जा सकती है और यह हमारे सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव डालती है. हम अधिक मिलनसार, हो जाते हैं और लोग हमारे आस-पास सहज महसूस करते हैं.

मुस्कुराना कोई कठिन कार्य नहीं है, परंतु फिर भी हमको कम ही लोग ऐसे दिखेंगे जो हर वक्त खुश दिखते हैं या मुस्कुराते रहते हैं. ये वो लोग हैं जिनके अंदर खुशी का संचार चौबीस घंटे ही बना रहता है. जिनको तनाव वाली स्थितियां अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाती क्योंकि खुशी उनके व्यक्तित्व का एक अहम हिस्सा बन जाती है, जिसको बदलना इतना आसान नहीं. ऐसे व्यक्तित्व के आस-पास भी हम रहेंगे तो खुशी ही महसूस करते हैं.

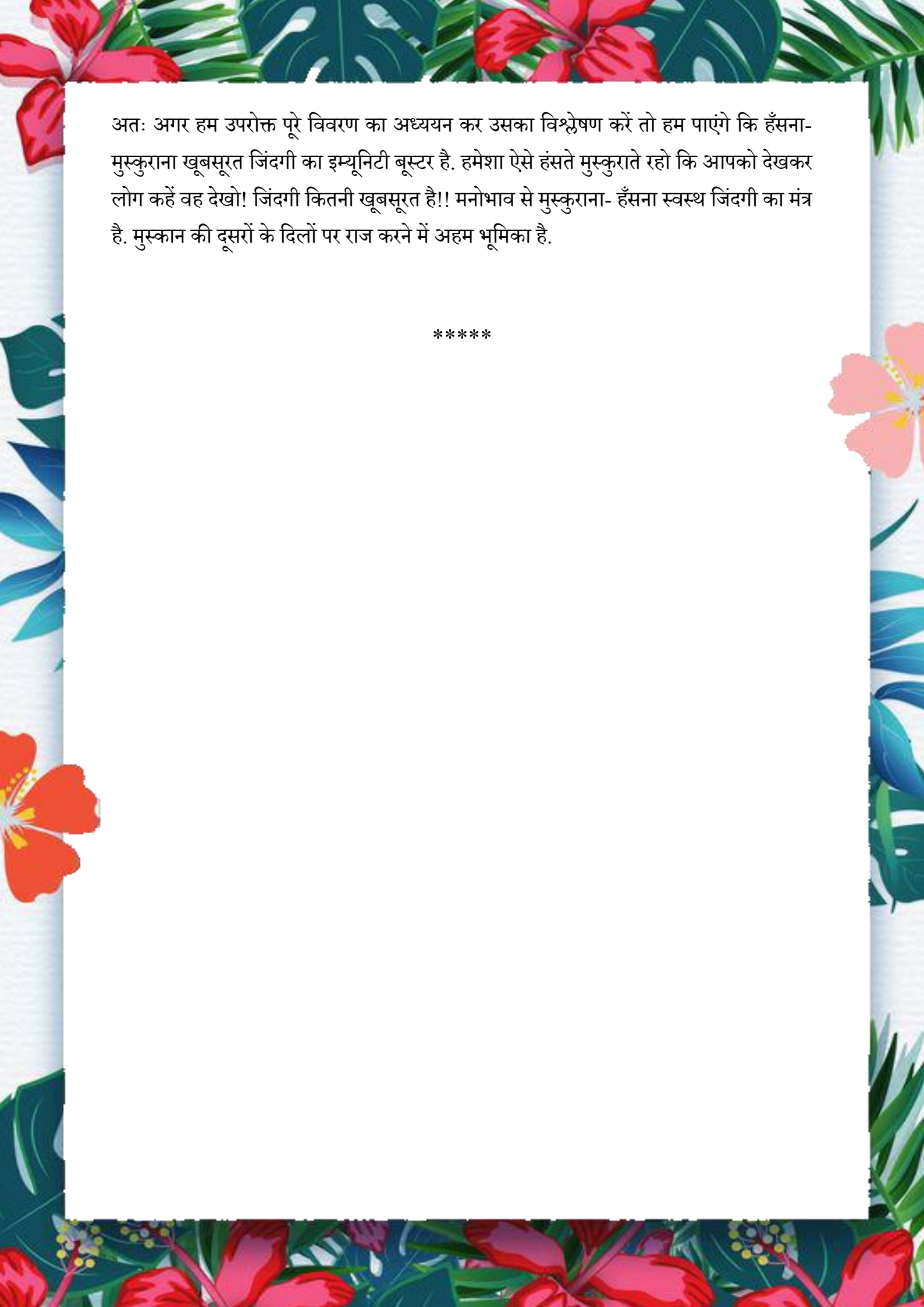
साथियों बात अगर हम मुस्कान को जिंदगी का इम्यूनिटी बूस्टर होने की करें तो, मुस्कुराने से हमारी मांसपेशियों को शांत करने में मदद मिलती है और हमको आराम का एहसास होता है. एक मुस्कान चिंता से बचने में मदद कर सकती है और इसलिए हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार कर सकती है. एक मुस्कान एंडोर्फिन जारी करती है और मानसिक परिश्रम को बढ़ाती है. यह तनाव को कम करता है और हमारे दिमाग को सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर ले जाता है. एक खुश चेहरा उदास और सुस्त चेहरे की तुलना में उज्ज्वल और छोटा दिखता है. अध्ययनों से पता चलता है कि मुस्कुराहट मुंह और होंठों के आसपास की मांसपेशियों को प्रशिक्षित करती है और उन्हें झुर्रीदार होने और झुर्रियों से बचाती है.

साथियों बात अगर हम मुस्कुराने हंसने से होने वाले स्वास्थ्य लाभों की करें तो, तनाव को दूर करने में जो काम हंसी करती है वो कोई दवाई नहीं कर सकती. दरअसल, हंसने से हम लोगों के साथ ज्यादा सोशली एक्टिव हो जाते हैं, जिससे हमारा तनाव खुद ही कम हो जाता है. जब हम हंसते हैं तो हमारे फेफड़ों से हवा तेजी से निकलती है, जिस वजह से हमें गहरी सांस लेने में मदद मिलती है, इससे शरीर

में ऑक्सीजन की सप्लाई बेहतर तरीके से होती है, साथ ही हंसने से हमें एनर्जी भी मिलती है, जो हमारे शरीर से थकावट और सुस्ती को दूर करती है। मुस्कुराने का सरल कार्य हमारे मस्तिष्क को एक संकेत भेजता है कि आप अच्छा महसूस करते हैं, और यदि हम अक्सर मुस्कुराते हैं, तो हमारा मस्तिष्क नकारात्मक विचारों के विपरीत सकारात्मक विचारों का एक पैटर्न तैयार करेगा (4) हँसी उत्पादकता और रचनात्मकता को बढ़ाता है। मुस्कुराने से एंडोर्फिन निकलता है, और इसी तरह जब उन्हें कसरत के दौरान छोड़ा जाता है, तो इस रिलीज के परिणामस्वरूप अधिक कुशल कार्य दर और उत्तेजित मस्तिष्क गतिविधि हो सकती है। शोधकर्ताओं ने पाया कि मुस्कुराते हुए कई कार्यों को करते हुए हृदय गति और रक्तचाप में कमी आई है, यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति अधिक आराम से है। यह तनाव भी कम करता है। अध्ययनों से पता चला है कि जो लोग मुस्कुराते हैं वे तनावपूर्ण स्थितियों से अधिक तेजी से उबरने में सक्षम होते हैं। दिन भर में कई बार एक वास्तविक मुस्कान दिखाना अवास्तविक लग सकता है, लेकिन इसे नकली बनाने से वही परिणाम मिलते हैं। वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि मुस्कुराहट प्रतिरक्षा को मजबूत करती है क्योंकि यह आपके शरीर को तनाव को दूर करने की अनुमति देती है, जिससे कोशिकाएं कठोरता को छोड़ देती हैं और हमको बीमारी से लड़ने में अधिक सक्षम बनाती हैं।

साथियों बात अगर हम स्वयं को खुश रख कर मुस्कुराने की कला की करें तो, जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि हम परिस्थितियों को कैसे देखते और प्रतिक्रिया करते हैं। विषाक्तता से दूर रहने की कोशिश करें और अपने मन में सकारात्मक विचारों को पनपने दें। हम ऐसे लोगों के साथ रहें जो हमको अच्छा करने के लिए प्रेरित करते हैं। जरूरतमंदों की मदद करें। जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को समझने और उनकी सराहना करने के लिए किसी के चेहरे पर मुस्कान लाना जरूरी है। अपनी अजीब हड्डी को जीवित रखें। एक चुटकुला, एक मजेदार पहेली या यहाँ तक कि एक मजाक भी कुछ ही सेकंड में आपके मूड को ऊपर उठाने में मदद कर सकता है। इसलिए दुनिया की अद्भुत खुशियों का आनंद लें, विविधताओं में रहें, इसकी सुंदरता की सराहना करें और जहां भी जाएं, मुस्कान बिखेरना याद रखें।

साथियों हमारी एक छोटी सी मुस्कान दूसरों को खुशी का एहसास करा सकती है और यह खुद के लिए भी काफी फायदेमंद होती है। जिस तरह अच्छी हवा, अच्छा खानपान सेहतमंद रहने के लिए जरूरी होता है, उसी प्रकार हमारी हंसी हमको स्वस्थ रखने में अहम भूमिका निभाती है। अगर हमर सुबह-शाम हंसने की आदत डाल लें तो कोई भी बीमारी, चाहे मानसिक हो या शारीरिक हमारे पास भी नहीं आएगी। हेल्थ एक्स्पर्ट के मुताबिक, रोजाना हंसने से सेहत तो अच्छी रहती ही है साथ ही इससे शरीर में एनर्जी भी बनी रहती है।



अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि हँसना-मुस्कुराना खूबसूरत जिंदगी का इम्यूनिटी बूस्टर है. हमेशा ऐसे हंसते मुस्कुराते रहो कि आपको देखकर लोग कहें वह देखो! जिंदगी कितनी खूबसूरत है!! मनोभाव से मुस्कुराना- हँसना स्वस्थ जिंदगी का मंत्र है. मुस्कान की दूसरों के दिलों पर राज करने में अहम भूमिका है.

रुख राई

रचनाकार- अनिता चंद्राकर



रुख राई झन काटहू, इही धरती के सिंगार.
फर पाना अउ फूल हा, सेहत बर उपहार.

देथे साफ हवा जिये बर, खाय बर अनाज.
रुख लगा के पुण्य कमावव, कर लव ए काज.

समझव मनखे तुमन, बंजर धरती के पीरा.
झन काटव जंगल ला, रुख राई हरे हीरा.

कइसे सहबे घाम ला, जब तन हा थक जाही.
रुख के छँइहा के सुरता, ओतके बेर आही.

दिनों दिन सिरावत हावय, ए भुइयाँ के पानी.
रुख राई ला बचावव, संकट मा हाबे जिनगानी.

बेटी

रचनाकार- अनिता चंद्राकर



बेटी बिना हे जग सुन्ना, बेटी जिनगी के आधार.
बेटी अंजोर भुइयाँ के, बेटी बिना जग अँधियार.

झन मारव कोख मा ओला, देवव जीये के अधिकार.
जिनगी सुग्घर बनावव ओकर, मुस्काही पा के दुलार.

फुलवारी होथे अँगना के, बेटी मन ला देवव मान.
बिना डरय वो बाहिर निकले, अगास मा भरय उड़ान.

दुर्गा काली कस ताकत हे, वोला छेरी पठरु झन जान.
मिलही जब बरोबर अवसर, तभे बनाही अपन पहिचान.

दू कुल ला जोड़ के रखथे बेटी, सुखी रहिथे परिवार.
झन कहव दूसर के धन, ओकर बिन सुन्ना घर दुवार.

सावधान

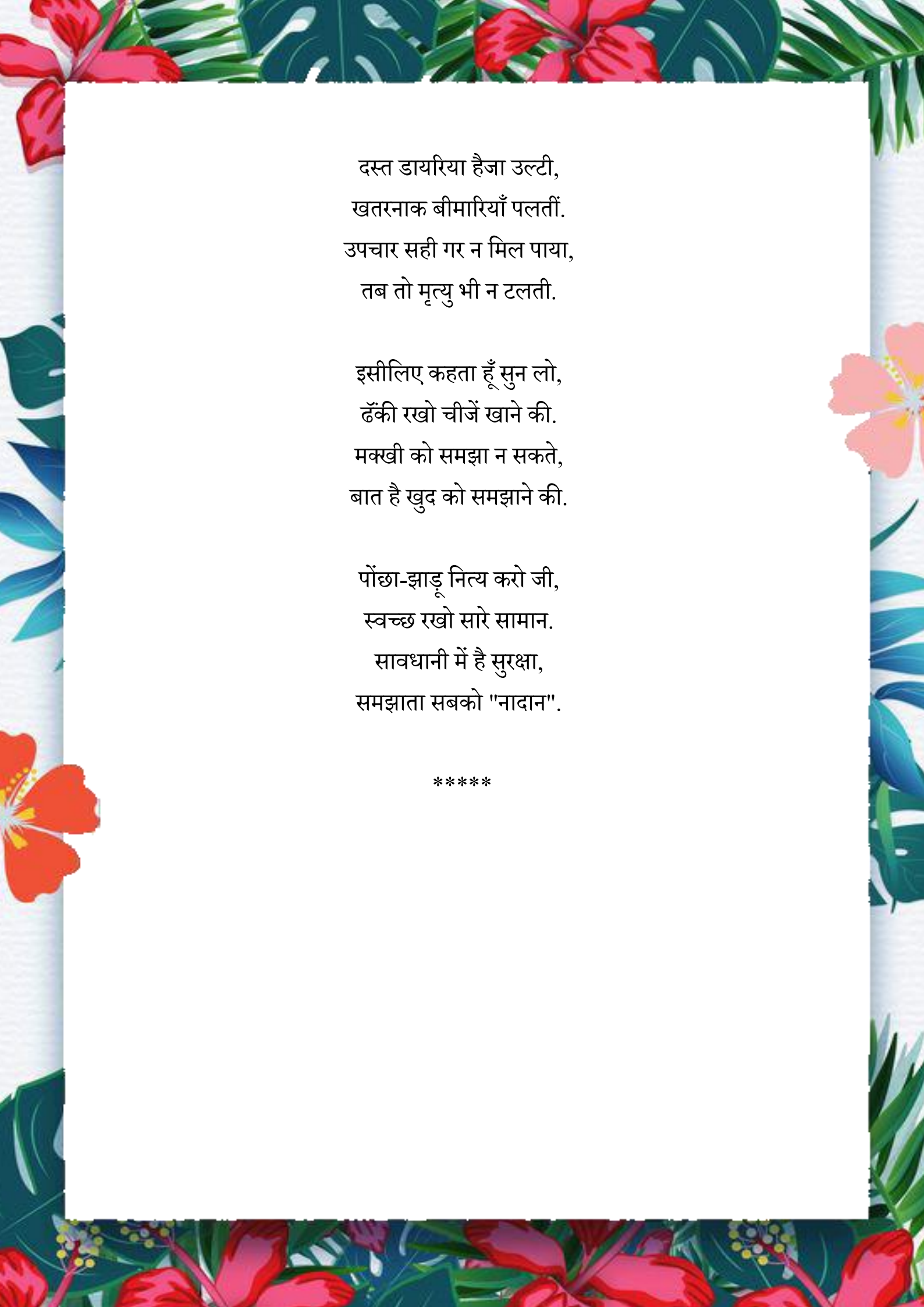
रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"



सावधान रहो दीदी-भाई,
रहो चौकन्ने बापू-माई.
प्यारी सी दिखने वाली मक्खी,
रोग सभी फैलाने आई.

दूषित जगहों पर वो बैठे,
पैरों में गंदा चिपकाए.
खाने की चीजों पर आकर,
वही गंदगी यहाँ मिलाए.

दोनों पैर रगड़ती है जब,
गंदे कीटाणु हैं झड़ते.
भोजन को गर नहीं ढँके तो,
ये सारे उसमें हैं पड़ते.



दस्त डायरिया हैजा उल्टी,
खतरनाक बीमारियाँ पलतीं.
उपचार सही गर न मिल पाया,
तब तो मृत्यु भी न टलती.

इसीलिए कहता हूँ सुन लो,
ढँकी रखो चीजें खाने की.
मक्खी को समझा न सकते,
बात है खुद को समझाने की.

पोंछा-झाड़ू नित्य करो जी,
स्वच्छ रखो सारे सामान.
सावधानी में है सुरक्षा,
समझाता सबको "नादान".

मेरा प्यारा स्कूल

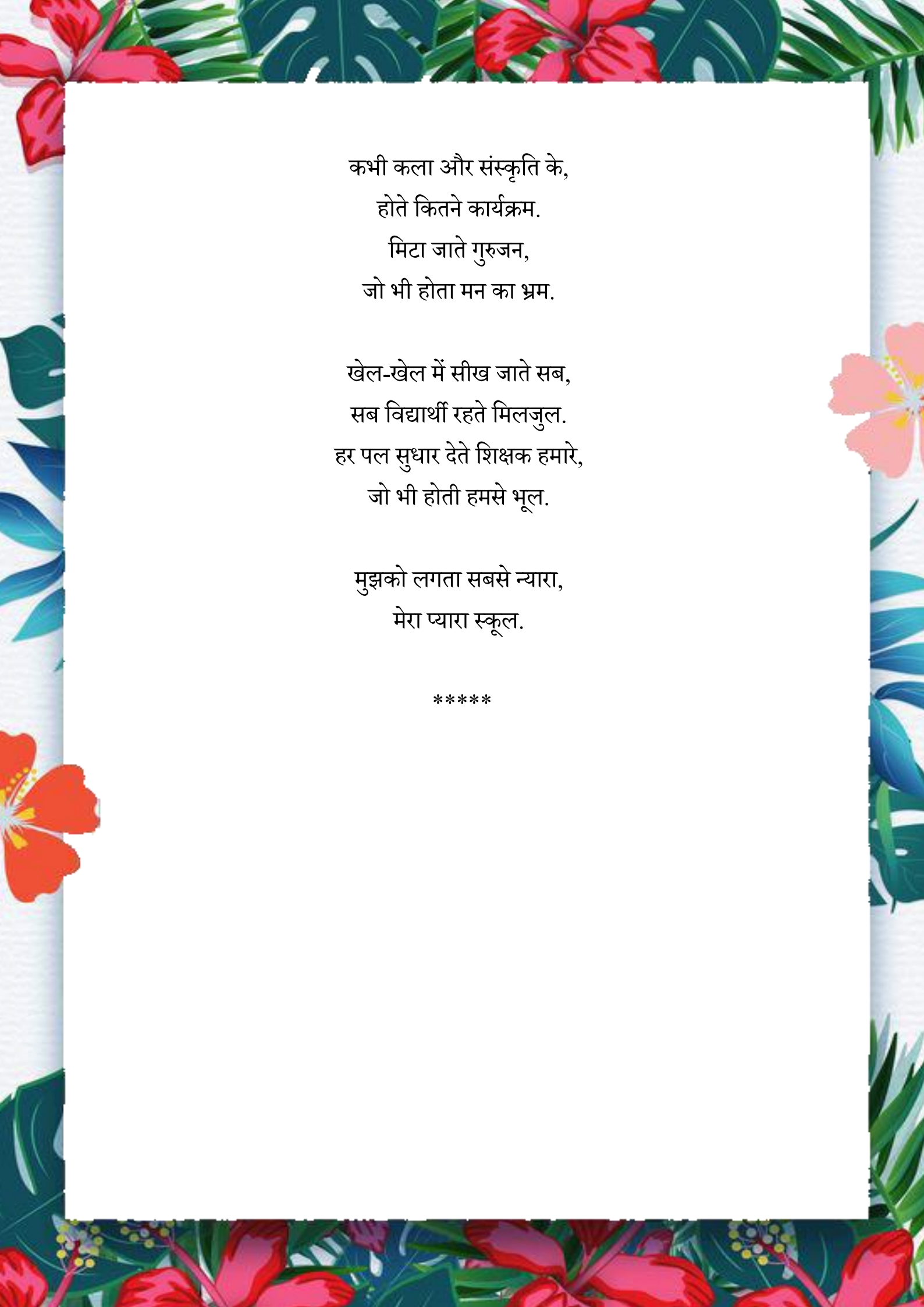
रचनाकार- कु. अनुष्का प्रधान, कक्षा 7वीं, SAGES सरायपाली



जबसे आई हूँ पढ़ने मैं,
खिल उठा मेरा मन,
जैसे बाग में खिलते फूल.
मुझको लगता सबसे न्यारा
मेरा प्यारा स्कूल.

वंदे मातरम्, जन-गण-मन,
और अरपा-पैरी के धार.
रघुपति राघव गाकर
पाते सब मूल संस्कार.

हिंदी, गणित, संस्कृत,
और सामाजिक विज्ञान.
अंग्रेजी माध्यम में पढ़ते-पढ़ाते,
कितने ज्ञान और विज्ञान.



कभी कला और संस्कृति के,
होते कितने कार्यक्रम.
मिटा जाते गुरुजन,
जो भी होता मन का भ्रम.

खेल-खेल में सीख जाते सब,
सब विद्यार्थी रहते मिलजुल.
हर पल सुधार देते शिक्षक हमारे,
जो भी होती हमसे भूल.

मुझको लगता सबसे न्यारा,
मेरा प्यारा स्कूल.

जो पास है वही खास है

रचनाकार- पिकी सिंघल



यह सत्य है कि जीवन में हर व्यक्ति की कुछ इच्छाएं, आकांक्षाएं, अभिलाषाएं और चाहतें होती हैं और ऐसा होना गलत भी नहीं है. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहते हुए इन सब चाहतों का, आकांक्षाओं का होना स्वाभाविक ही है. जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए भी इनकी मौजूदगी अति आवश्यक हो जाती है क्योंकि यदि इंसान के मन से इच्छाओं का ही अंत हो जाए तो उसका जीवन नीरस हो जाता है. आगे बढ़ने की उसकी सभी इच्छाएं वही खत्म हो जाती हैं. हमारी इच्छाएं, आकांक्षाएं हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करती हैं.

अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए हम मेहनत करते हैं, संघर्ष करते हैं और मनचाहा परिणाम प्राप्त करने के लिए जी तोड़ कोशिश करते हैं. परंतु यदि यही इच्छाएं, आकांक्षाएं, अभिलाषाएं महत्वकांक्षा का रूप ले लेती हैं तो एक सीमा के पश्चात यह हमारे लिए दुख का कारण बन सकती हैं. जैसा कि मैंने

ऊपर भी कहा कि इच्छाएं और आकांक्षाएं रखना कतई गलत नहीं है परंतु यदि यह महत्वकांक्षा बन जाती है और हमारे ऊपर हावी होने लगती है. तो उन्हें उसी वक्त रोकने की भी उतनी ही आवश्यकता हो जाती है, जितनी की इच्छाओं को तमाम उम्र अपने जीवन में बनाए रखने की.

अक्सर देखा जाता है कि हमारे पास जो चीजें उपलब्ध होती हैं हमें उन में संतोष नहीं होता है. एक सीमा तक तो यह बात सही प्रतीत होती है कि हमें हमेशा ऊंचाइयों की ओर देखना चाहिए,आगे ही आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए जीवन में तरक्की और,प्रगति हासिल करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए,किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानना चाहिए, अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हमें यथासंभव प्रयत्न करना चाहिए और जब तक अपना लक्ष्य प्राप्त ना कर लें हमें रुकना नहीं चाहिए. परंतु प्रत्येक वस्तु और बात की एक सीमा भी तय होती है और हमें उस सीमा का हमेशा ध्यान रखना चाहिए. यदि कभी हमारी महत्वकांक्षा इस कदर बढ़ जाती है कि वह हम पर हावी होने लगती हैं तो हमारे जीवन से खुशियों और सुखों का हास होने लगता है, हमारी बेचैनियां बढ़ने लगती हैं और हम हमेशा व्यथित रहना प्रारंभ कर देते हैं. मन में उपापोह की स्थिति सी बनी रहती है.

दूसरे के महलों को देखकर अपनी झोपड़ी में आग लगा देना कहां की समझदारी है.हमें अपने सीमित संसाधनों के भीतर रहकर ही अपने जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए.दूसरों के पास रखी चीजों की चमक दमक को देखकर हमें खुश अवश्य होना चाहिए परंतु वैसा ही सब कुछ हमें भी मिल जाए इस चीज के लिए उन्मादी होना भी सही नहीं है. दूसरों की होड़ करना गलत नहीं है,परंतु उस होड़ को प्रतिस्पर्धा ना समझ कर जुनून समझ लेना समझदारी नहीं कही जा सकती.इस प्रकार का उन्माद हमें हम से ही दूर कर देता है और हम अपने साथ-साथ अपनों से भी दूर होने लगते हैं.

बात यदि रिश्तों की की जाए तो यदि हम अपने किसी रिश्ते के प्रति कुछ कमी महसूस करते हैं अर्थात यदि हम अपने संबंधों से संतुष्ट नहीं होते हैं तो हमें उसकी जड़ में विद्यमान समस्या का निराकरण और समाधान ढूंढना चाहिए ना कि उस संबंध को तोड़कर किसी अन्य संबंध से खुद को जोड़ लेना चाहिए. रिश्ते हमारे जीवन की बुनियाद होते हैं.रिश्तो की डोर इतनी कच्ची नहीं होनी चाहिए कि आप जब चाहे उन्हें तोड़ सकें क्योंकि रिश्ते टूटने से केवल रिश्ते ही नहीं टूटते, अपितु हमसे हमारे अपने भी छूट जाते हैं और अपनों के बिना जिंदगी क्या होती है यह केवल वही इंसान समझ सकता है,जिसने जीवन में कभी अपनों को खोया हो.

आप लोगों ने अक्सर सुना-पढ़ा होगा कि जो पास है वही खास है. यह बात शत प्रतिशत सत्य है क्योंकि जो आपके पास होता है वही अक्सर अपना होता है.दूसरे लोग हमारे मित्र, हमारे संबंधी, हमारे रिश्तेदार

हो सकते हैं परंतु हर रिश्ते की अपनी एक गरिमा, एक सीमा होती है. रिश्ते में असमंजस लेकर चलना सही नहीं. हर रिश्ते में शीशे सी पारदर्शिता और स्पष्टता का होना बहुत ही आवश्यक है. अक्सर हमारे पास जो रिश्ते, जो संबंध होते हैं वही हमारे जीवन में कारगर सिद्ध होते हैं.

रिश्तों में तनाव तो आते-जाते रहते ही हैं, परंतु उन तनावों के चलते रिश्तों को ही खत्म कर देना किसी भी सूरत में सही नहीं माना जा सकता. जो हमारे पास है उसे भूल कर जो हमारे पास नहीं है उसके पीछे दौड़ना मूर्खता ही कही जा सकती है. माना कि, खूबसूरती और अच्छाई हमें आकर्षित करती है परंतु आकर्षण और खिंचाव कभी भी स्थाई नहीं हो सकते. इसलिए रिश्तों को बेवजह गलतफहमियों का शिकार न होने दें, उनको असमय तिलांजलि ना दें, उन्हें संभाले और उनकी खूबसूरती को बढ़ाने के लिए अपना शत प्रतिशत दें. ऐसा कर के आपको आत्म संतुष्ट तो मिलेगी ही साथ ही साथ हमारी रिश्तों के प्रति समझदारी भी पहले से कहीं अधिक विकसित होगी.

आओ पेड़ लगाएं

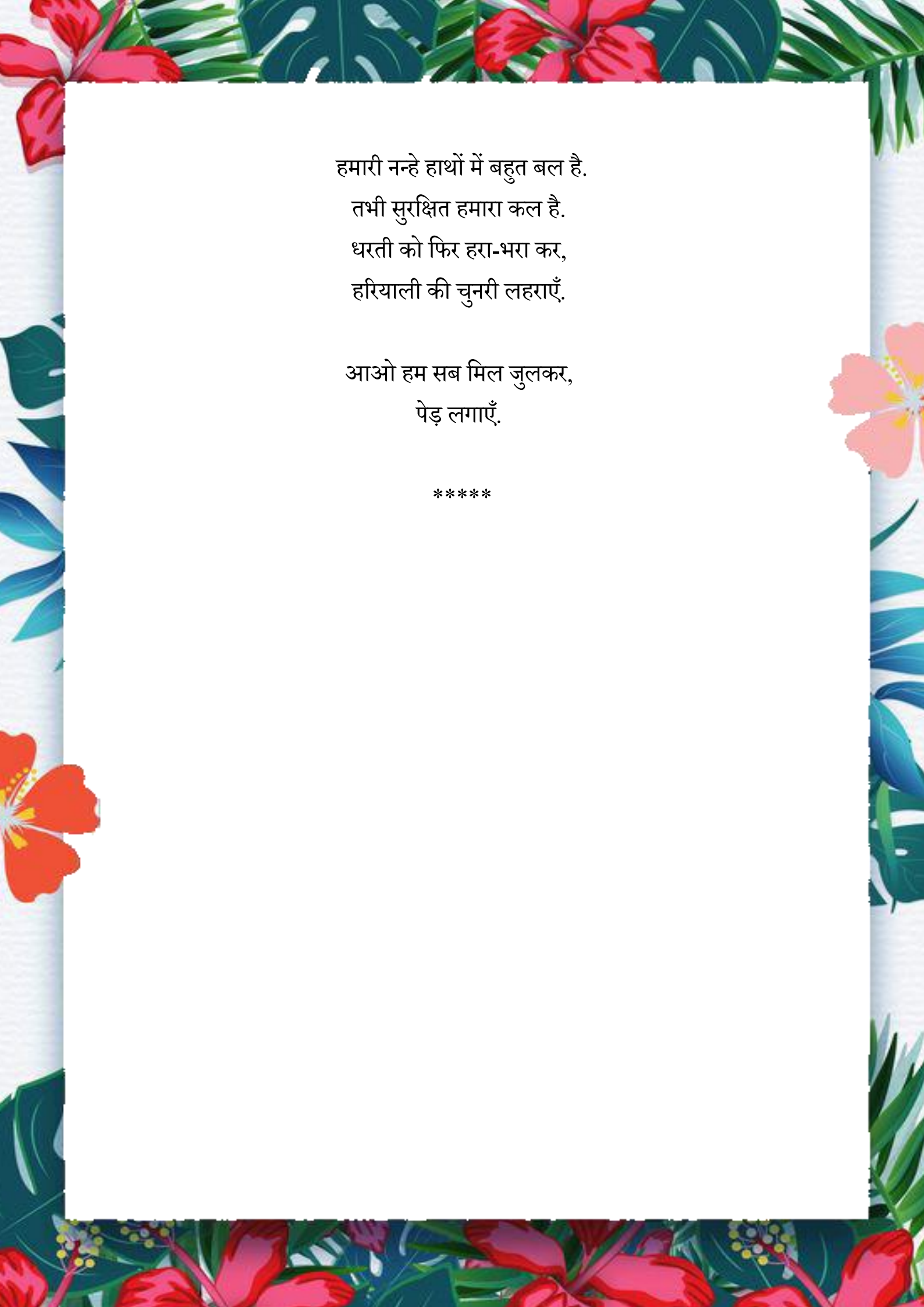
रचनाकार- कु. अन्वेषा प्रधान, कक्षा चौथी, SAGES सरायपाली



आओ हम सब मिल जुलकर
हमारी प्यारी धरती को बचाएँ.
बहुत दे दिया कष्ट इसको,
थोड़ा सा कष्ट हम भी उठाएँ.

रो रही धरती हमारी,
थोड़ा सा आँसू हम बहाएँ.
कट-कटकर पेड़ जंगल,
बन रहे केवल चट्टान.

पशु, पक्षी, लता, पुष्प, नहीं रहे,
नहीं बचा खुला आसमान.
आओ प्रदूषण राक्षस को
मार गिराएँ.



हमारी नन्हे हाथों में बहुत बल है.
तभी सुरक्षित हमारा कल है.
धरती को फिर हरा-भरा कर,
हरियाली की चुनरी लहराएँ.

आओ हम सब मिल जुलकर,
पेड़ लगाएँ.

आभार आपका

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर"




नमस्कार वंदन अभिनंदन आभार आपका.
पल भर ही सही मिला मुझे दुलार आपका.

आपके प्यार दुलार स्नेह से ही अभिभूत हूँ मैं.
अंतर्मन पुलकित बन गया कर्जदार आपका.

कुछ दोस्तों से शुरू हुआ यह सफर हमारा.
कारवाँ बनता गया, प्रणाम बारम्बार आपका.

मुश्किलों से घिरी थी जिंदगी बेवजह ही मेरी.
मार्गदर्शन से नव गतिमान हुआ उपकार आपका.

जीवन के राहों में कितने रिश्ते बनते बिगड़ते हैं.
पर सफर अब तक यूँ ही जारी है आभार आपका.



आप शामिल हुए मेरी जिंदगी में आभार आपका.
मुझे एक नई पहचान मिली ये दुआ प्यार आपका.

भावुक हूँ मैं मधुर, जो मिला मुझे प्यार आपका.
शब्द ही नहीं है मधुर, बारम्बार आभार आपका.

बिन पेड़ों के गाँव

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



पक्षियों को पर्यावरण की स्थिति के सबसे महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक माना जाता है. क्योंकि वे आवास परिवर्तन के प्रति संवेदनशील हैं और पक्षी पारिस्थितिकीविद् के पसंदीदा उपकरण हैं. पक्षियों की आबादी में परिवर्तन अक्सर पर्यावरणीय समस्याओं का पहला संकेत होता है. चाहे कृषि उत्पादन, वन्य जीवन, पानी या पर्यटन के लिए पारिस्थितिक तंत्र का प्रबंधन किया जाए, सफलता को पक्षियों के स्वास्थ्य से मापा जा सकता है. पक्षियों की संख्या में गिरावट हमें बताती है कि हम आवास विखंडन और विनाश, प्रदूषण और कीटनाशकों, प्रचलित प्रजातियों और कई अन्य प्रभावों के माध्यम से पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं.

बदल रहे हर रोज ही, हैं मौसम के रूप,
सर्दी के मौसम हुई, गर्मी जैसी धूप.
सूनी बगिया देखकर, 'तितली है खामोश',
जुगनू की बारात से, गायब है अब जोश.

हाल ही की एक रिपोर्ट, 'स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स बर्ड्स' के अनुसार, दुनिया भर में मौजूदा पक्षी प्रजातियों में से लगभग 48% आबादी में गिरावट के दौर से गुजर रही है या होने का संदेह है. प्राकृतिक प्रणालियों

के महत्वपूर्ण तत्वों के रूप में पक्षियों का पारिस्थितिक महत्व है। पक्षी कीट और कृतक नियंत्रण, पौधे परागण और बीज फैलाव प्रदान करते हैं जिसके परिणामस्वरूप लोगों को ठोस लाभ होता है। कीट का प्रकोप सालाना करोड़ों डॉलर के कृषि और वन उत्पादों को नष्ट कर सकता है। पर्पल मार्टिस लंबे समय से हानिकारक कीटनाशकों के स्वास्थ्य और पर्यावरणीय लागत (आर्थिक लागत का उल्लेख नहीं) के बिना कीट कीटों की आबादी को काफी हद तक कम करने के एक प्रभावी साधन के रूप में जाना जाता है।

आती है अब है कहाँ, कोयल की आवाज़,
बूढ़ा पीपल सूखकर, ठूठ खड़ा है आज.
जब से की बाजार ने, हरियाली से प्रीत,
पंछी डूब दर्द में, फूटे गम के गीत.

पक्षी प्राकृतिक प्रणालियों में कीड़ों की आबादी को कम करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पूर्वी जंगलों में पक्षी 98% तक बुडवार्म खाते हैं और 40% तक सभी गैर-प्रकोप कीट प्रजातियों को खाते हैं। इन सेवाओं का मूल्य 5,000 डॉलर प्रति वर्ष प्रति वर्ग मील वन पर रखा गया है, संभावित रूप से पर्यावरण सेवाओं में अरबों डॉलर में अनुवाद किया जा सकता है। पक्षियों और जैव विविधता के नुकसान का सबसे बड़ा खतरा आवासों का विनाश और क्षरण है। पर्यावास के नुकसान में प्राकृतिक क्षेत्रों का विखंडन, विनाश और परिवर्तन शामिल है, जिन्हें पक्षियों को अपने वार्षिक या मौसमी चक्र को पूरा करने की आवश्यकता होती है।

फीके-फीके हो गए, जंगल के सब खेल,
हरियाली को रौंदती, गुजरी जब से रेल.
नहीं रहे मुंडेर पर, तोते-कौवे-मोर,
लिए मशीनी शोर है, होती अब तो भोर.

1800 के दशक के बाद से अधिकांश पक्षी विलुप्त होने के लिए आक्रामक प्रजातियां जिम्मेदार हैं, जिनमें से अधिकांश समुद्री द्वीपों पर हुई हैं। उदाहरण के लिए, अकेले हवाई में, आक्रामक रोगजनकों और शिकारियों ने 71 पक्षी प्रजातियों के विलुप्त होने में योगदान दिया है। कुछ पक्षियों का अवैध शिकार वाणिज्यिक और निर्वाह उद्देश्यों के लिए, भोजन के लिए, या उनके पंखों के लिए किया जाता है। ऐतिहासिक रूप से, कुछ प्रजातियों का अत्यधिक शिकार विलुप्त होने का प्रमुख कारण रहा है। स्थानीय

स्तर पर निर्वाह के शिकार के परिणामस्वरूप शायद ही कभी प्रजातियों का विलोपन होता है। व्यावसायिक शिकार से किसी प्रजाति के मरने की संभावना अधिक होती है।

अमृत चाह में कर रहे, हम कैसे उत्थान,
जहर हवा में घोलते, हुई हवा तूफ़ान.
बेचारे पंछी यहाँ, खेलें कैसे खेल,
खड़े शिकारी पास में, ताने हुए गुलेल.

जलवायु परिवर्तन से आवास के नुकसान और आक्रामक प्रजातियों के खतरों के साथ-साथ नई चुनौतियों का निर्माण करने का खतरा है, जिन्हें पक्षियों को दूर करना होगा। इसमें आवास वितरण में बदलाव और चरम खाद्य आपूर्ति के समय में बदलाव शामिल है जैसे कि पारंपरिक प्रवासन पैटर्न अब पक्षियों को नहीं रख सकते हैं जहां उन्हें सही समय पर होने की आवश्यकता होती है। अन्य मानव निर्मित संरचनाओं के साथ टकराव भी एक इनकी मौत का कारण है। उदाहरण के लिए, पावरलाइन पक्षियों के लिए एक खतरा पेश करती है, विशेष रूप से बड़े पंखों वाले, और हर साल 25 मिलियन पक्षियों की मौत का अनुमान है। संचार टावरों का अनुमान है कि हर साल 7 मिलियन पक्षियों की मौत हो जाती है और रात में प्रवास करने वाले पक्षियों के लिए एक विशेष खतरा पैदा होता है।

वाहन दिन भर दिन बढ़े, खूब मचाये शोर,
हवा विषैली हो गई, धुआं चारों ओर.
बिन हरियाली बढ़ रहा, अब धरती का ताप,
जीव-जगत नित भोगता, कुदरत के संताप.

कीटनाशक और अन्य विषाक्त पदार्थ के कारण यूएस फिश एंड वाइल्डलाइफ सर्विस का अनुमान है कि हर साल लगभग 72 मिलियन पक्षी कीटनाशक विषाक्तता से मर जाते हैं। पक्षियों पर कीटनाशकों के वास्तविक प्रभाव का आकलन करना मुश्किल है: प्रदूषण और विषाक्त पदार्थ उप-घातक प्रभाव पैदा कर सकते हैं जो सीधे पक्षियों को नहीं मारते हैं, लेकिन उनकी लंबी उम्र या प्रजनन दर को कम करते हैं। कीटनाशकों के अलावा, भारी धातुओं (जैसे सीसा) और प्लास्टिक कचरे सहित अन्य संदूषक भी पक्षियों के जीवन काल और प्रजनन सफलता को सीमित करते हैं। तेल और अन्य ईंधन रिसाव का पक्षियों, विशेष रूप से समुद्री पक्षियों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। तेल पक्षियों के पंखों का सबसे बड़ा दुश्मन है है, जिससे पंख अपने जलरोधक गुणों को खो देता है और पक्षी की संवेदनशील त्वचा को अत्यधिक तापमान में झुलसा देता है।

जीना दूभर है हुआ, फैले लाखों रोग,
जब से हमने है किया, हरियाली का भोग.
शहरी होती जिंदगी, बदल रहा है गाँव,
धरती बंजर हो गई, टिके मशीनी पाँव.

दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटग्रस्त पक्षी प्रजातियों की रक्षा करें, महत्वपूर्ण जैव विविधता वाले क्षेत्रों में पक्षी सर्वेक्षण करना, पक्षियों की रक्षा के लिए आर्द्रभूमि की रक्षा करें संरक्षण रणनीति में जनसंख्या बहुतायत और परिवर्तन का विश्वसनीय अनुमान लगाना शामिल है. अधिक कटाई वाले जंगली पक्षियों की मांग में कमी के लिए नए और अधिक प्रभावी समाधान बड़े पैमाने पर लागू किए गए. हरित ऊर्जा संक्रमणों की निगरानी करना जो अनुपयुक्त तरीके से लागू किए जाने पर पक्षियों को प्रभावित कर सकते हैं.

रोज प्रदूषण अब हरे, धरती का परिधान,
मौन खड़े सब देखते, मुँह ढाँके हैरान.
हरे पेड़ सब कट चले, पड़ता रोज अकाल,
हरियाली का गाँव में, रखता कौन ख्याल.

पक्षी पर्यावरणीय स्वास्थ्य के अत्यधिक दृश्यमान और संवेदनशील संकेतक हैं, उनका नुकसान जैव विविधता के व्यापक नुकसान और मानव स्वास्थ्य और कल्याण के लिए खतरे का संकेत देता है. इस प्रकार, हमें तेजी से बड़े पैमाने पर विलुप्त होने की गति को कम करने के लिए प्रकृति पर बढ़ते मानव पदचिह्न को कम करने के लिए सरकार, पर्यावरणविदों और नागरिकों के समन्वित कार्यों की आवश्यकता है.

सच्चा मंदिर है वही, दिव्या वही प्रसाद,
बँटते पौधे हों जहां, संग थोड़ी हो खाद.
पेड़ जहां नमाज हो, दरख्त जहां अजान,
दरख्त से ही पीर सब, दरख्त से इंसान.

नया उजाला


रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



हम बच्चे भविष्य निर्माता
हम सबकी ऊँची उड़ान है.

नई सुबह के हैं हम सूरज
नया उजाला फैलाएँगे.
झुंड बनाकर चिड़ियों जैसे
खेलेंगे, मन बहलाएँगे.

लेंगे सीख लगन से कौशल
दृढ़ इच्छा ऊर्जावान है.



हाथों में प्यारे-प्यारे से
रंगबिरंगे गुब्बारे हैं.
आँखों में झिलमिल सपनों से
दमक रहे अनगिन तारे हैं.

खिलते पुष्प, झूमती तितली
हँसी - खुशी का कीर्तिमान हैं.
हम सबकी ऊँची उड़ान है.

चरित्र

रचनाकार- सिद्धि गर्ग कक्षा 8वीं, SAGES सरायपाली



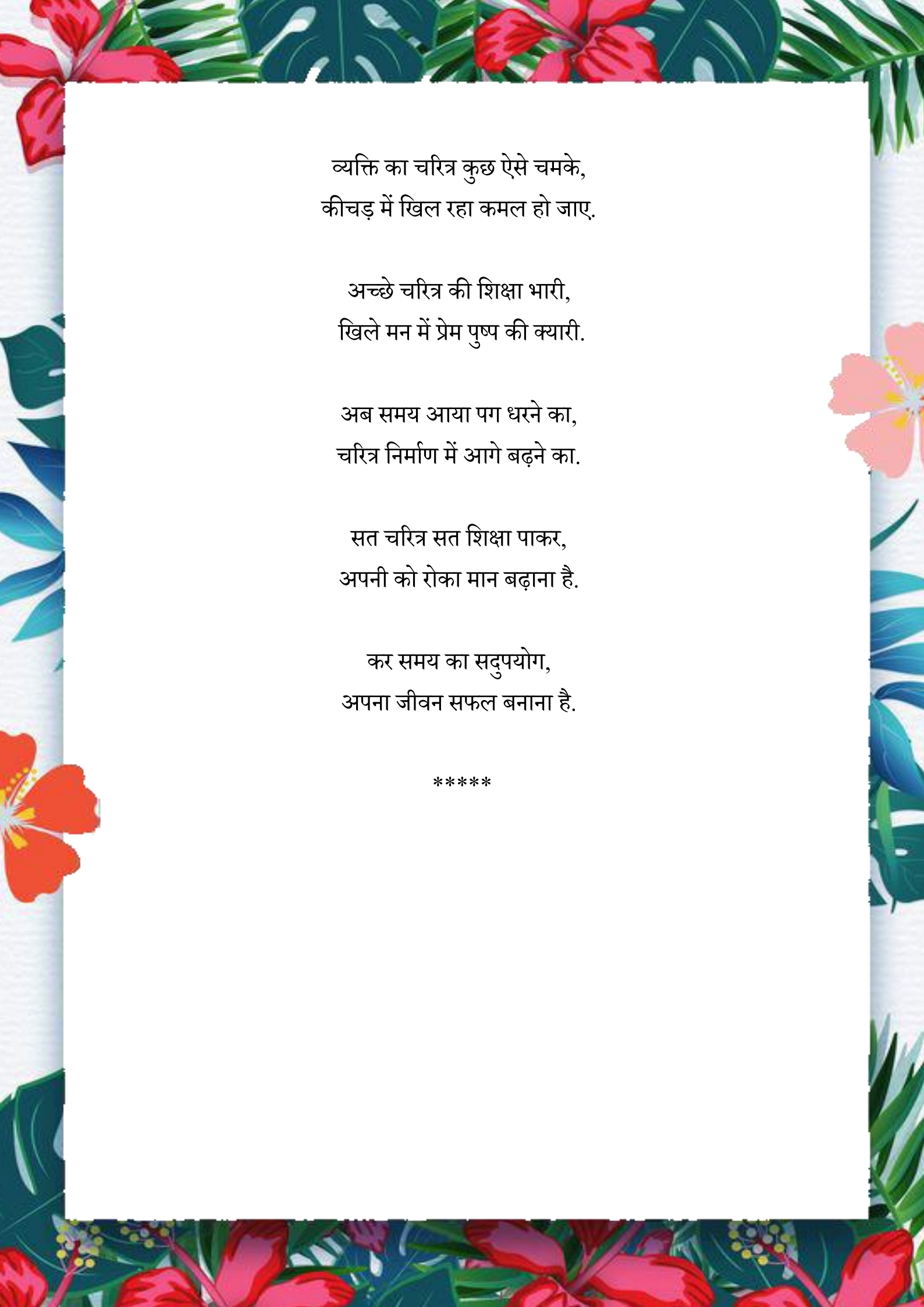
चरित्र के इस गहन सार से,
सोया है सारा संसार.

चरित्र का निर्माण कहाँ पर होता,
वहीं से होती व्यक्ति की पहचान.

कहीं पर होता संत-देव सा,
कहीं पर होती रुष्ट कटुता.

जहाँ मिले नर संगति अच्छी,
वहीं से होती व्यक्तित्व की उन्नति.

बालपन से ही होती अच्छे चरित्र की शुरुआत,
जिससे व्यक्ति बनता कुछ खास.



व्यक्ति का चरित्र कुछ ऐसे चमके,
कीचड़ में खिल रहा कमल हो जाए.

अच्छे चरित्र की शिक्षा भारी,
खिले मन में प्रेम पुष्प की क्यारी.

अब समय आया पग धरने का,
चरित्र निर्माण में आगे बढ़ने का.

सत चरित्र सत शिक्षा पाकर,
अपनी को रोका मान बढ़ाना है.

कर समय का सदुपयोग,
अपना जीवन सफल बनाना है.

खुशी

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा

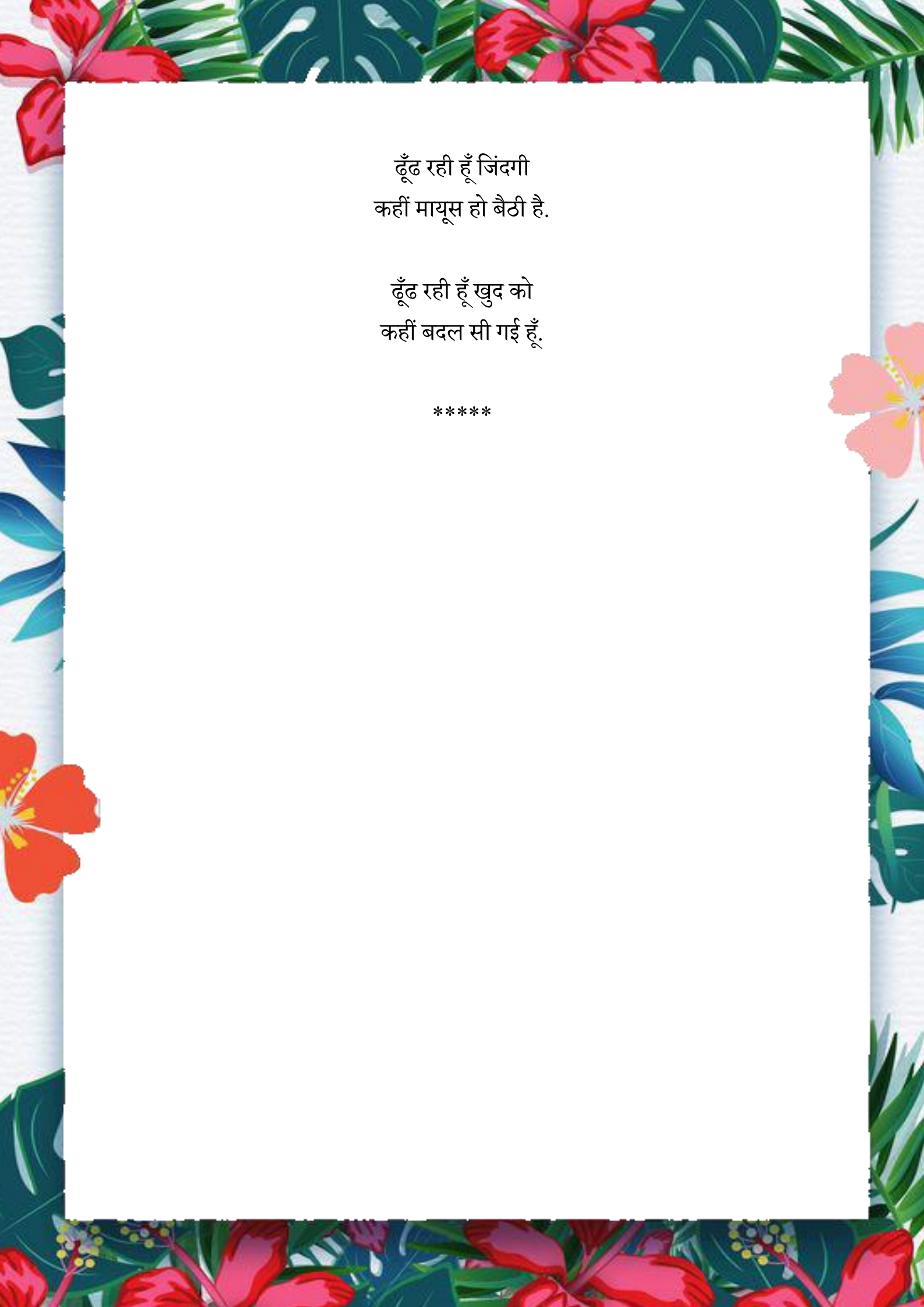


ढूँढ रही हूँ खुशी
कहीं छुप सी गई है.

ढूँढ रही हूँ हँसी
कहीं खो सी गई है.

ढूँढ रही हूँ बचपन
कहीं खो सा गया है.

ढूँढ रही हूँ सुकून
कहीं गायब हो चुका है.



ढूँढ रही हूँ जिंदगी
कहीं मायूस हो बैठी है.

ढूँढ रही हूँ खुद को
कहीं बदल सी गई हूँ.

तबादला

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



वार्षिक परीक्षा सर पर थी. घर के बच्चे परीक्षा की तैयारी में जी जान से लग गए थे. घर में जो बच्चों का कोलाहल हुआ करता था, अब वो पूरी तरह शांत हो गया था. ठीक ऐसे समय में शरद बाबू का तबादला हो जाना, मानो अचानक ग्रहण लग गया हो.

शरद बाबू इसी गहरी चिंता के गहरे सागर में डूबे सोच रहे थे कि - "बच्चों की पढ़ाई का क्या होगा?" तभी सरिता, उनकी पत्नी आती है और कहती है-

"क्या सोच रहे हो जी? शरद बाबू कहते हैं- क्या बताऊँ सरिता! एक तरफ मेरा तबादला, दूसरी तरफ बच्चों की परीक्षा! पता नहीं क्या होगा?"

पत्नी सरिता समझाते हुए कहती है-

आप इतनी चिंता न करो. कोई न कोई बीच का रास्ता जरूर निकलेगा.

और ऐसा कहते हुए किचन की ओर चली जाती है और वापस आकर अपने पति को पानी से भरा गिलास थमा देती है.

शरद बाबू एक गहरी साँस लेते हुए पानी पी जाते हैं.

इनकी सारी बातों को बच्चों ने सुन लिया. दरअसल तबादला आदेश का जो लिफाफा था, उसको शरद बाबू ने बच्चों के स्टडी टेबल पर रखा हुआ था, जिसको बच्चों ने पढ़ डाला था. इधर शरद बाबू अपने तबादला के बारे में बच्चों को बताकर परेशान करना नहीं चाहते थे.

फिर क्या था बच्चों ने तबादला आदेश में लिखे मोबाइल नम्बर, जो कि उच्चाधिकारी का था, पर डायल कर दिया,और अपनी वार्षिक परीक्षा का हवाला देकर तबादला रोकने की गुहार लगाई.बच्चों ने कहा-

"हम शरद बाबू के बच्चे हैं और यदि हमारे पिता जी का तबादला नहीं रुकता है, तो हम वार्षिक परीक्षा से वंचित हो जाएंगे.और हमारा भविष्य बर्बाद हो जाएगा. तो कृपया...! ये कहते-कहते उनका गला भर जाता है. शरद बाबू के अधिकारी जो उदार मन के थे,उनकी बातों को गम्भीरता पूर्वक सुन रहे थे.और कहते हैं- ठीक है! ठीक है! बच्चों आप लोग दुखी मत हो. मैं कुछ करता हूँ!""

ठीक दूसरे दिन आफिस टाइम में शरद बाबू अपने तैयारी में अपना सामान पैक कर रहे थे.तभी अचानक कार की हॉर्न बजती है.और ठीक शरद बाबू के दरवाजे के सामने आ खड़ी होती है.उसमें से सूटबूट में एक अधिकारी बाहर आता हुआ दिखाई देता है.बच्चे डर के मारे अपने कमरों में दुबक जाते हैं.पता नहीं क्या होगा?

तभी आवाज आती है-

शरद बाबू!शरद बाबू!

हड़बड़ा कर शरद बाबू बाहर निकलते हैं.अपने अधिकारी को देखकर आश्चर्य में पड़ जाते हैं.मन ही मन सोचने लगते हैं कि-

आखिर अचानक मेरे अधिकारी मेरे यहाँ! आखिर क्यों आए होंगे?

और फिर शरद बाबू कहते हैं-

आइए!आइए!साहब!

तभी वह अधिकारी कह उठता है-

बधाई हो !'बधाई हो !शरद बाबू . कहते हुए अपने हाथ मे रखे मिठाई के डिब्बे से मिठाई निकालकर शरद बाबू को खिलाते हैं.शरद बाबू को कुछ समझ नहीं आ रहा था.तभी अधिकारी ने बच्चों को आवाज लगाई-

अरे! बच्चों कहाँ गए?आपकी गुहार मंजूर हो गई."शरद बाबू का तबादला कैंसिल हो गया."

सारे बच्चों के खुशी का ठिकाना नहीं रहा.बच्चे बार-बार उस अधिकारी को धन्यवाद दे रहे थे.शरद बाबू को कुछ समझ में नहीं आ रहा था. वे बच्चों को और अपने अधिकारी को खुशी भरी नजरों से आश्चर्यचकित होते हुए देख रहे थे.

चंदा और सूरज


रचनाकार- डॉ. राकेश चक्र



चले प्रतीची सूरज दादा,
प्राची में चंदा उग आए,
आज पूर्णिमा करे सजावट,
तारों की बारात सजाए.

कोई थका नहीं आज तक,
विचर रहे हैं सदियों से.
बुद्धिमान हैं अरु हितकारी,
बढ़ते जाते नदियों - से.

नाम कई हैं सूर्यदेव के,
रवि, भास्कर, दिनकर.
कहें दिनेश और भानु,
सविता, हंस, प्रभाकर.



चंदा जी के कई नाम हैं,
अत्रिज, मयंक, सुधाकर.
रोहिणीपति, राकेश, हिमांशु,
अमीकर कहें कलाधर.

प्रायः ही मैं देखा करता,
इनकी छटा निराली.
बचपन गाता रोज रागिनी,
भोर हुई बिखरी लाली.

टप - टप बहे पसीना

रचनाकार- डॉ. राकेश चक्र



अतिशय गर्मी लगे सभी को,
टप-टप बहे पसीना.
लू भी मारे रोज थपेड़े,
मुश्किल लगता जीना.

पौधे भी बेहाल हो रहे,
रोज लगाएँ पानी.
थोड़ा उनको हम दुलराएँ,
मीठी कहें कहानी.

बढ़ा प्रदूषण, मौसम गड़बड़,
तपता चैत महीना.

अतिशय गर्मीं लगे सभी को?

टप-टप बहे पसीना.

इनमें भी तो प्राण बसे हैं,

जीवन सबका जल है.

पौधे रोपें आज सभी मिल,

होगा सुंदर कल है.

सबकी प्यास बुझाए जल तो,

घूँट-घूँट कर पीना.

अतिशय गर्मीं लगे सभी को,

टप-टप बहे पसीना.

दाना, पानी छत पर रखना,

जैसे सोनू रखता.

पंछी नए-नए राग सुनाएँ,

रौनक से घर भरता.

खुशियाँ मिलतीं नित सोनू को,

चौड़ा होता सीना.

अतिशय गर्मीं लगे सभी को,

टप-टप बहे पसीना.

वीर जवान


रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय



भारत के हम वीर जवान,
आगे कदम बढ़ाएँगे.
आ जाये गर कोई तूफ़ाँ,
हम उससे टकराएँगे.

लक्ष्य न ओझल होने देंगे,
सदा कर्तव्य निभाएँगे.
प्राणों को न्यौछावर कर हम,
माँ की लाज बचाएँगे.

सीमा पर तैनात रहेंगे,
बनकर वीर सिपाही हम.
बुरी नजर जिसने डाली,
कर देंगे सीना छलनी हम.



मातृभूमि हमको है प्यारी,
शीश नवाती दुनिया सारी.
इस माटी में शौर्य भरा है,
ऐसी पावन हिंद धरा है.

विज्ञान पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



1. थे गणितज्ञ खगोल शास्त्री?
दशमलव का किया आविष्कार।
संख्या लिखने की पद्धति दी,
पृथ्वी को बताया निराधार।
2. एक गणितीय नियतांक है,
वृत्त की परिधि, व्यास अनुपात ।
22 बटे 7 मान है उसका,
अपरिमेय राशि है ताता।
3. महापंडित चिकित्सा विज्ञान के,
प्राचीनकाल के शल्य चिकित्सक।
वात, पित्त, कफ दोष रोग के,
बने मनुष्य जाति के रक्षक।

4. आयुर्वेद के अप्रतिम ज्ञाता,
शल्य चिकित्सा जनक कहाते।
वे चिकित्सा शास्त्री महान थे,
आज भी डॉक्टर हैं गुण गाते।

5. भारत के प्रधान वैज्ञानिक,
बतलाया पौधों में प्राण।
क्रेस्कोग्राफ था यंत्र बनाया,
जैव भौतिकी दिए प्रमाण।

6. परमाणु भौतिकी के वैज्ञानिक,
नाभिकीय ऊर्जा - ज्ञान प्रसिद्ध।
पोखरण में परमाणु विस्फोट कर,
किया परमाणु शक्ति को सिद्ध।

7. बतलाया योगाभ्यास से,
जाग्रत करें कुण्डलिनी शक्ति।
मन - आत्मा पर रखें नियंत्रण,
प्राप्त करें फिर दैवी शक्ति।

उत्तर - 1. आर्यभट्ट, 2. पाई, 3. चरक, 4. सुश्रुत, 5. जगदीशचंद्र बसु, 6. डॉ. राजा रामन्ना,
7. पतंजलि

ग्लोबल कोविड-19 सम्मिट 2022

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



वैश्विक स्तरपर कोविड-19 महामारी का कहर जिस तरह पूरी दुनिया ने झेला और लाखों लोगों ने अपने प्राण खोए, जीवन चक्र के हर क्षेत्र को बाधित किया, इतिहास के पन्नों में दर्ज इस घटनाक्रम को पीढ़ियों तक याद किया जाएगा परंतु कुछ अपवादों को छोड़ दें तो इस महामारी को करीब-करीब नियंत्रित कर लिया गया है परंतु इसे यूं ही छोड़ देने से अब काम नहीं चलेगा. दुनिया ने कोरोना काल में बहुत कुछ खोया है. महामारी ने लोगों में एक नया तनाव पैदा कर दिया है इस तनाव का समाधान किए जाने को रेखांकित करना जरूरी है जिससे महामारी की टेंशन को दूर किया जा सके, वैश्विक समुदाय को कैसे अपने प्रयास दोगुने कर यह सुनिश्चित किया जा सके कि ऐसे किसी अन्य महामारी के लिए दुनिया तैयार है. अब महामारी को भी मौजूदा चुनौतियों के समाधान के लिए नए कदमों को बढ़ावा देना होगा - एक मजबूत वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा तंत्र विकसित करना होगा, एक रणनीतिक रोडमैप के साथ चलना होगा ताकि स्वास्थ्य और खाद्य पदार्थों की आपूर्ति चयन को बाधित होने से बचाया जा सके इसीलिए ही अमेरिका ने पहले ग्लोबल कोविड-19 सम्मिट के आयोजन की शुरुआत 27 सितंबर 2021 से की थी और आज 12 मई 2022 को दूसरा वर्चुअल सम्मिट हुआ जिसमें भारतीय पीएम सहित अनेक महानुभवों ने हिस्सा लिया जिसकी मेजबानी अमेरिकी राष्ट्रपति जो बायडेन द्वारा की गई.

बात अगर हम कोविड -19 महामारी पर नियंत्रण की करें तो इस लड़ाई में भारत की भूमिका वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण रही और दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण कार्यक्रम आज भी भारत में शुरू है. पीआईबी के अनुसार दिनांक 12 मई तक भारत का कोविड-19 टीकाकरण कवरेज आज सुबह 7 बजे तक अंतिम रिपोर्ट के अनुसार 190.83 करोड़ (1,90,83,96,788) से अधिक हो गया. इस उपलब्धि को 2,38,04,578 टीकाकरण सत्रों के जरिये प्राप्त किया गया है. 12-14 आयु वर्ग के लिए कोविड-19 टीकाकरण 16 मार्च, 2022 को प्रारंभ हुआ था. अब तक 3.10 करोड़ (3,10,92,227) से अधिक किशोरों को कोविड-19 टीके की पहली खुराक लगाई गई है. समान रूप से 18-59 आयु वर्ग के लिये प्रीकोशन खुराक भी 10 अप्रैल, 2022 को प्रारंभ की गई थी.

बात अगर हम माननीय पीएम द्वारा सम्मिट में संबोधन की करें तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अनुसार उन्होंने कहा, भारत डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुमोदित चार टीकों का निर्माण करता है और इस वर्ष 5 बिलियन खुराक का उत्पादन करने की क्षमता रखता है. बीते महीने हमने अपने सदियों पुराने ज्ञान को दुनिया को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारत में डब्ल्यूएचओ सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन की नींव रखी थी. यह स्पष्ट है कि भविष्य की स्वास्थ्य आपात स्थितियों से निपटने के लिए एक समन्वित वैश्विक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि हमारा वैक्सीनेशन कार्यक्रम दुनिया में सबसे बड़ा है. हमने लगभग 90 फ्रीसदी वयस्क आबादी और 50 मिलियन से अधिक बच्चों को पूरी तरह से टीका लगाया है. भारत डब्ल्यूएचओ से मंजूरी पाने वाली चार वैक्सीनों का निर्माण कर रहा है, इस साल हमारी 5 बिलियन डोज का उत्पादन करने की क्षमता है, इसके साथ हमने 98 देशों में करीब 200 मिलियन वैक्सीन की डोज भेजी हैं. हम भारत में हजारों लोगों की जान बचाने के लिए पारंपरिक दवाओं का इस्तेमाल करते हैं.

उन्होंने कहा कि यह स्पष्ट है कि भविष्य की स्वास्थ्य आपात स्थितियों से निपटने के लिए एक समन्वित वैश्विक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है. हमें एक लचीली वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण करना चाहिए और टीकों और दवाओं तक समान पहुंच को सक्षम बनाना चाहिए.

उन्होंने कहा, डब्ल्यूटीओ, खास तौर पर ट्रिप्स (बौद्धिक संपदा नियमों को लेकर अंतरराष्ट्रीय समझौता) के नियमों को ज्यादा लचीला बनाने की जरूरत है. डब्ल्यूएचओ में अनिवार्य तौर पर सुधार होना चाहिए और इसे ज्यादा मजबूत बनाने की जरूरत है ताकि वैश्विक स्वास्थ्य ढांचे को ज्यादा उपयोगी बनाया जा सके.

पीएम की यह मांग इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि भारत दूसरे देशों को खाद्य आपूर्ति बढ़ाने पर जोर दे रहा है. कोरोना महामारी और यूक्रेन-रूस युद्ध के बाद दुनिया में खाद्य संकट पैदा होने के आसार हैं. पीएम से पहले विदेश मंत्री ने वैश्विक मंचों पर इस मुद्दे को उठाया है कि भारत दुनिया को खाद्यान्न संकट से लड़ने में मदद करने को तैयार है लेकिन पहले डब्ल्यूटीओ को अपने नियम बदलने होंगे.

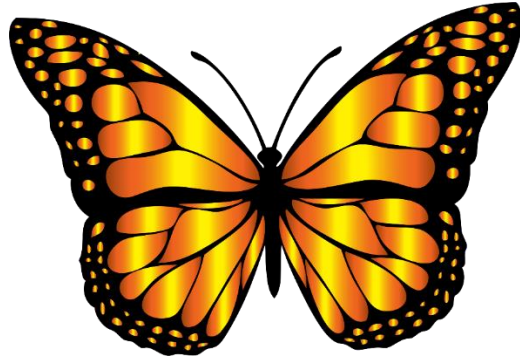
उन्होंने कहा कि पिछले महीने, हमने इस ज्ञान को विश्व को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारत में पारंपरिक चिकित्सा के डब्ल्यूएचओ केंद्र की नींव रखी. उन्होंने कहा कि अधिक लचीला स्वास्थ्य सुरक्षा संरचना बनाने के लिए डब्ल्यूएचओ में सुधार और मजबूती की जानी चाहिए. भारत इस प्रयास में अहम भूमिका निभाने को तैयार है.

बात अगर हम अमेरिकी प्रेसिडेंट द्वारा संबोधन की करें तो कोरोना पर दूसरे वैश्विक वर्चुअल सम्मेलन की मेजबानी करने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, एक राष्ट्र के तौर पर हमें इस तरह के दुख से नहीं घबराना चाहिए. इससे उबरने के लिए हमें याद रखना चाहिए कि इस महामारी के खिलाफ सतर्क रहना है और ज्यादा से ज्यादा जिंदगियों को बचाने के लिए वह सबकुछ करना चाहिए जो हम कर सकते हैं. अमेरिका में महामारी से मरने वालों का आंकड़ा 10 लाख तक पहुंचने के बीच राष्ट्रपति ने कहा कि कोरोना महामारी से घबराने की नहीं, बल्कि सतर्क रहने की जरूरत है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ग्लोबल कोविड सम्मिट 2022 संपन्न हुआ. महामारी की मौजूदा चुनौतियों के समाधान के लिए नए कदमों को बढ़ावा देना होगा. मजबूत वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा तंत्र विकसित करना होगा. कोविड-19 से लड़ाई में भारत की वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका है. दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण कार्यक्रम भारत में अभी भी शुरू है.

तितली रानी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



तितली रानी, तितली रानी,
छटा तुम्हारी बड़ी सुहानी.
रंग-बिरंगे पंख तुम्हारे,
आँखों को लगते हैं प्यारे.

नित बगिया में आती हो,
फूलों को गीत सुनाती हो.
मधु-रस का करती हो पान,
कितनी मोहक है उड़ान.

दूर कहीं ना जाओ रानी,
करलो चाहे तुम मनमानी.
तितली रानी, तितली रानी.

गुरु निष्ठा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"

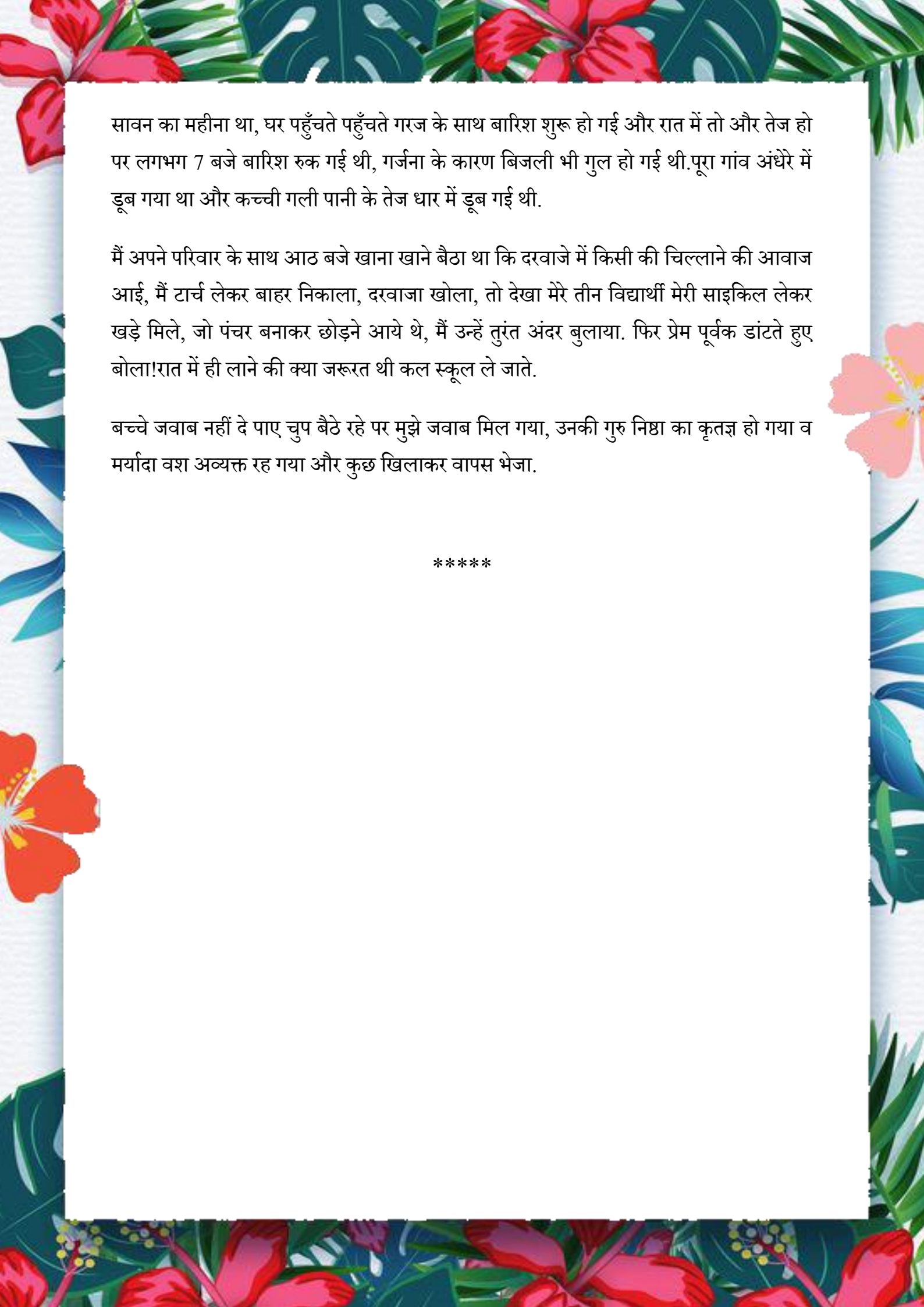


अन्य दिनों की तरह आज भी छुट्टी की घंटी बजी, मैं अपने अंतिम कालखंड कक्षा दसवीं में सामाजिक विज्ञान पढ़ाकर निकला. संध्या प्रार्थना में शामिल हुआ. प्रार्थना के पश्चात छठवीं से बारहवीं तक के बच्चों कतार से अपने घर की ओर प्रस्थान करने निकले. कुछ दूसरे गांव के बच्चे साइकिल से आते हैं, वे अपनी साइकिल गेट तक बिना चढ़े निकाले, क्योंकि बच्चे गेट के अंदर साइकिल नहीं चलाते थे.

मैं भी अपनी साइकिल में थैला लटकाया और निकले लगा, तो पिछले चक्का को पंचर पाया. साइकिल धकेलते हुए गेट से बाहर निकला. कुछ बच्चे अभी तक गेट के बाहर खड़े थे, जो मुझे पैदल चलते देखकर तुरंत पास आये और पूछे सर क्या हो गया?

मैंने बताया-साइकिल पंचर हो गई है.

फिर सत्तू (विद्यार्थी) ने कहा! सर आप अपनी साइकिल छोड़िए और ये मेरी ले जाइए, मैं पंचर बनवाकर कल ले आऊंगा. बहुत जिद किया, मैं उसकी राय मान कर साइकिल दिया और उसकी लेकर अपने घर के लिए निकल गया.



सावन का महीना था, घर पहुँचते पहुँचते गरज के साथ बारिश शुरू हो गई और रात में तो और तेज हो पर लगभग 7 बजे बारिश रुक गई थी, गर्जना के कारण बिजली भी गुल हो गई थी.पूरा गांव अंधेरे में डूब गया था और कच्ची गली पानी के तेज धार में डूब गई थी.

मैं अपने परिवार के साथ आठ बजे खाना खाने बैठा था कि दरवाजे में किसी की चिल्लाने की आवाज आई, मैं टार्च लेकर बाहर निकाला, दरवाजा खोला, तो देखा मेरे तीन विद्यार्थी मेरी साइकिल लेकर खड़े मिले, जो पंचर बनाकर छोड़ने आये थे, मैं उन्हें तुरंत अंदर बुलाया. फिर प्रेम पूर्वक डांटते हुए बोला!रात में ही लाने की क्या जरूरत थी कल स्कूल ले जाते.

बच्चे जवाब नहीं दे पाए चुप बैठे रहे पर मुझे जवाब मिल गया, उनकी गुरु निष्ठा का कृतज्ञ हो गया व मर्यादा वश अव्यक्त रह गया और कुछ खिलाकर वापस भेजा.

टूट रहे परिवार

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



बदल गए परिवार के, अब तो सौरभ भाव.
रिश्ते-नातों में नहीं, पहले जैसा चाव.

टूट रहे परिवार हैं, बदल रहे मनभाव.
प्रेम जताते गैर से, अपनों से अलगाव.

गलती है ये खून की, या संस्कारी भूल.
अपने काँटों से लगे, और पराये फूल.

रहना मिल परिवार से, छोड़ न देना मूल.
शोभा देते हैं सदा, गुलदस्ते में फूल.

होकर अलग कुटुम्ब से, बैठें गैर के पास.
झुँड से निकली भेड़ की, सुने कौन अरदास.

राजनीति नित बाँटती, घर-कुनबे-परिवार.
गाँव-गली सब कर रहे, आपस में तकरार.

मत खेलों तुम आग से, मत तानो तलवार.
कहता है कुरुक्षेत्र ये, चाहो यदि परिवार.

बगिया सूखी प्रेम की, मुरझाया है स्नेह.
रिश्तों में अब तप नहीं, कैसे बरसे मेह.

बैठक अब खामोश है, आँगन लगे उजाड़.
बँटी समूची खिड़कियाँ, दरवाजे दो फाड़.

विश्वासों से महकते, हैं रिश्तों के फूल.
कितनी करो मनौतियाँ, हटें न मन की धूल.

सौरभ प्रायः रोज ही, टूट रहे परिवार.
फूट कलह ने खींच दी, आँगन बीच दीवार.

बुद्धत्व

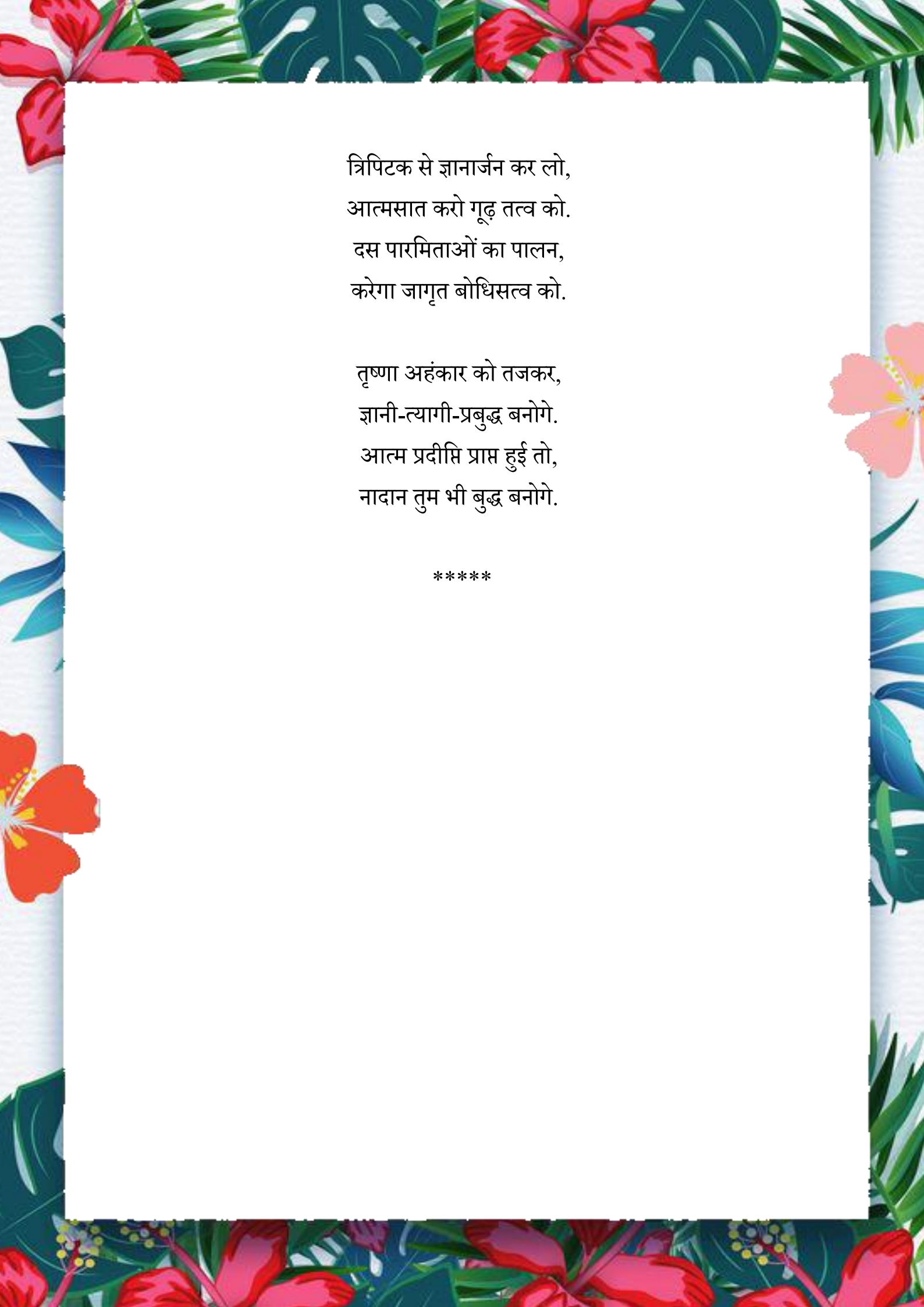
रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"



मन विचार को शुद्ध रखो,
हृदय न अपना क्रुद्ध रखो.
धीर धरो, संयम अपनाओ,
अपने भीतर इक बुद्ध रखो.

बोधि वृक्ष आकाश बनाओ,
धरा लगाओ अपना आसन.
अष्टांग मार्ग अपनाकर देखो,
चंचल मन पर होगा शासन.

चारों आर्य सत्य को जानो,
पंचशील सिद्धांत को मानो.
तीन रत्न से भर लो झोली,
बुद्ध-धम्म-संघ पहचानो.



त्रिपिटक से ज्ञानार्जन कर लो,
आत्मसात करो गूढ़ तत्व को.
दस पारमिताओं का पालन,
करेगा जागृत बोधिसत्व को.

तृष्णा अहंकार को तजकर,
ज्ञानी-त्यागी-प्रबुद्ध बनोगे.
आत्म प्रदीप्ति प्राप्त हुई तो,
नादान तुम भी बुद्ध बनोगे.

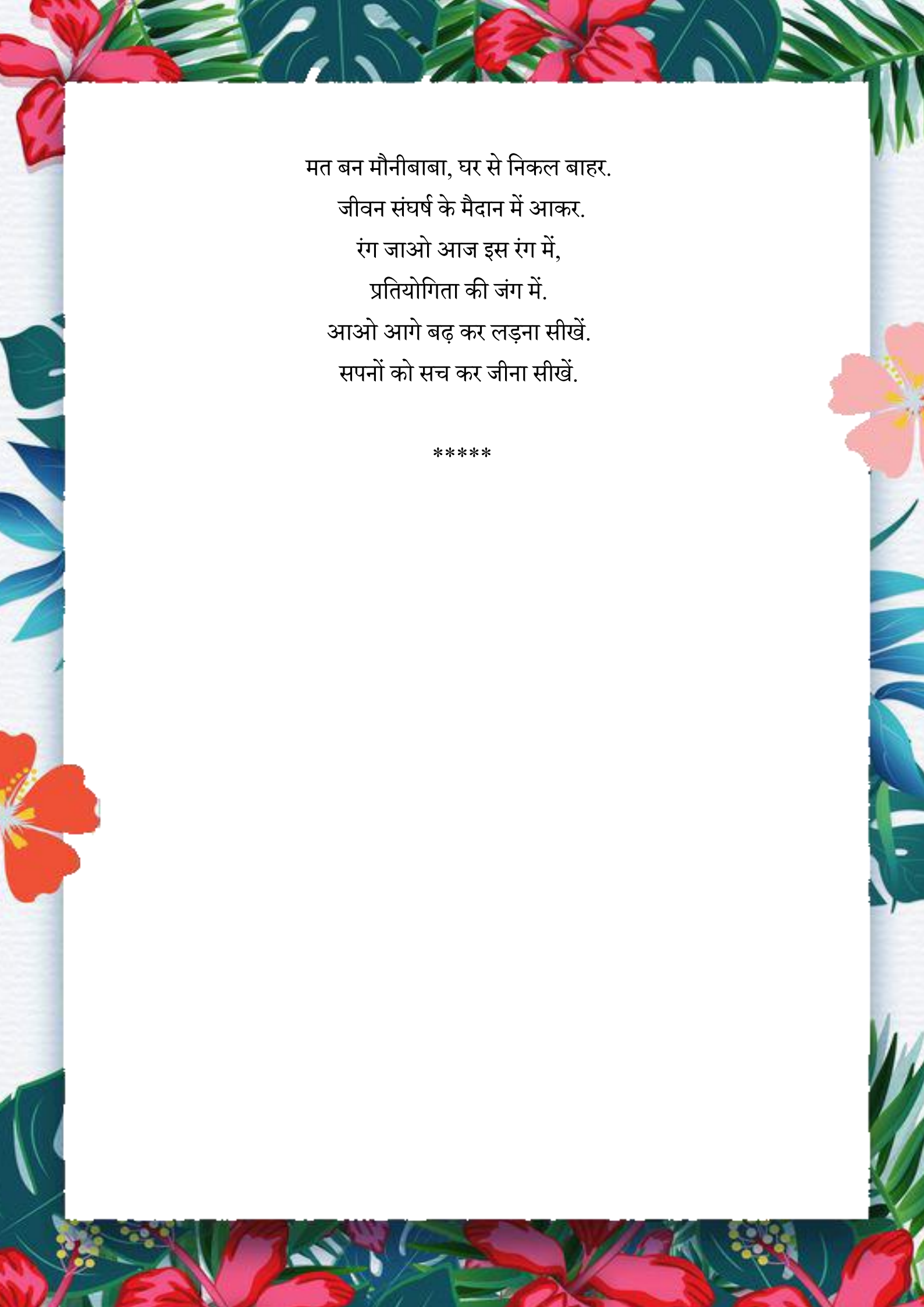
सपनों को सच कर जीना सीखें

रचनाकार- देवप्रसाद पात्रे



देखो सुंदर स्वच्छ चमन.
उड़ चलें आज नील गगन.
सपने हैं जो तेरे अधूरे.
आखिर कब होंगे पूरे?
आओ पंख लगाकर उड़ना सीखें.
सपनों को सच कर जीना सीखें.

कब तक सिर धुनोगे?
क्या बस सपने ही बुनोगे?
थमे रहो न हाथ फैलाए.
कामयाबी है तुम्हें बुलाए.
मिलकर गम को पीना सीखें.
सपनों को सच कर जीना सीखें.



मत बन मौनीबाबा, घर से निकल बाहर.
जीवन संघर्ष के मैदान में आकर.
रंग जाओ आज इस रंग में,
प्रतियोगिता की जंग में.
आओ आगे बढ़ कर लड़ना सीखें.
सपनों को सच कर जीना सीखें.

विश्व परिवार दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



विश्व परिवार दिवस पूरी दुनिया में मनाया जाता है. एक अच्छा परिवार बच्चे के चरित्र निर्माण से लेकर सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. परिवार के बीच रहकर ही बच्चा अच्छे-बुरे आचरण में फ़र्क करने तथा अपने भविष्य को अच्छा बनाने के लिए प्रेरित होता है. परिवार को एकजुट रखने के लिए हर सदस्य को अपने स्वभाव में त्याग रूपी आभूषण पहनना होगा, अपने से अधिक महत्व घर के बड़े बुजुर्ग सदस्यों को देना होगा. मैं का भाव हृदय से निकालकर, पहले आप,, की पवित्र वाणी को धारण करना होगा तभी हम परिवार को एकजुट रखने में सफल होंगे जो आज के समय की माँग है.

परिवारों को विघटन से बचाने, परिवारों को प्रभावित करने वाले आर्थिक जनसांख्यिकीय और सामाजिक प्रतिक्रियाओं के बारे में जानकारी देने के लिए 15 मई 1994 को सबसे पहले इंटरनेशनल फैमिली डे मनाया गया था तब से अब तक हर वर्ष एक नई थीम के साथ यह दिवस मनाया जाता है. 2022 में 15 मई को मनाए गए परिवार दिवस की थीम परिवार और शहरीकरण है.

इस वर्ष 2022 की थीम परिवार और शहरीकरण की बात करें तो इसका मुख्य उद्देश्य टिकाऊ परिवार के लिए अनुकूल शहरी नीतियों के महत्व पर जागरूकता बढ़ाना है. मेरा मानना है कि परिवार को विघटन से बचाने के लिए परिवार के हर एक सदस्य के अलावा शासन, प्रशासन और समाज की भी महत्वपूर्ण जवाबदारी होती है इसीलिए हर क्षेत्र को अपने अपने स्तर पर सबका परिवार एकजुट रहे इसकेलिए त्याग की भावना, प्रोत्साहन, प्रोत्साहित नीतियां, लाभकारी नियम और सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्रोत्साहन देकर जनजागृति फैलाना अति आवश्यक है.

परिवार की बात करें तो, किसी भी सशक्त देश के निर्माण में परिवार एक आधारभूत संस्था की भाँति होता है, जो अपने विकास कार्यक्रमों से दिनोंदिन प्रगति के नए सोपान तय करता है. कहने को तो प्राणी जगत में परिवार एक छोटी इकाई है लेकिन इसकी मजबूती हमें हर बड़ी से बड़ी मुसीबत से बचाने में कारगर है. परिवार से इतर व्यक्ति का अस्तित्व नहीं है इसलिए परिवार के बिना अस्तित्व के बारे में सोचा नहीं जा सकता. लोगों से परिवार बनता है और परिवार से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व बनता है.

परिवार का प्राथमिक कार्य बुनियादी जरूरतों को पूरा करना है जो भोजन, आश्रय, शिक्षा, स्वास्थ्य और भावनात्मक समर्पण आदि है लेकिन एक परिवार की भूमिका केवल इन कार्यों तक ही सीमित नहीं है वास्तव में यह नागरिक कक्षा का पहला स्कूल है जिसका बुनियादी मूल्य देशभक्ति, अखंडता, ईमानदारी, सहिष्णुता, बंधुत्व और दया है.

परिवार की खूबसूरती और उसके गुणों की बात करें तो, परिवार एक ऐसी सामाजिक संस्था है जो आपसी सहयोग व समन्वय से क्रियान्वित होती है और जिसके समस्त सदस्य आपस में मिलकर अपना जीवन प्रेम, स्नेह एवं भाईचारा पूर्वक निर्वाह करते हैं. संस्कार, मर्यादा, सम्मान, समर्पण, आदर, अनुशासन आदि किसी भी सुखी-संपन्न एवं खुशहाल परिवार के गुण होते हैं. कोई भी व्यक्ति परिवार में ही जन्म लेता है, उसी से उसकी पहचान होती है और परिवार से ही अच्छे-बुरे लक्षण सीखता है. परिवार सभी लोगों को जोड़े रखता है और दुःख-सुख में सभी एक-दूसरे का साथ देते हैं.

बात अगर हम आधुनिक डिजिटल युग में युवाओं में परिवार के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने की करें तो, पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ने के कारण आधुनिक पीढ़ी का अपने बुजुर्गों व अभिभावकों के प्रति आदर कम होने लगा है. वृद्धावस्था में अधिकतर बीमार रहने वाले माता-पिता अब उन्हें बोझ लगने लगे हैं. वे अपने संस्कारों और मूल्यों से कटकर एकाकी जीवन को ही अपनी असली खुशी व आदर्श मान बैठे हैं. यदि संयुक्त परिवारों को समय रहते नहीं बचाया गया तो हमारी आने वाली पीढ़ी ज्ञान संपन्न होने के बाद भी दिशाहीन होकर विकृतियों में फँसकर अपना जीवन बर्बाद कर देगी. अनुभव का खजाना कहे जाने वाले बुजुर्गों की असली जगह वृद्धाश्रम नहीं बल्कि घर है. छत नहीं रहती, दहलीज नहीं रहती, दर-ओ-दीवार नहीं रहती, वो घर घर नहीं होता, जिसमें कोई बुजुर्ग नहीं होता. परिवार से बड़ा कोई धन नहीं इस बात की पुष्टि के लिए मेरा मानना है कि इसका ताजा उदाहरण अभी कोविड-19 त्रासदी में पीड़ित परिवारों, जिनके परिवार के सदस्यों को महामारी ने निगल लिया उनसे बात करेंगे और जिनके परिवार इस त्रासदी में मृत्यु के कारण टूटे वो हमें दिल से बताएँगे कि परिवार क्या होता है. उसका सुख क्या होता है. क्योंकि इसका एक उदाहरण मैं भी हूँ हमारा आज भी संयुक्त परिवार है परंतु

मेरे माता-पिता और छोटी बहन की मृत्यु के कारण हमारे संयुक्त परिवार में हर पल उनकी कमी महसूस होती है उनकी कमी से जीवन नीरस लगने लगा है.

विश्व परिवार दिवस के इतिहास की बात करें तो, वर्ष 1989 के 8 दिसंबर को 44वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव परिवारों से जुड़े अंतरराष्ट्रीय समुदायों के महत्व को उजागर करने के लिए इस दिन को संयुक्त राष्ट्र महासभा के तहत संकल्प ए/आरईएस/47/237 के साथ घोषित किया गया था. इसे पारित करके वर्ष 1994 को अंतर्राष्ट्रीय परिवार वर्ष की घोषणा की. इसके पहले वर्ष 1993 में आयोजित न्यूयार्क विशेष बैठक में वर्ष 1994 से हर वर्ष के 15 मई को अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस मनाने का फैसला किया गया था, ताकि विभिन्न देशों की सरकारें और जनता परिवार से जुड़े मामलों की समझ को उन्नत कर सकें, और परिवार के सामंजस्य, खुशहाली व प्रगति को मजबूत कर सकें. यह वार्षिक आयोजन परिवारों द्वारा समुदायों में निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देने का अवसर प्रदान करता है और उन मुद्दों को भी उठाता है जो परिवार को प्रभावित करते हैं. 25 सितंबर 2015 को, 193 संयुक्तराष्ट्रों के सदस्य राज्यों ने आधिकारिक तौर पर 17 लक्ष्यों के एक सेट के साथ सतत विकास लक्ष्यों को अपनाया, जिसका उद्देश्य गरीबी, असमानता, दुर्व्यवहार और रोकी जा सकने वाली मौतों का उन्मूलन, पर्यावरणीय गिरावट का मुकाबला करना और सभी के लिए समृद्धि की अवधि का उद्घाटन करना था. हर जगह. इन सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, परिवार और परिवार उन्मुख नीतियां और सेवाएं महत्वपूर्ण हैं.

अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व परिवार दिवस 15 मई 2022 विशेष दिवस है. परिवार से बड़ा कोई धन नहीं है पिता से बड़ा सलाहकार, माँ के आँचल से बड़ी कोई दुनिया, भाई से बड़ा भागीदार और बहन से बड़ा कोई शुभचिंतक इस दुनिया में नहीं है. परिवार की शांति में विश्व शांति का आधार है. आधुनिक डिजिटल युद्ध में युवाओं में परिवार के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना जरूरी है.

हम जात पात धर्म नहीं मानते हैं
इंसान को सिर्फ इंसान ही मानते हैं
खून सब का लाल है इसको जानते हैं
वसुधैव कुटुम्बकम् की रीत मानते हैं

नशा में नाश

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू "विद्या"

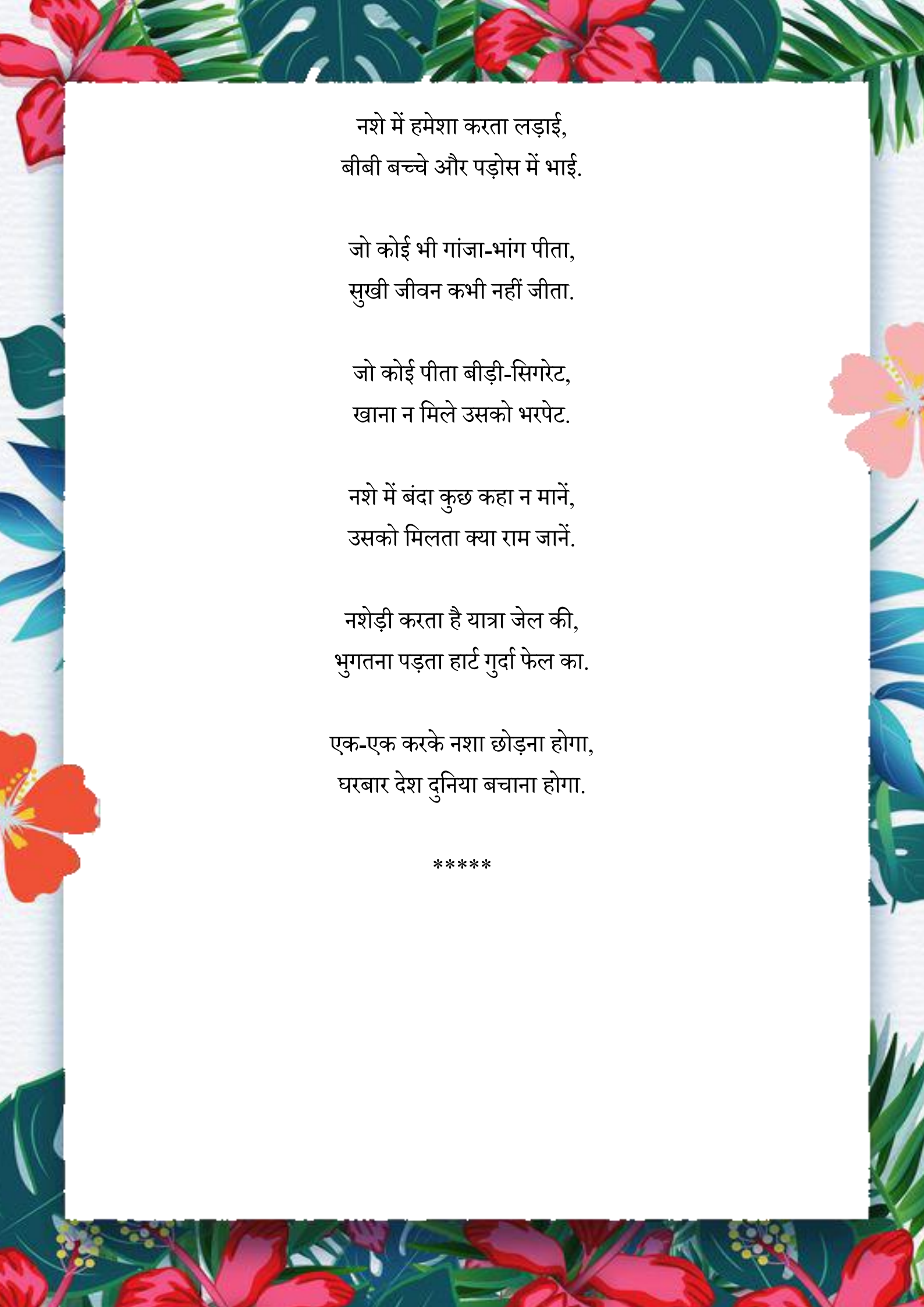


जिस शरीर में नशा का हो वास,
उसका पुर्जा-पुर्जा होता विनाश.

परिवार में लोगों को दुखदाई,
नशा में नहीं कोई भी भलाई.

दुख में बहे आँसुओं की धारा,
छा जाता है घर भर अँधियारा.

नशेड़ी करता है सदा बबाल,
दिन-रात रहता घर तंगहाल.



नशे में हमेशा करता लड़ाई,
बीबी बच्चे और पड़ोस में भाई.

जो कोई भी गांजा-भांग पीता,
सुखी जीवन कभी नहीं जीता.

जो कोई पीता बीड़ी-सिगरेट,
खाना न मिले उसको भरपेट.

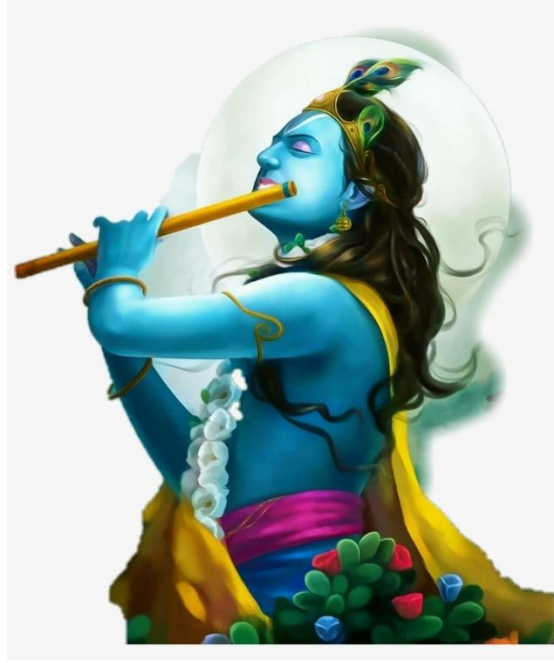
नशे में बंदा कुछ कहा न मानें,
उसको मिलता क्या राम जानें.

नशेड़ी करता है यात्रा जेल की,
भुगतना पड़ता हार्ट गुर्दा फेल का.

एक-एक करके नशा छोड़ना होगा,
घरबार देश दुनिया बचाना होगा.

मेरे कान्हा


रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू "विद्या"



कृष्णा-कृष्णा बोलो भैया,
राधे-राधे बोल.
मोहन मुरली वाले कान्हा,
अपनी आँखें खोल.

पनघट सूना चिंतित गोपी,
राह देखते ग्वाल.
माखन चोरी करके खाएँ,
सारे बाल गोपाल.

भारी संकट आया कान्हा,
बंजर पड़ा अकाल.



धरती माता अब है प्यासी,
है जन-जन बेहाल.

निर्झर सरिता ताल तलैया,
शुष्क खेत खलिहान.
जल बिन त्राहि-त्राहि चौतरफा,
कृपा करो भगवान.

विवाह

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



करते सभी विवाह हैं, बाँध प्रेम की डोर.
इक दूजे का साथ हो, छूटे कभी न छोर.

बेटी होती लाडली, एक पिता की जान.
देते वर के हाथ में, करते कन्यादान.

बोली बोलो प्रेम से, होना मुक्त दहेज.
मात-पिता की प्राण है, रखते सभी सहेज.

जीवन खुशियों से भरे, रहे पिया का साथ.
बाधा आये सामने, थामे दोनों हाथ.

लाओ एक सुधार जी, आगे बढ़े समाज.
भेद-भाव को छोड़ दो, युग बदलेगा आज.

अगर जीतना स्वयं को, बन सौरभ तू बुद्ध

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ'



बौद्ध धर्म का एक मजबूत व्यक्तिवादी घटक है कि अपने जीवन में खुशी की जिम्मेदारी स्वयं की है. बुद्ध ने चार आर्य सत्त्यों को मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में प्रस्तुत किया: पहला सत्य है कि जीवन में दुख है दूसरा सत्य है कि दुख का कारण इच्छा है, तीसरा सत्य है कि इच्छा को समाप्त करने का अर्थ है दुख को समाप्त करना; और चौथा सत्य है कि नियंत्रित और मध्यम जीवन शैली का पालन करने से इच्छा समाप्त हो जाएगी, और इसलिए दुख समाप्त हो जाएगा.

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग प्रस्तुत किया: सही विश्वास, सही संकल्प, सही भाषण, सही आचरण, सही व्यवसाय, सही प्रयास, सही दिमागीपन और समाधि-या ध्यान. बौद्ध प्रथा के अनुसार, अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करने से अंततः संसार, पुनर्जन्म और पीड़ा के चक्र से मुक्ति मिल जाएगी.

गौतम बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित बौद्ध दर्शन और सिद्धांत, वास्तविक और मानव अस्तित्व के बारे में सार्थक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं. बौद्ध धर्म भोग और सख्त संयम जैसे चरम कदमों का त्याग करते हुए मध्यमार्ग सिखाता है. उनके अनुसार बौद्ध धर्म के व्यक्तिवादी घटक पर बल देते हुए, जीवन में अपनी खुशी के लिए हर कोई स्वयं जिम्मेदार है. मध्यमार्ग बुद्ध की शिक्षा का मूल है और इसे जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनाया जा सकता है.

इसका अर्थ है चरम सीमाओं से बचना, जैसे कि आज हम जो देख रहे हैं- संकीर्ण राष्ट्रवाद और बेलगाम उदारवाद, धार्मिक कट्टरता और घटिया धर्म, एक गौरवशाली अतीत के प्रति जुनून और आधुनिक मानी जाने वाली सभी चीजों को सही ठहराना. छ.: पोशाक, भोजन आदि को लेकर एक विशेष आस्था के लोगों के एक वर्ग को आँख बंद करके निशाना बनाना. संक्षेप में, दूसरे के दृष्टिकोण पर विचार किए बिना जो सही है उसमें अंधविश्वास. बुद्ध का अभ्यास कहता है चरम तरीकों से बचें और तर्कसंगतता के बीच के रास्ते पर चलना समय की आवश्यकता है. उदाहरण के लिए, अभी चल रहे यूक्रेन युद्ध जहाँ रूस और नाटो अपने-अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं.

बौद्ध धर्म में जाति व्यवस्था शामिल नहीं है - यह समानता सिखाता है और कहता है कि हर कोई व्यक्तिगत सुधार के माध्यम से निर्वाण तक पहुँचने में सक्षम है. बौद्ध धर्म में परिवर्तित होने से, निचली जाति के सदस्य जाति व्यवस्था के तहत होने वाले भेदभाव से बच सकते हैं और अन्य बौद्धों द्वारा उनके साथ समान व्यवहार किया जा सकता है. अस्पृश्यता की प्रथा को भारत के संविधान द्वारा गैरकानूनी घोषित किया गया है. यह मनुष्य के पतन की सबसे पुरानी प्रणाली है. और, यह अभी भी ग्रामीण और शहरी भारत में प्रचलित है. यह भी स्पष्ट है कि पूरे भारत में अनुसूचित जातियों के बीच दावे की डिग्री बढ़ी है. वे हर संभव तरीके से श्रेणीबद्ध पदानुक्रम और असमानता का विरोध कर रहे हैं.

बुद्ध ने स्वयं एक संस्था के रूप में जाति की आलोचना की; और, 20वीं शताब्दी में, कई निम्न-जाति के हिंदुओं ने, अम्बेडकरवादी शिक्षाओं के प्रभाव में, जातिगत भेदभाव से बचने के लिए फिर से खोज की और बौद्ध धर्म में परिवर्तित हो गए. अम्बेडकरवादी आंदोलन बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा सिखाए गए और अभ्यास किए गए लोकाचार से प्रभावित है. 1956 में बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा शुरू किए गए धर्मांतरण आंदोलन के बाद यह आंदोलन बौद्ध धर्म से प्रभावित हो रहा है. यही कारण है कि हजारों दलित आज भी बौद्ध धर्म अपनाते हैं. पुनरुत्थानवादी बौद्ध धर्म आधुनिक भारत में आमूलचूल परिवर्तन का प्रतीक है. कई शताब्दियों के अंतराल के बाद बौद्ध धर्म मुख्यधारा का धर्म बन गया है. अनुसूचित जाति के अलावा आदिवासी और ओबीसी धीरे-धीरे इसकी ओर रुख कर रहे हैं. बौद्ध धर्म लोकतंत्र का झंडा पकड़े हुए है.

बौद्ध धर्म उन लोगों को बहुत आवश्यक आत्मविश्वास और सम्मान प्रदान करता है जो जाति-आधारित सामाजिक व्यवस्था द्वारा हीन और निंदा करने के लिए मजबूर हैं. यह आत्मविश्वास जाति के नरक से उनके उत्थान और विश्वास और सम्मान की भूमि में उनके आगमन में स्पष्ट है. बुद्ध ने आखिरकार, सिखाया कि मन और ज्ञान की स्वतंत्रता लोगों के एक वर्ग के लिए गुप्त नहीं है, इसे उन सभी द्वारा प्राप्त

किया जा सकता है जो न केवल खुद को, बल्कि अपने आसपास के लोगों को भी बदलने के लिए संघर्ष और प्रयास करते हैं।

बौद्ध धर्म नैतिकता की एक उच्च प्रणाली को विकसित करता है और अष्टांगिक मार्ग सभी व्यक्तियों के लिए सरल लेकिन शक्तिशाली मार्गदर्शक है, जिसमें उच्च पदों पर बैठे लोग-राजनीतिक और व्यापारिक नेता, धार्मिक संत, नौकरशाह और पेशेवर शामिल हैं। आज के कड़वे धार्मिक और राजनीतिक संघर्षों, बढ़ती असमानताओं और बेईमान व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा की दुनिया में, बुद्ध द्वारा निर्धारित 'मध्य मार्ग' ही मानव जाति को घृणा, अपमान और हिंसा की बुराइयों से बचाने का एकमात्र तरीका है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2030 तक प्राप्त किए जाने वाले सतत विकास लक्ष्यों में से एक 'शांति और न्याय' है।

चूंकि शांति और सतत विकास आपस में जुड़े हुए हैं, बुद्ध का प्रिज्म स्थानीय से लेकर वैश्विक संस्थानों और नेताओं तक हर एक हितधारक के लिए मार्गदर्शक रोशनी हो सकता है, जो करुणा और ज्ञान के आधार पर संवाद, सद्भाव और न्याय को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम कर सकता है। बौद्ध शिक्षाएँ मनुष्यों में करुणा, शांति और स्थिरता, आनंद पैदा करती हैं और वे मनुष्य और प्रकृति के बीच एक स्थायी संतुलन बनाए रखने में मदद कर सकती हैं। बुद्ध की शिक्षाएँ समाज को उनके बेहतर और अधिक मानवीय रूपों में बदल सकती हैं जैसा कि तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा ने दर्शाया है “20वीं सदी युद्ध और हिंसा की सदी थी, अब हम सभी को यह देखने के लिए काम करने और वार्ता की ज़रूरत है कि 21वीं सदी शांति की है।”

**विचलित करते हैं सदा, मन मस्तिक के युद्ध.
अगर जीतना है स्वयं को, बन सौरभ तू बुद्ध.**

काली चिड़िया करे सुभोर

रचनाकार- डॉ राकेश चक्र



साढ़े तीन बजे प्रातः के,
काली चिड़िया करे सुभोर.
हवा बह रही अति सुखदाई
मन आनंदित हुआ विभोर.

चंदा जी की शीतल छाया,
तारों से आकाश सजा है.
शोर, प्रदूषण हुआ मौन है,
चिड़ियों ने आलस्य तजा है.

दिन में गर्मी अतिशय भारी,
टप-टप टप-टप बहे पसीना.

कूलर ए सी की ठंडक में
है राहत से लगता जीना.

तम को हरते सूरज दादा
घोड़े अपने खूब भगाते.
किरणें स्वर्णिम बिखरा करके
सबका जीवन सुखद बनाते.

उत्तरायण में सूरज दादा
घोड़ों पर बैठे मुस्काते.
लेकिन ताप बढ़ा धरती का
गर्मी से तौबा करवाते.

पंछी आते दाना खाने
अपने सुंदर गीत सुनाते.
ईश्वर की सृष्टि है न्यारी
करें योग जो, हैं सुख पाते.

परिवर्तन

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय



लक्की और सन्नी दो भाई थे. लक्की सन्नी से पाँच वर्ष बड़ा था. दोनो बहुत संस्कारित बच्चें थे पर दोनों में एक अंतर था सन्नी भगवान को मानता था और लक्की नहीं. घर में सभी लक्की की इस आदत से परिचित थे.

एक दिन अपनी ड्यूटी से लौटते समय उनकी माँ का बस से एक्सीडेंट हो गया और वह कोमा में चली गयी डॉक्टरों का कहना था कि उनका ठीक हो पाना मुश्किल है, अब भगवान पर निर्भर है, वही कुछ चमत्कार करेंगे तो वह ठीक होगी. लक्की डॉक्टर की बात सुन रहा था. वह दौड़ता हुआ हॉस्पिटल के हाँल के मंदिर में कान्हा की मूर्ति से लिपटकर रोने लगा और रोते रोते भगवान से कहने लगा कि भगवान मेरा गुस्सा मेरी माँ पर मत निकालिए. मेरी माँ को ठीक कर दिजिए. मुझे क्षमा कर दीजिए. उस दिन से वह नित्य सुबह स्नान करके भगवान की पूजा करने लगा. इस परिवर्तन को देखकर दादा जी ने प्यार से उसे गले लगा लिया.

नौतपा

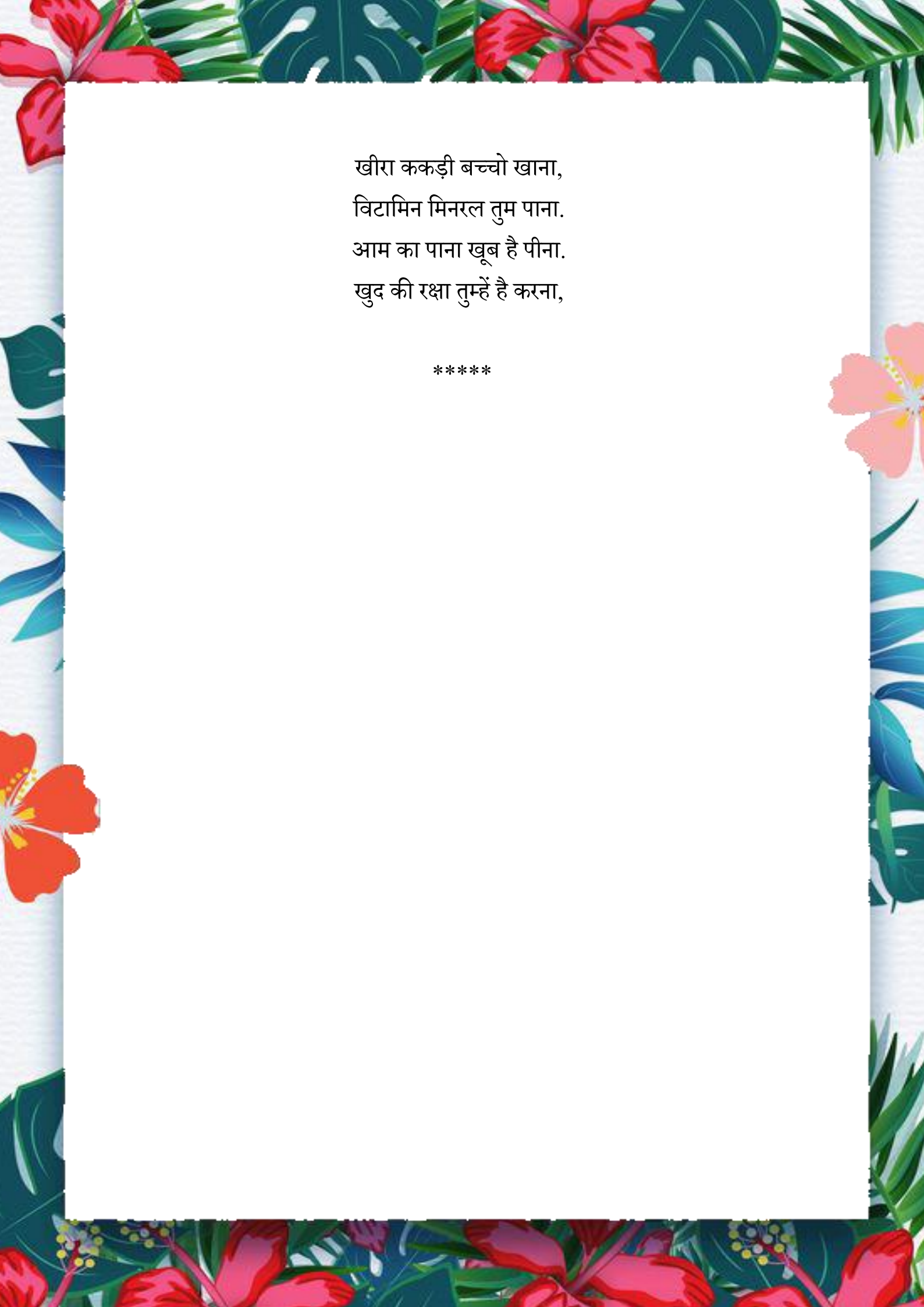
रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय



सीधी पड़ती हैं जब किरणें,
तपती धरती होता तब त्रास.
नौ दिन गर्मी खूब हैं सहते,
नवतपा हम इसे हैं कहते.

गर्मी करती सबको बेहाल,
जीना हो जाता है मुहाल.
आग उगलते सूरज मामा,
उनको देते सभी हैं ताना.

ताल-तलैया सूख हैं जाते,
जीव-जंतु सब हैं अकुलाते.
छाया ढूँढ विश्राम हैं करते,
लू लगती तो वो हैं मरते.



खीरा ककड़ी बच्चो खाना,
विटामिन मिनरल तुम पाना.
आम का पाना खूब है पीना.
खुद की रक्षा तुम्हें है करना,

कथा कहानी कह

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

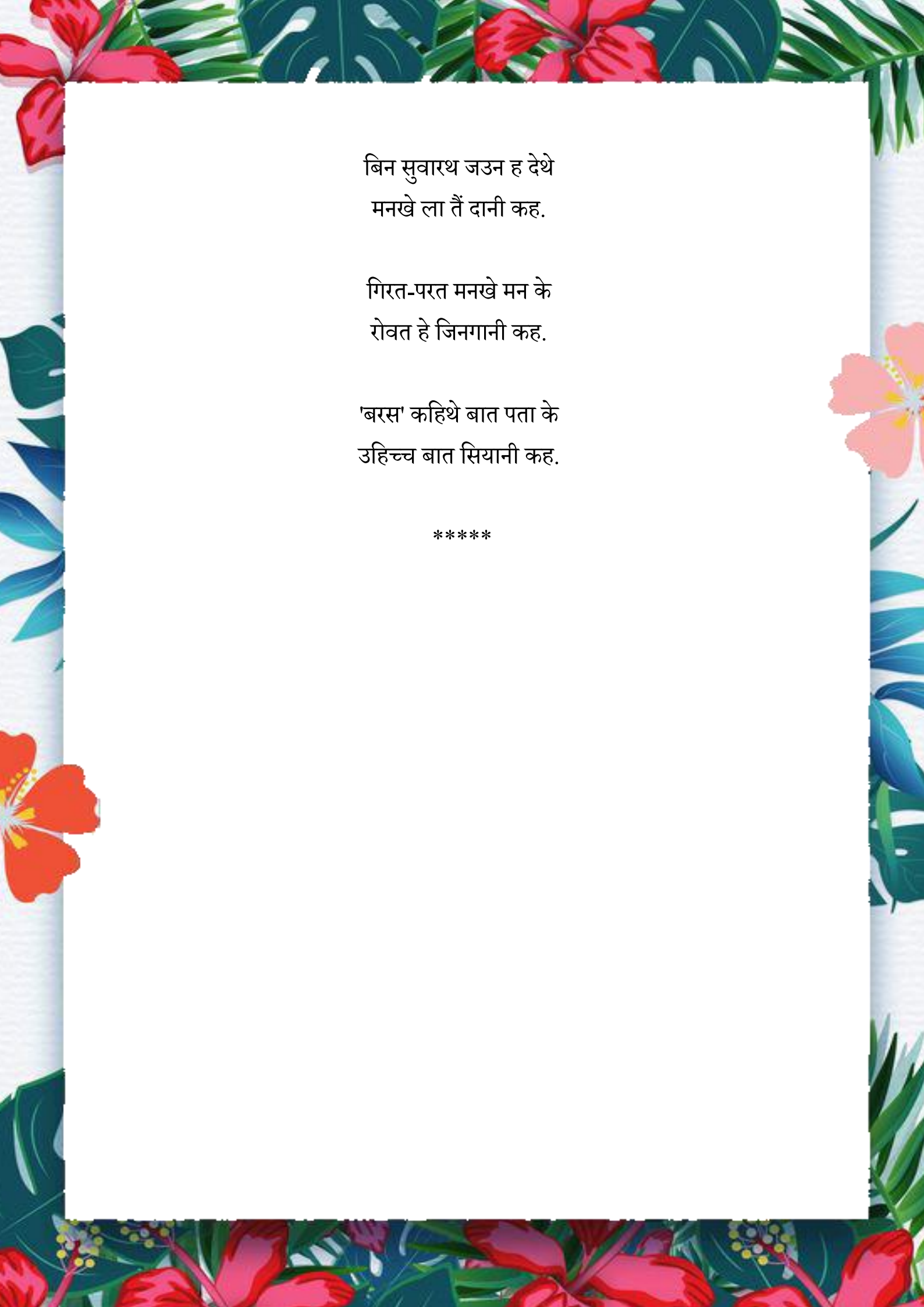


अपने कथा-कहानी कह
अउ आँखी के पानी कह.

मारग खुद अपन बनाथे
ओला तैं हर ग्यानी कह.

बात सही हे, अड़ जाथे
भैया जी सुभिमानी कह.

अपन सुर म सुरीं चलथे
मूरख ला, अभिमानी कह.



बिन सुवारथ जउन ह देथे
मनखे ला तैं दानी कह.

गिरत-परत मनखे मन के
रोवत हे जिनगानी कह.

'बरस' कहिथे बात पता के
उहिच्च बात सियानी कह.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

राहुल का प्रायश्चित्त

एक समय की बात है. राहुल नाम का एक बहुत दयालु लड़का था. वह ग्रामीण क्षेत्र में रहता था जहाँ उसकी छोटी-सी ज़मीन थी. वह अपने ज़मीन में कृषि कार्य करने के साथ-साथ मन को सुकून देने के लिए कुछ जगह पर बागवानी करता था. वहाँ टहलता, चिड़ियों को दाना खिलाता और कुछ चिड़ियों को पकड़कर पिंजरे में रखा था और रोज सुबह-शाम उनकी देखभाल करता था.

एक दिन राहुल अपने बगीचे में पिंजरे के अंदर बंद पक्षी को दाना खिला रहा था. उसने महसूस किया कि पक्षी इस पिंजरा में बहुत दुःखी है. वह मन ही मन सोचने लगा जब वह छोटा था तो एक चोर ने उसे बंधक बनाया था. उसे एक कमरे में बंद कर पानी और भोजन देता और उसे वह परेशान करता. एक दिन उसे अपने माता-पिता से अलग रहना एक वर्ष जैसा लग रहा था. उस बात को सोचकर घबरा जाता है कि किसी के बंधक बनकर रहने से अच्छा उसे मृत्यु ही दे-दे. इन्हीं बातों को याद करते हुए अपने आप से कहता है कि उस चोर और मुझमें क्या अंतर है? इस पक्षी को भी मैंने बंधक बनाकर रखा है. मुझे किसी भी जीव को बंधक बनाकर रखने का अधिकार नहीं है. यह सोचकर उसने पक्षी को छोड़ने का फैसला

किया.पिंजरा के दरवाजे को खोलकर उस पक्षी से कहा-मुझे क्षमा करना जो मैं आपको इस पिंजरा में बंद करके रखा था.आज से आप इस पिंजरा से मुक्त होऔर हो सके तो आप इस बगीचे में आते रहना.पिंजरा से उड़ते हुए चिड़िया ने राहुल को धन्यवाद देते हुए कहा-“आपके बगीचे में ही हम घोंसला बनाकर परिवार के साथ रहेंगे. ”कुछ दिन पश्चात वह चिड़िया उस बगीचा में परिवार के साथ घोंसला बनाकर रहने लगा.उसे देखकर राहुल बहुत खुश हुआ.

मनोज कुमार पाटनवार द्वारा भेजी गई कहानी

कैद पक्षी का दर्द

एक बार मेरा बेटा कान्हा मेरे साथ मेला घूमने गया था.वहाँ पिंजरे में कैद तोता,मैना आदि पक्षियों को कुछ लोग बेच रहे थे.मेरा कान्हा एकटक पिंजरे की ओर देख रहा था.उतने में पक्षी बेचने वाला बोला ले लीजिए सर बच्चे के लिए इससे खेलेगा. इतना सुनते ही मेरा कान्हा जिद करने लगा कि मुझे पिंजरा वाला तोता चाहिए. मैंने अपने बेटे को बहुत समझाया कि इस तरह से कोई भी पक्षी को पिंजरे में कैद करके रखना अच्छी बात नहीं है बेटा.किंतु वह मानने को तैयार ही नहीं हुआ और रोने लगा. मुझे न चाहते हुए भी पिंजरे में कैद तोता को उसके लिए लेना ही पड़ा. दिन भर तोता के साथ खेलता और मीठी-मीठी बातें करते रहता था.

एक दिन कान्हा को अकेले घर में छोड़ कर हम लोग किसी काम से बाहर गए और घर से बाहर ना निकलने की हिदायत देते हुए घर पर ही रहने को कहा. किंतु उनका दोस्त रुद्र एवं गोलू उनके पास खेलने घर आ गया. तीनों दोस्त मिलकर रोज की तरह लुकाछिपी का खेल खेलने लगे.जिसमें गोलू बिना दरवाजा वाले कमरे में छिपा और कान्हा दरवाजे वाले अंधेरे कमरे में जाकर छुप गया.गोलू को तो रुद्र आसानी से पा गया किंतु उस अंधेरे कमरे में डर की वजह से कान्हा को अंदर खोजने नहीं गया और बाहर से दरवाजा बंद कर दिया. उसी समय गलियों में आइसक्रीम वाले घंटी बजाते हुए आवाज दे रहा था.उसे सुनकर रुद्र और गोलू दौड़ते हुए अपने-अपने घर चले गए और अपनी मां से आइसक्रीम लेने की जिद करने लगे और दोनों आइसक्रीम खाकर अपने अपने घर में जाकर सो गए., इधर कान्हा अंधेरे कमरे से निकलना चाहा किंतु बाहर से दरवाजा बंद था इसलिए वह खोल नहीं पाया और चिल्लाने लगा किंतु किसी को सुनाई नहीं देने की वजह से कोई दरवाजा खोलने नहीं आया और कान्हा रोता ही रहा.

लगभग शाम को 7:00 बजे जब हम लोग घर वापस आए तो उस अंधेरे कमरे में कान्हा के रोने की आवाज को सुनकर जल्दी-जल्दी दरवाजा खोला तो देखा कान्हा का रो-रोकर बुरा हाल हो गया था. तब मैंने कान्हा को समझाया कि चार-पांच घंटे एक कमरे बंद रहने से तुम्हारा यह हाल है तो उस तोता का क्या हाल होगा जिसको रोज तुम पिंजरे में कैद करके उनसे खेल रहे हो किसी भी पक्षी को कैद में रहना पसंद नहीं सब को स्वतंत्र आकाश में उड़ना अच्छा लगता है इतना सुनते ही मेरा कान्हा बेटा तुरंत उस पिंजरे का दरवाजा खोल दिया और तोता को अपने हाथों से आजाद कर दिया और बोला “आज के बाद किसी भी जीव को इस तरह से कैद में नहीं करूंगा.”

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी भी किसी भी जीव को अपने स्वार्थ के लिए बंधक बनाकर नहीं रखना चाहिए सभी जीवों को इस धरती पर स्वतंत्र विचरण करने का समान अधिकार है हमें किसी को भी कैद में रखकर कष्ट देने का अधिकार नहीं है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

भाखा जनऊला

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1		2			3				4
		ह							प
5							6		
ज							प		
		क							
			7		8				
			कु		भ				
9	10								
	क								
						11			12
						र			कु
			13			14			
			सि						
15									
गं									
				16		17		18	
				च					
19									
ख									

बाएँ से दाएँ

3. हाँ 5. तितर-बितर
6. ढलता समय 8. जलन होना 9. जल्दी-जल्दी
13. सच में, सच्ची
14. एकांत में बात कहना, काम करना 15. नाट्य मंचन करने वाला
17. एक नदी का नाम
19. खुरदुरा

पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

	1		2		3		4		5
	ओ	र	म		रां		म	इ	ई
6	चि	न्हा	7	ता	ग	ध	र	ई	त
8	त	री		सी		ल		न	वा
	क						9	10	
							खे	स	रा
11	ब	न	12	वा		13			
						अ			
	रा		व			14	त	ला	हा
						म			
		15	16		वा	र			17
		इ	त						ब
18	म	नि	हा	री		19	ई	त	र
						व			नी
	ख				20				
				म	या				हा
21	ना	न	कु	न			22	कु	सी
								या	र

ऊपर से नीचे

1. खजली 2. दिशा या मोड़ देने का काम 3. बिना सोचे समझे बोलना, करना
4. पसंद करना 7. रेतीला जमीन 10. खुशबू से भरा, खुशबूदार 11. भिन्डी
12. गन्ना 16. चाय
18. भारी, वजनी



अपनी **किलोल** की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबरिक्लप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने की रुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720₹.)

आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000₹.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर खाता क्र. 45730100004644 आई.एफ़.एस.सी कोड BARBOMOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE) में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात www.kilol.co.in में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहित अपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।